हाईस्कूल स्तर के मूल्य, व्यक्तित्व तथा समायोजन का प्रतिबल पर प्रभाव का अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

से मनोविज्ञान विषय में

पी-एच. डी.

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

2006

शोध निर्देशक -
डा-० अवधेश कुमार अग्रवाल
रीडर एवं अध्यक्ष - मनोविज्ञान विभाग
नेहरु परास्नातक महाविद्यालय,
ललितपुर, उ०प्र०

शोधार्थी
सुनीता मिश्रा

प्रमाण–पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि सुनीता मिश्रा ने पीएच.डी. उपाधि हेतु शोध शीर्षक **''हाईस्कूल स्तर के मूल्य, व्यक्तित्व तथा समायोजन का प्रतिबल पर प्रभाव का अध्ययन ''** के अन्तर्गत मेरे द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन किया है। मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि इनका प्रस्तुत शोध कार्य मौलिक, उपयोगी तथा विश्वविद्यालय परिनियमावली द्वारा निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप है।

डॉ0 अवधेश कुमार अग्रवाल

रीडर एवं अध्यक्ष

मनोविज्ञान विभाग

नेहरू परास्नातक महाविद्यालय

ललितपुर (उ0प्र0)

घोषणा पत्र

मैं सुनीता मिश्रा यह घोषित करती हूँ कि मैंने अपना शोधकार्य **''हाईस्कूल स्तर के मूल्य, व्यक्तित्व तथा समायोजन का प्रतिबल पर प्रभाव का अध्ययन''** डॉ0 अवधेश कुमार अग्रवाल के निर्देशन में पूर्ण किया है। यह शोध प्रबन्ध मेरा अपना ही कृत कार्य है। इसमें प्रयुक्त प्रदत्तों का संकलन, गणनायें एवं व्याख्या मेरे स्वयं के द्वारा की गई हैं।

दिनांक 16.10.06

शोधार्थी

सुनीता मिश्रा

सुनीता मिश्रा

आभार–कथन

मैं अपने शोध निर्देशक, नेहरू महाविद्यालय में मनोविज्ञान के रीडर एवं अध्यक्ष डॉ0 ए.के. अग्रवाल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने उत्साह वृद्धि तथा संदर्भ ग्रन्थ संकलित करवाने के अतिरिक्त इस शोधकार्य के दौरान समय और सहयोग देने में किसी प्रकार की कृपणता नहीं की है।

इस शोध कार्य की प्रेरणा देने वाले मेरे पूज्य पिताश्री मेजर–चन्द्र शेखर मिश्र माताश्री विमला मिश्रा, डा0 प्रणव पाण्ड्या, कुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार, श्रीमती शैलबाला पाण्ड्या निदेशक शांतिकुंज हरिद्वार को सश्रद्ध स्मरण करती हूँ।

डॉ0 तारेश भाटिया, रीडर मनोविज्ञान विभाग, डी.वी. डिग्री कॉलेज, उरई की मैं विशेष कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस अनुसंधान कार्य में मेरा विशेष सहयोग किया है। डॉ0 पूनम निगम, प्रो0 संगीत विशेषज्ञ कथक केन्द्र, संगीत नाटक अकादमी गोमती नगर, लखनऊ एवं डॉ0 सतीश चन्द्र शर्मा, पूर्व विभागाध्यक्ष, गाँधी महाविद्यालय, उरई तथा डॉ0 आनन्द कुमार, विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र, डॉ0 अरूण कुमार श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान, डी.वी. डिग्री कालेज, उरई की विशेष आभारी हूँ जिन्होंने समय–समय पर बहुमूल्य सुझाव दिये।

इस अवसर पर दयानन्द गर्ल्स कालेज, महानगर, लखनऊ की प्राचार्या सुश्री मधु गुप्ता, श्री कविराज कुमार, परामर्शदाता, राजकीय जुबिली कालेज, लखनऊ, श्रीमती कमला पाण्डेय वरिष्ठ प्रतिनिधि शांतिकुंज का स्मरण करना स्वाभाविक है जिन्होंने इस शोध कार्य में मेरा निरन्तर उत्साहवर्धन किया है।

मैं अपने श्रद्धेय सास–ससुर श्रीमती विद्या मिश्रा, श्री रामगोपाल मिश्र, पति डॉ0 दिनेश कुमार मिश्र, मण्डलीय मनोवैज्ञानिक लखनऊ एवं पुत्री शिखा मिश्रा, पुत्र शिखर के स्वाभाविक सुलभ सहयोग को याद करके क्रमशः प्रेम और वात्सल्य भाव–धारा से अभिभूत हूँ।

सुन्दर आकर्षण छपाई के लिए मैं श्री धीरज गुप्ता का विशेष आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग के बिना यह कार्य सम्भव नहीं था।

सुनीता मिश्रा

(श्रीमती सुनीता मिश्रा)

एम.ए. (मनोविज्ञान), एम.एड.

विषय अनुक्रम

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

प्रस्तावना

(i) प्रस्तुत अनुसन्धान समस्या का चयन–

आधुनिक अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि तनाव अथवा प्रतिबल एक विकट समस्या है। प्रतिबल एक ऐसी शारीरिक अथवा मानसिक दबाव की अवस्था है, जिसकी उत्पत्ति आवश्यकता की पूर्ति में बाधा उत्पन्न हो जाने से होती है और इसका दुष्प्रभाव व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक जगत पर पड़ता है और व्यक्ति इससे बचना चाहता है। व्यक्ति अनेक मानसिक अवस्थाओं में विभिन्न प्रकार की अनेक समस्याओं के साथ समायोजन करता है। व्यक्ति जब वातावरण की समस्याओं का समाधान करने के लिए संघर्ष करता है तब उसे असफलता का अनुभव होता है। यह असफलता अथवा भयावह हानिकारक परिस्थिति शारीरिक अथवा मानसिक प्रकार की होती है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति तनाव और अशान्ति का अनुभव करता है। तनाव और अशान्ति का मिश्रित रूप ही प्रतिबल कहलाता है। इस प्रकार प्रतिबल एक ऐसी बहुआयामी प्रक्रिया है जो व्यक्ति में घटनाओं के प्रति अनुक्रिया के रूप में उत्पन्न होता है जो हमारे दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक कार्यों को विघटित करता है अथवा विघटित करने की चेतावनी देता है (बेरन 1992)।

प्रतिबल में व्यक्ति की मानसिक क्रियायें प्रभावित होती हैं। तनाव में व्यक्ति की संज्ञानात्मक विकृति पाई जाती है। उसकी एकाग्रता की क्षमता कम हो जाती है तथा वह अपने चिन्तन को तार्किक रूप से संगठित नही कर पाता है। चिन्तन में चिन्ता की भूमिका बढ जाती है और व्यक्ति परिस्थिति के विभिन्न पहलुओं का उचित रूप में प्रत्यक्षण नहीं कर पाता है। अवधान विस्तार कम हो जाता है। स्मृतिशक्ति भी क्षीण हो जाती है। इस प्रकार

प्रतिबल में संज्ञानात्मक विकृति उत्पन्न हो जाती है तथा व्यक्ति समस्या के समाधान के वैकल्पिक साधनों का प्रत्यक्षण नहीं कर पाता है व अपने व्यवहार में दृढ़ता प्रदर्शित करता है।प्रतिबल की स्थिति में ऋणात्मक सांवेगिक अनुक्रियायें प्रदर्शित करता है। प्रथम सांवेगिक अनुक्रिया चिन्ता होती है। यह एक ऐसी अप्रिय अवस्था है, जिसमें व्यक्ति में भय, आशंकायें, परेशानी आदि की प्रधानता हो जाती है।प्रतिबल उत्पन्न करने वाले उद्धीपक या परिस्थिति के प्रति प्राणी में क्रोध उत्पन्न होता है और यदि ऐसे उद्धीपक प्राणी के सामने अधिक समय तक बने रहें तो वह उनके प्रति आक्रमकता पूर्ण व्यवहार भी करने लगता है। कभी–कभी कुंठा उत्पन्न करने वाला स्रोत अधिक शक्तिशा"ली होता है, जिसके कारण उसके प्रति व्यक्ति आक्रमकता नहीं प्रदर्शित कर पाता है, वरन् किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु पर विस्थापित (displaced) हो जाती है। प्रतिबल उत्पन्न करने वाली परिस्थिति के प्रति कुछ लोगों में क्रोध तथा आक्रामकता का व्यवहार न होकर उसके विपरीत विषाद का भाव विकसित हो जाता है। यदि तनावपूर्ण परिस्थिति व्यक्ति के सामने बनी रहती है और व्यक्ति उसे दूर नहीं कर पाता है, फलतः उसमें उदासीनता विकसित हो जाती है और विषादी प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि प्राणी जब तनावपूर्ण परिस्थिति से अपने को घिरा पाता है तो अपने आपको निस्सहाय पाता है।

व्यक्ति प्रतिबल परिस्थिति के प्रति दैहिक प्रतिक्रिया के रूप में पेट की गड़बड़ी, हृदय गति का असामान्य होना, अन्तर्द्वन्द्व, निराशा आदि पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। उनका व्यवहार समायोजित होता है। समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यकताओं और उन आवश्यकताओं

की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है। समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के मध्य सन्तुलन स्थापित करने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। इस प्रकार समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्ती है। प्रत्येक प्राणी के सामने कुछ न कुछ समस्यायें होती है। एक व्यक्ति इन समस्याओं को जीवन की चुनोतियों के रूप में यदि स्वीकार करता है, तब उसे उत्तम माना जाता है। इस प्रकार समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है। समायोजन मुख्यतः तीन बातों पर निर्भर करता है–

1. व्यक्ति की इच्छाओं, विचारों, प्रेरणाओं और लक्ष्य आदि में समन्वय जितना अधिक होता है, समायोजन उतना ही अधिक माना जाता है।
2. व्यक्ति की इच्छाओं, विचारों, प्रेरणाओं और लक्ष्यों आदि की पूर्ति जितनी ही अधिक होती है, समायोजन उतना ही अधिक होता है।
3. व्यक्ति की इच्छायें, विचार और लक्ष्य आदि का सामाजिक मूल्यों से जितना अधिक सम्बन्ध होगा, व्यक्ति का समायोजन उतना ही अच्छा होगा।

प्रतिबल का व्यक्तित्व से भी पर्याप्त सम्बन्ध है। ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व को व्यक्ति की मनोदैहिक प्रणालियों का आन्तरिक गत्यात्मक संगठन बताया है, जिसके द्वारा उसका वातावरण के साथ एक अनोखा समायोजन निर्धारित होता है। युंग 1923 में व्यक्तित्व के सामाजिक रूपों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्गीकरण बर्हिमुखी तथा अन्तर्मुखी के रूप में किया है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति समाज एवं सामाजिक वातावरण में अधिक रुचि रखने के कारण सामाजिक होते हैं। सामाजिक उत्सव में भाग लेना, समूह का नेतृत्व करना

तथा अपने स्वभाव के व्यक्तियों से भिन्नता स्थापित करना उनके व्यक्तित्व का एक आवश्यक अंग बन जाता है। ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति सन्तुष्ट, उदार एवं सदैव दूसरों की सहायता के लिये तत्पर रहते हैं। अन्तर्मुखी व्यक्ति की विशेषताओं से सर्वथा भिन्न होती हैं। वह आत्मकेन्द्रित होते हैं तथा इन्हें न तो समाज में रूचि रहती है और न ही वे मित्रों के साथ समय व्यतीत करना ही पसन्द करते हैं। सामाजिक उत्सव ऐसे व्यक्तियों के लिये अधिक महत्त्व नहीं रखते हैं। व्यवहार कुशल न होने के कारण प्राय उदास रहने वाले तथा अत्यधिक संवेगात्मक एव दिवा–स्वप्न में विचरण करने वाले होते हैं।

नीमैन तथा याकोरजिंस्की ने बताया कि अधिकतर व्यक्तियों में दोनों ही प्रकार की विशेषतायें पायी जाती हैं। ऐसे व्यक्तियों को उभयमुखी कहा जा सकता है। इस प्रकार के व्यक्तित्व एक समय में बहिर्मुखी हैं तो दूसरे समय में ऐसे व्यक्ति अन्तर्मुखी रूप में मिलते हैं।

इसी प्रकार प्रतिबल का मूल्य के साथ सम्बन्ध का अध्ययन भी अत्यधिक रूचिकर है। व्यक्ति अपने अनुभवों के आधार पर कुछ सामान्य सिद्धान्त बनाता है जो उसके व्यवहार का पथ प्रदर्शन करते हैं अथवा उसके व्यवहार को निर्देशित करते है। इन्हीं सामान्य सिद्धान्तों को मूल्य कहा जाता है। जीवन के पथ प्रदर्शक के रूप में मूल्य अनुभवों के साथ परिपक्व होते जाते हैं। मानव व्यवहार को चयनात्मक बनाने वाले नियम और गुणों से सम्बन्धित प्रत्यय हैं जो प्रतिमान के रूप में कार्य करते हैं, जिनके आधार पर निर्णयों का मूल्यांकन होता है। अतः शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित अनुसंधान समस्या का चयन किया गया **"हाईस्कूल स्तर के (विद्यार्थियों के) मूल्य, व्यक्तित्व तथा समायोजन का प्रतिबल पर प्रभाव का अध्ययन"**

(ii) सम्बन्धित परिवर्तियों का विवरण

(1) प्रतिबल (STRESS)

मनुष्य एक सामाजिक–भौतिक परिवेश में जन्म लेता है एवं पलता–बढ़ता है। जीवन का संचालन पर्यावरण की अपेक्षाओं तथा इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए मनुष्य के प्रयासों के बीच संतुलन अथवा सामंजस्य पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए जैसे ही वायुमंडलीय तापक्रम में परिवर्तन होता है, संतुलन बिगड जाता है तथा हमारी शारीरिक क्रियाए कुछ इस प्रकार की होने लगती हैं, जिनसे शारीरिक तापक्रम, तथा वायुमंडलीय तापक्रम के बीच पुनः सामजंस्य स्थापित होने लगता है। यदि बाहर अत्यधिक गर्मी है, तो कम से कम अस्थायी तौर पर ही संतुलन स्थापित करने के लिए शरीर में बेचैनी होने लगती है तथा पसीना निकलने लगता है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर, हम अपने आपको ऐसी ही क्रियाओं में लगाते हैं, जिससे बाह्य वास्तविकता या बाहरी दुनिया अथवा अपने अंदर से उठने वाली अपेक्षाओं को पूरा किया जा सके। उदाहरण के लिए माता–पिता अध्ययन में विद्यार्थी से एक विशिष्ट स्तर तक निष्पादन की प्रत्याशा रखते हैं। जब विद्यार्थी उनकी इस प्रत्याशा को पूरा करने की दिशा में अग्रसर होता है, तो उसके अन्य व्यवहारों, विचारों, योजनाओं, अनुभूतियों तथा अभिप्रेरणाओं में बदलाव आता है। आपके अपने निजी लक्ष्य भी होते हैं, जो आपसे कुछ अपेक्षा करते हैं और आप जानते हैं कि आपके अनेक व्यवहार इन अपेक्षाओं को पूरा करने की दिशा में सक्रिय होते हैं। इस तरह हम पर्यावरणीय, जैविक, भौतिक, सामाजिक, आंतरिक तथा बाहरी अपेक्षाओं को पूरा करने की चेष्टा करते हैं। समायोजन वास्तव में इन सभी प्रयासों का परिणाम होता है। जब हम अपनी विभिन्न परिस्थितियों,

जैसे–घर, विद्यालय, तथा कार्यस्थल में सफलतापूर्वक व्यवहार कर लेते हैं, तो सुसमायोजित होते हैं। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे विद्यालय, विवाह तथा ऐसे संगठन जहाँ हम कार्य करते हैं, में समायोजन का मापन करने के लिए शोधकर्ताओं ने कई उपकरणों का विकास किया हैं। ये उपकरण व्यक्ति में समस्याओं की सापेक्षिक रूप से उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति की जानकारी देते है अथवा उसका पूर्वकथन करते हैं।

नार्मल टैलेण्ट (Normal Tallent) के अनुसार–

''प्रतिबल से ऐसे दबाब का बोध होता है, जिससे व्यक्तित्व के पर्याप्त रूप से कार्य करते रहने की योग्यता एक प्रकार से संकट ग्रस्त हो जाती है।''

कोलमैन (Coleman) ''कोई भी परिस्थिति जो व्यक्ति पर दबाब डालती है तथा जिसके कारण व्यक्ति को समायोजन करना पड़ता है, यही प्रतिबल है''

व्यक्ति अनेक मानसिक अवस्थाओं में विभिन्न प्रकार की अनेक समस्याओं के साथ सामंजस्य और अनुकूलन करता है। व्यक्ति जब वातावरण की समस्याओं के प्रति संघर्ष करने में असफलता का अनुभव करता है अथवा जब व्यक्ति भयावह या हानिकारक परिस्थितियों का सामना करने में असफल होता है। यह भयावह और हानिकारक परिस्थिति शारीरिक या मानसिक किसी प्रकार की हो सकती है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति तनाव और अशान्ति का अनुभव करता है। ऐसी परिस्थिति में तनाव तथा अशान्ति का मिला–जुला रूप ही प्रतिबल (Stress) कहलाता है। इस अशान्ति और तनाव की अवस्था में व्यक्ति दबाव (Pressure), तनाव, चिन्ता, अर्न्तद्वन्द्व और कुण्ठा किसी भी मानसिक अवस्था में हो सकता है।

प्रतिबल के प्रति प्रतिक्रिया (Reaction towards Stress) मुख्यतः तीन रूप होते है।

a) **प्रतिबल स्थिति के प्रत्यक्षतः सम्मुख होना** (Attacking the stress situation) इसमें व्यक्ति प्रतिबल का डटकर सामना करता है।

b) **प्रतिबल स्थिति के प्रति विमुख हो जाना** (Withdrawal from the stress situation) इसमें व्यक्ति प्रतिबल स्थिति का सामना करने पर असमर्थ पाने पर संघर्ष करने से हट जाना हितकर समझता है (Fight or Flight)।

c) **प्रतिबल की स्थिति के साथ समझौता करना** (Compromise)

व्यक्ति अपने आकांक्षा–स्तर, सामाजिक व नैतिक स्तर तथा लक्ष्यों की प्राप्ति में आवश्यक परिवर्तन करता है तथा परिस्थितियों की कटुता व प्रतिबल की कठोरता के साथ ताल–मेल करता है।

अस्थायी अथवा अपेक्षाकत चिरस्थायी समायोजन की असफलता को कुसमायोजन (Maladjusment) कहते हैं। यह हमारे अंदर अथवा परिवेश के साथ हमारे संतुलन या सांमजस्य को बाधित करता हैं। सामान्यतः हम अपने संसाधनों को समायोजित करने के लिए एकत्र करते हैं। जब हमारे संसाधन सीमित हो जाते हैं अथवा पर्यावरणीय अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए इस प्रकार के संसाधनों को उचित ढंग से नियत्रित करने में हम असफल हो जाते है, तब कुसमायोजन की समस्या उपस्थित होती हैं। सभी ने अपने जीवन में ऐसी परिस्थितियों का सामना किया होगा जो चुनौतीपूर्ण रही होगीं। हमारे भौतिक परिवेश की उग्र दशाएं, जैसे – चक्रवात, लू के थपेड़े अथवा भूचाल, हमारी सामाजिक अथवा मनोवैज्ञानिक परिवेश की समस्याएं, जैसे – किसी नजदीकी व्यक्ति की मृत्यु, व्यक्तिगत असफलता अथवा कुंठा हमारे स्वस्तिबोध

(Well-being) के लिए खतरा पैदा करती हैं। परंतु इस प्रकार की परिस्थितियाँ कुसमायोजन, असामान्य व्यवहार अथवा मानसिक विकार में सदैव मुख्य भूमिका नहीं निभाती हैं। किसी चुनौती के सामने आने पर हम अतिरिक्त प्रयास करते हैं एवं अपने सभी संसाधनों तथा समर्थन प्रणाली को सक्रिय कर उस चुनौती का सामना करते हैं। सभी चुनौतियों, समस्याओं तथा कठिन परिस्थतियों के कारण हमें प्रतिबल (Stress) का अनुभव होता है। हम इन प्रतिबलों के प्रति कई तरह से अनुक्रिया करते हैं। इनमें से कुछ विधियाँ परिस्थतियों से निपटने में सहायक होती हैं जिससे हम चीजों को अपने नियत्रण में लाने में सक्षम होते हैं अथवा परिस्थितियों को बर्दाश्त कर लेते हैं अथवा कम से कम हमारे स्वस्तिबोध पर पडने वाले ऋणात्मक प्रभावों को कम कर सकते हैं। प्रतिबल के प्रति इस प्रकार प्रभावी विधि से अनुक्रिया करना ही सामना करना (Coping) या समाधान कहलाता हैं। यह कहा जा सकता हैं कि समायोजन समाधान का परिणाम होता है।

सामाजिक समायोजन का तात्पर्य एक ऐसी दशा से है, जिसमें हम सामान्यतः दूसरे व्यक्तियों के साथ समायोजन करने में सक्षम होते हैं, विशेष रूप से उस समूह के साथ, जिससे हम जुड़े होते हैं। सामाजिक रूप से समायोजित व्यक्ति सामाजिक संबंध बनाने मे कुशल होता है उसकी दूसरों के बारे में सकारात्मक सोच होती है। जब बच्चे बड़े होने लगते है, तो उनसे सामाजिक जीवन की अपेक्षाओं के प्रति समायोजित होने एवं अपने आयु वर्ग के अनुरूप व्यवहार की प्रत्याशा की जाती है। बच्चों द्वारा प्रदर्शित सामाजिक समायोजन का स्तर पारिवारिक परिवेश की गुणवत्ता, अभिप्रेरणा एवं निर्देशन पर निर्भर करता है। किस सीमा तक कोई व्यक्ति सामाजिक समायोजन प्राप्त

करने मे सफल होता है ,इसका निर्धारण निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर किया जा सकता है

व्यवहार :

जब एक व्यक्ति का व्यवहार अथवा उसका प्रत्यक्ष निष्पादन उस समूह के सदस्यों की प्रत्याशाओं के अनुसार होता है, जिससे वह जुड़ा होता है, तब हम उस व्यक्ति को समायोजित कहते हैं।

विभिन्न समूहों के साथ समायोजन :

एक व्यक्ति को विभिन्न समूहो के साथ कार्य करना अथवा अन्तःक्रिया करनी पडती है, अतएव एक व्यक्ति जो विभिन्न समूहों के साथ, जिनके साथ कार्य करता है, यदि उचित रूप से समायोजन स्थपित कर लेता है, तो उसे सुसमायोजित कहते हैं।

समूहों एवं व्यक्तियों के बारे मे सकारात्मक सोच :

हमें लोगों के बारे मे सकारात्मक दृष्टिकोण, सामाजिक भागीदारी तथा समूह की स्थिति में व्यवहार करने की आवश्यकता पड़ती है ।

वैयक्तिक प्रसन्नता :

जब हम ठीक से समायोजित होते हैं, तब अपनी भूमिका के निष्पादन से संतुष्ट एवं प्रसन्न महसूस करते हैं।

जब उपर्युक्त मे से प्रत्येक स्थिति होती है, तब प्रसन्नता एवं स्वास्थ्य दोनों ही जीवन मे नई एवं सृजनात्मक राह ढूंढने की क्षमता पर निर्भर करते हैं। अनेक अवसरों पर इस तरह के रास्ते हमारे समूह के नियमों तथा मानदंडों से अलग हो सकते हैं। इसलिए समायोजन के साथ–साथ भिन्नता को स्वीकार करने की क्षमता तथा सृजनात्मक विधि से आगे बढना भी सकारात्मक

मानसिक स्वास्थ्य का सूचक है ।

प्रतिबल का सप्रंत्यय

यद्यपि विज्ञान और तकनीक के कारण मानव जीवन की गुणवत्ता में कई तरह से सुधार हुआ हैं पर इसी के साथ अनेक प्रकार के संकट भी उठ खड़े हुए हैं। भीड़, ध्वनि– प्रदूषण प्रतिस्पर्धा सामाजिक असुरक्षा बेरोजगारी हिंसा तथा एकाकीपन आदि आधुनिक जीवन के साथ आवश्यक रूप से जुड़े हुए हैं। एक विशिष्ट सामाजिक वर्ग, धर्म अथवा क्षेत्र से जुड़े होने के कारण व्यक्ति पूर्वाग्रह, भेदभाव तथा शोषण का शिकार हुआ है। प्रकृति ने भी भूचाल, बाढ़ तथा सूखे के रूप मे विशिष्ट प्रकार के संकट खडे किए हैं। इन सभी पर एक साथ ध्यान देने से यही लगता है कि प्रतिबल से छुटकारा पाने का कोई रास्ता नहीं है । प्रतिबल हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है । हालांकि प्रतिबल को मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के एक महत्वपूर्ण कारण के रूप मे स्वीकार किया गया है। परंतु इसके प्रभाव सदैव अवांछित ही नही होते हैं। वास्तव में, प्रतिबल जीवन का एक मूलभूत अवयव है। हमारी जैविक प्रणाली कुछ प्रतिबल संबंधी खतरों से इस प्रकार ग्रस्त है, जो उसके जीवन के लिए आवश्यक बन गए है तथा व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों में प्रभावशाली ढंग से कार्य करने में सहायता प्रदान करता है। वस्तुतः किसी तरह के प्रतिबल का अनुभव किए बिना किसी तरह का रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्य संभव ही नहीं है। परीक्षा मे अच्छे निष्पादन के लिए एक विशिष्ट स्तर का प्रतिबल आवश्यक है। प्रतिबल अक्सर हमारी दक्षता मे वृद्धि करता है तथा सामना करने के नए संसाधन ढूंढने के लिए हमें प्रेरित करता है । इसके कारण हमारी समायोजन प्रणाली

ढूंढने के लिए हमें प्रेरित करता है । इसके कारण हमारी समायोजन प्रणाली मे सुधार होता है तथा हम भविष्य में इस प्रकार की परिस्थितियों का सामना अपेक्षाकृत अच्छे ढंग से कर पाते हैं। अतः वे लोग जिन्हें अपने जीवन मे किसी तरह के प्रतिबल का अनुभव नहीं रहता है, उनकी अनुकूलन प्रणाली बहुत निम्न स्तर की हो जाती है तथा मध्यम स्तर के प्रतिबल उपस्थित होने पर भी उसके समक्ष घुटने टेक देते हैं। ऐसे भी लोग होते हैं, जो प्रतिबल उपस्थित होने पर उन्नति करते हैं तथा अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी ढंग से संकट का सामना करते हैं।

प्रतिबल की अवधारणा अभियांत्रिकी (Engineering) के क्षेत्र में आरम्भ हुई। एक अभियंता के लिए प्रतिबल का तात्यर्प किसी भौतिक पदार्थ पर पड़ने वाले बाहरी शक्ति के प्रभाव से संबधित है। इस शक्ति के कारण तनाव होता है; जिसके कारण उस पदार्थ की संरचना में परिवर्तन होता है। अनेक मनौविज्ञानिकों ने इस परिभाषा को स्वीकार किया है कि प्रतिबल एक बाहय घटना अथवा उददीपक होता हैं और तनाव उसका प्रतिफल होता है,विशेष रूप से स्वास्थ्य के संदर्भ में सामान्यतया यह पाया गया है कि उच्चस्तरीय प्रतिबल अत्यधिक तनाव उत्पन्न करता है। लेकिन यह हमेशा सही नहीं है। हम सकारात्मक प्रतिबल अथवा यू प्रतिबल (U-Stress) का भी अनुभव करते हैं। ऐसा तब होता है, जब हमें सकारात्मक अनुभूति होती है, सहजता से स्वीकार करते हैं।

प्रतिबल को उददीपक घटना के प्रति की जाने वाली अनुक्रिया के प्रतिरूप के रूप में समझा जा सकता है, जो व्यक्ति के सामंजस्य में व्यवधान उत्पन्न करता है तथा व्यक्ति के सामना करने की क्षमता को बढाता है।
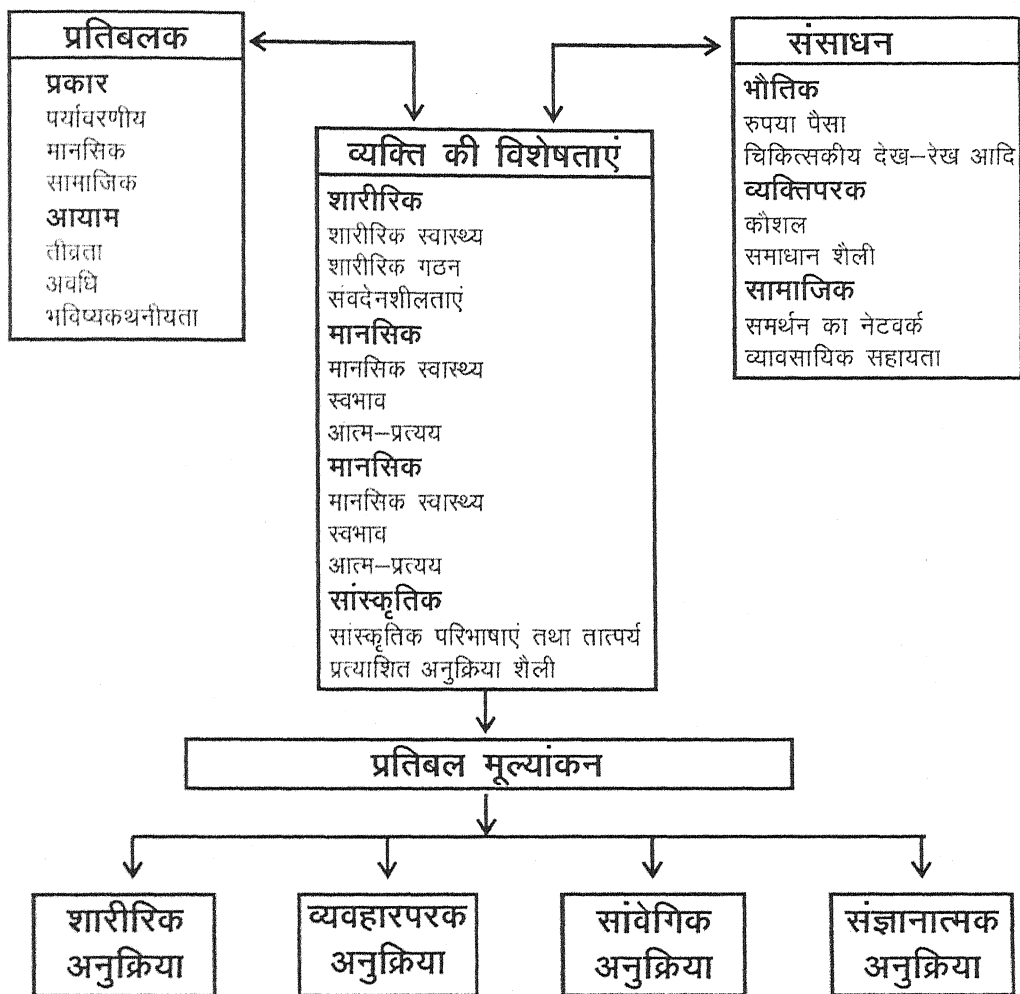
चित्र 1.01 : प्रतिबल की प्रक्रिया का सैद्धांतिक मॉडल

उददीपक घटनाओं में कई तरह की बाहय एवं आतरिक दशाएं सम्मिलित है, जिनका प्रत्यक्षीकरण व्यक्ति के स्वस्तिबोध के लिए खतरे के रूप में किया जाता है एवं समायोजित अनुक्रियाओं की आवश्यकता पड़ती है, ऐसी उददीपक घटनाओं को प्रतिबल कहते हैं।

समकालीन विश्लेषण के अंतर्गत प्रतिबल को एक प्रक्रम के रूप में स्वीकार किया गया है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि किन घटनाओं पर व्यक्ति विशेष रूप से ध्यान देता है तथा किस प्रकार से उसका मूल्यांकन अथवा व्याख्या करता है। प्रतिबल के प्रक्रम का वर्णन चित्र 1.01 मे किया गया

है। प्रतिबल वाली परिस्थिति के प्रति अनुक्रिया मुख्यतः इस बात पर निर्भर करती है कि किन घटनाओं पर आप विशेष ध्यान देते हैं एवं उनकी व्याख्या अथवा मूल्यांकन (appraisal) किस तरह करते हैं। दूसरे के लिए दैनिक जीवन की एक सामान्य घटना हो सकती है। यह प्रतिबल के स्वरूप, व्यक्ति की विशेषताओं तथा व्यक्ति के पास उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करती हैं। लेजारस ने मूल्यांकन के दो प्रकारों के बीच भेद किया है, ये हैं प्राथमिक तथा द्वितीयक। प्राथमिक मूल्यांकन घटना की प्रासंगिकता का प्रारंभिक मूल्यांकन होता है तथा यदि यह घटना प्रासंगिक है, तो व्यक्तिगत रूप से व्यक्ति के लिय खतरा पैदा करती है अथवा नहीं। जब एक घटना का आकंलन खतरा पैदा करने वाले (Harmful) अथवा प्रतिबलयुक्त घटना के रूप में करते हैं, तो उस स्थिति में आप द्वितीयक मूल्यांकन करते हैं जो स्वयं के संसाधनों तथा प्रतिबल के समाधान हेतु उपलब्ध विकल्पों का एक मूल्यांकन होता है। ये संसाधन मानसिक, शारीरिक, वैयक्तिक अथवा सामाजिक हो सकते हैं। एक व्यक्ति जो यह सोचता है कि उसकी अभिवृत्ति सकारात्मक है, वह स्वस्थ है, उसमें कौशल है तथा संकट की स्थिति का सामना करने के लिए सामाजिक समर्थन प्राप्त है, तो उसे अपेक्षाकृत कम प्रतिबल का अनुभव होगा। अकसर इस तरह के मूल्यांकन व्यक्तिनिष्ठ होते हैं और अनेक कारकों पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार का एक कारक प्रतिबल की दिशा में पहले किया गया प्रयास अथवा पूर्व अनुभव है। यदि व्यक्ति ने जीवन में पहले समान परिस्थितियों का सामना सफलतापूर्वक कर लिया हो, तो ऐसी स्थिति उसे अपेक्षाकृत कम भयावह प्रतीत होगी। दूसरा कारक यह है कि हम प्रतिबलपूर्ण घटना का प्रत्यक्षीकरण नियंत्रणयोग्य (controllable) अथवा अनियंत्रणयोग्य घटना के

रूप में करते हैं। एक व्यक्ति, जिसे यह विश्वास है कि वह ऋणात्मक स्थिति के आरंभ होते ही इसके विपरीत परिणामों को नियंत्रित कर सकता है, तो उसे अपेक्षाकृत कम प्रतिबल का अनुभव होगा, उनकी तुलना में जिन्हें इस प्रकार के नियंत्रण की अनुभूति नहीं होती है। इस प्रकार, प्रतिबल की अनुभूति एवं उसका परिणाम प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न–भिन्न होता है।

प्रतिबल के अंतर्गत उन सभी पर्यावरणीय एवं वैयक्तिक घटनाओं को सम्मिलित किया जाता है, जो व्यक्ति के स्वस्तिबोध के लिए खतरा अथवा चुनौती उत्पन्न करती हैं। प्रतिबल बाह्य, जैसे कि पर्यावरणीय (ध्वनि एवं वायु प्रदूषण), सामाजिक (एकाकीपन अथवा संबंध विच्छेद) अथवा मनोवैज्ञानिक (ग्लानि, कुंठा, द्वन्द्व, दबाव, आघात) आदि हो सकते हैं।

इन प्रतिबलों के कारण दैहिक, व्यवहारपरक, सांवेगिक एवं संज्ञानात्मक कई तरह की प्रतिबल अनुक्रियाएं हो सकती हैं। दैहिक स्तर पर प्रतिबल संबंधी व्यवहारों में उद्वेलन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हाइपोथैलमस की क्रिया दो तरह से आरंभ होती है। पहले मार्ग में स्वायत्त तंत्रिका तंत्र संलग्न होता है। एड्रिनल ग्रंथि द्वारा रक्त में अत्यधिक मात्रा में कैटेकोलेमाइन का स्राव होता है, जिसके कारण सामना अथवा पलायन (Fight-or-Flight) की अनुक्रिया में दैहिक परिवर्तन देखे जा सकते हैं। दूसरे मार्ग में पीयूष (Pituitary) ग्रंथि द्वारा कार्टिकोस्टेरायड का स्राव होता है, जो ऊर्जा प्रदान करता है। प्रतिबल की अनुभूति के समय, जो सांवेगिक अनुक्रियाएं होती हैं, उनके अंतर्गत भय, दुःख तथा नाराजगी होती है। प्रतिबल का सामना करते समय सांवेगिक उद्वेलन अवरोध उत्पन्न कर सकता है। व्यवहारपरक तथा संज्ञानात्मक अनुक्रियाओं के अन्तर्गत प्रतिबल के फलस्वरूप उत्पन्न अपेक्षाओं पर विजय

पाने, उन्हें कम तथा सहज करने के लिए प्रयुक्त समाधान युक्तियां अथवा सक्रिय प्रयास सम्मिलित हैं। लोगों द्वारा अनुभव किए जाने वाले प्रतिबल तीव्रता (निम्न बनाम उच्च) अवधि (अल्पकालिक बनाम दीर्घकालिक), जटिलता (कम बनाम अधिक) तथा पूर्वकथनीयता (अप्रत्याशित बनाम प्रत्याशित) के आधार पर अलग–अलग होते हैं। प्रतिबल का परिणाम इन विमाओं के सापेक्ष एक विशिष्ट प्रतिबलपूर्ण अनुभव की स्थिति पर निर्भर करता है। सामान्तया अत्यधिक तीव्र, दीर्घकालिक, जटिल तथा अप्रत्याशित प्रतिबल का परिणाम अपेक्षाकृत कम तीव्र, अल्पकालिक, कम जटिल तथा प्रत्याशित प्रतिबल की अपेक्षा अत्यधिक ऋणात्मक होता है। प्रतिबल का अनुभव मुख्यतः व्यक्ति की शारीरिक शक्ति पर निर्भर करता है। इस प्रकार, अपेक्षाकृत अस्वस्थ तथा क्षीण शारीरिक संरचना वाले व्यक्ति स्वस्थ एवं सुगठित संरचना वाले व्यक्तियों की तुलना में प्रतिबल का अधिक अनुभव करते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य, तापमान, तथा आत्म–प्रत्यय जैसी मनोवैज्ञानिक विशेषताएं भी प्रतिबल की अनुभूति के संदर्भ में प्रासंगिक हैं। वह सांस्कृतिक संदर्भ, जिसमें व्यक्ति रहता है, किसी भी घटना के अर्थ तथा विभिन्न परिस्थितियों में प्रत्याशित अनुक्रिया के स्वरूप को प्रभावित करता है। अंत में, व्यक्ति के संसाधनों द्वारा भी प्रतिबल का अनुभव प्रभावित होता है। ये संसाधन भौतिक जैसे–धन, औषधि, सुविधाएं तथा वैयक्तिक जैसे सामाजिक कौशल एवं प्रतिबल से निपटने में लोगों द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट समाधान युक्तियाँ हो सकती हैं। ये सभी कारक प्रतिबलपूर्ण परिस्थिति के मूल्यांकन को प्रभावित करते हैं।

प्रतिबल के स्रोत

चिकित्सा विज्ञान में किए गए अध्ययनों ने रोगों में प्रतिबल की भूमिका को प्रदर्शित किया है वास्तव में, स्वास्थ्य में जुड़ी विशेषताओं ने इस बात को स्वीकार किया है कि एक रोग का एक ही कारण हो सकता है, यह उपयुक्त नहीं है। प्रतिबल के विभिन्न स्रोत हैं जो हृदय की बीमारियों में पाए जाते हैं। प्रतिबल के कुछ प्रमुख स्रोत इस प्रकार हैं–

मानसिक आघात से संबंधित घटनाएं–

इसके अंतर्गत आग लगना, बंधक होना, किसी का खून होते हुए देखना आदि, विभिन्न उग्र परिस्थितयाँ आती हैं। वास्तव में, ऐसी घटनाओं का प्रभाव घटना के कुछ समय बाद प्रकट होता है। यह संभव है कि मानसिक आघात से जुड़ी घटना होने के एक महीने के बाद इसका प्रभाव पड़ें। पीड़ित व्यक्ति विषाद का अनुभव करने लगता है अथवा पूर्व अनुभवों के वीभत्स दृश्य उसके सामने आते हैं। कुछ पीड़ित लोगों को दुःस्वप्न (Night-mare) भी आने लगते हैं। इस प्रकार की मानसिक आघात वाली घटनाएं यदा–कदा घटित होती हैं।

जीवन की नई घटनाएं :

ऐसा देखा गया है कि जीवन में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव संचित होकर प्रतिबल को बढ़ाता है। पारिवारिक घटनाएं (जैसे–जीवनसाथी की मृत्यु, विवाह विच्छेद, विवाह), वैयक्तिक जीवन (जैसे–आवास परिवर्तन, खाने की आदतों में परिवर्तन, व्यक्तिगत आघात), कार्य (जैसे अवकाश ग्रहण करना, अधिकारी से कष्ट) तथा वित्त से संबंधित घटनाएं (जैसे–गिरवी रखना, आर्थिक स्थिति में अत्यधिक बदलाव) प्रतिबल पैदा करती हैं। इस

प्रकार की घटनाओं के वास्तविक प्रभाव की जानकारी तो नही होती है परंतु यह तय है कि ये घटनाएं भिन्न–भिन्न स्तर के प्रतिबल को बढ़ाती है।

उलझनें:

इसके अंतर्गत दैनिक जीवन में घटित होने वाली घटनाएं आती हैं। बच्चों को विद्यालय के लिए तैयार करना, उनके गृहकार्य को देखना, परिवार की देखभाल तथा विभिन्न प्रकार की आकस्मिक घटनाओं पर ध्यान देना, ऐसी घटनाएं हैं जिनका अनुभव गृहस्वामिनी द्वारा किया जाता है। इस प्रकार के कई कार्य हमारे दैनिक जीवन में लगातार उलझनें उत्पन्न करते हैं और जीवन में निराशा भर देते हैं जिसे बाहरी व्यक्तियों द्वारा नहीं समझा जा सकता है।

प्रतिबल के प्रकार

जिस तरह के प्रतिबलयुक्त अनुभवों का सामना व्यक्ति को करना पड़ता है, उनके व्यापक क्षेत्र के आधार पर प्रतिबलों का वर्गीकरण किया जा सकता है। इस प्रकार प्रतिबल मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं : पर्यावरणीय, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक। यह विभाजन विश्लेषण के उद्देश्य से किया गया है। वास्तव में सभी प्रकार के प्रतिबल एक–दूसरे से अंतर्संबंधित होते हैं।

पर्यावरणीय प्रतिबल

ये प्रतिबल अत्यधिक तीव्रता वाले होते हैं। उदाहरण के लिए भूचाल, बाढ़ तथा आग इत्यादि अचानक घटित होते हैं तथा बड़े ही व्यापक प्रभाव वाले होते हैं। इनकी आरंभिक अनुक्रिया सार्वभौमिक होती है। इन्हें विध्वंसक घटनाएं अथवा आपदाएं कहते हैं। ये एक ही समय में अनेक लोगों को

प्रभावित कर सकते हैं तथा इनका प्रभावशाली ढंग से सामना करने के लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता होती है। दूसरे प्रकार के पर्यावरणीय प्रतिबल इस प्रकार की घटनाएं हो सकती हैं जिनका सभी लोगों पर एक ही तरह का प्रभाव पड़ता है, परंतु व्यक्ति इनके प्रति अलग–अलग ढंग से अनुक्रिया करते हैं। इसके अंतर्गत पर्यावरणीय प्रदूषण, भीड़ एवं औद्योगिक ध्वनि प्रदूषण इत्यादि सम्मिलित हैं, जिसे सभी जानते हैं तथा स्वास्थ्य पर इसके ऋणात्मक प्रभाव का अनुमान लगाया जा सकता है।

सामाजिक प्रतिबल

सामाजिक घटनाएं अथवा दशाएं; जैसे–परिवार में किसी की मृत्यु अथवा बीमारी, विवाह–विच्छेद, तनावपूर्ण संबंध, अलगाव तथा प्रतिकूल पड़ोसी आदि सामाजिक प्रतिबल के उदाहरण हैं। इनमें से अधिकांश जीवन के प्रमुख प्रतिबल होते हैं, जो व्यक्ति को उसके जीवन के विभिन्न अवसरों पर प्रभावित करते हैं। जीवन में इनके अनुभवों को लेकर लोगों में भिन्नता पाई जाती है। कुछ लोग स्वास्थ्य की गंभीर समस्याओं से ग्रस्त होते हैं तथा उन्हें दीर्घकालिक समायोजन के बारे में सोचना पड़ता है, जबकि दूसरे व्यक्तियों के लिए प्रतिबल एक विशेष कालखंड में घटित होने वाली घटना होती है।

कुछ प्रतिबल ऐसे होते हैं जो चिड़चिड़ापन पैदा करते हैं तथा इन्हें दैनिक उलझनें कहते हैं। ये प्रतिदिन के जीवन में घटित होती हैं। इन घटनाओं अथवा दशाओं का अनुभव प्रतिबल के रूप में केवल उन्हीं के द्वारा किया जाता है जिनके साथ ये घटित होती हैं। दूसरे उनका अनुभव नहीं करते हैं। जब किसी व्यक्ति के जीवन में इस तरह की घटनाएं अनवरत लंबे समय तक होती रहती हैं, और व्यक्ति इनको दूर नहीं कर पाता तब उसे

अधिक हानि होती है।

मनोवैज्ञानिक प्रतिबल

ये वैयक्तिक होते हैं तथा इनका अनुभव एक मात्र व्यक्ति विशेष ही करता है, इसलिए इन्हें प्रतिबल के आंतरिक स्रोत के रूप में स्वीकार किया जाता है। प्रतिबल के आंतरिक स्रोत कई हो सकते हैं, जिसके अंतर्गत कुंठा, द्वंद तथा तनाव आदि महत्वपूर्ण हैं।

कुंठा

जब हमारी आवश्यकताओं तथा प्रेरणाओं में किसी कारण अवरोध उत्पन्न हो जाता है और हम अपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते हैं, तो कुंठा पैदा होती है। उदाहरण के लिए, एक युवक जो विद्यालय की एक पार्टी में हिस्सा लेना चाहता है, उसके लिए अत्यधिक पाबंदी वाले माता–पिता, कुंठा के स्रोत हो सकते हैं। मरूस्थल में रहने वाले व्यक्ति के लिए पानी की कमी कुंठा का एक कारण हो सकती है। कुंठा अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण एवं असंगत हो सकती है अथवा यह हमारे स्वस्तिबोध के लिए विशेष खतरा पैदा कर सकती है। व्यापक पर्यावरणीय अवरोध के कारण कुंठा पैदा हो सकती है। इसके अंतर्गत दुर्घटना अर्न्तवैंयक्तिक क्षति, किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु आदि सम्मिलित हैं। सामाजिक भेदभाव एंव समाज के गरीब लागों के प्रयासों में आने वाली बाधाएं भी इसके अंतर्गत आ सकती हैं।

द्वन्द्व

रुचि एवं प्रेरणा के बीच द्वंद्व के कारण प्रतिबल उत्पन्न हो सकता है आपको एक नौकरी मिल रही हो, जिसे आप करना चाह रहे हैं और उसी समय आप अपना अध्ययन भी करना चाहते हैं। द्वंद्व उपागम–परिहार,

उपागम–उपागम अथवा परिहार–परिहार की श्रेणियों के हो सकते हैं, जिसमें निर्णय करने में व्यक्ति तनाव का अनुभव कर सकता है। परिवार के अंदर अथवा बाहर, मूर्त तथा अमूर्त पुरस्कार को लेकर दूसरे व्यक्तियों से अंर्तद्वंद हो सकता है। मूल्यों के बीच भी द्वंद्व हो सकता है, यदि आपको अपने मूल्यों के विरूद्ध कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़े। एक विशिष्ट समूह के सदस्य होने के कारण भी आपको द्वंद्व का अनुभव हो सकता है। उदाहरण के लिए एक सामाजिक समूह के सदस्य होने के कारण भी द्वंद्व हो सकता है। क्योंकि व्यक्ति में असुरक्षा एवं वंचन का अनुभव हो सकता है।

दबाव

सामाजिक तथा अन्य दूसरे प्रकार के दबाव, जिसका हम नित्यप्रति जीवन में अनुभव करते हैं, प्रतिबल का तीसरा स्रोत है। कुंठा के समान ही दबाव भी आंतरिक अथवा बाह्य स्रोतों से उत्पन्न होता है तथा हमारी प्रत्याशाओं एवं जीवन के लक्ष्यों के आस–पास केंद्रित हो सकता है। अनेक लोग निर्दयतापूर्वक इन लक्ष्यों को पाने के लिए प्रेरित होते हैं तथा वास्तविकता से परे विलासितापूर्वक जीवनयापन की कोशिश करते हैं। आज की प्रतिस्पर्धा से भरी दुनिया में, प्रत्येक व्यक्ति अधिक उत्पादन करने के दबाव में है तथा अतिरिक्त समय तक कार्य करता है। आज जिस दुनिया में हम रहते हैं, उसमें अवसर तथा चयन की अधिकता है तथा व्यक्ति अपनी उपलब्धियों को बढ़ाने के लिए निरंतर दबाव में है। आज के तेजी से बदलते संसार में नई वास्तविकताओं एवं चुनौतियों से अपना समायोजन करने के लिए व्यक्ति लगातार दबाव का अनुभव करता है। इनके कारण सांवेगिक अस्थिरता बनी रहती है।

शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने के लिए प्रतिबल का बहुत उग्र होना आवश्यक नहीं है। यदि प्रतिबल निम्न तीव्रता का हो परंतु अत्यधिक समय तक बना रहे (दीर्घकालिक प्रतिबल), तो वह स्वास्थ्य को अत्यधिक हानि पहुँचा सकता है। गरीबी, बेरोजगारी, तनावपूर्ण संबंध, अमित्रवत सहकर्मी तथा गठिया आदि कुछ दीर्घकालिक प्रतिबल के उदाहरण हैं। यह सदैव सत्य नहीं है कि साधारण स्तर के प्रतिबल साधारण स्तर का ही तनाव उत्पन्न करें। कई शोधों में यह पाया गया है कि दैनिक जीवन की उलझनें व्यक्ति के स्वास्थ्य को गंभीर क्षति पहुँचाती हैं। नित्य प्रति की उलझनें; जैसे–स्कूल बस का छूट जाना, आपके अभिवादन को न स्वीकार करना अथवा प्रत्युत्तर न देना, रात के समय का कोलाहल आदि साधारण स्तर के उत्तेजक हैं, लेकिन इनका एकत्रित परिणाम उच्च प्रतिबलयुक्त घटनाओं की तुलना में अधिक होता है।

प्रतिबल युक्त जीवन घटनाओं का एक मापक

प्रतिबल से जुड़े शोध में अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि लोग जिस स्तर के प्रतिबल का अनुभव करते हैं, उसका किस तरह पता लगाया जाए, मनोवैज्ञानिकों ने इस प्रकार की मापनियों का विकास किया है, जिसकी सहायता से व्यक्ति के प्रतिबल के स्तर को जान सकते हैं।

दो मनोवैज्ञानिकों होल्म्स तथा राहे ने इस दिशा में एक प्रयास किया। इन्होंने प्रतिबल के लिए जीवन घटना मापनी (Life Events Scale) का निर्माण किया। व्यक्ति द्वारा अनुभव किए जाने वाले 43 जीवन परिवर्तनों को समाहित करते हुए एक स्व–मूल्यांकन प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रत्येक जीवन परिवर्तन के लिए उसकी गंभीरता को ध्यान में रखते हुए एक अंक प्रदान

किया गया। उदाहरण के लिए, पति या पत्नी की मृत्यु के लिए 100, विवाह–विच्छेद के लिए 73, वैयक्तिक बीमार अथवा खतरे के लिए 53 जीवन परिवर्तन इकाइयों का उपयोग किया गया है। धनात्मक तथा ऋणात्मक दोनों ही तरह की घटनाओं को लिया गया। इसमें यह माना गया कि दोनों ही तरह के परिवर्तन प्रतिबल पैदा करते हैं। व्यक्ति से यह पूछा जाता है कि इनमें से कितने जीवन परिवर्तनों का विगत वर्ष में उसने अनुभव किया है।

व्यक्ति के लिए प्रतिबल का अंक चिह्नित पदों के लिए निर्धारित अंकों का योग होता है।

उनकी मापनी के कुछ नमूने के पद इस प्रकार हैं:

जीवन घटनाएं	मूल्य
परिवार के नजदीकी सदस्य की मृत्यु	100
विवाह	63
परिवार के सदस्य के स्वास्थ्य में परिवर्तन	44
कार्य के दायित्व में परिवर्तन	29
अधिकारी से कष्ट	20
सोने की आदतों में बदलाव	16
छुट्टियाँ	13

होल्म्स तथा राहे द्वारा विकसित यह मापनी अत्यधिक प्रचलित हुई तथा बाद के वर्षों में 400 से अधिक इसी तरह की मापनियों का विकास किया गया। व्यक्ति के प्रतिबल स्तर की जानकारी करने के लिए इसे अत्यधिक उपयोगी पाया गया। इससे प्राप्त प्रदत्तों का उपयोग व्यक्ति की कार्य क्षमता तथा मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए

किया जा सकता है। मानसिक स्वास्थ्य केवल अनुभव किए हुए प्रतिबल के स्तर पर नहीं निर्भर करता है, अपितु व्यक्ति के पास उपलब्ध समाधान संसाधनों पर ज्यादा निर्भर करता है।

प्रतिबल का समाधान

व्यक्ति के द्वारा अनुभव किए हुए प्रतिबल से निपटने की प्रक्रिया को समाधान कहते हैं। लोग प्रतिदिन के जीवन में आने वाले प्रतिबलकों का सामना कई तरह से करते हैं। लोग एक ही प्रतिबल के प्रति अलग–अलग अनुक्रिया करते हैं। दैनिक जीवन में आने वाले प्रतिबलकों के प्रति लोग कैसे प्रतिक्रिया करते हैं? यह आश्चर्यजनक है कि उच्च तथा निम्न तीव्रता वाले सभी प्रतिबलक, जो व्यक्ति के सामने आते हैं, व्यक्ति उनसे हार नहीं मानता। प्रतिबलों का प्रभावशाली ढंग से सामना करने के लिए व्यक्ति अपने आंतरिक एवं बाह्य परिवेश की बारीकी से जाँच करता है ताकि यह देख सके कि किस प्रकार के अवसर अथवा खतरे उपस्थित हो सकते हैं। साथ ही साथ इन परिवर्तनों से समायोजन के लिए नए कौशल सीखता है। आशावादिता, कर्मठता तथा अनासक्ति जैसी व्यक्तित्व विशेषताएं प्रतिबल के प्रति अनुक्रिया को सहज बनाती हैं।

सामान्यतया जब हमें समायोजन की नई अपेक्षाओं की जानकारी मिलती है, तो सबसे पहले हम उसे परिभाषित करते हैं तथा भय के स्तर का मूल्यांकन करते हैं। यह आवश्यक है कि व्यक्ति समस्या का ठीक–ठीक वास्तविक रूप से मूल्यांकन करे। समस्या तथा इससे होने वाले खतरे के स्तर को परिभाषित करने के बाद इसके संदर्भ में क्या करना चाहिए, इसका निर्धारण करना दूसरा चरण होता है। इसके अंतर्गत कार्य के नए–नए

विकल्पों का निर्माण कर उसमें से सर्वोत्तम विकल्प के निर्धारण के माध्यम से समस्या का समाधान संभव हो सकता है। समाधान हेतु कुछ अनुक्रियाएं व्यक्ति के द्वारा बिना प्रयास किए ही स्वयं सक्रिय हो जाती हैं। इन्हें अस्तित्व बनाए रखने वाले क्रियातंत्र का एक हिस्सा मान सकते हैं तथा इन्हें अंतर्निहित प्रतिक्रियाएं भी कह सकते हैं। ये अपने आप या स्वतः सक्रिय हो जाती हैं, जब भी व्यक्ति के अस्तित्व को खतरा पैदा होता है। इनमें से कुछ अनुक्रियाएं संतुलन की अवस्था बनाए रखने के लिए दैहिक तथा मनोवैज्ञानिक परिवर्तन के रूप में होती हैं। रोना एक ऐसी ही अनुक्रिया का उदाहरण है। सांवेगिक तनाव तथा दर्द को कम करने में यह उपयोगी पाया गया है। यह बच्चों में ज्यादा देखा जाता है परंतु तनाव और दुःख को कम करने के लिए प्रौढ़ों में भी यह अक्सर देखा जाता है। उच्चस्तरीय मानसिक आघात वाली घटनाओं के उपस्थित होने पर व्यक्ति द्वारा पराजित होकर सो जाना भी ऐसी ही अनुक्रिया का उदाहरण है।

समाधान में प्रयुक्त अनुक्रियाओं को मोटे तौर पर तीन मुख्य श्रेणियों में रखा जा सकता है। ये हैं: कार्योन्मुख (Task Oriented), संवेग–केंद्रित (Emotion focused) तथा आत्म–रक्षात्मक (Ego-defensive)

कार्योन्मुख प्रतिक्रियाएं : अभियोजन की अपेक्षाओं का वास्तविकता के साथ सामना करना ऐसी प्रतिक्रियाओं का प्रमुख उद्देश्य है। ये प्रतिबल दशाओं के वस्तुनिष्ठ आकलन पर आधारित होती हैं तथा इसके साथ ही साथ इस स्थिति में की गई क्रियाएं जानबूझकर, तार्किक तथा रचनात्मक होती हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति इन क्रियाओं के अंतर्गत स्वयं अपने में, अपने परिवेश में अथवा दोनों में स्थिति को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन

करता है। यह क्रिया प्रत्यक्ष (जैसे–अपने पढ़ने की आदत में सुधार करना) या अप्रत्यक्ष (जैसे–अपनी प्रत्याशा को कम करना या अपनी अभिवृत्ति में परिवर्तन लाने की) हो सकती है। इन प्रतिक्रियाओं के अंतर्गत व्यक्ति समस्या का मुकाबला कर सकता है, इससे अपने आपको अलग कर सकता है अथवा काम चलाने के लिए समझौता कर लेता है। प्रतिबल द्वारा उत्पन्न किए गए खतरे का मूल्यांकन, व्यक्ति के पास उपलब्ध समाधान संसाधनों का मूल्यांकन तथा इसके आधार पर बाधाओं, को दूर करने अथवा समस्या के स्रोत को ही दूर करने का प्रयास किया जाता है। लोग सामाजिक समर्थन जुटाकर योजनाबद्ध रूप से समस्या का समाधान करते हैं। इस प्रकार की समाधान युक्तियाँ जब व्यक्ति के संसाधनों तथा प्रतिबल स्थितियों के लिए उपर्युक्त होती है तो अक्सर प्रतिबल का अच्छी तरह से सामना करने में प्रभावशाली होती हैं।

जब समस्या से मुकाबला करने की युक्ति काम नहीं कर पाती तब यह लगता है, कि स्थिति पर नियंत्रण नहीं किया जा सकता अथवा हम इसका सामना नहीं करना चाहते। ऐसी स्थिति में प्रतिबलयुक्त स्थिति दूर हो जाना अथवा अपने को अलग कर लेना अपेक्षाकृत अच्छा विकल्प होता है। हम अपने आप को वहाँ से हटा लेते हैं अथवा समस्या का सामना करने का परिहार करते हैं। उदाहरण के लिए, हम एक नीरस तथा बिना लाभ वाली नौकरी से अपने आपको अलग कर अपेक्षाकृत उपयुक्त नौकरी की खोज कर सकते हैं। वास्तव में स्थिति बहुत ही जटिल हो सकती है, जैसा कि व्यक्ति एक ऐसे प्रेम संबंध में परास्त हो जाए, जिसमें वह बहुत ही गहराई से जुड़ा हो। दूसरे उदाहरण में, इस प्रकार की स्थितियाँ जिन्हें हम खतरनाक अथवा

डरावना समझते हैं उनका पहले ही अनुमान लगाकार उसका परिहार कर सकते हैं। इस प्रकार के व्यवहार उन विद्यार्थियों में अक्सर देखे जाते हैं, जो जिस पाठ्यक्रम को जटिल समझते हैं, उन्हें नहीं पढ़ना चाहते।

समझौता के अंतर्गत हम अपने आप में परिवर्तन लाते हैं। इसका सहारा तब लेते हैं, जब प्रतिबल की दशा में परिवर्तन संभव नहीं होता। जिस परिस्थिति में किसी प्रकार का बदलाव नहीं लाया जा सकता, उसके साथ हमें ऐसा ही करना पड़ता है। प्रतिस्थापन (Substitution) तथा अनुकूलन (Accommodation) दो सहज प्रकार की समझौता वाली प्रतिक्रियाएं हैं। प्रतिस्थापन के अंतर्गत, जिन लक्ष्यों को हम प्राप्त कर सकते हैं उन्हें स्वीकार करते हुए प्रतिबल को कम करने की कोशिश की जाती है। उदाहरणार्थ, एक व्यक्ति जो कई नौकरियों को अस्वीकार करता जाता है, अंत में अपेक्षाकृत कम आकर्षक नौकरी को स्वीकार कर लेता है। अनुकूलन का तात्पर्य ऐसे समझौते से है, जिसमें हम जो चाहते हैं उसके एक अंश मात्र को स्वीकार कर लेते हैं। यह दी हुई परिस्थिति में जो कुछ भी उपलब्ध है, उसे ही स्वीकार करने जैसा है।

संवेग–केंद्रित समाधानः यहाँ पर आत्मनियंत्रण तथा संवेग के नियमन पर विशेष बल दिया जाता है। उदाहरण के लिए चिंता, कुंठा, नाराजगी तथा अन्य सांवेगिक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करना अथवा इन संवेगों में परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है। पहले से ही अपने आप को तैयार करने के लिए प्रतिबलयुक्त घटनाओं के हानिकारक परिणामों अथवा दुष्प्रभावों के बारे में लोग पहले सोचते हैं। यह समस्या समाधान का एक उपागम न होकर उपचार जैसा होता है। संवेग–केंद्रित समाधान का उद्देश्य भय पैदा करने वाले उद्दीपन की उपस्थिति में भी प्रतिबल के सांवेगिक प्रभाव को कम करते

हुए बेतहर महसूस करना है। तनाव से मुक्त होने के लिए व्यक्ति शराब अथवा प्रशामक औषधियों (Tranquilisers) का उपयोग करता है, जिसमें अस्थायी रूप से तनाव से मुक्ति मिल जाती है। मनुष्य इस तरह की तनावपूर्ण स्थिति से दूरी बनाए रखने के लिए अथवा उससे अलग होने के लिए किसी समारोह (पार्टी) में चला जाता है, सिनेमा देखने जाता है अथवा टेलीविजन देखने लगता है। कुछ लोग भय की स्थिति में सीटी बजाते हैं अथवा हँसते हैं। जब उन्हें चिंता होती है, तब अधिक भोजन कर लेते हैं और असहाय महसूस करने पर दिवास्वप्न देखा करते हैं। इस प्रकार के संवेग–केंद्रित समाधान से समस्या का हल तो नहीं होता, लेकिन विपरीत परिणामों को सुलझाने में सहायता मिलती है। प्रतिबलयुक्त स्थिति का पुनर्मूल्यांकन तथा जिम्मेदारियों को स्वीकार करने से प्रतिबल के समाधान में सहायता मिलती है।

आत्म–रक्षात्मक समाधान

इस प्रकार के समाधान में व्यक्ति मूलरूप से इस बात का प्रयास करता है कि वह अपने आपको सांवेगिक क्षति तथा आत्म अवमूल्यन से बचाए। सामान्यतः इस प्रकार की अनुक्रियाओं से व्यक्ति सीखता है, परंतु इनका संचालन अचेतन स्तर पर तथा आदत पड़ जाने के कारण होने लगता है। व्यक्ति तर्कसंगत व्याख्या, प्रक्षेपण, दमन, विस्थापन, भ्रांति तथा वास्तविकता को अस्वीकार करने के द्वारा अपने आपको धोखा देता हैं तथा वास्तविकता का वर्णन तोड़–मरोड़ कर करता है। वास्तव में, प्रतिबल स्थिति का सामना करते समय इन प्रतिक्रियाओं का अनुकूलन नहीं होता है। अधिकांश आत्म–रक्षात्मक प्रतिक्रियाओं का मूल उद्देश्य असफलता को लचीला बनाना अथवा अलग करना, चिंता को कम करना, सांवेगिक क्षति की प्रतिपूर्ति करना

तथा योग्यता को बनाए रखना है।

प्रतिबल एवं स्वास्थ्य

अनेक विद्यार्थी परीक्षा काल के दौरान बीमार पड़ जाते हैं। जैसे ही परीक्षा नजदीक आती है, ऐसे लोग बार–बार पेट की गड़बड़ी, बुखार, शरीर दर्द तथा मरोड़ आदि की शिकायत करते हैं। जो लोग अपने व्यक्तिगत जीवन में अप्रसन्न हैं, अपेक्षाकृत उनकी तुलना में अधिक बीमार पड़ते हैं, जो प्रसन्न रहे हैं और जिनका जीवन खुशहाल है। मस्तिष्क तथा शरीर के बीच गहरा रिश्ता होने के कारण, जब प्रतिबल देर तक बना रहता है, तो यह शारीरिक स्वास्थ्य तथा मनोवैज्ञानिक सक्रियता को भी प्रभावित करता है। दैनिक जीवन के कार्यों में भी व्यक्ति के सोचने–समझने तथा कार्य करने की क्षमता दीर्घकालिक प्रतिबल के कारण बाधित हो जाती है। व्यक्ति जहाँ कार्य करता है, वहाँ यदि मांग अधिक है तो व्यक्ति अत्यधिक थकान का अनुभव करता है। साथ ही साथ उसमें कुछ अभिवृत्ति से संबंधित समस्याएं भी आ जाती हैं। शारीरिक क्षीणता के अंतर्गत देर तक रहने वाली थकान, कमजोरी तथा ऊर्जा की कमी को लिया जा सकता है। मानसिक क्षीणता अथवा परिश्रांति के अंतर्गत चिड़चिड़ापन, निराशा, असहायता तथा अंधी गली में होने का अनुभव होता है। शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक क्षीणता की इस अवस्था को तकनीकी रूप से बर्नआउट (Burnout) कहा जाता है। यह मुख्य रूप से प्रतिबल से जुड़े जटिल तथा अनवरत कार्य करने से होता है। ऐसा जीवन के अन्य अनुभवों के कारण भी हो सकता है। उदाहरण के लिए परिवार के एक गंभीर रूप से बीमार सदस्य की देखभाल करने वाले बार–बार अत्यधिक थकान का अनुभव करते हैं। विशेष रूप से ऐसे परिवारों में जहाँ पर

शारीरिक, मानसिक अथवा स्नायविक रूप से बीमार अथवा चुनौतीपूर्ण बालक हों।

इस क्षेत्र में किए गए शोध में यह देखा गया है कि जीवन में घटित होने वाली दुःखद घटनाओं; जैसे—प्राकृतिक आपदा (भूचाल तथा बाढ़), परिवार में मृत्यु, बेरोजगारी, परीक्षा में असफलता आदि के कारण लोगों में मानसिक, शारीरिक तथा मनोदैहिक बीमारियां अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में पाई जाती हैं। जब लोगों को अवांछित, अनिश्चित तथा भय की स्थिति में अधिक दिन अथवा समय तक रहना पड़ता है और जब ऐसी दशाओं को बदलने के सारे प्रयास असफल हो जाते हैं, तब ऐसी दशा में व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

हेंस सेली ने प्रतिबल के दैहिक परिणामों की व्याख्या करने के लिए सामान्य अनुकूलन संलक्षण (General Adaptation Syndrome GAS) प्रस्तावित किया है। यह प्रतिबल के प्रति अनुक्रियाओं का तीन चरणों वाला एक सैद्धांतिक मॉडल है। इसमें से पहला चेतावनी संकेत (Alarm Reaction) है। इसके अंतर्गत प्रतिबलक अथवा अहितकर उद्दीपक की उपस्थिति का अनुभव होता है। यहाँ पर व्यक्ति अपने आपको प्रतिबलक का प्रतिरोध करने के लिए तैयार करता है। जैसे ही शरीर खतरे का सामना करने हेतु अपने को तैयार करता है, एड्रिनल की सक्रियता तथा हृदय एवं रक्तवाही नलिकाओं एवं श्वसन की क्रियाओं में वृद्धि हो जाती है। दूसरे चरण को प्रतिरोध (Resistance) कहते हैं। यह वह अवस्था होती हैं, जब प्रतिबलक का सामना करने के लिए शरीर में उपलब्ध सुरक्षित ऊर्जा सक्रिय होती है तथा उपयुक्त अभियोजन स्थापित करती है। इस अवस्था में प्रतिबलक का लगातार प्रतिरोध

होता है तथा अन्य उद्दीपनों के प्रति अनुक्रियाओं में कमी आती है। उदाहरण के लिए, जब विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी कर रहे होते हैं तो उस समय उनके आस–पास क्या हो रहा है, इस पर ध्यान दे नहीं पाते हैं। जब इसी तरह की अनुक्रियाएं कई बार की जाती हैं। अनवरत समस्याओं के कारण देर तक बनी रहती हैं तो व्यक्ति में अपूरणीय शारीरिक क्षति होने का खतरा बढ़ जाता है। यह तीसरी अवस्था होती है जिसे परिश्रांति (Exhaustion) की अवस्था कहते हैं। यह वह अवस्था होती है, जिसमें शरीर की आरक्षित शक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं तथा व्यक्ति इसके बाद प्रतिबलक का प्रतिरोध करने की स्थिति में नहीं होता है। इसके कारण व्यक्ति में दैहिक लक्षण दिखने शरू हो जाते हैं तथा कुछ लोगों में जटिल बीमारियाँ हो सकती हैं।

लगातार प्रतिबल के अनुभव के कारण अनेक शारीरिक परिवर्तन एवं अत्यधिक मात्रा में अंतः स्रावी ग्रंथियों से रसायनों का स्राव होने लगता है। एक ऐसी प्रतिबलक परिस्थिति की कल्पना करें जिसमें एक साँप आपके रास्ते को पार कर रहा हो। ऐसी स्थिति में आपका तंत्रिकातंत्र उद्वेलित हो जाते हैं और सांस तेजी से चलने लगती है। ये सभी खतरे का सामना करने के लिए तैयार करते है। खतरे को देखकर जैसे ही आप सांवेगिक रूप से उद्वेलित होते हैं वैसे ही आपका शरीर अपने सारे संसाधनों को संचालित कर देता है। प्रतिबल की स्थिति में शारीरिक क्रियाशीलता को बनाए रखने के लिए अंतःस्रावी ग्रंथियों का स्राव बढ़ जाता है। नाराजगी भय तथा दुःख जैसे संवेगों के कारण शरीर इस तरह सक्रिय होता है ताकि संचित ऊर्जा प्रयोग किए जाने योग्य संसाधनों में परिवर्तित हो जाती है। इस प्रकार की संचित ऊर्जा में लंबे समय तक कमी के कारण वृद्धि (growth) तथा सुधार के कार्य

बाधित हो जाते है। यही कारण है कि लंबे समय तक बना रहने वाला प्रतिबल संपूर्ण शारीरिक ऊर्जा को समाप्त कर देता है तथा विभिन्न तंत्रिकाओं की क्षमता को नुकसान पहुँचाता है।

इस बात के भी अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं कि प्रतिबल से जुड़ी ऋणात्मक; जैसे– दुःख तथा विषाद शरीर की प्रतिरक्षण क्षमता को प्रभावित करते हैं जिसके फलस्वरूप व्यक्ति में कई तरह की बीमारियों की संभावना बढ़ जाती है। प्रतिरक्षण प्रणाली बैक्टीरिया वाइरस फंजाई तथा परजीवी जिन्हें प्रतिजन (Antigen) कहते हैं से हमारे शरीर की रक्षा करती हैं। प्रतिरक्षण प्रणाली का प्रमुख कार्य इन प्रतिजनों को पहचान कर उन्हें व्यर्थ या शक्तिहीन करते हुए शरीर से उन्हें हटाना अथवा अलग करना होता है। इस प्रकार के कार्य जिन कोशिकाओं द्वारा किए जाते हैं, उनकी उत्पत्ति लसिका अंगों (lymph organs) तथा अस्थि–मज्जा (bone marrow) में होती है। इन्हें लसिकाणु अथवा लसिका ग्रंथि (Lymphocytes) कहते है। ये सफेद रंग की रक्त कोशिकाएं होती हैं, जिन्हें टी–कोशिका, बी–कोशिका तथा एन–कोशिका कहते हैं। ये शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को संचालित करने के लिए प्रतिजन पैदा करती हैं, जो रक्त पर आक्रमण करने वाले सूक्ष्म जीवों को नष्ट कर देते हैं। प्रतिरक्षा–प्रणाली के प्रभाव को प्रतिरक्षण सामर्थ्य कहते हैं। प्रतिरक्षा प्रणाली के कमजोर हो जाने पर व्यक्ति में कई तरह की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। प्रतिबल तथा बीमारी के बीच संबंध स्थापित करने वाले शोधों के अंतर्गत इसे कौतूहलजनक क्षेत्र के रूप में माना जा रहा है।

लेजारस का विचार है, प्रतिबल अधिकतर इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति प्रतिबल का मूल्यांकन किस तरह करता है। जब तक व्यक्ति

परिस्थिति को भयावह नहीं समझता, तब तक उसे प्रतिबल का अनुभव नहीं होता है। शरीर के प्रतिरक्षण को प्रतिबल किस तरह प्रभावित करता है, इसे कई कारक प्रभावित करते हैं। जिन प्रतिबलों पर व्यक्ति का नियंत्रण नहीं होता वे नियंत्रित प्रतिबलों की अपेक्षा अधिक ऋणात्मक प्रभाव पैदा करते हैं। निराश लोगों में संक्रामक बीमारियों की संभावना बढ़ जाती है तथा एक बार बीमार पड़ने पर स्वास्थ्य लाभ अपेक्षाकृत धीमी गति से होता है। इस प्रक्रिया में सामाजिक तथा सांवेगिक समर्थन के कारण भी बहुत अंतर पड़ता है। बीमार पड़ने पर जिनके मित्र तथा परिवार देख–रेख करने वाले होते हैं, उन्हें स्वस्थ होने में अपेक्षाकृत कम समय लगता है।

व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएँ प्रतिबलयुक्त घटनाओं के प्रभाव में मध्यस्थता करती हैं। ऐसा एक कारक़ व्यक्ति का आशावादी (optimist) होना है। अच्छे अथवा धनात्मक परिणाम की प्रत्याशा एक सामान्य प्रवृत्ति है। आशावादी व्यक्ति कार्योन्मुख अथवा समस्या–केंद्रित समाधान युक्तियों का अधिक उपयोग करते हैं। वे अधिक मात्रा में सामाजिक समर्थन जुटाने का प्रयास करते हैं अथवा प्रतिबलपूर्ण घटना के सकारात्मक पहलुओं पर विशेष बल देते हैं। निराशावादी व्यक्ति प्रतिबल का सामना करने में अक्सर उसे छोड़ देते हैं अथवा उसे नकार देते हैं। दृढ़ता (Hardiness) दूसरी व्यक्तित्व विशेषता है, जो प्रतिबल के प्रतिकूल प्रभाव को कम करने में सहायता करती है। दृढ़ व्यक्ति में वचनबद्धता, चुनौती तथा नियंत्रण की क्षमता होती है। प्रतिबल–प्रतिरोध (stress resistance) से इसका घनिष्ठ संबंध होता है। जो लोग अधिक साहसी होते हैं, वे अपेक्षाकृत कम बीमार पड़ते हैं। अनासक्ति व्यक्तित्व की तीसरी विशेषता है। यह एक ऐसी मानसिक अभिवृत्ति है,

जिसके कारण व्यक्ति परिणामों के बारे में अधिक चिंतित नहीं होता। यह एक प्रकार की मानसिकता है, जिसमें व्यक्ति प्रतिबलपूर्ण घटनाओं के प्रति सांवेगिक अनुक्रिया न कर धैर्य से काम लेता है। अध्ययनों में यह परिणाम पाया गया है कि जो लोग अनासक्त होते हैं, तनाव का कम अनुभव करते हैं, साथ ही साथ उनमें मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य की कम समस्याएं आती हैं। इस समय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिबल प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

जीवन शैली एवं स्वास्थ्य

वास्तव में, औषधि–विशेषज्ञों के अनुसार प्रतिबल तथा व्यक्ति के स्वास्थ्य के बीच गहरा सम्बन्ध है। प्रतिबल के कारण हृदय की बीमारी, उच्च रक्तचाप तथा अन्य बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। प्रतिबल के इन प्रभावों को देखते हुए कभी–कभी आश्चर्य होता है कि कुछ लोग कैसे 100 वर्ष से भी अधिक समय तक जीवित रहते हैं। आहार, जैविक प्रभाव, अनवरत अभ्यास, पारिवारिक स्थायित्व तथा व्यक्तित्व विशेषताओं की दीर्घायु तथा अच्छे स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस बात के पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध हैं कि लोग एक ऐसी जीवन शैली अपनाकर अपने को दीर्घायु कर सकते हैं, जिसमें संतुलन, कम चर्बी वाली खुराक, नियमित परिश्रम तथा जीवन में बाद के वर्षों में अनवरत क्रियाशीलता सम्मिलित हों।

लोग अलग–अलग शैली तथा आदत विकसित कर लेते हैं, जिसमें से कई स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं। मनुष्य स्वयं में अपना शत्रु होता है तथा ऐसे अनेक कार्य करता है, जिसका उसके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कुछ लोग यह जानते हुए भी कि उनके लीवर पर प्रतिकूल प्रभाव

पड़ रहा है, अत्यधिक शराब का सेवन करते हैं। कुछ लोग वह सब कुछ खाते हैं, जो हानि पहुँचाता है। सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए एक और हानिकारक आदत है। यह देखा गया है कि अधिकतर सिगरेट पीने वालों की मौत फेफड़े के कैंसर तथा दिल की बीमारी के कारण होती है। सिगरेट पीने वालों में अस्वास्थ्य की वृद्धि केवल सिगरेट के ही कारण नहीं वरन् उनमें स्वास्थ्य के लिए कई हानिकारक आदतें विकसित हो जाती हैं। वे मेहनत कम करते हैं और भोजन अधिक करते हैं। शराब पीना तथा दवाओं का दुरुपयोग सामान्यतया स्वास्थ्य के लिए हानिकारक आदतें हैं। इन आदतों के कारण इन वस्तुओं के अत्यधिक उपयोग से तत्काल मृत्यु हो जाती है। शराबखोरी तथा नशे की आदत के कारण व्यक्ति की लीवर, श्वसन प्रणाली तथा आंत क्षतिग्रस्त हो सकती है तथा इसके कारण द्वितीयक जटिलताएं; जैसे—संक्रामक एवं तंत्रिका संबंधित बीमारियाँ हो सकती हैं। इनमें से अनेक दवाएं ऐसी भी हैं, जिनके कारण व्यक्ति की ताक्रिक एवं निर्बाध ढंग से सोचने की क्षमता प्रभावित हो जाती है। अधिकांश लोग, जिनमें ऐसी आदतें पड़ जाती हैं, उसके कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों को कम आंकने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है। आधुनिक जीवन शैली में लोग स्वास्थ्य के मूलभूत नियमों का उल्लंघन करते हैं तथा क्या खाएं, कैसे रहें एवं किस तरह सोचें, इस पर व्यक्ति बहुत कम ध्यान देता है।

आयुर्वेद में जीवन शैली के मूल तत्व के रूप में आहार (भोजन), विहार (मनोरंजन), आचार (दिनचर्या) एवं विचार का विवेचन मिलता है।

आहार (भोजन) स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए उपर्युक्त चार मूल तत्वों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। शाकाहारी भोजन को शरीर के लिए सबसे

सुरक्षित एवं स्वास्थ्यवर्धक माना गया है। भोजन में ताजे फल, पर्याप्त रेशेदार पदार्थ, अल्प मात्रा में मसाले तथा तेल होने चाहिए। ऐसा भोजन करने से व्यक्ति निरोग रह सकता है तथा बुढ़ापे के आरंभ को विलंबित कर सकता है। लहसुन, प्याज, पालक, नमकीन भोजन, नींबू वंश के फल, टमाटर, गाजर एवं बादाम आदि से विटामिन, खनिज, लौह, पाचक (Antioxidant), बीटा–कैरोटीन तथा रेशे प्राप्त होते हैं।

आचार (दिनचर्या) के अंतर्गत ऋतुचर्या, दिनचर्या तथा रात्रिचर्या आते हैं। ऋतुचर्या का तात्पर्य है वर्ष के अंतर्गत 6 मौसमों के अनुरूप भोजन तथा कार्य करना। दिनचर्या तथा रात्रिचर्या का अर्थ है दिन के समयानुसार (सवेरे, दोपहर, सायंकाल एवं रात्रिकाल) भोजन एवं कार्य करें।

प्रतिबल प्रबंधन की कुछ विधियां

प्रतिबल को एक (Silent Killer) धीरे–धीरे चुपचाप मारने वाला कहा जाता है। सम्पूर्ण शारीरिक बीमारियों में से 50 से 70 प्रतिशत तक प्रतिबल के कारण होती हैं। हृदय की बीमारी, उच्च रक्तचाप, अल्सर तथा डायबिटीज जैसी बीमारियों का प्रतिबल से गहरा संबंध है। प्रतिबल के बढ़ते हुए प्रभावों के कारण विद्यालयों, कार्यालयों तथा विभिन्न समुदायों में लोग प्रतिबल प्रबंधन की विभिन्न विधियों इस प्रकार हैं–

संज्ञानात्मक व्यवहारपरक (Cognitive-behavioural) विधि

ये विधियाँ लोगों को प्रतिबल के विरूद्ध संचालित करने का प्रयास करती हैं। इन विधियों का उपयोग करने वाले कार्यक्रमों में तीन चरण होते है : शिक्षण, प्रशिक्षण तथा अभ्यास। शिक्षण की अवस्था में प्रतिभागी को प्रतिबल के स्वरूप तथा उसके प्रभाव की जानकारी होती है तथा प्रतिबल के

लक्षणों को जानने में मदद मिलती है। प्रशिक्षण के दौरान समय–प्रबंधन, सामाजिक कौशल, शिथिलीकरण तकनीक, सकारात्मक सोच, यथार्थवादी लक्ष्य तथा लक्ष्य प्राप्त होने पर उसे पुरस्कृत करना सीखते हैं। अभ्यास की अवस्था में प्रतिभागी जीवन के वास्तविक परिस्थितियों में सीखे हुए कौशल का अभ्यास करता है।

बायोफीडबैक

यह प्रतिबल के दैहिक पक्षों को नियंत्रित करने की एक प्रक्रिया है। शरीर की क्रियाशीलता के बारे में व्यक्ति को जानकारी, उसे जानने तथा नियंत्रित करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसकी सहायता से प्रतिबल को कम किया जाता है।

शिथिलीकरण (Relaxation)

प्रतिबल की विपरीत अवस्था को शिथिलीकरण की अवस्था कहते हैं। पेशीय तनाव को कम कर प्रतिबल तथा तनाव के अनुभवों को कम किया जाता है। सामान्यतया शिथिलीकरण शरीर के नीचे के हिस्से से शुरू होकर ऊपर के हिस्से में पहुँचता है तथा पूरा शरीर शिथिल हो जाता है। गहरी–लंबी सांस लेकर श्वसन क्रिया पर नियंत्रण स्थापित करना इसकी दूसरी विधि है।

अभ्यास :

एरोबिक अभ्यास, तैरना, सैर करना, आसन, नृत्य तथा रस्सी कूदना आदि प्रतिबल को कम करने में सहायक होते हैं। इस प्रकार के अभ्यासों का उपयोग सप्ताह में कम से कम तीन बार, हर बार कम से कम पंद्रह मिनट करना चाहिए। प्रत्येक सत्र में आरंभिक स्फूर्ति (warm-up) अभ्यास तथा विश्राम (cool-down) के चरण होने चाहिए। इससे सहनशीलता, लचीलापन,

हृदय एवं रक्तवाही धमनियों की क्षमता तथा प्रतिबल को सहने की क्षमता में वृद्धि होती है।

(2) मूल्य

प्रत्येक मानव को जीवन में कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होते हैं, जो समय की गति के साथ–साथ बढ़ते जाते हैं। इन्हीं अनुभवों से कुछ सामान्य सिद्धान्त जन्म लेते हैं जो मानव के व्यवहार को निर्देशित करते हैं। ऐसे सामान्य सिद्धान्तों को जो समस्त जीवन को एक दर्शन के रूप में परिवर्तित कर देते हैं तथा समस्त जीवन जीने की एक विशिष्ट कला को जन्म देते हैं एवं उनके पथ–प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, 'मूल्य' अथवा 'वैल्यूज'' (Values) के नाम से जाना जाता है। व्यक्ति के मूल्य इस बात का दर्पण होता है कि वे अपनी सीमित शक्ति एवं समय में क्या करना चाहते हैं। जीवन के पथ–प्रदर्शक के रूप में मूल्य अनुभवों के साथ–साथ अधिक परिपक्व होते जाते हैं।

मूल्य का अर्थ एवं स्वरूप

सामान्य रूप से मूल्य का प्रयोग व्यक्ति की रुचियों, प्रेरणाओं एवं अभिवृत्ति के मापन हेतु किया जाता है। दूसरे शब्दों में, मूल्य व्यक्ति की रुचियों, प्रेरणाओं एवं अभिवृत्तियों की ओर इंगित करते हैं। मूल्य की व्याख्या एवं विवेचना विभिन्न लेखकों द्वारा विभिन्न प्रकार से की गयी है। जी.ई. मूर व चार्ल्स मौरिस ने मूल्यों की विभिन्न परिभाषाओं का अध्ययन करने के बाद बताया कि मूल्य जैसे प्रत्यय को परिभाषित नहीं किया जा सकता तथा यह सत्य भी है कि मूल्य की परिभाषा करना अत्यन्त कठिन कार्य है।

मूल्यों की दार्शनिक परिभाषा इसे भावना, संवेग, रुचियों एवं अरुचियों

के सन्दर्भ में स्वीकार करती है। सभी सुखदायी भावनायें एवं सिद्धान्त 'मूल्य' में निहित हैं। ब्राइटमेन (Brightman, 1958) के अनुसार, मूल्य से हमारा आशय किसी पसन्द, पुरस्कार, वांछित पहुंच या आनन्द से हैं। किसी क्रिया या वांछित वस्तु का वास्तविक अनुभवों पर आनन्द प्राप्त करना ही मूल्य समझा जाता है। अर्थात् इस परिभाषा के अनुसार मूल्य में समस्त सुखदायी भावनायें निहित रहती है। किसी भी अमुक परिस्थिति या विशिष्ट समय में जिनके द्वारा हमें आनन्दानुभूति होती है या यथार्थ में उस वस्तु को पसन्द करते हैं, उसकी इच्छा करते या स्वीकार करते हैं, उसे मूल्य कहते हैं। वी.ए. सन्याल (1962) ने समस्त दार्शनिक परिभाषाओं के अध्ययन के पश्चात् यह बताया है कि मूल्य आंशिक रूप से भाव या तर्क से सम्बन्धित होते हैं जो स्थिर प्रकृति के होते हैं।

मूल्यों के मनोवैज्ञानिक स्वरूप की व्याख्या करते हुए मर्फी, मर्फी एवं न्यूकौम्ब (1937) का मत है कि "मूल्य सामान्य रूप से किसी उद्देश्य की प्राप्ति का एक विन्यास है। "आलपोर्ट (1951) के मतानुसार, "मूल्य वह क्रिया है जो किसी उद्दीपक से उद्दीप्त होती है।" एवरैट (1918) के दृष्टिकोण में, "मूल्य एक भावना है। जो क्रियाओं से निर्मित होती है।" कलुकहोन (1961) के शब्दों में, "मूल्य इच्छाओं के वे प्रत्यय हैं जो चयनात्मक व्यवहार के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। ये एक विशेष प्रकार की अभिवृत्तियाँ भी होती हैं जो प्रतिमानों के रूप में कार्य करती हैं तथा जिसके द्वारा निर्णयों का मूल्यांकन होता है।" अतएव विद्वानों की दृष्टि में मूल्य भावनाओं, विन्यासों, क्रियाओं या अभिवृत्ति की उत्पत्ति है।

मूल्य–मापन

मुख्य रूप से मूल्य–मापन की दो विधियाँ उपलब्ध हैं– एक मौरिस (Morris) की, जिसमें विभिन्न मानवीय मूल्यों का मापन किया जाता है तथा दूसरी आलपोर्ट, बर्नन एवं लिण्डजे की, जिसमें व्यक्ति के छः मूल्यों का अध्ययन सम्भव होता है। अध्ययन की दूसरी विधि का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता ह।। आलपोर्ट, वर्नन के मूल्य अध्ययन द्वारा छः क्षेत्रों में व्यक्ति की रुचियों, प्रेरणाओं तथा अभिवृत्तियों का मापन किया जाता है। इस मूल्य अध्ययन की सर्वप्रथम रचना आलपोर्ट एवं वर्नन (1931) ने की तथा लिण्डजे (1951) के सहयोग से उन्होंने इसको संशोधित किया। अपनी संशोधित मूल्य–मापनी में उन्होंने कुछ परिवर्तन किए हैं, यथा–पदों की निदानात्मक शक्ति में सुधार, शब्दों का सरलतम रूप, कुछेक पदों की आधुनिकीकरण, अल्प–मितव्ययी फलांकन कुँजी, सामाजिक मूल्य की संशोधित परिभाषा, सम्पूर्ण परीक्षण की विश्वसनीयता में वृद्धि नवीनतम मानकों की स्थापना। इस संशोधित मूल्य अध्ययन की उपयोगिता के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। शैफिर के अनुसार, "निर्देशन एवं शोध–कार्य हेतु यह एक अनोखा उपकरण है।" सुपर के अनुसार, "यह अपने आप में एक ही प्रकार का परीक्षण है जिसका पूर्ण रूप से अध्ययन किया जा चुका है तथा यह आज सबसे अधिक प्रयोग में लाया जाता है।" ग्रेग के अनुसार, "निर्देशन, संदर्शन तथा शोधकार्य में यह एक अच्छा मनोवैज्ञानिक यन्त्र समझा जाता है।" हैरिसन इंगित करते हैं कि मूल्य–अध्ययन एक सूचनात्मक उपकरण है। सैद्धान्तिक प्रत्ययों पर निर्मित, पर्याप्त सांख्यकीय गुणों से युक्त तथा व्यक्तिगत एवं सामूहिक विवेचना की उपयोगिता को प्राप्तांकों के माध्यम से प्रस्तुत

करता है।''

आलपोर्ट, वर्नन तथा लिण्डजे का मूल्य–अध्ययन

आलपोर्ट, वर्नन, लिण्डजे का 'मूल्य–अध्ययन' मूल रूप से स्प्रेंगर (Spranger) के वर्गीकरण पर आधारित है। स्प्रेंगर का विश्वास था कि व्यक्ति के मूल्यों से उसका व्यक्तित्व जाना जा सकता है। इसीलिए उसने अपनी पुस्तक "Types of Men" में छः प्रकार के व्यक्तियों का उल्लेख किया। अतएव इसी वर्गीकरण को आधार मानते हुए आलपोर्ट, वर्नन एवं लिण्डजे ने अपने 'मूल्य–अध्ययन' में छः निम्नलिखित प्रकार के मूल्यों को सम्मिलित किया :

(i) सैद्धान्तिक (Theoretical) मूल्य– बौद्धिक विधियों से सत्य से सम्बन्धित कार्यों में रूचि लेना।

(ii) आर्थिक (Economic) मूल्य– उपयोगी, व्यावहारिक तथा द्रव्य सम्बन्धी वस्तुओं में रुचि लेना।

(iii) सौन्दर्यात्मक (Aesthetic) मूल्य– जीवन के सौन्दर्यात्मक पहलुओं, कलात्मक पक्षों तथा सजीव आकृति, चमक, समता में रुचि लेना।

(iv) सामाजिक (Social) मूल्य– अन्य व्यक्तियों की सहायता करने में रुचि लेना।

(v) राजनैतिक (Political) मूल्य– पद, प्रतिष्ठा, प्रभुत्व तथा शक्ति रखने में रुचि रखना।

(vi) धार्मिक (Religious) मूल्य– धार्मिक अनुभवों में रुचि लेना।

इस मूल्य–अध्ययन में 45 प्रश्न हैं जो दो भागों में विभक्त हैं। प्रथम भाग में 30 तथा द्वितीय भाग में 15 प्रश्न हैं। इसमें शक्ति–चयन पदों (Forced choice item) का प्रयोग किया गया है। इससे विभिन्न मूल्यों के रूप में

प्रत्युत्तरों को दो–चार विकल्पों में से चुनना होता है। इसके प्रथम भाग में दो विकल्पों को कथन की सहमति या असहमति के अनुसार 3 तथा 0, या 0 तथा 3, या 2 तथा 1 या 1 तथा 2 से अंकित करना होता है। इसके द्वितीय भाग में, इसके चारों विकल्पों (Alternative) को, व्यक्तिगत प्राथमिकता के क्रमानुसार, सबसे अधिक पसन्द को 4, दूसरे अधिक पसन्द को 3, इससे कम को 2 तथा सबसे कम पसन्द को 1 अंक दिया जाता है। इस प्रकार से इस परीक्षण के निर्देश एवं फलांकन गणना सरल है। यद्यपि इसके करने के लिए कोई समय–सीमा निर्धारित नहीं है फिर भी इसके प्रशासन में लगभग 30 से 40 मिनट का समय लग जाता है।

भारतीय अनुकूलन (Indian adaptation) –

मूल्य–मापन के क्षेत्र में हमारे देश में सर्वप्रथम सराहनीय कार्य अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कार्तिक राय चौधरी ने किया। उन्होंने 1958 में आलपोर्ट–वर्नन लिण्डजे के मूल्य–अध्ययन का भारतीय स्थितियों में अनुकूलन किया। अपने अनुकूलन के सम्बन्ध में वे स्वयं लिखते है "भारतीय स्थितियों में इस मापनी का अनुकूलन बिल्कुल सन्तोषजनक है।" अपने भारतीय अनुकूलन में उन्होंने निर्देशों को सरल इंगलिश भाषा में व्यक्त किया तथा भारतीय इतिहास एवं जीवन के कुछ तथ्यों एवं स्थितियों को उद्धरित किया। इसमें मौलिक परीक्षण के समान ही पदों को रखा गया तथा कोई भी पद जोड़ा अथवा निकाला नहीं गया। परीक्षण की विश्वसनीयता कूडर–रिचर्डसन सूत्र से विभिन्न मूल्यों के लिए 0.82 से 0.89 ज्ञात की गयी (Theo., 0.92; Eco., 0.92; Aes., 0.82; Soci., 0.99; Pol., 0.89 and Rel., 0.92)। परीक्षण की वैधता विभिन्न मूल्य–श्रेणियों के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सह–सम्बन्ध की गणना कर

अभिवृत्ति एवं योग्यता परीक्षणों से भी सह–सम्बन्ध ज्ञात किया गया। परीक्षण के मानक विभिन्न पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने वाले 305 स्नातकोत्तर छात्रों पर आधारित है। प्रत्येक मूल्य–श्रेणी का मध्यमान तथा मानक विचलन ज्ञात किया गया।

रायचौधरी के आंग्ल भाषा मूल्य–अध्ययन के भारतीय अनुकूलन पर आधारित हिन्दी भाषा में मूल्य परीक्षण की रचना एवं मानकीकरण का कार्य मुरादाबाद के आर.के. ओझा ने किया। उन्होंने सन् 1970 में इसे संशोधित कर प्रकाशित कराया। आंग्ल भाषा में एक भारतीय अनुकूलन केरल के वी.जी. मैथ्यू ने किया। उन्होंने कॉलेज छात्रों हेतु टी–मानक प्राप्तांक तैयार किये। अर्द्ध–विच्छेद विश्वसनीयता गुणांक 0.55 से 0.70 के मध्य तथा व्यावसायिक रुचि–प्रपत्र से वैधता गुणांक 0.59 ज्ञात किया गया। इसके पश्चात् आर.पी. भटनागर तथा आर.के. टण्डन, एस.पी. कुलश्रेष्ठ, एम.पी. जायसवाल तथा माधुरी वर्मा ने भी इसका हिन्दी भाषा में अनुकूलन किया।

मौरिस एवं क्रिल्वी : जीवन–राह प्रश्नावली

इसमें 20 कथन प्रचलित सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिरूप को व्यक्त करते है। इसमें प्रत्युत्तरों (Response) को सिमेण्टिक डिफरेंशियल विधि के आधार पर व्यक्त करने को कहा जाता है तथा प्रत्येक कथन का सम्बन्ध एक भिन्न प्रकार के मूल्य से होता है। आगरा के गोविन्द तिवारी ने इसका भारतीय अनुकूलन किया।

भारतीय योगदान

मूल्य–मापन में हमारे देश में बहुत कम कार्य हुआ है, यद्यपि कार्तिक रायचौधरी, वी.जी. मैथ्यू, आर.के. ओझा, आर.पी. भटनागर, आर.के. टण्डन,

रायचौधरी, वी.जी. मैथ्यू, आर.के. ओझा, आर.पी. भटनागर, आर.के. टण्डन, एम.पी. कुलश्रेष्ठ, एम.पी. जायसवाल, हरमोहन सिंह आदि ने 'आलपोर्ट–वर्नन–लिण्डजे के मूल्य अध्ययन' का भारतीय अनुकूलन किया। साथ ही देश के विभिन्न भागों से मनोवैज्ञानिकों ने मौलिक मूल्य मापनियों की रचना का कार्य भी सम्पन्न किया।

बंगलौर के.ए. हफीज तथा शकीला बेगम (1963) ने वयस्क पुरूषों के व्यावसायिक चयन के लिए 'व्यक्तिगत तथा सामाजिक मूल्यों के एक प्रक्षेपण परीक्षण' (Projective Test of Individual and Social Values) की रचना की। इसमें पद कथनों तथा शब्दों के रूप में हैं। व्यक्तित्व मूल्यों के अन्तर्गत इच्छाएँ, साहस, उत्साह, निश्चय, प्रसिद्धि, आश्चर्य, धैर्य, शक्ति, धन तथा सामाजिक मूल्यों के अन्तर्गत, प्रेम, सहानुभूति, सहनशीलता, शान्ति, सेवा सहयोग तथा गम्भीरता निहित हैं। इसकी समय सीमा निश्चित नहीं है। इसकी समान्तर प्रारूप विश्वसनीयता गुणांक +0.89 से +0.34 तक ज्ञात की गयी। लड़के तथा लड़कियों पर अलग–अलग मानक ज्ञात किए गए। इसी वर्ष में बी. रामादेवी (1963) ने भारतीय स्त्रियों के लिए एक 'ट्रेडिशनल वैल्यू स्केल' की रचना की। इसमें 50 वास्तविक तथा 5 जाँच पद निहित हैं। यह चार मूल्यों– नैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा पारिवारिक– का मापन करती है। इसके प्रत्युत्तर के लिए पाँच बिन्दु निर्धारण मापनी का प्रयोग किया जाता है तथा कम प्राप्तांक ट्रेडिशनल मूल्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति इंगित करते हैं। इसकी पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक 0.66 ज्ञात की गयी। उदय पारीख तथा एस.एन. चट्टोपाध्याय (1965) ने चार बिन्दु मापनी पर आधारित एक 'फारमर्स वैल्यू ऑरिएण्टेशन स्केल' की रचना की। इसी वर्ष हैदराबाद की

माला रेड्डी ने कॉलेज छात्रों के लिए एक 'ट्रेडिशनलिज्म–मॉडरनिज्म वैल्यू स्केल' की रचना की, जिसमें 56 पद पाँच बिन्दु मापनी पर व्यवस्थित हैं। इसकी पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता 0.78 ज्ञात की गयी। एच.के. कपिल तथा एस. अग्रवाल (1966) ने आई.एस.वी. टेकनीक के माध्यम से हिन्दू समाज में सामाजिक परिवर्तन के जोर के कारण ओरथोडेक्स पद्धति के परिवर्तन पर प्रकाश डाला। इसको वयस्क स्त्रियों पर प्रशासित किया गया। समान्तर प्रारूप विधि से विश्वसनीयता गुणांक 0.63 तथा विशेषज्ञों की राय द्वारा वैधता ज्ञात की गयी। सत्यपाल रूहेला (1969) ने कॉलेज छात्रों तथा अन्य शिक्षित व्यक्तियों के लिए एक 'ट्रेडिशनल इण्डियन वैल्यू चैक–लिस्ट' की रचना की। यह आंशिक सौन्दर्य तथा धार्मिक मूल्यों का मापन करती है। इसका फलांकन साधारण योग तथा शतांशीय के द्वारा ज्ञात किया जाता है।

लुधियाना के रनजीत सिंह तथा टी.एस. सोहल (1970) ने किसानों के लिए 'वैल्यू ऑरिएण्टेशन स्केल' की रचना की, जो पाँच क्षेत्रों– उन्नत दृष्टिकोण, आर्थिक लाभ, श्रम का मूल्य, रिस्क लेने की इच्छा तथा लक्ष्य उपलब्धि– में मूल्यों का मापन करती है। इसमें प्रत्येक पाँच मूल्यों से सम्बन्धित 25–25 पद हैं इसमें योग निर्धारण विधि पर आधारित तीन बिन्दु मापनी का प्रयोग किया जाता है। इसका पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक 0.769 तथा अर्द्ध–विच्छेद 0.90 ज्ञात किया गया। मापनी की वैधता ज्यूरी की राय तथा ज्ञात समूह प्रविधियों द्वारा की गयी। अलीगढ़ के अनवर अंसारी (1971) ने कॉलेज छात्रों के चार–आयामों के मापन हेतु एक 48 पदों वाले 'वैल्यू ऑरिएण्टेशन स्केल' की रचना की। यह चार आयामों Conservatism, Liberal-ism, Fatalism, Scienticism, Hereditarianism, Environmentalism, Authoritarianism,

Non-authoritarianism का मापन करती है। इसकी अर्द्ध–विच्छेद विश्वसनीयता 0.70 से 0.83 ज्ञात की गयी। पदों का चयन निर्णायकों के निर्णय तथा समूह वैधता के आधार पर किया गया। इसी वर्ष नागपुर के एस.पी. सूद ने किसानों के लिए एक 'मूल्य–मापनी का निर्माण किया जो आर्थिक अभिप्रेरण, वैज्ञानिक अभिविन्यास, मानसिक क्रियायें, स्वतन्त्रतायें तथा रिस्क प्राथमिकता के क्षेत्र में मूल्यों का मापन करती है। यह थर्स्टन तथा लिकर्ट की मिश्रित विधियों पर आधारित है। प्रत्येक मापनी में छ' कथन पाँच बिन्दु–मापनी पर निर्धारित किये गये हैं। देहली के ए.बसन्ता के हाईस्कूल छात्रों के लिए एक 'वर्क वैल्यू–इन्वेण्ट्री' की रचना की, जो 15 मूल्यों का मापन करती है। इसका पुनर्परीक्षण सह–सम्बन्ध 0.19 से 0.68 के मध्य ज्ञात किया गया। दीर्घ प्रारूप (71 पद) तथा संक्षिप्त प्रारूप (15 पद) का सह–सम्बन्ध 0.33 से 0.56 ज्ञात किया गया। इसी वर्ष देहरादूरन के एस.पी. कुलश्रेष्ठ (1971) ने भारतीय संस्कृति, स्थितियों एवं जनतन्त्रात्मक स्वरूप के अनुकूल मौलिक 'जनतन्त्रात्मक मूल्य–मापनी' (Test of Democratic Value) की रचना एवं मानकीकरण किया। इस मूल्य–मापनी की सहायता से ज्ञात जनतन्त्रात्मक मूल्यों–स्वतन्त्रता चरित्र, समानता, बौद्धिकता, राष्ट्रीय एकता, परिश्रमता एवं स्वास्थ्य– का मापन किया जाता है। प्रस्तुत परीक्षण में कुल 140 विकल्प हैं तथा प्रत्येक मूल्य के मापन हेतु 20 विकल्प निर्धारित हैं। कुल प्रश्नों की संख्या 47 है तथा प्रत्येक (47 को छोड़कर) के तीन–तीन विकल्प दिए गये हैं। इस परीक्षण का उद्देश्य भारतीय जनतन्त्रात्मक मूल्यों का मापन करना है।

आगरा की जी.पी. शैरी एवं आर.पी. वर्मा (1972) ने भारतीय संस्कृति, स्थितियों एवं परम्पराओं के अनुसार एक मौलिक मूल्य–मापनी की रचना की।

इस मूल्य–मापनी का प्रकाशन 'व्यक्तिगत मूल्य–प्रश्नावली' (Personal Value Questionnaire) के नाम से किया गया। यह प्रश्नावली दस क्षेत्रों– धार्मिकता, एलरिस्टिक, सामाजिक, जनतन्त्रात्मक, सौन्दर्य, आर्थिक, ज्ञान, सुखान्त, शक्ति, गृह एवं स्वास्थ्य क्षेत्रों में मूल्यों का मापन करती है। इसमें प्रत्येक मूल्य से सम्बन्धित 12 पद तीन–तीन विकल्प वाले 40 प्रश्नों में दिये गये हैं। एस.पी. कुलश्रेष्ठ (1973) ने अपने शोध–प्रबन्ध में एक छः आयामों वाले मूल्य परीक्षण की रचना की। इस परीक्षण का मुख्य उद्देश्य शिक्षालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करना है। इसके माध्यम से भारतीय विद्यालयों की वर्तमान स्थितियों के अनुसार शिक्षकों के वांछित एवं अवांछित मूल्यों का अध्ययन किया गया है। इसमें शिक्षकों के छः मूल्यों का आयामों के रूप में अध्ययन किया गया है। ये हैं– Humanitarian vs. Authoritarian, Social vs. Non-Social, Professinal vs. Non-professional, Economic vs. Extravagent, progressive v. Traditional and Aesthetic vs. Non-aesthetic। इस परीक्षण में चार विकल्प वाले 60 प्रश्न अर्थात् 240 प्रश्न हैं तथा प्रत्येक 20 विकल्प एक मूल्य का अध्ययन करते हैं। इसका मानकीकरण उत्तर प्रदेश के अध्यापकों पर किया गया। इसी वर्ष राव एवं पारीख (1973) ने मेडिकल डॉक्टरों के लिए एक 'Physician's Work Value Questionnaire' की रचना की। यह युग्म–तुलना विधि पर आधारित मापनी दस मूल्यों– कार्य–स्थितियाँ, स्थिति, मानवता, सहकार्यकर्त्ता, स्वतन्त्रता, सृजनात्मकता, सामाजिक, ग्रामीण, एकेडेमिक का 35 मिनट में मापन करती है। दसों मूल्यों का पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक 0.59 से 0.81 तक ज्ञात किया गया। निर्णायकों के निर्णय पर विषय–वस्तु तथा आकृति वैधता ज्ञात की गयी। स्वतः क्रम वैधता गुणांक 0.35 से 0.86 के मध्य

ज्ञात हुआ।

मुरादाबाद के डॉ0 आर.के. ओझा एवं महालक्ष्मी ओझा (1976) ने 'चल'–चित्रों से प्रभावित होने वाले मूल्य 'अभिविन्यास' (Value orientation affected by movies) परीक्षण का निर्माण एवं मानकीकरण किया। यह भी आलपोर्ट एवं वर्नन द्वारा दिये गये छः मूल्य क्षेत्रों–सैद्धान्तिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं सौन्दर्यात्मक का मापन चलचित्रों के लिये गये कथनों के सन्दर्भ में करता है। इसको कॉलेज स्तर पर अध्ययन करने वाले लड़के–लड़कियों पर प्रशासित कर इनके अलग–अलग मापन तैयार किये गये। देहली (1978) के के.जी. अग्रवाल ने प्रसिद्ध अर्थ विभेद मापनी पर आधारित एक 'विस्तृत मूल्य मापनी' (Comprehensive Value Scale, CVS) का प्रकाशन किया जो कि छः मूल्य कारकों Refinement, Power, Conscience, Stability, Masculinity, Feminity तथा Ideology का मापन करती है। इसी वर्ष रायपुर के एस.एन. उपाध्याय (1976) ने भी एक 'मूल्य परीक्षण' (Value Test) का प्रकाशन किया जो कि दो प्रकार के मूल्यों Terminal तथा Instrumental का मापन करता है। पहले प्रकार के मूल्य स्वयं में साक्ष्य होते हैं जबकि दूसरे प्रकार के मूल्य किसी निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन मात्र होते हैं। परीक्षण में अठारह मूल्यों को दिया गया है तथा प्रत्युत्तरदाता से कहा जाता हैं कि जीवन में उनकी महत्ता का विचार करते हुए उनको क्रम प्रदान करें। एन.एस. चौहान, सरोज अरोरा आदि (1981) ने एक 'मूल्य अभिस्थापना मान' (V-O Scale) की रचना की जोकि छः विमाओं में मूल्यों का मापन करता है। उदयपुर के हरभजनसिंह एवं सागर के एस.पी. आलुवालिया (1981) ने एक 'अध्यापक मूल्य सूची' (Teacher value inventory) का प्रकाशन कराया जो कि

आलपोट–वर्नन के मूल्य अध्ययन पर आधारित छः मूल्यों का अध्यापकों का मापन करता है। बनारस की रेखा रानी अग्रवाल (1986) ने "डिफरेंशियल वैल्यू प्रश्नावली" (DVQ) की रचना की जो कि किशोरों के चार क्षेत्रों में मूल्यों का मापन करती है। जी.के. मखीजा (1985) ने 'जीवन–मूल्य' (Values of Life) की रचना की जिसके द्वारा आठ मूल्यों– सौन्दर्य, डिसोसी, आर्थिक, सुख, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं सैद्धान्तिक का मापन होता है।

प्रचलित प्रतिनिध्यात्मक मूल्य–परीक्षण

1. आर.के. ओझा : मूल्य–परीक्षण (1970)

इस मूल्य–परीक्षण में 45 पद निहित है जो कि छः मूल्यों– सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक– पर आधारित हैं। परीक्षण को दो भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में 30 प्रश्न हैं तथा प्रत्येक प्रश्न के लिए दो विकल्प सम्भावित उत्तर के रूप में दिये गये हैं। द्वितीय भाग में 15 प्रश्न हैं तथा प्रत्येक प्रश्न के लिए चार विकल्प सम्भावित उत्तर के रूप में दिये गये हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर 120 उत्तर हैं जो प्रत्येक मूल्य से सम्बन्धित 20–20 उत्तरों को प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत परीक्षण के करने में 30–40 मिनट तक का समय लगता है। इसका मुख्य उद्देश्य छः विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति के मूल्यों का अध्ययन करना है। इसका मानकीकरण सात समूहों के 2,070 व्यक्तियों पर किया गया। विश्वसनीयता को दो विधियों से ज्ञात किया गया। 1. अर्द्ध–विच्छेद विधि से प्रत्येक श्रेणी के पदों की विश्वसनीयता को ज्ञात किया गया तथा विभिन्न मूल्य श्रेणियों की आपस में वैधता ज्ञात की गयी। मानकों को दशांक के रूप में मानकीकृत प्राप्तांकों के साथ निर्धारित किया गया। 2. कूडर–रिचर्डसन सूत्र से प्रत्येक मूल्य की

विश्वसनीयता 0.69 से 0.89 ज्ञात की गयी।

2. जी.पी. शैरी एवं आर.पी.वर्मा : व्यक्तित्व मूल्य प्रश्नावली (1972)

भारतीय संस्कृत, स्थितियों एवं परम्पराओं के अनुसार इस मापनी की रचना हुई। यह प्रश्नावली दस क्षेत्रों–धार्मिकता, सामाजिक, जनतन्त्रात्मक, सौन्दर्य, आर्थिक, ज्ञान, सुखान्त, शक्ति, परिवार एवं स्वास्थ्य के सम्बन्ध में मूल्यों को व्यक्त करती है। इसमें प्रत्येक प्रश्न के अत्यधिक पसन्द मूल्य को 2 अंक अत्यधिक नापसन्द मूल्य को 0 अंक तथा मध्यस्थ मूल्य को 1 अंक प्रदान किया जाता है। परीक्षण का मानकीकरण इण्टरमीडिएट कक्षा में अध्ययन करने वाले 1,174 लड़के (390 कला समूह से, 631 विज्ञान समूह से तथा 253 कॉमर्स समूह से) तथा 551 लड़कियों पर किया गया। इसके अतिरिक्त माध्यमिक विद्यालयों के 428 पुरुष तथा 246 स्त्री कुल मिलाकर 674 अध्यापकों पर भी इसके मानकीकरण का कार्य सम्पन्न हुआ। होयट (Hoyt) विधि से प्रसार विश्लेषण का प्रयोग करके विश्वसनीयता गुणांक 0.48 से 0.70 तक प्रत्यक मूल्य ज्ञात किया गया। पुनर्परीक्षण विधि से 3 माह के अन्तर के साथ विभिन्न मूल्यों का विश्वसनीयता गुणांक 0.53 से 0.82 तथा 11 माह के अन्तर के साथ 0.45 से 0.67 तक ज्ञात किया गया। विभिन्न मूल्यों की वैधता उनकी कसौटियों के आधार पर ज्ञात की गयीं। मूल्यों का सह–सम्बन्ध ज्ञात कर वैधता ज्ञात की गयी। स्टेन प्राप्तांक मानक, टी–प्राप्तांक मानक तथा शतांशीय मानकों को प्रत्येक समूह के लिए ज्ञात किया गया।

3. समायोजन

प्रायः जीवन के समस्त पहलुओं में समायोजन आवश्यक होता है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल होने के लिए व्यक्ति में समायोजन करने की क्षमता होनी चाहिए। तनावपूर्ण स्थितियों से वह किस प्रकार सफल हो इसका उसे ज्ञान होना चाहिए। उसे ऐसी परिस्थितियों से दूर रहना चाहिए जो असमायोजन को प्रोत्साहन देती हों तथा मन की शान्ति को भंग करने की अग्रसर हों। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जीवन का दूसरा नाम समायोजन है।

समायोजन का अर्थ

आधुनिक मनोवैज्ञानिक प्रायः मनोविज्ञान को समायोजन के रूप में परिभाषित करते हैं। "मनोविज्ञान समायोजन का विज्ञान है" (Psychology is the science of adjustment)। यह समायोजन सामान्य अथवा विशिष्ट दोनों क्षेत्रों में हो सकता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने समायोजन को अपने ही ढंग से परिभाषित किया है–

एलेक्जेण्डर एवं स्नीडर्स के अनुसार, "समायोजन से अभिप्राय कई प्रत्ययों से है, जैसे– अभाव तृप्ति, भग्नाशा एवं तनावात्मक स्थितियों से बचने की क्षमता, मन की शान्ति एवं लक्षणों का निर्माण। इसका आशय यह सीखना हुआ कि अन्य व्यक्तियों के सम्पर्क में एक व्यक्ति कितनी सफलता से निर्वाह कर सकता है। ("Adjustment means many things such as need gratification, skill in dealing with frustration and conflicts, peace of mind or even the formation of symptoms. It means learning how to get along success with other people and how to meet the demands of job.")

to some specific terms such as adaptability, capacity for affection, balanced life, ability to profit from experience, frustration tolerance, humour moderation, objective and many things.")

शफ्रेर सोबन के अनुसार, "साधारण रूप से समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मानसिक एंव व्यावहारिक दोनों ही प्रकार के प्रत्युत्तर निहित रहते हैं और इनके द्वारा ही एक व्यक्ति अभाव, तनाव, भग्नाशा आदि को व्यक्त करता है तथा इन आन्तरिक माँगों तथा बाह्य परिस्थितियों के मध्य सामंजस्य लाता है।' (The term adjustment is simply a process, involing both mental and behavioural responses by which an individual strives to cope with inner needs, tensions, frustrations, conflicts and to bring harmony between these inner demands and those imposed upon him by the external world.")

अतएव समायोजन से अभिप्राय व्यक्ति की आन्तरिक एवं बाह्य माँगों एंव अभावों के मध्य सामंजस्य तथा सन्तोषजनक सम्बन्ध कायम रखना है। समायोजन व्यक्ति के सामान्य क्षेत्र में हो सकता है अथवा विभिन्न विशिष्ट क्षेत्र में, जैसे– गृह, विद्यालय, संवेगात्मक, स्वास्थ्य, सामाजिक आदि में। मापन के दृष्टिकोण से प्रायः व्यक्ति का सामान्य एवं विशिष्ट क्षेत्रों में समायोजन मापा जाता है।

समायोजन का मापन

व्यक्तित्व–मापन के विभिन्न पहलुओं में से समायोजन एक ऐसा पहलू है जिसके मापन के लिए विदेशी एवं भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने किसी सीमा तक सन्तोषप्रद कार्य किया। रोजर्स (1931) ने प्रारम्भिक विद्यालयों के बच्चों के लिए सर्वप्रथम 'रोजर्स समायोजन सूची' की रचना कर 100 सामान्य

व्यक्तियों पर उसका मानकीकरण किया। इस सूची के द्वारा बच्चों की व्यक्तिगत हीनताओं, सामाजिक समायोजन, पारिवारिक सम्बन्धों, दिवास्वप्न प्रवृत्ति एवं सामान्य समायोजन का मापन किया जाता है। बैल (1934) ने दो–समायोजन सूचियों– एक विद्यार्थियों के लिए तथा दूसरी वयस्कों के लिए– की रचना की एवं मानकीकरण का कार्य सम्पन्न किया। उसकी सूची पाँच क्षेत्रों– गृह, विद्यालय, समाज, संवेगात्मक एंव स्वास्थ्य में व्यक्ति के समायोजन का मापन करती है। आज विश्व में जितनी समायोजन सूचियाँ निर्मित हो रही हैं वे सभी इस पर आधारित है। थोर्पे, क्लार्क (1939) आदि ने 'केलीफोर्निया व्यक्तित्व परीक्षण' का निर्माण किया जो व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षेत्रों में व्यक्ति के समायोजन को इंगित करता है। इसी प्रकार से अन्य कई समायोजन सूचियों का भी निर्माण हुआ है।

समायोजन मापन के क्षेत्र में भारतीय योगदान सराहनीय है। बिहार ब्यूरो, कुलकर्णी एवं केलकर, जे. पाण्डे, डी.पी.सिंह, जे.जी. तिवारी, जे.एन. तिवारी, के. रायचौधरी ने हिन्दी में; ऊषा खीरे ने मराठी में, पी.ए. अब्राहम, डी. ई. जॉर्ज तथा आर.एस. नैयर ने मलयालम में बैल की 'समायोजन सूचियों' का भारतीय परिस्थितियों में अनुकूलन किया। अलीगढ़ विश्वविद्यालय के कादरी ने 'अलीगढ़ समायोजन सूची' का निर्माण कॉलेज एवं विश्वविद्यालय छात्रों के निमित्त किया। इस सूची का मानकीकरण 1,089 पुरुषों एवं 2,169 स्त्री छात्रों पर सम्पन्न किया गया। यह सूची सामाजिक, संवेगात्मक, स्वास्थ्य, परिवार एवं धन के सम्बन्ध में व्यक्ति के समायोजन का मापन करती है। मनोविज्ञानशाला, उत्तरप्रदेश, ने हायर सैकण्ड्री कक्षाओं में अध्ययन करने वाले 14 से 20 वर्ष की आयु वाले विद्यार्थियों हेतु हिन्दी में एक, 'शाब्दिक सामूहिक

छात्रों पर सम्पन्न किया गया। यह सूची सामाजिक, संवेगात्मक, स्वास्थ्य, परिवार एवं धन के सम्बन्ध में व्यक्ति के समायोजन का मापन करती है। मनोविज्ञानशाला, उत्तरप्रदेश, ने हायर सैकण्ड्री कक्षाओं में अध्ययन करने वाले 14 से 20 वर्ष की आयु वाले विद्यार्थियों हेतु हिन्दी में एक, 'शाब्दिक सामूहिक व्यक्तित्व परीक्षण' का निर्माण किया, जो चार क्षेत्रों—गृह, कॉलेज, समाज एव संवेगात्मक स्थिति— में समायोजन का मापन करती है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में समायोजन क्षेत्र के मापन का कार्य तीव्र गति से होने लगा। सागर विश्वविद्यालय में एच.एस. अस्थाना (1950) ने व्यक्ति के सामान्य समायोजन का मापन करने हेतु 42 पदों वाली एक 'समायोजन सूची' का निर्माण किया। काशी विश्वविद्यालय के मधुसूदन लाल सक्सेना (1959) ने 11 वर्ष के अवयस्कों के समायोजन का मापन करने हेतु 'सामूहिक शाब्दिक व्यक्तित्व की परख प्रश्नावली' का निर्माण किया। इस परीक्षण में 10 पद निहित हैं, जो पाँच क्षेत्रों— गृह, स्वास्थ्य, समाज, संवेगात्मक स्थिति एवं स्कूल/कॉलेज के क्षेत्र के व्यक्ति के समायोजन की ओर इंगित करता है। सागर के जय प्रकाश (1960) ने 'किशोर के समायोजन प्रश्नावली' का 2,000 किशोर छात्रों पर मानकीकरण किया जो 12 से 18 वर्ष की आयु के किशोरों का समायोजन मापती है। दिल्ली के.पी. एम. पटेल एवं अन्य ने परिवार तथा संवेगात्मक समायोजन सूचियों की अलग—अलग रचना की। सन् 1964 में रेड्डी ने 'एडोलेसेन्ट एडजेस्टमेण्ट इन्वेन्ट्री' की रचना की। मेहर डी बेंगाली (1965) ने 'यौवनिक समायोजन विश्लेषण का हिन्दी एंव अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मानकीकरण किया। इस सूची का मुख्य उद्देश्य 16 वर्ष से अधिक के बच्चों का व्यक्तिगत एवं सामाजिक समायोजन मापना है। मेरठ के

वी.के. मित्तल (1965) ने एक 'समायोजन सूची' की रचना की जो गृह, स्वास्थ्य, संवेगात्मक स्थिति तथा कॉलेज/स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के समायोजन का मापन करती है।

एम.एम. भग्या (1966) ने एक स्कूल समायोजन सूची का निर्माण किया। प्रमोद कुमार (1967) ने अस्थाना की समायोजन सूची में संशोधन कर 'संशोधित समायोजन सूची' का मानकीकरण किया। यह 40 पदों वाली सूची व्यक्ति के सामान्य समायोजन को इंगित करती है। इसी वर्ष बड़ौदा के भट्टाचार्य, शाह, पारीख ने स्कूल एडजेस्टमेन्ट इन्वेन्ट्री' का आंग्ल एवं गुजराती भाषा में अनुकूलन किया तथा प्रेम पसरिचा ने कॉलेज छात्रों के लिए 232 पदों वाली समायोजन सूची का निर्माण किया जो ग्यारह क्षेत्रों में समायोजन को इंगित करती है। पी.वी. राममूर्ति (1968) ने वयस्कों का पाँच क्षेत्रों– स्वास्थ्य, गृह, सामाजिक, संवेगात्मक तथा आत्मिक– से मापन करने के लिए एक समायोजन सूची का निर्माण किया। ए.के.पी. सिन्हा तथा आर. पी. सिंह (1969) ने हाईस्कूल छात्रों के लिए एक समायोजन सूची की रचना की, जिसमें 60 पद निहित हैं। यह हाईस्कूल छात्रों का सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक क्षेत्रों में समायोजन मापती है। इसी वर्ष उदय पारीख, टी.वी. राव, पी. रामालिंगास्वामी तथा बलराम शर्मा ने 'प्रिएडोलेसेन्ट एडजेस्टमेण्ट स्केल' तथा एस.डी. बादामी ने 'फैमिली एडजेस्टमेण्ट इन्वेन्ट्री' की रचना की। ए.के. पी. सिन्हा तथा आर.पी.सिंह (1971) ने कॉलेज छात्रों के समायोजन मापन हेतु एक 'समायोजन सूची' की रचना की। यह 102 पदों वाली सूची पाँच क्षेत्रों– गृह, कॉलेज, समाज, संवेग एवं शैक्षिक– में कॉलेज विद्यार्थियों का समायोजन मापती है। एच.एम.सिंह (1972) ने शिक्षकों के लिए 'वैवाहिक

देवा (1979) ने 'सामाजिक समायोजन सूची' का निर्माण किया जो कि व्यक्ति के सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन का मापन करती है। केरल के आर. सुकुमारन नायर (1981) ने वहाँ के हाईस्कूल विद्यार्थियों के चार क्षेत्रों में समायोजन को जानने के लिए 'कालीकट विश्वविद्यालय समायोजन सूची' की रचना की। रोहतक के एस.के. मंगल (1982) ने 'अध्यापक समायोजन सूची' का मानकीकरण कर प्रकाशन कराया। यह शिक्षक का पाँच क्षेत्रों में समायोजन मापती है। 'देहली के रोमादत्त एवं एन.के.जंजीरा (1984) ने 'छात्र समायोजन तालिका' का निर्माण किया जो कि छात्रों का चार क्षेत्रों में समायोजन मापती है। नागपुर के बी.बी. पाटिल एवं अन्य (1984) ने भी बैल की समायोजन सूची के वयस्क प्रारूप का मराठी, अंग्रेजी एवं हिन्दी में भारतीय अनुकूलन किया।

समस्याओं का मापन

मूने समस्या जाँच सूची का आंग्ल भाषा में अनुकूलन त्रिपुति के एस. एन. राव, बंगाली में कमल मुकर्जी, मानस रायचौधरी, हिन्दी में एम.सी. जोशी, जगदीश पाण्डे, एस.के. पाल तथा पी.सी. सक्सेना ने किया। सन् (1965) में एस.एम. कुलकर्णी ने 'युवक समस्या' सूची को हिन्दी तथा इंगलिश में प्रकाशित किया। देहली के मुरलीधरन (1969) ने एक 'बिहेवियर प्रोबेलम इन्वेन्ट्री' का निर्माण किया। इसी वर्ष जबलपुर के शिक्षा मनोविज्ञान एवं निर्देशन महाविद्यालय ने निर्देशन कार्य हेतु एक 160 पदों वाली 'समस्या जाँच सूची' की रचना की, जो विद्यार्थियों की विद्यालय, आत्म, गृह तथा अन्य से समायोजन की आवश्यकता तथा समस्याओं पर प्रकाश डालती है। त्रिपुति के पी.वी. राममूर्ति (1970) ने वयस्कों तथा विद्यालय छात्रों (6 से 10 तक) के लिए अलग–अलग 'समायोजन सूचियों की रचना की। इसी वर्ष निर्मल भाग्या

सूची' की रचना की, जो विद्यार्थियों की विद्यालय, आत्म, गृह तथा अन्य से समायोजन की आवश्यकता तथा समस्याओं पर प्रकाश डालती है। त्रिपुति के पी.वी. राममूर्ति (1970) ने वयस्कों तथा विद्यालय छात्रों (6 से 10 तक) के लिए अलग--अलग 'समायोजन सूचियों की रचना की। इसी वर्ष निर्मल भाग्या ने 'समस्या जाँच सूची' का निर्माण बच्चों की समस्याओं एवं कठिनाइयों को जानने के उद्देश्य से किया। कानपुर की मिथलेश वर्मा (1975) ने एक 'युवक समस्या सूची' की रचना एवं मानकीकरण किया।

प्रचलित प्रतिनिधियात्मक सूचियाँ

1. बैल/समायोजन सूची

परिचय एवं विवरण

सन् 1934 में विश्वविद्यालय 'बैल समायोजन सूची' का निर्माण हुआ। उनकी यह सूची थरस्टर्न के व्यक्तित्व परीक्षण एवं उस समय में प्रचलित अन्य व्यक्तित्व--परीक्षणों के आधार पर निर्मित हुई। इस सूची के दो प्रतिरूप हैं– प्रथम हाईस्कूल एवं कॉलेज विद्यार्थियों के लिए तथा द्वितीय वयस्कों के लिए। इस सूची के प्रथम प्रतिरूप में 140 पद हैं, जो चार विभिन्न क्षेत्रों– गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक स्थिति तथा संवेगात्मक अवस्था में व्यक्ति के समायोजन का मापन करते हैं। इस प्रकार यह सूची चार वर्गों में विभक्त हो जाती है, जिसमें से प्रत्येक में 35 पद हैं। इसके द्वितीय प्रतिरूप में एक अन्य वर्ग के 20 पदों को व्यावसायिक सामंजस्य जानने के लिए और जोड़ दिया जाता है। अतएव इसके द्वितीय प्रतिरूप (जो वयस्कों के लिए है) में 160 प्रश्न हो जाते हैं तथा यह पाँच क्षेत्रों में वयस्कों के समायोजन की ओर इंगित करती है। इनमें पदों का चयन विभेद--शक्ति के आधार पर किया जाता है। उच्चतम 15

प्रतिशत एवं निम्नतम 15 प्रतिशत व्यक्तियों के विभेद करने वाले पदों को ही इसमें सम्मिलित किया जाता है। इसके अलग—अलग क्षेत्रों में पदों का चयन आन्तरिक संगति (Internal consistency) के आधार पर किया जाता है। इसमें प्रश्नों का उत्तर हाँ, "न" एवं "?" में गोल घेरा खींचकर दिया जाता है तथा समायोजन प्राप्तांकों (Adjustment Scores) को सम्पूर्ण रूप से अलग—अलग क्षेत्र के रूप में प्राप्त किया जा सकता है। अतएव इसके फलांकन की विधि सुगम है। सम्पूर्ण परीक्षण में प्राप्त समायोजन प्राप्तांक इस बात की ओर इंगित करते हैं कि व्यक्ति का समायोजन श्रेष्ठ (Excellent), अच्छा (Good), सामान्य (Average), असन्तोषजनक (Unsatisfactory) एवं अत्यन्त असन्तोषजनक (Very unsatisfactory) है।

उद्देश्य

व्यक्ति को निर्देशन एवं संदर्शन प्रदान करने से पूर्व विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति की समायोजन सम्बन्धी कठिनाइयों का पता लगाना ही इस परीक्षण का मुख्य उद्देश्य है।

विश्वसनीयता—

सम्पूर्ण परीक्षण की विश्वसनीयता को पुनर्परीक्षण विधि से 0.75—0.97 तथा सम—विषम अंक विधि से 0.80—0.89 पाया गया तथा प्रत्येक वर्ग अलग—अलग विश्वसनीयता 0.89 गृह—सामंजस्य, 0.80 स्वास्थ्य—सामंजस्य, 0.89 सामाजिक सामंजस्य, 0.85 संवेगात्मक—सामंजस्य पायी गयी।

वैधता

यह सूची विषय—वस्तु वैधता (Content validity) पर आधारित है। इसकी वैधता को विभिन्न कसौटियों, अन्य परीक्षणों से सह—सम्बन्धित कर निर्णायकों

के मापदण्ड, पद--विश्लेषण तथा दो अन्तिम समूहों (Extreme groups) के अन्तर के द्वारा ज्ञात कर सकते हैं। इस सम्पूर्ण सूची का वैधकरण थर्स्टन की व्यक्तित्व सूची की कसौटी के आधार पर किया गया। इसका वैधता गुणांक 0.58 से 0.89 तक पाया गया। इसकी वैधता को अलग–अलग वर्ग का मूल्यांकन करके भी ज्ञात किया जा सकता है।

2. केलीफोर्निया व्यक्तित्व परीक्षण

इस परीक्षण का प्रकाशन केलीफोर्निया विश्वविद्यालय के थोर्प, क्लार्क एवं टीग्स (1939) ने किया। इसकी पाँच श्रृंखलाएँ– प्राइमरी, एलीमेण्टरी, इण्टरमीडिएट सेकण्डरी तथा वयस्कों के लिए उपलब्ध हैं। यह परीक्षण व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित विभिन्न शीलगुणों का मापन करता है। व्यक्ति का आत्म–समायोजन (Self-adjustment) जानने के लिए उसके विभिन्न क्षेत्रों, जैसे-- आत्मनिर्भरता (Self-reliance), व्यक्तिगत महत्ता (Personal work), व्यक्तित्व स्वतन्त्रता (Personal Freedom), मिलने की भावना (Feeling of belonging), हटने की प्रवृत्ति की स्वतन्त्रता (Freedom of withdrawn tendencies), उदासीन विन्मुखता (Freedom from nervousness) से सम्बन्धित प्रश्नों को पूछा जाता है। इसी प्रकार के व्यक्ति का सामाजिक समायोजन (Social adjustment) जानने के लिए सामाजिक मानक (Social standard), सामाजिक कौशल (Social Skill), असामाजिक प्रवृत्तियों से मुक्ति (Freedom from antisocial tendencies) तथा पारिवारिक, स्कूली एवं साम्प्रदायिक सम्बन्धों से सम्बन्धित प्रश्नों को पूछा जाता है। इसमें उपर्युक्त समस्त शीलगुणों से सम्बन्धित प्रश्नों को पूछा जाता है तथा प्रश्नों का उत्तर 'हाँ अथवा नहीं' में देना होता है। इसके मानक 1,000 विभिन्न समायोजन

परिस्थितियों पर आधारित है। इसमें प्रत्येक शीलगुण से सम्बन्धित सम्भव प्राप्तांक (Possible Score), व्यक्ति प्राप्तांक (Pupil Score), शतांशीय बिन्दु (Percentile rank) तथा शतांशीय (Percentiles) को व्यक्तित्व पार्श्वचित्र (Personality profile) पर प्रदर्शित किया जाता है। तत्पश्चात् इसकी सहायता से यह पता चल जाता है कि व्यक्ति किस क्षेत्र में मानकों से विचलित हो रहा है। अतएव इस प्रकार उसके असमायोजन क्षेत्र को ज्ञान करके उसके उपचार की व्याख्या की जाती है।

उद्देश्य

इस परीक्षण का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षेत्रों में असमायोजन को प्राप्त करना है।

विश्वसनीयता :

इस परीक्षण के बिन्दु प्राप्तांकों (Point Scores) की विश्वसनीयता को 0.51 से 0.97 तथा समस्त अंकों की विश्वसनीयता को 0.80 से 0.96 पाया गया। अतएव इसका विश्वसनीयता गुणांक अधिक उच्च है।

वैधता–

यह परीक्षण विषय--वस्तु (Content) वैधता पर आधारित है। इसलिए इसका वैधकरण स्वयं पद--चयन में ही कर लिया गया। इसकी वैधता को चिकित्सकों के निष्कर्षो, विशेषज्ञों के निर्णयों, पद–विश्लेषण, परीक्षार्थियों की प्रतिक्रियाओं एवं द्विपांवितक सह--सम्बन्ध के द्वारा ज्ञात किया जा सकता है।

3. प्रमोद कुमार : संशोधित समायोजन सूची 1967

प्रमोद कुमार ने इस संशोधित सूची का निर्माण कॉलेज छात्रों के दुर्बल समायोजन को जानने एवं उन्हें निर्देशन प्रदान करने के उद्देश्य से किया।

इस सूची में 'हाँ' या 'नहीं' प्रत्युत्तर वाले 40 उच्चतम विभेदी पदों को सम्मिलित किया गया। इन पदों को प्रसिद्ध व्यक्तित्व सूचियों– वुडवर्थ प्राथमिकता सूची, सेण्डलर आत्मनिर्धारण सूची– प्रथम भाग तथा अस्थाना की समायोजन सूचियों से लिया गया है। इसके समस्त पदों के प्रत्युत्तर देने में लगभग 20–25 मिनट का समय लगता है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के सामान्य समायोजन स्तर को ज्ञात करना है। इसका अन्तिम रूप से मानकीकरण इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी, खड़कपुर के 229 इंजीनियरिंग छात्रों एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय की 286 छात्राओं पर किया गया। अर्द्ध–विच्छेद विधि से पुरूष वर्ग की विश्वसनीयता 0.88 ज्ञात की गयी। पुनर्परीक्षण विधि से एक सप्ताह के अन्दर से पुरूष समूह की विश्वसनीयता 0.81 तथा दो सप्ताह के अन्तर से स्त्री समूह की 0.74 ज्ञात की गयी। पद–विश्लेषण विधि के ऊपर एवं नीचे के 25 प्रतिशत उच्च विभेद पदों को सम्मिलित किया गया। अस्थाना की समायोजन सूची से 0.71 सह–सम्बन्ध ज्ञात किया गया। पुरूष एवं स्त्री विद्यार्थियों के लिए शतांशीय मानक अलग से तैयार किये गये।

4 सक्सेना : व्यक्तित्व परख प्रश्नावली (1962)

इस प्रपत्र का प्रयोग 11 वर्ष से वयस्कावस्था तक के विद्यालय, कॉलेज एवं विश्वविद्यालय छात्रों हेतु किया जाता है। यही अच्छी तथा बुरी भाँति समायोजित विद्यार्थियों के मध्य विभेद करता है। इसके माध्यम से 5 निम्न छात्रों–गृह, स्वास्थ्य' सामाजिक, संवेगात्मक तथा विद्यालय– में व्यक्ति के समायोजन के विषय में ज्ञात किया जाता है। इन पाँच क्षेत्रों का मापन करने वाली प्रश्नावली में 90 पद प्रश्न–रूप में निहित हैं तथा उनके प्रत्युत्तरों को 'हाँ', 'नहीं' तथा 'सन्देहपूर्ण' तीन श्रेणियों में अलग उत्तर–सूची पर अंकित

किया जाता है। इनमें पद अनियमित क्रम से व्यवस्थित होते हैं। यद्यपि यह प्रश्नावली समय–रहित है, फिर भी इसके समस्त प्रश्नों को करने में 30 से 40 मिनट का समय लगता है। इसका प्रयोग दोनों लिंगों के व्यक्तियों हेतु उपयोगी होता है तथा आवश्यकता के अनुसार इसे व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से प्रशासित किया जाता है। इसका प्रशासन एवं फलांकन दोनों ही अत्यन्त सरल हैं। इस प्रश्नावली पर अधिक अंक व्यक्ति के श्रेष्ठ समायोजन तथा निम्न अंक कमजोर समायोजन की ओर इंगित करते हैं। इस प्रश्नावली का उद्देश्य 10 वर्ष से वयस्कावस्था तक दोनों लिंगों के विद्यार्थियों के श्रेष्ठ समायोजन एवं निम्न समायोजन की ओर इंगित करना एवं विशिष्ट क्षेत्रों में व्यक्ति के समायोजन का अध्ययन करना है। इसका मानकीकरण कक्षा 9 से स्नातकोत्तर स्तर तक अध्ययन करने वाले 2,529 विद्यार्थियों पर किया गया। प्रतिदर्श में दोनों लिंगों के छात्रों के अलावा कला, विज्ञान, वाणिज्य तथा प्रशिक्षण पाने वाले छात्रों को भी रखा गया। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के पूर्वी, केन्द्रीय एव पश्चिमी भागों के ग्रामीण, शहरी तथा अर्द्ध–ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर भी इसका मानकीकरण किया गया। पुनर्परीक्षण विधि से विभिन्न क्षेत्रों का विश्वसनीयता गुणांक .72 से 0.86, तर्कयुक्त समानता विधि से 0.57 से 0.84 के मध्य तथा अर्द्ध–विच्छेद विधि से 0.86 ज्ञात किया गया। 150 विद्यार्थियों का चयन कर इस परीक्षण के अंकों को अस्थाना के समायोजन परीक्षण से सह–सम्बन्धित करने पर 0.89 वैधता गुणांक ज्ञात किया गया। अध्यापक के द्वारा किये गये अंकों को कसौटी मानकर भी इसी वैधता को ज्ञात किया गया। 254 छात्रों पर इस परीक्षण का क्रौस–वैधकरण भी किया गया। स्टेनी मानक, सम्भाव्य त्रुटि इकाई पर आधारित टी–प्राप्तांक मानक

तथा मानक विचलन इकाई पर आधारित टी–प्राप्तांक मानक को ज्ञात किया गया।

5. मित्तल : समायोजन सूची (1965)

यह सूची चार क्षेत्रों -- गृह, समाज, स्वास्थ्य, संवेगात्मक तथा विद्यालय एवं कॉलेज--में व्यक्ति के समायोजन का मापन करती है। इसमें प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित 20-20 पद, कुल मिलाकर 80 पद कथनों के रूप में प्रस्तुत हैं। इसकी कोई समय--सीमा निर्धारित नहीं है फिर भी साधारणतया इसे करने में 30--35 मिनट का समय लग जाता है। इसका मुख्य उद्‌देश्य भली–भाँति समायोजित विद्यार्थियों के मध्य विभेद करना है। जिससे अध्यापकों व अन्य शिक्षाविदों को निर्देशन एवं सदर्शन प्रदान करने में यह सहायक हो सके। इसका मानकीकरण कक्षा 9 से स्नातकोत्तर के 1,200 स्त्री पुरूषों पर किया गया। इसके प्रतिचयन में ग्रामीण, शहरी एवं अर्द्ध–ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न स्कूल–कॉलेजों को सम्मिलित किया गया। अर्द्ध–विच्छेद विधि के समय–विषय अंकों के माध्यम से सूची के चारों क्षेत्रों की विश्वसनीयता को अलग–अलग ज्ञात किया गया। स्पीयरमैन ब्राउन शुद्धिकरण सूत्र के प्रयोग से सूची का विश्वसनीयता गुणांक 95 व्यक्तियों पर 0.94 आया। इसके विभिन्न क्षेत्रों को विश्वसनीयता गुणांक 0.44 से 0.80 तक ज्ञात किया गया। विभिन्न स्तरों पर परीक्षण की वैधता को ज्ञात करने के लिए विभिन्न सूचियों की सहायता ली गयी। परीक्षण की वैधता की बाह्य कसौटियों को लिया गया। हाईस्कूल स्तर पर सूची अंकों एवं अध्यापक मापनी के मध्य 0.78 तथा माता–पिता मापनी में 0.59 सह–सम्बन्ध गुणांक ज्ञात किया गया। कॉलेज स्तर पर रॉटर्स के अपूर्ण वाक्य प्रपत्र से सह–सम्बन्धित करने पर 0.55 सह–सम्बन्ध ज्ञात किया गया।

परीक्षा के उप–परीक्षणों का खण्ड–विश्लेषण भी किया गया।

6. सिन्हा एवं सिंह समायोजन सूची (कॉलेज विद्यार्थियों हेतु) (1967)

यह समायोजन सूची पाँच क्षेत्रों– गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक तथा शैक्षिक में कॉलेज विद्यार्थियों का समायोजन इंगित करती है। इस सूची में 102 पद हैं, जिनका प्रत्युत्तर व्यक्ति को हाँ/नहीं में देना होता है। इस सूची में जो प्रत्युत्तर असन्तोषजनक समायोजन को इंगित करता है उसे +1 अंक तथा जो सन्तोषजनक समायोजित की इंगित करता है उसे 0 अंक प्रदान किया जाता है। इस प्रकार इस सूची पर किसी व्यक्ति का योग प्राप्तांक उसके असन्तोषजनक समायोजन को इंगित करता है। विभिन्न क्षेत्रों में कॉलेज विद्यार्थियों के समायोजन की समस्याओं को ज्ञात करना– इस अन्तिम रूप का मानकीकरण पटना एवं मगध विश्वविद्यालय के 2,280 विद्यार्थियों पर किया गया, जिनमें 1,550 पुरुष एवं 730 स्त्री विद्यार्थी थे। इस सूची की विश्वसनीयता को चार प्रकार से ज्ञात किया गया– अर्द्ध–विच्छेद विश्वसनीयता गुणांक 0.83 से 0.97 तक है। पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक 0.82 से 0.96 तक है। होट्स गुणांक 0.83 से 0.95 तक है कूडर–रिचर्डसन सूत्र से गुणांक 0.82 से .92 तक प्राप्त किया गया। सूची की वैधता ज्ञात करने हेतु सूची के विभिन्न पाँचों क्षेत्रों में परस्पर 0.14 से 0.32 तक सह–सम्बन्ध ज्ञात किया गया। सूची के अंकों का छात्रावास अधीक्षक के निर्धारण से भी सह–सम्बन्ध करके वैधता को ज्ञात किया गया। इसके लिए 120 छात्रों पर मानक एकत्रित किये गये एवं 0.58 सहसम्बन्ध पाया। पाँच क्षेत्रों के अलग–अलग तथा समस्त सूची पर पुरूषों एवं स्त्रियों के शतांशीय

मानकों की गणना की गयी। मूल प्राप्तांकों के आधार पर मानक पाँच विभिन्न प्रकार के समायोजन इंगित करता है।

7. ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी.सिंह : विद्यालय छात्रों के लिए समायोजन सूची (1984)

यह स्कूल छात्रों के समायोजन को मापने वाली सूची है। ये परीक्षण 14 से 18 वर्ष आयु के लिए बनाया गया है। इसमें 60 पद हैं। यह परीक्षण समायोजन के तीन क्षेत्रों का अध्ययन करता है– संवेगात्मक (Emotional), सामाजिक (Social) तथा शैक्षिक (Educational)। इस परीक्षण के पदों के उत्तर 'हाँ' 'नहीं' में देने होते हैं। इसकी विश्वसनीयता अर्द्ध–विच्छेदित विधि से 0.95 व पुनर्परीक्षण विधि से 0.93 प्राप्त हुई। इस परीक्षण में द्विपांक्तिक सहसम्बन्ध (Biserial Correlation) ज्ञात किया जो 0.01 स्तर पर सार्थक प्राप्त हुआ। साथ ही परीक्षण पर शतांशीय मानक (Percentile Norms) ज्ञात किये गये–

8. ए.के. सिंह एवं ए. सेनगुप्ता : समायोजन सूची (हाईस्कूल विद्यार्थियों के लिए) (1987)

यह परीक्षण 11 से 15 वर्ष के बालकों के लिए बनाया गया है, इसमें 150 पद हैं। ये परीक्षण परीक्षार्थी का पाँच क्षेत्रों में समायोजन मापन करता हैं– घर (Home), स्वास्थ्य (Health), सामाजिक (Social), संवेग (Emotional), विद्यालय (School) आदि। इस परीक्षण पर अधिकतम 150 प्राप्तांक प्राप्त किये जा सकते हैं। इसमें 'हाँ' पर एक अंक और 'नहीं' पर शून्य अंक दिया जाता है। इस परीक्षण की विश्वसनीयता पुर्नपरीक्षण विधि से 0.82 ज्ञात की गई। इस परीक्षण की वैधता ज्ञात करने के लिए इसे बैल की समायोजन 'सूची' से

सम्बन्धित किया गया और सह–सम्बन्ध 0.42 प्राप्त हुआ। शतांशीय मानक (Percentile Norms) इस परीक्षण पर ज्ञात किये गये।

9. मिथलेश वर्मा : युवक समस्या सूची (1975)

यह एक आत्म–प्रशासित होने वाली सूची है जो 16 से 20 वर्ष आयु के छात्रों की चार क्षेत्रों– परिवार, विद्यालय, समाज, व्यक्तिगत तथा अधिक संवेदनशीलता में समस्याओं को इंगित करती है। इस सूची में कुल 80 पद हैं जो उपर्युक्त चार क्षेत्रों तथा उनके भी उपक्षेत्रों में विभक्त हैं। इस सूची के अन्तिम रूप को 764 छात्रों पर प्रशासित कर शतांशीय क्रम तथा शतांशीय बैण्ड तथा स्टेनाइन मानक अलग–अलग क्षेत्रों तथा सम्पूर्ण सूची के ज्ञात किये गये। इसके विभिन्न क्षेत्रों का पुनर्परीक्षण विधि से विश्वसनीयता गुणांक 0.66 से 0.86 के मध्य ज्ञात किया गया। विभिन्न कसौटियों से सम्बन्धित करने पर वैधता गुणांक 0.68 से 0.75 के मध्य ज्ञात किया गया।

10. एस.सी. जोशी एवं जगदीश पाण्डे : समस्या जाँच सूची (1988)

इन परीक्षण के द्वारा किशोर बालकों की समस्याओं के बारे में सूचना प्राप्त होती है। इसमें 330 पद हैं। यह परीक्षण ग्यारह क्षेत्रों का अध्ययन करता है– शारीरिक एवं स्वास्थ्य विकास, आर्थिक, जीवन एवं रोजगार सम्बन्धी सामाजिक मनोरंजनात्मक प्रतिक्रियायें, लिंग एवं विवाह सम्बन्धी, सामाजिक मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध, व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध, नैतिकता एवं धार्मिक, घर एवं परिवार, व्यावसायिक एवं शैक्षिक, स्कूल कार्यों में समायोजन एवं पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक प्रणाली सम्बन्धी समस्यायें आदि। इस परीक्षण को किशोर लगभग एक घण्टे में पूरा कर लेते हैं। इस परीक्षण की

विश्वसनीयता पुनर्परीक्षण विधि से 0.71 और अर्द्ध–विच्छेदित विधि से 0.90 प्राप्त हुई। इसकी वैधता ज्ञात करने के लिए इस परीक्षण को 'सक्सैना' की 'समस्या जाँच सूची'' से सम्बन्धित किया और सहसम्बन्ध 0.20 प्राप्त हुआ।

4 व्यक्तित्व

व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'परसोना' शब्द से हुई है। 'परसोना' का अर्थ कृत्रिम या मिथ्या आभास है। प्रारम्भ में व्यक्तित्व सम्बन्धी अवधारणा इसी पर आधारित थी। व्यक्ति की बाहरी वेशभूषा, बाहरी आभास एवं शारीरिक बनावट को ही व्यक्तित्व का नाम दिया गया जबकि वास्तविक स्थिति इससे भिन्न है। इस विचारधारा को सतही–दृष्टिकोण का नाम दिया जा सकता है। इस दृष्टिकोण का आशय स्पष्ट है कि व्यक्ति जैसा लगता है वही उसका व्यक्तित्व है। वाटसन तथा शरमैन आदि ने इसी मत का समर्थन किया है।

व्यक्तित्व की व्याख्या के लिए जो दूसरा दृष्टिकोण सामने आया उसे तात्विक दृष्टिकोण कहते हैं। यह दृष्टिकोण व्यक्ति के आन्तरिक गुणों को महत्त्व देता है। वारेन एवं कारमाइकल इसके समर्थक हैं। इनके अनुसार, विकास की किसी भी अवस्था में व्यक्ति का समग्र मानसिक संगठन ही उसका व्यक्तित्व है। इसमें व्यक्ति के चरित्र के सभी आयाम, बुद्धि, स्वभाव, कौशल, नैतिकता एवं अभिवृत्तियाँ इत्यादि, जो कि विकासात्मक प्रक्रियाओं के कारण प्रदर्शित होती हैं, सम्मिलित हैं।

इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि व्यक्तित्व की व्याख्या या तो बाह्य आभास या स्वाभाविक गुणों के आधार पर करने का प्रयास लम्बे समय तक होता रहा है। परन्तु इनमें से कोई भी दृष्टिकोण उपयुक्त नहीं है। वास्तव में

व्यक्तित्व के अन्तर्गत व्यक्ति की सम्पूर्ण विशेषताएं आती हैं और उनमें पारस्परिक समन्वय पाया जाता है। समन्वय के अभाव में व्यक्ति की विशेषताओं का उपयोग तथा महत्व घट जाता है। क्योंकि व्यक्तित्व का प्रमुख कार्य समायोजन स्थापित करना है और इसके लिए समन्वय आवश्यक है।

व्यक्तित्व को विद्वानों ने विभिन्न रूपों में परिभाषित किया है। इसकी परिभाषाओं को चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। इन्हें सर्वग्राही, समकलनात्मक, पदानुक्रमिक एवं समायोजन आधारित परिभाषाएँ कहते हैं। प्रथम वर्ग में व्यक्तित्व को सभी विशेषताओं का योग माना गया है। द्वितीय वर्ग इस पर बल देता है कि विशेषताओं में यथोचित समन्वय होना चाहिए। तृतीय वर्ग के अनुसार व्यक्तित्व में कई प्रकार के स्व या आत्म होते हैं। इनका विकास क्रमशः होता है। इनके विकास का क्रम है– भौतिक आत्म, सामाजिक आत्म, आध्यात्मिक आत्म एवं विशुद्ध अहम्। इनमें विशुद्ध आत्म का आशय है विभिन्न वस्तुओं में स्व या आत्म की अनुभूति करने लगना।

व्यक्तित्व सम्बन्धी परिभाषाओं का चतुर्थ वर्ग व्यक्तित्व को समायोजन स्थापित करने की योग्यता के रूप में परिभाषित करता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक इसी दृष्टिकोण को अधिक महत्व देते हैं। आलपोर्ट की परिभाषा इसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। व्यक्तित्व की अधिकांश आधुनिक परिभाषाएँ आलपोर्ट, की ही परिभाषा से प्रभावित लगती है। कुछ प्रमुख परिभाषाएँ यहाँ प्रस्तुत हैं–

आलपोर्ट ने लिखा है, "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोदैहिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो पर्यावरण के प्रति उसके विशिष्ट समायोजन को निर्धारित करता है।

प्राइस इत्यादि के अनुसार, "पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित

करते समय व्यक्ति जिस तरह चिन्तन एवं व्यवहार करता है, उसे व्यक्तित्व कहते है; इसमें प्रेक्षणीय व्यवहार प्रतिमान तथा साथ ही साथ अपेक्षाकृत कम स्पष्ट विशेषताएँ, जैसे– मूल्य, प्रेरक, अभिवृत्तियाँ, योग्यताएँ एवं आत्म–अवधारणा सम्मिलित हैं।"

आधुनिक मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व को व्यक्ति की सम्पूर्ण विशेषताओं की विधिवत् समन्वित प्रणाली मानते हैं। इसका विकास व्यक्ति की उम्र में वृद्धि तथा पर्यावरण के साथ होने वाली अन्तरक्रिया पर निर्भर करता है। चूँकि हमारी जैविक संरचना तथा सामाजिक परिस्थितियों में कुछ न कुछ समानता एवं असमानता पाई जाती है, इसी कारण लोगों में भी आपस में समानताएँ एवं असमानताएँ पाई जाती हैं। व्यक्तित्व ऐसी समन्वित प्रणाली हैं जो व्यक्ति को वैयक्तिकता प्रदान करती है। यह समायोजन को प्रभावित करती है।

इसके आधार पर व्यक्तित्व के बारे में निम्नांकित पक्षों का उल्लेख किया जा सकता है--

1. गत्यात्मक संगठन–

यह अवधारणा यह इंगित करती है कि व्यक्तित्व प्रतिमान सतत् रूप में विकसित तथा परिवर्तित होते रहते हैं ताकि समायोजन स्थापित होता रहे। अर्थात व्यक्तित्व गत्यात्मक होता है।

2. संगठन एवं व्यवस्था

ये सम्प्रत्यय यह इंगित करते हैं कि व्यक्तित्व में अनेक घटक पाये जाते हैं और वे परस्पर अन्तरसम्बन्धित तथा संगठित होते हैं।

3. मनोदैहिक

इसका आशय यह है कि व्यक्तित्व में मानसिक तथा शारीरिक (स्नायुविक)

दोनों प्रकार के कारकों का समावेश होता है। अर्थात् मन और शरीर के संकार्य परस्पर मिश्रित रूप में संगठित होकर कार्य करते हैं।

4. निर्धारित करना

आलपोर्ट का कहना है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार का निर्धारण करता है। व्यक्ति के कार्य या व्यवहार के पीछे उसका व्यक्तित्व ही होता है।

5. परिवेश के प्रति विशिष्ट समायोजन

किसी परिस्थिति या परिवेश में व्यक्ति द्वारा किया गया समायोजी या अनुकूलन व्यवहार विशिष्ट या अनौखा होता है। किसी परिस्थिति में लोगों के व्यवहार में कुछ न कुछ विशिष्टता (अन्तर) अवश्य ही पाई जाती है इसीलिए व्यक्ति के समायोजन को विशिष्ट या अनौखा कहा जाता है।

व्यक्तित्व के शीलगुण (लक्षण)

व्यक्तित्व की संरचना या उसका निर्माण अनेक प्रकार के शीलगुणों (लक्षणों) से होता है। शीलगुण परस्पर समन्वित रूप में कार्य करते हैं। इनका कार्य जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन को उचित दिशा तथा गति प्रदान करना होता हैं। सामान्य भाषा में इन्हें व्यक्तित्व की विशेषताएँ भी कहते हैं। व्यक्ति की स्थाई विशेषताएँ जिनके कारण उसके व्यवहार में स्थिरता दिखाई पड़ती है, शीलगुणों के नाम से जानी जाती है। हिलगार्ड इत्यादि (1975) के अनुसार, शीलगुणों से तात्पर्य उन विशेषताओं से है जिनमें कोई व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से अपेक्षाकृत स्थाई एवं निरन्तर रूप में भिन्न प्रतीत होता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि शीलगुणों का आशय व्यक्ति की अपनी विशेषताओं से है। समुचित परीक्षणों द्वारा यह निर्धारित किया जा सकता है

कि कोई व्यक्ति किसी शीलगुण के सातत्यक पर कहाँ स्थान प्राप्त कर रहा है। जैसे—मापनियों का उपयोग करके यह निश्चित किया जा सकता है कि अमुक व्यक्ति में आक्रामकता, संवेगात्मक स्थिरता, निर्भरता, सर्जनात्मकता या अन्य विशेषताओं का स्तर क्या है। इनकी मात्रा कितनी है। व्यक्तित्व का शीलगुणों के आधार पर वर्णन करना आजकल काफी लोकप्रिय उपागम बन गया है। अगर हम किसी को मित्रवत्, सतर्क, चिन्ताग्रस्त या बुद्धिमान आदि कह रहे हैं तो स्पष्ट है कि हम उसका मूल्यांकन उसके शीलगुणों के आधार पर कर रहे हैं। इस तरह के निष्कर्ष मनोवैज्ञानिक परीक्षणों या व्यक्ति के व्यवहार के प्रेक्षण के आधार पर दिये जा सकते हैं।

कैटेल (1956) ने कारक विश्लेषण की उच्चतर तकनीकों का उपयोग करके 16 मूल शीलगुणों का अलग करने में सफलता प्राप्त की है। कैटेल द्वारा निर्मित व्यक्तित्व परीक्षण द्वारा निम्नांकित 16 मूल लक्षणों का मापन होता है। विभिन्न 16 लक्षणों के लिए सांकेतिक नाम भी दिये गये हैं (जैसे—) प्रत्येक शीलगुण दो ध्रुवीय होता है, जैसे— संयमी—सहृदय, कम बुद्धिमान— अधिक बुद्धिमान, संवेगात्मक—स्थिर, विनम्र—आग्रही इत्यादि। कैटेल मापनी पर प्राप्तांकों की व्याख्या निम्न एवं उच्च प्राप्तांकों के आधार पर की जाती है और तुलनार्थ पार्श्वचित्र भी बनाये जा सकते हैं।

व्यक्तित्व प्रणाली में पाये जाने वाले विभिन्न शीलगुणों का विकास जन्मोपरान्त होता है तथा जीवनभर चलता रहता है चूँकि व्यक्तित्व शीलगुणों का विकास, परिमार्जन एवं पुनर्संगठन होता रहता है, इसीलिए व्यक्तित्व को गत्यात्मक संगठन कहा जाता हैं परन्तु व्यक्तित्व प्रणाली के प्रभावशाली गुणों में अपेक्षाकृत स्थायित्व बना रहता है, फिर भी उन पर भी परिस्थितियों का

प्रभाव पड़ता है। विभिन्न शीलगुण व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित निर्देशित तथा प्रेरित भी करते हैं।

व्यक्तित्व के प्रकार

व्यक्तित्व को वर्गीकृत करने या उसका प्रकारात्मक वर्गीकरण करने में विद्वानों की रुचि प्रारम्भ से ही देखने को मिलती है। वैसे आजकल प्रकारात्मक के स्थान पर व्यक्तित्व का अध्ययन शीलगुणों के आधार पर अधित प्रचलित हैं। इनमें हिप्पोकैट्स, केश्चमर तथा शेल्डन द्वारा प्रस्तावित व्यक्तित्व के प्रकारों का अब केवल ऐतिहासिक महत्व ही रह गया है क्योंकि इनसे व्यक्तित्व का वैज्ञानिक अध्ययन करने में सहायता नही मिल पाती है। परन्तु यंग का वर्गीकरण आज भी प्रचलन में है। यदि कुछ समानताओं के आधार पर लोगों को एक तरह के व्यक्तित्व का माना जाता है, तो इसे प्रकारात्मक उपागम कहा जाता है।

व्यक्तित्व का वर्गीकरण कार्ल युंग (1875–1961) द्वारा अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी के रूप में किया गया है। इसे मनोवैज्ञानिक प्रकार भी कहते हैं क्योंकि यह वर्गीकरण व्यवहार की प्रवृत्तियों पर आधारित है। युंग (1921) ने इनकी व्याख्या इस प्रकार की हैं।

1. अन्तर्मुखी

अन्तर्मुखता की प्रवृत्ति व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित या अन्तः की तरफ उन्मुख करती है। युंग (1921) के अनुसार, अन्तर्मुखी व्यक्ति लज्जालु, संकोची, दब्बू, विचार–प्रधान, निर्णय में विलम्ब करने वाले, भविष्य के प्रति चिन्ता करने वाले, सामाजिक क्रियाकलापों में कम दिलचस्पी लेने वाले तथा संसार के प्रति आत्मनिष्ठ दृष्टिकोण रखने वाले होते हैं। ऐसे लोग प्रायः कल्पना–जगत में

रहते हैं तथा अपनी आलोचना से जल्द ही घबड़ाते हैं। इनका ध्यान शारीरिक सुख तथा अपने ऊपर अधिक केन्द्रित होता है। इन्हें एकाकीपन अधिक पसन्द आता है। स्वभाव से ऐसे लोग शान्त प्रकृति के होते हैं। इनका व्यवहार बाह्य जगत की अपेक्षा आन्तरिक कारकों से अधिक प्रभावित होता है।

2. बहिर्मुखी

अन्तर्मुखी व्यक्तियों के विपरीत बहिर्मुखी व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक वाचाल, वाकपटु एवं सामाजिक होते हैं। ये व्यवहारकुशल तथा वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति वर्तमान को अधिक महत्त्व देते हैं तथा इनमें निर्णय लेने एवं उसे क्रियान्वित करने की क्षमता भी अधिक होती है। बहिर्मुखी अधिक क्रियाशील होते हैं तथा इनका व्यवहार बाह्य पर्यावरण द्वारा अधिक प्रभावित होता है। इनका व्यावहारिक एवं वास्तविक जगत से गहरा सम्बन्ध होता है तथा अपनी आलोचनाओं से ये घबराते नहीं हैं। इस वर्गीकरण का समर्थन आइजेन्क (1947, 1963) ने भी किया है। आइजेन्क ने इस वर्गीकरण को कारक विश्लेषण के आधार पर भी समर्थन दिया है।

3. उभयमुखी

युंग के वर्गीकरण के साथ शीघ्र ही यह समस्या अनुभव की जाने लगी कि अधिकांश लोग न तो पूर्णतः अन्तर्मुखी और न ही बहिर्मुखी होते हैं। इन्हें किस वर्ग में रखा जाये? इस समस्या के समाधान के लिए बाद में एक और व्यक्तित्व प्रकार प्रस्तावित किया गया। इसे उभयमुखी कहते हैं। इस तरह के लोगों में दोनों प्रकार की विशेषताएँ पाई जाती हैं।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि युंग ने भी व्यक्तित्व का प्रकारात्मक वर्गीकरण किया है। यह वर्गीकरण आज पहले की तरह मान्य नहीं है। कभी

यह बड़ा ही लोकप्रिय वर्गीकरण था। आज व्यक्तित्व के प्रकार नहीं बल्कि उसके शीलगुणों पर अधिक बल दिया जा रहा है। परन्तु युंग का वर्गीकरण आज भी प्रचलन में है।

व्यक्तित्व का मापन

व्यक्तित्व का मापन मनोविज्ञान में विशेष महत्त्व की विषयवस्तु रहा है। मापन इसलिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि मापन द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझने, विश्लेषित करने एवं मूल्यांकित करने का अवसर मिलता है। व्यक्तित्व का मापन करने हेतु अनेक प्रकार के परीक्षण तथा विधियाँ भी उपलब्ध हैं—

1. व्यक्तित्व अनुसूचियाँ

व्यक्तित्व के मापन में अनुसूचियाँ अत्यधिक प्रचलित तथा लोकप्रिय परीक्षण हैं। इन्हें प्रश्नावलियाँ भी कहते है। इनका प्रयोग प्रथम विश्व युद्ध के समय से अधिक होना प्रारम्भ हुआ। उस समय सेना में भर्ती हेतु सेना—योग्य विशेषताओं को तय करने की आवश्यकता अनुभव हुई। व्यक्तित्व अनुसूचियाँ ऐसे उपकरण हैं जिनमें व्यक्तित्व सम्बन्धी प्रश्न दिये रहते हैं। प्रश्नों के साथ कुछ वैकल्पिक उत्तर भी प्रायः दिये रहते हैं। व्यक्ति दिये गये उत्तरों में से किसी एक का चयन करके अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है।

इसी प्रकार और भी प्रश्न बनाये जा सकते हैं। ऐसे प्रश्नों के साथ उत्तर 'हाँ—नहीं' में भी दिये जा सकते हैं। इसी प्रकार उत्तर के विकल्प दो से अधिक (जैसे—तीन, चार या पाँच आदि) भी हो सकते हैं। वर्तमान समय में व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का मापन करने के लिए बहुतायत में अनुसूचियाँ उपलब्ध हैं। वैसे आवश्यकतानुसार नवीन अनुसूचियाँ बनाई भी जा सकती

हैं। अनुसूचियों को मनोमितीय या मनोवैज्ञानिक परीक्षण या मापनियाँ भी कहते हैं। इन्हें आत्म–विवरण परीक्षण भी कहते हैं। इस प्रसंग में कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तित्व अनुसूचियों हैं–

1. मिन्नेसोटा बहुअंशी व्यक्तित्व अनुसूची

व्यक्तित्व के मापन की यह विश्व प्रसिद्ध मापनी है। इसका निर्माण हाथावे एवं मैक्किनले द्वारा मिन्नेसोटा विश्वविद्यालय में किया गया था। इसके द्वारा एक से अधिक व्यक्तित्व आयामों का मापन होता है। इन्हीं कारणों से इसका नाम मिन्नेसोटा बहुअंशी व्यक्तित्व अनुसूची पड़ा है। इसमें 550 एकांश हैं तथा प्रत्येक एकांश (कथन) के साथ तीन वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। जैसे–सत्य, असत्य, अनिश्चित। इनमें से किसी एक का चयन करके व्यक्ति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकता है।

एम.एम.पी.आई. के रूप दो हैं–

प्रथम– वैयक्तिक कार्ड फार्म

इसमें प्रत्येक कथन एक कार्ड पर रहता है तथा इसे वैयक्तिक रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

द्वितीय–सामूहिक पुस्तिका फार्म –

इस फार्म में सभी 550 एकांश (कथन) एक साथ पुस्तिका के रूप में छपे रहते हैं। इनका प्रयोग एक साथ कई लोगों पर किया जा सकता है। इसीलिए इसे सामूहिक पुस्तिका फार्म कहा जाता है। इस परीक्षण द्वारा दस प्रकार की मानसिक व्याधियों (रोगों) का मापन होता है।

एम.एम.पी.आई. पर अधिक प्राप्तांक असामान्यता और कम प्राप्तांक सामान्यता का द्योतक होता है। व्यक्ति उत्तर सही दे रहा है या गलत, इसको

तथ करने के लिए चार और मापनियाँ दी गई हैं। यह एक वैध तथा विश्वसनीय मापनी है।

2. कैटेल की सोलह व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली

यह भी एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व मापनी है। इसके द्वारा व्यक्तित्व के सोलह शीलगुणों का मापन होता है। इसके द्वारा मापित शीलगुणों को तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं-- इन्हें चित्तप्रकृति शीलगुण, योग्यता शीलगुण एवं गत्यात्मक शीलगुण कहते हैं।

कैटेल मापनी पर शीलगुणों की व्याख्या निम्न प्राप्तांकों एवं उच्च प्राप्तांकों के आधार पर की जाती है। जैसे—कारक पर निम्न प्राप्तांक संयमी और उच्च प्राप्तांक बाह्यगामी (सहृदय) होने का संकेत करता है। इसी प्रकार अन्य शीलगुणों की भी व्याख्या की जा सकती है। प्राप्तांकों के आधार पर पार्श्वचित्र भी बनाये जा सकते हैं। जिन 16 कारकों को बनाया गया है उन्हें प्रथम क्रम के कारक कहते हैं। इसके अतिरिक्त इनके माध्यम से दस द्वितीय क्रम के कारकों की भी गणना की जा सकती है। जैसे—चिन्ता, बहिर्मुखता, स्वतंत्रता तंत्रिकातापीयता, नेतृत्व इत्यादि। इस मापनी की वैधता तथा विश्वसनीयता काफी उच्च पाई गई है।

उपर्युक्त मापनियों के अतिरिक्त कुछ और भी उपयोगी मापनियों का निर्माण मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया गया है। जैसे—एडवर्ड्स व्यक्तिगत वरीयता अनुसूची, बेल समायोजन अनुसूची, कामरे व्यक्तित्व मापनी (1970) एवं आइजेंक व्यक्तित्व प्रश्नावली इत्यादि। भारत में इन मापनियों का विभिन्न भाषाओं में अनुकूलन तैयार किया गया है। एम.सी. जोशी एवं मलिक (1982, 1983) ने

जोधपुर बहुअंशी व्यक्तित्व मापनी का निर्माण किया।

2. मूल्यांकन मापनी

व्यक्तित्व के मापन में मूल्यांकन मापनियों का भी प्रयोग किया जाता है। यदि यह सम्भावना हो कि परीक्षार्थी गलत या पक्षपातपूर्ण उत्तर दे सकते हैं, तो इसे नियंत्रित करने के लिए मूल्यांकन मापनियों का प्रयोग कर सकते हैं। इसके लिए अन्य लोगों से परीक्षार्थियों का मूल्यांकन कराया जा सकता है। मूल्यांकनकर्त्ता या निर्णायक अपनी जानकारी या परीक्षार्थियों के व्यवहारों का प्रेक्षण (निरीक्षण) करके उनमें पाये जाने वाले गुणों के बारे में सूचनाएँ दे सकते हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रामाणिक मूल्यांकन मापनियाँ निर्मित भी की जा सकती है।

यहाँ स्पष्ट है कि निर्णायक को अपनी जानकारी के अनुसार दिये गये कथन के प्रति परीक्षार्थी का मूल्यांकन विभिन्न वैकल्पिक उत्तरों में से किसी एक को चुनकर देना होता है। प्राप्त मूल्यांकनों को अंक प्रदान किये जा सकते हैं। मूल्यांकन मापनियों से सार्थक परिणाम प्राप्त करने के लिए निम्नांकित बातों का अवश्य ध्यान देना चाहिए–

1. निर्णायक को मापनी का आशय स्पष्ट होना चाहिए।
2. निर्णायक को परीक्षक से पूर्णतया अवगत होना चाहिए।
3. निर्णायक अपना निर्णय तटस्थ भाव से दे।

मूल्यांकन मापनियों से अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी परिणाम प्राप्त करने तथा परिणामों को निर्णायकों के विचारों से बचाने के लिए उन्हें अधिक संख्या में लगाया जा सकता है। इस तरह के एक अध्ययन में हाईस्कूल के छात्रों में आक्रामकता का मूल्यांकन उनके साथियों तथा अन्य प्रेक्षकों द्वारा (खेल के

समय) उनके व्यवहार का प्रेक्षण करके किया गया और दोनों तरह के निर्णायकों से प्राप्त मूल्यांकनों में अच्छी सहमति पाई गई। इससे स्पष्ट होता है कि मूल्यांकन मापनियों का उपयोग विश्वसनीय परीक्षणों के रूप में किया जा सकता है।

3. प्रक्षेपी विधियाँ

व्यक्ति में अनेक दमित एवं अचेतन भावनाएँ तथा विचार होते हैं। सामान्य विधियों या परीक्षणों द्वारा ऐसी आन्तरिक विशेषताओं का अध्ययन करना सम्भव नहीं हो पाता है। इसके लिए प्रक्षेपी परीक्षण विकसित किये गये हैं। मनोविश्लेषणवादियों ने ऐसे परीक्षणों का उपयोग शुरू किया था और ऐसे परीक्षण आज भी लोकप्रिय हैं। ऐसे परीक्षणों में अस्पष्ट परिस्थितियाँ दी रहती है। परीक्षार्थी उनमें वस्तुओं या घटनाओं का प्रत्यक्षीकरण करता है या अनुमान लगाता है। जिस प्रकार एक गतिशील कैमरा पर्दे पर वस्तु का चित्र प्रक्षेपित करता है, उसी प्रकार यह मान्यता है कि चूँकि प्रक्षेपी परीक्षणों में परिस्थिति स्पष्ट नहीं होती है। अतः परीक्षार्थी उनका प्रत्यक्षीकरण अपनी पसन्दों, विचारों, भावनाओं एवं सुषुप्त इच्छाओं के आधार पर करेगा। इससे उनके आन्तरिक व्यक्तित्व के बारे में सूचना मिलेगी। हिलगार्ड इत्यादि (1975) के शब्दों में–

वर्तमान में अनेक प्रक्षेपी परीक्षण उपलब्ध हैं। परन्तु मर्रे (1951) का टी. ए.टी. और रोशा का स्याही धब्बा परीक्षण ही ज्यादा प्रचलित हैं।

टी.ए.टी.

यह परीक्षण मर्रे द्वारा हारवर्ड विश्वविद्यालय में 1930 में अवधि में निर्मित किया गया था। इसे विषय–आत्मबोधन परीक्षण कहा जाता है। यह

एक प्रसिद्ध परीक्षण है। इस परीक्षण में चित्रों के माध्यम से दृश्य दिये रहते हैं। चित्रों का आशय स्पष्ट नहीं रहता है। परीक्षार्थी अपने अनुभवों एवं कल्पनाओं का उपयोग करके परिस्थिति का प्रात्यक्षिक अनुमान लगाता है। इस प्रकार परीक्षार्थी को अपने अनुमान का उपयोग करके प्रस्तुत प्रश्नों को ध्यान में रखकर कहानी की रचना करनी पड़ती है।

1. इस घटना की पृष्ठभूमि क्या हो सकती है?

2. इसमें क्या हो रहा है?

3. इसमें किस प्रकार की सम्भावना दिखाई पड़ रही है?

परीक्षार्थियों द्वारा निर्मित कहानी का विश्लेषण करके व्यक्तित्व के बारे में गहन सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती है। जैसे– दबी हुई आवश्यकताओं द्वन्द्व विशेषताओं संवेग एवं अभिप्रेरणाओं आदि के बारे में सूचनाएँ प्राप्त होती है।

टी.ए.टी. में 30 कार्डों पर चित्र बने होते हैं और एक कार्ड पर कुछ नही रहता हैं। इनमें से कुछ पुरूषों तथा कुछ महिलाओं के लिए हैं। इनका प्रशासन व्यक्तिगत तथा सामूहिक, दोनों रूपों में किया जा सकता है। इसकी विश्वसनीयता काफी उच्च है तथा यह एक बहुत ही उपयोगी परीक्षण है

कोई परीक्षार्थी या व्यक्ति चित्रों को देखकर जो कहानी बनाता है उनका विश्लेषण निम्नांकित आधारों पर कर सकते हैं–

1. नायक

कहानी में जिसे मुख्य पात्र के रूप में प्रत्यक्षित किया जाता है, जिसके साथ व्यक्ति तादात्मीकरण स्थापित करता है तथा अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है, उसे नायक कहा जाता है।

2. आवश्यकता

मर्रे ने 20 आवश्यकताओं का उल्लेख किया। कहानियों का विश्लेषण करके यह देखा जाता है कि परीक्षार्थी में किन आवश्यकताओं की प्रबलता है? जैसे– उपलब्धि, प्रभुत्व, सम्बन्धन इत्यादि।

3. प्रेस

प्रेस का आशय उन पर्यावरणीय कारकों से है जो नायक की इच्छाओं को पूरा करने सहायक या बाधक है। ऐसे कारकों की संख्या मर्रे ने तीस तक बतायी हे। आक्रमण, शारीरिक खतरा आदि ऐसे ही कुछ बल हैं।

4. थीमा

नायक की आवश्यकता तथा पर्यावरणीय बलों में अन्तर क्रिया से जो घटना उत्पन्न होती हैं, उसे थीमा कहते हैं। इससे व्यक्तित्व में निरन्तरता का संकेत मिलता है।

5. परिणाम

कहानी का जो अन्त होता है उसे परिणाम कहते हैं। अन्त निश्चित या अनिश्चित भी हो सकता है। यदि परीक्षार्थी परिपक्व एवं वास्तविकता से जुड़ता हैं, तो वह निश्चित एवं स्पष्ट निष्कर्ष प्रस्तुत करेगा। अन्यथा वह निश्चित निष्कर्ष प्रस्तुत नहीं कर सकेगा।

रोशा स्याही धब्बा परीक्षण

इसका निर्माण स्विटजरलैण्ड के मनोचिकित्सक हरमन रोशा (1920) द्वारा किया गया हैं। इसमें 10 कार्डों पर अस्पष्ट परन्तु प्रमाणीकृत स्याही के धब्बे बने होते हैं। कुछ कार्ड रंगीन एवं कुछ सफेद–काले होते हैं। रोशा परीक्षण में प्रयुक्त प्रत्येक कार्ड पर अनुक्रिया प्राप्त कर लेने के बाद शोधकर्ता

पुनः परीक्षार्थी की अनुक्रियाओं को एक–एक करके जाँचता है तथा परीक्षार्थी को उनकी व्याख्या करने का निर्देश देता है तथा यह भी पूछता है कि चित्र के किस भाग या अंश से सम्बन्धित प्रत्यक्षीकरण हुआ है।

परीक्षार्थी द्वारा दी गई अनुक्रियाओं का तीन आधारों पर फलांकन करते हैं।

1. स्थान

अनुक्रिया की उत्पत्ति पूरे चित्र के आधार पर हुई है या किसी विशिष्ट भाग पर आधारित है।

2. निर्धारक

परीक्षार्थी की अनुक्रिया चित्र के रंग, आकार, छाया इत्यादि में से किस आधार पर हुई है।

3. विषयवस्तु

अनुक्रिया से किस वस्तु का बोध हो रहा है। रोशा परीक्षण में प्राप्त अनुक्रियाओं का फलांकन के लिए विशिष्ट प्रक्रियाएँ भी विकसित की गई हैं। इस परीक्षण की विश्वसनीयता के बारे में मतैक्य नहीं है फिर भी इसे मनोचिकित्सा तथा निर्देशन के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण परीक्षण माना जाता है। क्रानबैक के अनुसार, इस परीक्षण की वैधता संदिग्ध है।

उपर्युक्त प्रक्षेपी परीक्षणों के अतिरिक्त कुछ और भी प्रक्षेपी परीक्षण निर्मित किये गये है। जैसे–बैलाक ने बच्चों के आत्मबोध परीक्षण तथा राजेनज्विंग ने बच्चों में कुण्ठा तथा आक्रामकता का अध्ययन करने के लिए एक परीक्षण का निर्माण किया है।

यद्यपि प्रक्षेपी परीक्षणों से व्यक्तित्व के बारे में सूचनाएँ मिलने की

सम्भावना रहती है परन्तु इसके साथ कठिनाइयाँ भी हैं। जैसे–

i). इन परीक्षणों का मानकीकरण एक अत्यन्त कठिन कार्य है।

ii). प्रशासन एवं व्याख्या के लिए प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है।

iii). इसमें समय भी अधिक लगता हैं

iv). परिणामों की विश्वसनीयता सन्देहास्पद रहती है।

4. साक्षात्कार विधि

साक्षात्कार विधि का उपयोग व्यक्तित्व के अध्ययन में भी किया जाता है। इस विधि से व्यक्तित्व की विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए अध्ययनकर्ता परीक्षार्थी से व्यक्तित्व सम्बन्धी प्रश्नों (समस्याओं) के प्रति उत्तर प्राप्त करता है। साक्षात्कार पूर्वनियोजित या संरचित या असंरचित हो सकते हैं। प्रथम विधि में प्रश्न पहले से तय रहते हैं जबकि द्वितीय विधि में अध्ययनकर्ता अध्ययन के समय अपनी स्मृति के सहारे प्रश्न करके उत्तर अंकित करता है। यदि द्वितीय विधि का उपयोग करना हो, तो उसके लिए अपेक्षाकृत अधिक योग्य एवं अनुभवी साक्षात्कारकर्त्ता की आवश्यकता पड़ती है। क्योंकि प्रश्न पहले से तय नहीं रहते हैं, इसलिए अध्ययनकर्ता की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

साक्षात्कार की उपर्युक्त प्रविधियों के अतिरिक्त एक दूसरा भी आयाम है। साक्षात्कार उद्देश्यों के भी आधार पर किये जा सकते हैं। इन्हें क्रमशः नैदानिक एवं पूर्वानुमानक साक्षात्कार कहते हैं। प्रथम प्रक्रिया में किसी कार्य में असफलता के निर्धारकों के बारे में तथा द्वितीय प्रक्रिया में सफलता की सम्भावनाओं के बारे में अध्ययन किया जाता है अर्थात् परीक्षार्थी यह अनुमान

लगाता है कि वह अमुक कार्य में कितनी सफलता की प्रत्याशा करता है।

यद्यपि साक्षात्कार तकनीक का व्यक्तित्व के अध्ययन में उपयोग होता है क्योंकि यह एक सरल तथा तत्काल जानकारी देने वाली विधि है परन्तु इससे प्रसंग में इस विधि की वैज्ञानिकता सिद्ध करना कठिन है।

5. प्रेक्षण विधि

प्रेक्षण विधि से तात्पर्य किसी घटना या व्यवहार का ज्यों का त्यों निरीक्षण करके उपयुक्त निष्कर्ष प्रस्तुत करने से है। इस विधि द्वारा भी व्यक्तित्व के बारे में निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते हैं। मनोचिकित्सक इस विधि का प्रायः उपयोग करते हैं। सम्प्रति, मनोविज्ञान में व्यक्तित्व सम्बन्धी अध्ययनों में इसका उपयोग कम होता है।

उपर्युक्त परीक्षणों तथा प्रक्रियाओं के अतिरिक्त व्यक्तित्व का अध्ययन करने के लिए रुचि–प्रश्नावली, अभिक्षमता तथा उपलब्धि परीक्षण, व्यक्ति इतिहास विधि एव खेलकूद विधि इत्यादि का भी उपयोग किया जाता है।

iii) प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसन्धान के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. छात्र व छात्राओं के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।
2. बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।
3. उत्तम समायोजन तथा निम्न स्तर समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

3.01 उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न स्तर गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

3.02 उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

3.03 उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

3.04 उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

3.05 उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4. उच्च मूल्य तथा निम्न मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.01 उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.02 उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.03 उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के

प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.04 उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.05 उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.06 उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न अर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.07 उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.08 उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.09 उच्च शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.10 उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

5. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

5.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल पर सार्थक

5.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

5.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

5.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के सामाजिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

5.06 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के संवेगात्मक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा विभिन्न मूल्यों (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्यन करना।

6.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सैद्धान्तिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा धार्मिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन

करना।

6.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.06 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.07 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.08 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.09 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.10 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा गृह समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शैक्षिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा संवेगात्मक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्‍ययन करना।

iv) प्रस्तुत अनुसन्धान की उपकल्पना

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य उपकल्पनायें निर्मित की गई–

1. छात्र व छात्राओं के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

2. बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

3. उत्तम समायोजन तथा निम्न स्तर समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

   3.01 उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न स्तर गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

   3.02 उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

   3.03 उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

   3.04 उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

   3.05 उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4. उच्च मूल्य तथा निम्न मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

   4.01 उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

   4.02 उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.03 उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.04 उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.05 उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.06 उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न अर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.07 उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.08 उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.09 उच्च शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.10 उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

5. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के सामाजिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.06 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के संवेगात्मक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा विभिन्न मूल्यों (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सैद्धान्तिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं

होगा।

6.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा धार्मिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.06 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.07 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.08 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.09 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.10 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं

होगा।

7. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा गृह समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शैक्षिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा संवेगात्मक समायोयन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5. प्रस्तुत अनुसन्धान का महत्व

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के प्रतिबल पर विभिन्न प्रकार के मूल्यों, व्यक्तित्व प्रकार तथा समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन किया जाना अपेक्षित है। वर्तमान समय में प्रतिबल

विद्यार्थियों के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण कारक है जो कि उनके सम्पूर्ण जीवन क्रम को प्रभावित कर सकता है। प्रतिबल को कौन से कारक सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं यह प्रस्तुत अध्ययन द्वारा ज्ञात करना सम्भव हो सकेगा। विभिन्न मूल्यों में से विद्यार्थियों के कौन से मूल्य हैं जोकि प्रतिबल को प्रभावित करते हैं तथा वे कौन से समायोजन के क्षेत्र हैं जोकि प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। यह ज्ञात करना अनुसंधान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा। छात्र तथा छात्राओं में से प्रतिबल को अधिक प्रभावित कौन से विद्यार्थी करते हैं? किस व्यक्तित्व के विद्यार्थी (अन्तर्मुखी अथवा बहिर्मुखी) अधिक प्रतिबल को प्रभावित करते हैं? इन सभी तथ्यों की जानकारी प्रस्तुत अनुसंधान द्वारा होगी।

स्पष्ट है कि प्रस्तुत अनुसंधान विद्यार्थियों के प्रतिबल तथा उसको प्रभावित करने वाले कारकों को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण रूप से सहायक होगा।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित अनुसन्धान विवरण

सम्बन्धित अनुसन्धान विवरण

यद्यपि प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित अध्ययनों का पर्याप्त अभाव है, किन्तु फिर भी कुछ महत्वपूर्ण अध्ययन किये गये है, जिनका विवरण इस प्रकार है–

पटनायक (1997) तथा अन्य द्वारा 100 पुरूष व महिलाओं पर अध्ययन किया गया जो कि एकाकी तथा संयुक्त परिवार से सम्बन्धित थे। अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि एकाकी परिवार में अधिक प्रतिबल होता है। संयुक्त परिवार के लोग तनाव भी आसानी से कम कर लेते है, जबकि एकाकी परिवार से सम्बन्धित व्यक्ति नहीं कर पाते हैं। इसी प्रकार **बिस्वास तथा अन्य (1995)** द्वारा 8 से 11 वर्ष के 18 बाधित तथा 18 अबाधित बच्चों पर अध्ययन कर परिणाम प्राप्त किया कि बाधित बच्चों के समायोजन तथा प्रतिबलपूर्ण घटना से सार्थक सम्बन्ध होता है। बाधिक बच्चे अबाधित बच्चों की तुलना में स्वास्थ्य, विद्यालय, गृह के क्षेत्र में समायोजन की समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं। **कनप्पन तथा अन्य (1993)** द्वारा 14 से 16 आयु के 240 समस्याग्रस्त बच्चों पर अध्ययन किया और परिणाम निकाला कि यदि उचित प्रशिक्षण दिया जाये तो ऐसे बच्चों में सकारात्मक परिवर्तन किया जा सकता है तथा उनके प्रतिबल के स्तर को भी कम किया जा सकता है।

रेडडी तथा अन्य (1991) द्वारा शारीरिक रूप से 15 विकलांग लड़के तथा 15 बधिर विकलांग लड़कियों (आयु स्तर 11 से 17 वर्ष) के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। सभी के द्वारा आत्म–प्रत्यय, सामाजिक, संवेगात्मक तथा विद्यालय के स्तर पर अधिक प्रतिबल को प्रदर्शित किया जबकि स्वास्थ्य, भाषा तथा ज्ञानात्मक क्रियाओं के प्रति निम्न प्रतिबल अनुभव किया।

हुसैन (1985) द्वारा पटना के 250 विद्यार्थियों पर अध्ययन द्वारा

परिणाम प्राप्त किया कि अधिक चिन्ताग्रस्त विद्यार्थियों का समायोजन विभिन्न क्षेत्रों में निम्न स्तर का होता है तथा इसके विपरीत अधिक आत्म–बल से सम्बन्धित विद्यार्थियों का समायोजन भी अच्छा पाया गया। इसी प्रकार के परिणाम **वर्मा तथा उपाध्याय (1980)** तथा **खान और सिन्हा (1971)** द्वारा भी प्राप्त किये गये।

शुक्ल तथा पाण्डेय (1994) द्वारा 400 इन्टरमीडियेट कक्षा के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्र तथा छात्राओं के समायोजन पर व्यक्तित्व प्रकार के प्रभाव का अध्ययन किया। अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का निम्न समायोजन पाया गया। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों में समायोजन की अधिक समस्यायें प्राप्त हुई। **कुण्डु तथा अन्य (1994)** द्वारा इंटरमीडिएट स्तर के विज्ञान वर्ग के 46 विद्यार्थियों पर अध्ययन कर महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त किये। वैज्ञानिक ज्ञान तथा अभिक्षमता का निराशा के साथ ऋणात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ जबकि आत्मप्रत्यय तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व के साथ धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ। **लक्ष्मी (1996)** द्वारा पटना के 100 अर्न्तमुखी तथा 100 बहिर्मुखी विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचियों का अध्ययन किया। बहिर्मुखी विद्यार्थियों की अधिक रुचियाँ यांत्रिक, सामाजिक, व्यापार तथा बाहय क्रियाओं में अधिक प्राप्त हुई जबकि अर्न्तमुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थी वैज्ञानिक, सौन्दर्यात्मक तथा लिपिकीय कार्यों में अधिक रुचि रखते हैं।

चन्द्र कुमार तथा आरोकिया स्वामी (1994) द्वारा तमिलनाडु के 1050 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन किया। परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि छात्र व छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं

होता है। छात्र तथा छात्रायें सामाजिक मूल्य, महत्वाकांक्षा मूल्य तथा नैतिक मूल्य को अधिक वरीयता देते हैं। इसी प्रकार **सिंह तथा गुप्त (1996)** द्वारा कक्षा 11के 50 छात्र तथा 60 छात्राओं के प्रतिबल तथा मूल्यों का अध्ययन किया। अधिक चिन्तित व्यक्तित्व के साथ विद्यार्थियों के सैद्धान्तिक सौन्दर्यात्मक तथा धार्मिक मूल्य सकारात्मक रूप से सम्बन्धित पाये गये। बहिर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक मूल्य अधिक सकारात्मक रूप से सम्बन्धित पाये गये। छात्राओं द्वारा सौन्दर्यात्मक, सामाजिक तथा ध ार्मिक मूल्यों को अधिक वरीयता दी गई। छात्रों द्वारा सैद्धान्तिक, राजनैतिक तथा आर्थिक मूल्यों को अधिक वरीयता दी गई। **गावली तथा काम्बले (1999)** द्वारा मूल्यों तथा पीढ़ी के अन्तर का अध्ययन किया गया। पुरानी पीढ़ी धार्मिक, सामाजिक तथा परिवार मूल्यों को सार्थक रूप में अधिक महत्व देती है। महिलाओं द्वारा धार्मिक, परिवार तथा सामाजिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता है।

मैक्गी तथा स्टैन्टन (1992) द्वारा 15 वर्ष के युवाओं की प्रतिबल स्थितियों का अध्ययन किया गया। प्रतिबल स्थिति के चार प्रमुख उद्‌गम बताये गये-- प्रथम, आत्म-- धारणा तथा स्वतन्त्रता, द्वितीय शैक्षिक तथा शारीरिक योग्यता, तृतीय गृहस्थान परिवर्तन तथा चतुर्थ स्कूल परिवर्तन। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं द्वारा अधिक प्रतिबल प्रकट किया। उनका प्रतिबल प्रमुख रूप से निर्धन पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा सामाजिक सहयोग का अभाव, माता की चिन्ताग्रस्त स्थिति तथा पैतृक अलगाव से सम्बन्धित था। सामाजिक अयोग्यता तथा अत्याधिक चिन्ताग्रस्त स्थिति में मानसिक स्वास्थ्य असन्तुलित होने की सम्भावना प्रकट की गई।

कपूर (1990) द्वारा 150 सामान्य ग्रामीण तथा अर्द्ध– शहरी बच्चों के संवेगों तथा दैनिक जीवन के क्रिया– कलापों का अध्ययन किया गया। अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि ग्रामीण बच्चे भोजन न मिलने पर दुखी होते थे, जबकि अर्द्ध शहरी बच्चे तब अधिक दुखी होते थे जब उनको पीटा जाता था,उन पर क्रोधित होने पर अथवा उनको चुपचाप बैठने के लिये कहा जाता था। बच्चे जानवर, कीड़े, अजनबी तथा माता पिता के दण्ड से भयभीत होते थे। ग्रामीण बच्चे विषम स्थितियों से बचकर घर आ जाते थे, जबकि अर्द्धशहरी बच्चे विषम स्थितियों में चुप रहते थे अथवा चिल्लाते थे। **शेनाय (1992)** द्वारा 164 बाधित तथा 171 सामान्य बच्चों के प्रतिबल स्थितियों का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि बाधित बच्चों में अधिकांश बच्चे गम्भीर प्रतिबल सम्बन्धित परेशानियों से ग्रस्त थे। बाधित बच्चों के परिवार में पिता द्वारा मदिरा सेवन करना तथा माता का अत्याधिक चिन्ताग्रस्त रहना था। पिता का प्रायः असहयोगात्मक व्यवहार तथा माता द्वारा तिरस्कार, अति सुरक्षा अथवा अत्यधिक महत्वाकांक्षा रखना था। इन विभिन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण बाधित बच्चे अपने भाई बहनों तथा मित्रों के मध्य समायोजन नहीं रख पाते थे। विषम पारिवारिक स्थिति तथा मित्रों के मध्य कुसमायोजन ही गम्भीर मानसिक बीमारियों को जन्म देता है।

सरकार (1990) द्वारा 8 से 11 वर्ष के मध्यवर्गीय परिवार के 408 बच्चों पर अध्ययन किया गया। 18 सामान्य तथा 18 मानसिक बीमारियों से ग्रस्त बच्चों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणामों द्वारा स्पष्ट हुआ कि मानसिक बीमारियों से ग्रस्त बच्चे जीवन की प्रतिबल घटनाओं के कारण व्यवहार सम्बन्धी तथा समायोजन सम्बन्धी समस्याओं से ग्रस्त

थे। 60 प्रतिशत बच्चे शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए थे तथा 50 प्रतिशत मित्र उनको स्वीकार करते थे। 40 प्रतिशत बच्चों मे बीमारी की स्थिति भी पाई गई।

दलाल (1989) द्वारा 79 बाधित व्यवहार की लड़कियों पर अध्ययन कर यह महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त किया कि सामान्य व्यवहार की लड़कियों की अपेक्षा बाधित व्यवहार की लड़कियों में प्रतिबल स्थितियाँ सार्थक रूप से अधिक होती हैं। इसी प्रकार का अध्ययन **अरूलमनि (1989)** द्वारा 15 बाधित तथा 15 सामान्य युवाओं पर अध्ययन कर पाया कि दोनों ही समूह की पारिवारिक पृष्ठभूमि में समान प्रतिबल स्थितियाँ विद्यमान हैं, परन्तु प्रतिबल स्थिति निवारण शैली का प्रमुख अन्तर होता है। बाधित समूह अपने स्वयं के तथा समूह से आपसी सम्बन्धों के प्रति अत्यधिक चिन्तित रहता है। सामान्य समूह के युवा प्रतिबल निवारण हेतु सकारात्मक सोच रखते हैं, समय के अनुरूप गतिशील व्यवहार प्रकट करते हैं तथा प्रतिबल स्थिति से निपटने के लिये सामाजिक सहयोग, आत्म–नियन्त्रण, उत्तरदायित्व को स्वीकार कर एक योजनाबद्ध रणनीति बनाने का विचार रखते हैं। इसके विपरीत बाधित व्यवहार के युवा आत्म–विश्वास में कमी रखते हैं तथा प्रतिबल स्थिति आने पर उससे लड़ने की अपेक्षा भाग जाने का विचार रखते हैं। प्रस्तुत अध्ययन प्रतिबल स्थिति के प्रति व्यवहार को महत्व प्रदान करता है तथा इसके लिये पारिवारिक सहयोग को भी महत्वपूर्ण मानता है।

सिंह (1990) द्वारा 60 छात्र व 60 छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन किया गया तथा पाया कि संवेगात्मक समायोजन लिंग (Gender) द्वारा सार्थक रूप से प्रभावित होता है। **पंजियार (1999)** द्वारा विभिन्न

सामाजिक आर्थिक स्थिति के व्यक्ति विभिन्न दशाओं में किस प्रकार का व्यवहार करते हैं तथा किस प्रकार प्रतिबल स्थिति का निवारण करते हैं? का अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणामों द्वारा स्पष्ट हुआ कि सामाजिक आर्थिक स्थिति सार्थक रूप से व्यक्ति के समायोजन को प्रभावित करती है। उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति के व्यक्ति अधिक समायोजित पाये गये, जबकि निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के दलित वर्ग के व्यक्ति तुलनात्मक रूप में निम्न समायोजित पाये गये। **हुसैन (1998)** द्वारा हाईस्कूल स्तर के 50 छात्र व 50 छात्राओं पर अध्ययन किया गया। अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के शीलगुणों का समायोजन के साथ सम्बन्ध ज्ञात करना था। प्राप्त परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व शीलगुणों तथा समायोजन के मध्य महत्वपूर्ण सम्बन्ध होता है। सभी व्यक्तित्व के शीलगुणों तथा समायोजन के मध्य उच्च सकारात्मक व सार्थक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ।

रायचौधरी तथा बसु (1998) द्वारा बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन पर माता–पिता तथा बच्चों के सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन किया गया। शोध के निष्कर्ष रूप में ज्ञात हुआ कि माता के लालन पालन का प्रभाव बालक के विद्यालय समायोजन को प्रभावित करता है। जिन बच्चों का माता द्वारा उपयुक्त लालन–पालन किया जाता है, उन बच्चों का विद्यालय समायोजन भी उत्तम होता है। अध्ययन द्वारा यह भी ज्ञात हुआ कि शैक्षिक सफलता पर माता तथा पिता दोनों की देखभाल का प्रभाव पड़ता है। **वर्मा तथा मूर्ति (1998)** द्वारा छात्र व छात्राओं की दीर्घकालीन वंचितीकरण तथा बुद्धि का उनके मूल्यों, आवश्यकताओं तथा समायोजन पर क्या प्रभाव

पड़ता है? यह अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि छात्रों के स्वास्थ्य समायोजन पर दीर्घकालीन वंचितीकरण तथा बुद्धि का सार्थक प्रभाव पड़ता है। दीर्घ–कालीन वंचितीकरण सार्थक रूप से छात्राओं के विद्यालय समायोजन को प्रभावित करता है जबकि बुद्धि छात्राओं के गृह समायोजन को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

सूद (1998) द्वारा छात्र व छात्राओं के शैक्षिक प्रतिबल के कारणों का अध्ययन किया गया तथा प्रतिबल स्थिति के प्रति व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि शैक्षिक प्रतिबल सार्थक रूप से प्रतिबल निवारण शैली से सम्बन्धित होता है। जब शैक्षिक प्रतिबल निम्न स्तर का होता है, तब विद्यार्थियों में प्रत्यक्ष प्रतिबल निवारण शैली का प्रयोग किया जाता है। छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक प्रतिबल प्राप्त हुआ। छात्रायें अधिक प्रत्यक्ष प्रतिबल निवारण शैली का प्रयोग करती हैं तथा असफलता के प्रति अधिक भय प्रकट करती हैं। **सहगल (1999)** द्वारा विद्यालय के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल, स्वास्थ्य तथा आत्म–योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रों द्वारा अधिक आत्म–योग्यता तथा प्रतिबल प्रकट किया गया है।

कात्याल तथा वासुदेव (2001) द्वरा छात्र व छात्राओं का विभिन्न क्षेत्रों में तुलनात्मक अध्ययन किया गया जैसे शैक्षिक प्रतिबल, माता–पिता की अभिवृत्ति, माता–पिता की आकांक्षा, उपलब्धि प्रेरणा, बुद्धि, चिन्ता तथा विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम अत्यधिक रोचक प्राप्त हुए। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं द्वारा सार्थक रूप से अधिक शैक्षिक प्रतिबल तथा चिन्ता प्रकट की गई। माता का

व्यवहार लड़कों की अपेक्षा लड़कियों के प्रति अधिक निरकुंश तथा कम प्रजातान्त्रिक पाया गया। पिता लड़कियों की अपेक्षा लड़कों के प्रति अधिक उच्च आकांक्षा रखते हैं।

देओ (2004) द्वारा 394 विद्यार्थियों के प्रतिबल तथा टाइप–ए व्यवहार का अध्ययन किया गया। परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि छात्र व छात्रायें समान मात्रा में प्रतिबल का अनुभव करते हैं। टाइप–ए व्यवहार के विद्यार्थियों का प्रतिबल के साथ सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया। **रंगन तथा राजेशम (2005)** द्वारा 30 व्यक्तियों पर अध्ययन किया तथा पाया कि योग आसन द्वारा चिन्ता को कम किया जा सकता है तथा समायोजन भी उत्तम हो जाता है। **मलिक तथा भारती (2005)** द्वारा 26 सामान्य तथा 26 चिन्ताग्रस्त समूह का पारिवारिक वातावरण से सम्बन्ध का अध्ययन किया। परिवार के वातावरण तथा चिन्ता के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ। यदि परिवार का वातावरण उत्तम है, तब चिन्ता का स्तर निम्न पाया गया। **माहेश्वरी तथा भारती (2005)** द्वारा कक्षा 8 व 9 के 100 छात्र व छात्राओं के माता–पिता के साथ सम्बन्धों का अध्ययन किया गया। अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों द्वारा पिता की अपेक्षा अपनी मातायें सुरक्षात्मक दृष्टि से अधिक ध्यान रखने वाली दृष्टिगत हुईं। विद्यार्थियों का मानना था कि यदि माता–पिता द्वारा दण्ड दिया ही जाये तब यह प्रतीकात्मक दण्ड होना चाहिये।

मंगेश तथा राठोद (2005) द्वारा 17 से 19 वर्ष के 25 छात्र व 25 छात्राओं के व्यक्तित्व प्रकार का अध्ययन किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष रूप में पाया गया कि छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व प्रकार तथा प्रतिबल

निवारण शैली में पर्याप्त अन्तर होता है। टाइप–ए व्यक्तित्व प्रकार के विद्यार्थी अत्यधिक ग्राह्य प्रकार की निवारण शैली प्रकट करते हैं। जबकि ए बी व्यक्तित्व प्रकार के विद्यार्थी ग्राह्य–त्याज्य निवारण शैली प्रकट करते हैं। बी व्यक्तित्व प्रकार के विद्यार्थी औसत निवारण शैली प्रकट करते हैं। **पालीवाल तथा भाटिया (2005)** द्वारा 200 सामान्य, 200 शारीरिक विकलांग तथा 200 मानसिक विकलांग (8 से 14 आयुवर्ग के) बच्चों के समायोजन तथा प्रतिबल का अध्ययन किया गया। निष्कर्ष रूप में ज्ञात हुआ कि सामान्य बालकों का गृह, शैक्षिक, स्वास्थ्य समायोजन सार्थक रूप में उत्तम पाया गया। सामान्य बालकों में सार्थक रूप से अधिक शैक्षिक तथा सामाजिक प्रतिबल पाया गया। विकलांग बच्चों में सार्थक रूप से अधिक आर्थिक तथा सामाजिक प्रतिबल पाया गया। मानसिक विकलांग बच्चों में संवेगात्मक प्रतिबल अधिक प्राप्त हुआ।

तृतीय अध्याय

अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प

अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत प्रतिदर्श, अनुसन्धान अभिकल्प, प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षण आदि का वर्णन निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर किया गया है–

1. प्रतिदर्श
2. अनुसन्धान अभिकल्प
3. प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विवरण
4. प्रशासन प्रक्रिया
5. प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

1. प्रतिदर्श

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत 600 हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों का चयन वर्गबद्ध अनियत प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। लखनऊ जनपद के 14 से 16 आयुवर्ग के विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में इस प्रकार किया गया–

600 विद्यार्थी

300 छात्र | 300 छात्रायें

2. अनुसन्धान अभिकल्प

प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के लिंग, व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी, उभयमुखी व बहिर्मुखी), मूल्य तथा समायोजन का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना है। विद्यार्थियों के प्रतिबल पर उक्त सभी परिवर्तितयों का प्रभाव पहले ही पड़ चुका है अथवा घटित हो चुका है, अतः प्रतिबल के अध्ययन के आधार पर उपर्युक्त परिवर्तियों के प्रभाव

का अध्ययन किया जाना है, अतः प्रस्तुत अनुसन्धान घटनोत्तर अनुसन्धान (Ex-Post Facto Research) प्रकार का है। प्रस्तुत अनुसन्धान में स्वतन्त्र तथा आश्रित परिवर्ती इस प्रकार हैं–

स्वतन्त्र परिवर्ती– लिंग (छात्र व छात्रायें)

व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी, उभयमुखी तथा बहिर्मुखी)

मूल्य (सैद्धान्तिक, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, प्रजातान्त्रिक, सुखवादी, शक्ति तथा स्वास्थ्य)

समायोजन (गृह, शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा स्वास्थ्य)

आश्रित परिवर्ती– प्रतिबल (शैक्षिक, आर्थिक, व्यावसायिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक)

3. प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विवरण

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग किया गया–

1. विद्यार्थी प्रतिबल मापनी

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया तथा अरूणिमा पाठक

2. बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया

3. मूल्य परीक्षण

द्वारा डॉ0 भाटिया तथा डॉ0 शर्मा

4. समायोजन सूची

द्वारा डॉ0 भाटिया

उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है–

१. विद्यार्थी प्रतिबल मापनी

प्रस्तुत परीक्षण डा0 तारेश भाटिया तथा अरूणिमा पाठक का द्वारा निर्मित है। प्रस्तुत परीक्षण द्वारा विद्यार्थियों के प्रतिबल–स्तर का मापन निम्नलिखित छह क्षेत्रों में किया जाता हैं।

शैक्षिक प्रतिबल (Academic Stress - AS)

आर्थिक प्रतिबल (Financial Stress - FS)

व्यावसायिक प्रतिबल (Vocational Stress - VS)

पारिवारिक प्रतिबल (Family Stress- F_aS)

सामाजिक प्रतिबल (Social Stress - SS)

संवेगात्मक प्रतिबल (Emotional Stress- ES)

विश्वसनीयता

पुर्नपरीक्षण विधि (Test-Retest Methods) द्वारा परीक्षण की विश्वसनीयता इस प्रकार प्राप्त हुई–

क्षेत्र Areas	पुनःपरीक्षण विश्वसनीयताTest-retest Reliability
A) Academic Stress	0.81
B) Financial Stress	0.71
C) Vocational Stress	0.78
D) Family Stress	0.73
E) Social Stress	0.75
F) Emotional Stress	0.77
Total	0.79

वैधता

प्रस्तुत परीक्षण के परिणामों तथा आभा रानी बिष्ट द्वारा निर्मित 'बिष्ट बैटरी ऑफ स्ट्रेस' परीक्षण के परिणामों के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया जो 0.75 प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत परीक्षण की अंकगणना काफी सरल है

पाँच बिन्दु मापनी पर निम्नलिखित प्रकार से अंक प्रदान करेंगे।

अत्यधिक सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	अत्यधिक असहमत
5	4	3	2	1
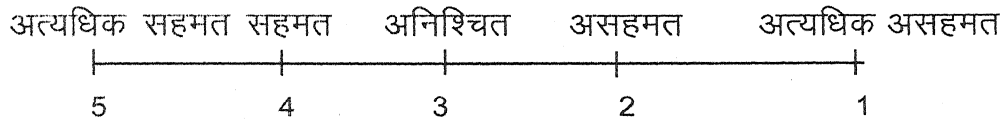
विद्यार्थी के प्रत्येक क्षेत्र में प्राप्त अंकों का योग परीक्षण प्रपत्र के अन्तिम पृष्ठ पर अंकित करते हैं।

अत्यधिक अंक प्रयोज्य के अधिक प्रतिबल–स्तर को व्यक्त करता है।

२. बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची

प्रस्तुत बहिर्मुखी–अन्तर्मुखी सूची (Extrovert Introvert Inventory) E.I.I. डा० तारेश भाटिया द्वारा निर्मित है। प्रस्तुत परीक्षण द्वारा 16 से 22 वर्ष के विद्यार्थियों के बहिर्मुखी–अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन "हाँ" अथवा "नहीं" के रूप में प्राप्त उत्तरों द्वारा किया जाता है।

इस परीक्षण की विश्वसनीयता पुर्नपरीक्षण विधि द्वारा .76 तथा अर्द्ध–विच्छेदन विधि द्वारा .82 प्राप्त हुयी, जिससे परीक्षण की उच्च विश्वसनीयता स्पष्ट होती है। परीक्षण की वैधता ज्ञात करने के उद्देश्य से परीक्षण के परिणामों की तुलना बाह्य कसौटी के रूप में डा० जय प्रकाश द्वारा निर्मित परीक्षण के परिणामों से की गयी जो कि 0.85 प्राप्त हुयी।

अंक गणना :–

निम्नलिखित प्रतिक्रिया के अनुरूप प्रत्येक पद में एक अंक प्रदान करेंगे अन्यथा शून्य अंक देंगे। बाद में सभी अंकों का योग कर तालिका में प्रयोज्य के व्यक्तित्व प्रकार का अवलोकन करेंगे।

No. of Items	सही प्रतिक्रिया जिस पर एक अंक देना हैं
01	NO
02	NO
03	NO
04	YES
05	YES
06	YES
07	YES
08	NO
09	YES
10	NO
11	YES
12	NO
13	NO
14	NO
15	NO
16	NO
17	YES
18	YES
19	NO
20	NO
21	NO
22	YES
23	YES
24	NO
25	YES
26	NO
27	NO
28	NO
29	NO
30	NO

३. मूल्य परीक्षण

प्रस्तुत मूल्य परीक्षण डॉ0 तारेश भाटिया तथा डॉ0 सतीश चन्द्र शर्मा द्वारा निर्मित हैं। इस परीक्षण के द्वारा निम्नलिखित दस मूल्यों का मापन किया जाता है।

1. **सैद्वान्तिक मूल्य (Theoretical value)**

इस मूल्य से प्रभावित व्यक्ति बौद्धिक आधार पर सत्य से सम्बन्धित कार्यों में रूचि लेता है। ऐसा व्यक्ति तार्किक चिन्तन करता है। इस मूल्य से प्रभावित व्यक्ति वैज्ञानिक, इंजीनियर अथवा दार्शनिक होते हैं।

2. **राजनैतिक मूल्य (Political Value)**

इस मूल्य से प्रभावित व्यक्ति पद, प्रतिष्ठा, प्रभुत्व रखने में रूचि रखते हैं। राजनीति में विशेष रूचि रखते हैं।

3. **धार्मिक मूल्य (Religious Value)**

ईश्वर में विश्वास, दैवीय शक्तियों से भय, धार्मिक ग्रन्थों में विश्वास व पूजा—पाठ आदि में अधिक रूचि रखते हैं।

4. **सामाजिक मूल्य (Social Value)**

अन्य व्यक्तियों की निःस्वार्थ सहायता करना तथा सहानुभूति रखना इस प्रकार के व्यक्तियों के प्रमुख गुण हैं।

5. **सौन्दर्यात्मक मूल्य (Asthetic Value)**

इस मूल्य से प्रभावित व्यक्ति जीवन के सौन्दर्यात्मक पहलुओं, कलात्मक पक्षों तथा सजीव चित्रों में रूचि लेता है। ऐसा व्यक्ति सामान्य रूप से एक अच्छा कवि, साहित्यकार, ललित कला के प्रति प्रेम रखने वाला होता है।

6. **आर्थिक मूल्य (Economic Value)**

धन तथा भौतिक उपलब्धियाँ की इच्छा तथा उपयोगी व व्यावहारिक दृष्टिकोण से प्रत्येक वस्तु का मूल्यांकन करते हैं। ऐसे व्यक्ति सफल व्यापारी होते हैं।

7. **प्रजातान्त्रिक मूल्य (Democratic Value)**

इस मूल्य से प्रभावित व्यक्ति सभी के लिये समानता का दृष्टिकोण रखते हुये जाति, धर्म तथा समुदाय आदि के आधार पर किये जाने वाले भेदभाव के विरोधी होते हैं।

8. **सुखवादी मूल्य (Hedonistic Value)**

इस प्रकार के मूल्य से प्रभावित व्यक्ति भविष्य की अपेक्षा वर्तमान को अधिक महत्व देते हैं तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने पर जोर देते हैं।

9. **शक्ति मूल्य (Power Value)**

दूसरों को अपने अधीन रखना तथा उन पर प्रभुत्व रखना शक्ति मूल्य से प्रभावित व्यक्तियों की प्रमुख विशेषता होती है।

10. **स्वास्थ्य मूल्य (Health Value)**

इस मूल्य को महत्व देने वाले व्यक्ति अपने स्वास्थ्य का महत्व मानते हैं तथा उसका विशेष ध्यान रखते हैं।

परीक्षण विश्वसनीयता –

प्रस्तुत परीक्षण की विश्वसनीयता पुर्नपरीक्षण विधि द्वारा (4 सप्ताह अन्तराल) इस प्रकार ज्ञात हुई

मूल्य	पुर्नपरीक्षण विधिद्वारा प्राप्त विश्वसनीयता
सैद्धान्तिक मूल्य	0.91
राजनैतिक मूल्य	0.88
धार्मिक मूल्य	0.92
सामाजिक मूल्य	0.83
सौन्दर्यात्मक मूल्य	0.85
आर्थिक मूल्य	0.90
प्रजातांत्रिक मूल्य	0.89
सुखवादी मूल्य	0.88
शक्ति मूल्य	0.82
स्वास्थ्य मूल्य	0.87

प्रस्तुत परीक्षण की वैधता –

प्रस्तुत परीक्षण की वैधता का निर्धारण करने के उद्देश्य से प्रस्तुत परीक्षण परिणामों एवं शैरी तथा वर्मा द्वारा निर्मित 'वैयक्तिक मूल्य प्रश्नावली' के परिणामों के साथ सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया, जोकि 0.85 प्राप्त हुआ।

4- समायोजन सूची

प्रस्तुत समायोजन सूची डॉ तारेश भाटिया, रीडर, मनोविज्ञान विभाग (डी०वी० कालेज, उरई) द्वारा निर्मित है। प्रस्तुत समायोजन सूची में कुल 50 पद हैं जिनके द्वारा प्रयोज्य के पाँच विभिन्न क्षेत्रों का समायोजन स्तर ज्ञात किया जाता है। पाँच विभिन्न क्षेत्र हैं :–

a. गृह Home

b. शैक्षिक Educational

c. सामाजिक Social

d. संवेगात्मक Emotional

e. स्वास्थ्य Health

परीक्षण की विश्वसनीयता :–

पुर्नपरीक्षण तथा अर्द्ध–विच्छेदन विधि द्वारा प्रस्तुत परीक्षण की विश्वसनीयता इस प्रकार ज्ञात हुई–

	HOME	EDUCATIONAL	SOCIAL	EMOTIONAL	HEALTH	TOTAL
पुर्नपरीक्षण विधि (Test-Retest Method)	.83	.87	.92	.88	.82	.91
अर्द्ध–विच्छेदन विधि (Split-half Method)	.88	.85	.89	.87	.90	.89

परीक्षण की वैधता :–

वैधता ज्ञात करने के उद्देश्य से प्रस्तुत परीक्षण के परिणामों की तुलना बाह्य कसौटी के रूप में अन्य मानकीकृत परीक्षणों के साथ की गयी जो कि इस प्रकार ज्ञात हुयी।

सहसम्बन्ध

समायोजन सूची – द्वारा डॉ डी0एन0 श्रीवास्तव तथा जी0 तिवारी 0.81

समायोजन सूची – डॉ हरमोहन सिंह 0.79

कुंजी (key) में दी गई प्रतिक्रिया के अनुरूप प्रत्येक पद में एक अंक प्रदान करेंगे अन्यथा शून्य अंक दिया जायेगा। सभी क्षेत्रों के अलग–अलग कुल अंकों का आधार पर तालिका द्वारा समायोजन स्तर ज्ञात करेंगे।

a Home		b Educational		c Social		d Emotional		e Health	
Item No.	Response	Item No.	Response	Item No.	Response	Item No.	Response	Item No.	Response
1	No	2	No	3	No	4	No	5	No
6	Yes	7	No	8	No	9	No	10	No
11	No	12	No	13	No	14	No	15	No
16	Yes	17	Yes	18	Yes	19	No	20	No
21	No	22	No	23	No	24	No	25	No
26	No	27	No	28	Yes	29	No	30	No
31	No	32	No	33	Yes	34	No	35	No
36	No	37	No	38	Yes	39	No	40	No
41	No	42	No	43	Yes	44	No	45	No
46	Yes	47	No	48	No	49	No	50	No

सभी क्षेत्रों में प्राप्त कुल अंकों के योग के आधार पर समायोजन स्तर भी ज्ञात करेंगे।

4. प्रशासन प्रक्रिया

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हाईस्कूल स्तर के 600 विद्यार्थियों पर मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रशासन किया गया। प्रतिदर्श के रूप में चयनित विद्यार्थियों के साथ आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करने के पश्चात आँकड़ों का संकलन किया गया। परीक्षणों का प्रशासन करने से पूर्व विद्यार्थियों को उपयुक्त निर्देश दिये गये। इस कार्य में विद्यालय के प्रधानाचार्य व अध्यापकों का पर्याप्त सहयोग लिया गया।

5. प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत अनुसन्धान का प्रथम उद्देश्य छात्र व छात्राओं, बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी व्यक्तित्व, उत्तम समायोजन व निम्न समायोजन तथा उच्च मूल्य व निम्न मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना था अतः इस उद्देश्य से मध्यमान (Mean), प्रामाणिक विचलन (Standard Deviation) तथा सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात (Critical Ratio) की गणना की गई।

प्रस्तुत अनुसन्धान का द्वितीय उद्देश्य लिंग (छात्र व छात्रा), व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी, उभयमुखी व बहिर्मुखी), मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना था अतः उक्त उद्देश्य से प्रसरण विश्लेषण (Analysis of Variance) की गणना की गई।

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्त विश्लेषण तथा विवेचन

प्रदत्त विश्लेषण तथा विवेचन

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्यों के आधार पर प्रदत्त विश्लेषण तथा वेवेचन निम्नलिखित भागों में प्रस्तुत किया गया–

भाग 1 : छात्र व छात्राओं के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

भाग 2 : बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

भाग 3 : उत्तम समायोजन तथा निम्न समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

भाग 4 : उच्च मूल्य तथा निम्न मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

भाग 5 : लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी व अन्तर्मुखी) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन

भाग 6 : लिंग (छात्र व छात्रा) तथा विभिन्न मूल्यों (उच्च व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन

भाग 7 : लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन

भाग –1

छात्र व छात्राओं के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

हाई –स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर विद्यार्थी प्रतिबल मापनी का प्रशासन किया गया। प्राप्त प्रदत्त के आधार

ार मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.01 में इस प्रकार ज्ञात हुए –

तालिका 4.01 छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	छात्र N= 300		छात्रा N= 300		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	13.84	3.62	14.01	3.25	0.61 >0.05
b. आर्थिक प्रतिबल	15.44	3.53	14.50	3.83	3.13 <0.01
c. व्यावसायिक प्रतिबल	17.10	3.32	15.89	3.65	4.32 <0.01
d. पारिवारिक प्रतिबल	12.56	4.15	12.19	4.11	1.09 >0.05
e. सामाजिक प्रतिबल	13.39	3.53	13.10	3.38	1.03 >0.05
f. संवेगात्मक प्रतिबल	13.07	3.94	12.81	3.88	0.81 >0.05
योग	85.40	15.00	83.02	15.18	1.93 >0.05

सार्थक अन्तर 0.01→2.59
0.05→1.96

तालिका 4.01 का निरीक्षण करने सें स्पष्ट है कि छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 85.40) स्तर छात्राओं (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा कम है। यद्यपि छात्राओं का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 14.01) छात्रों की अपेक्षा (मध्यमान 13.84) अधिक है, किन्तु प्रतिबल के अन्य विभिन्न क्षेत्रों में छात्रों का प्रतिबल अधिक मात्रा में दृष्टिगत होता है। छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में तुलनात्मक रूप से अधिक आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.44), व्यावसायिक

प्रतिबल (मध्यमान 17.10), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 12.56), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 13.39) तथा सवेंगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 13.07) अधिक प्राप्त हुआ हैं। इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र –1** प्रदर्शित हैं।

छात्र तथा छात्राओं के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.01 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि छात्र व छात्राओं के आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.13) तथा व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.32) के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। छात्राओं की अपेक्षा छात्र आर्थिक व व्यावसायिक प्रतिबल सार्थक रूप से अधिक रखते हैं। तालिका 4.01 का निरीक्षण करने से यह भी स्पष्ट है कि छात्र व छात्राओं के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.61) पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1. 09), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.03), सवेंगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.81) तथा योग प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.93) के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है।

उपर्युक्त परिणाम द्वारा स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उप कल्पना (1) ''छात्र व छात्राओं के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। छात्र तथा छात्राओं के आर्थिक प्रतिबल तथा व्यावसायिक प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। छात्राओं की अपेक्षा छात्र अपने भविष्य के प्रति अधिक चिन्तित है, जिसके परिणाम स्वरूप उनको आर्थिक व व्यावसायिक प्रतिबल सार्थक रूप से अधिक है।

बार चित्र–1 : छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांक
छात्र
छात्रा
मध्यमान प्राप्तांक
18
16
14
12
10
8
6
4
2
0
13.84
14.01
15.44
14.5
17.1
15.89
12.58
12.19
13.39
13.1
13.07
12.81
a
शैक्षिक प्रतिबल
b
आर्थिक प्रतिबल
c
व्यावसायिक प्रतिबल
d
पारिवारिक प्रतिबल
e
सामाजिक प्रतिबल
f
संवेगात्मक प्रतिबल
प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र

भाग –2
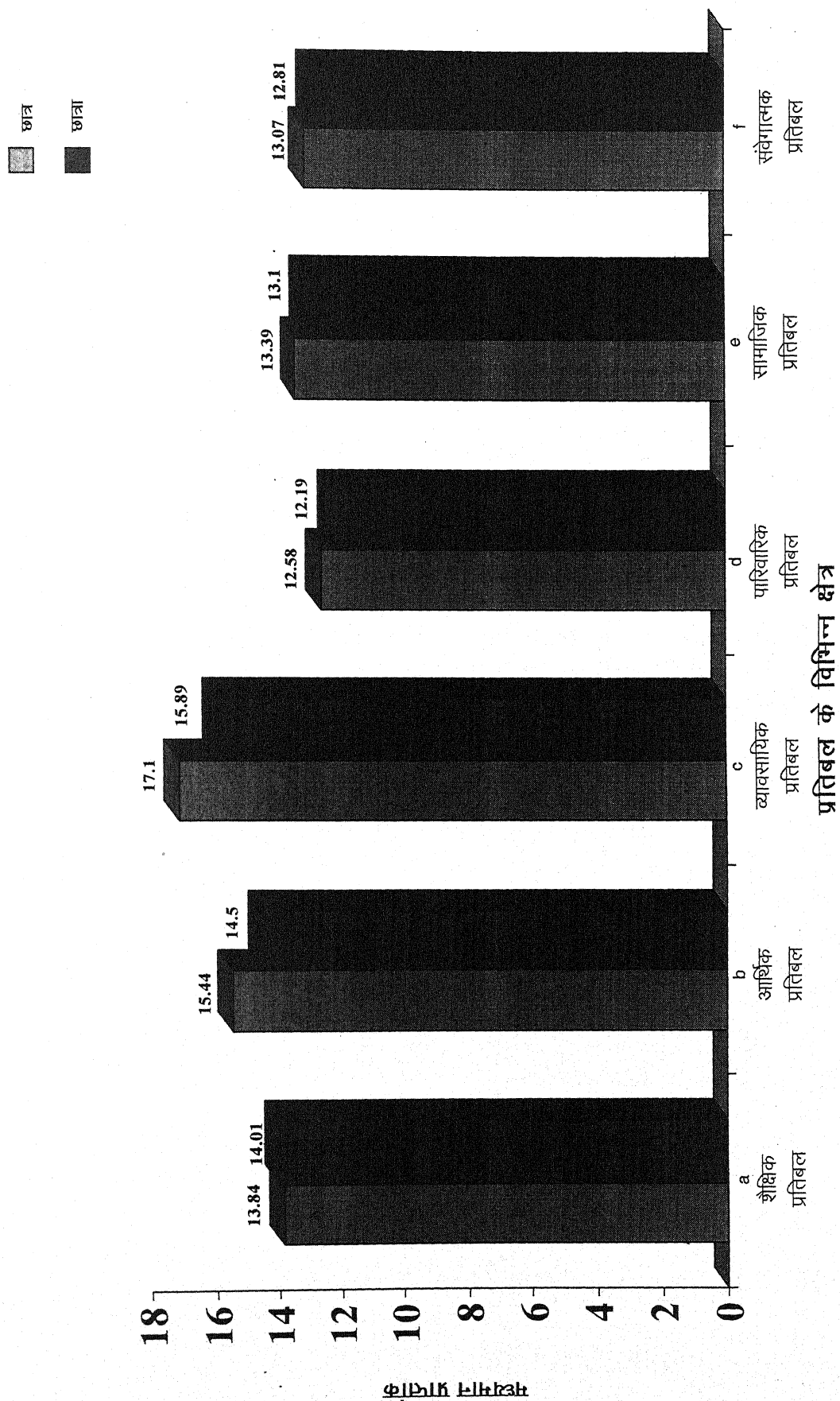
बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाई स्कूल विद्यार्थियों पर बहिर्मुखी – अन्तर्मुखी सूची प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन ($Quartile_3$) तथा चतुर्थांक एक ($Quartile_1$) की गणना की गई। चतुर्थांक तीन (Q_3) के प्राप्त मान 19 तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान 13 के आधार पर बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का निर्धारण किया गया। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन के मान 19 तथा अधिक अंक प्राप्त हुए थे उनको बहिर्मुखी माना गया तथा इसी प्रकार चतुर्थांक एक के मान 13 तथा उसके कम अंक प्राप्त विद्यार्थियों को अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का निर्धारित किया गया। इस प्रकार 136 बहिर्मुखी व्यक्तित्व तथा 146 अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.02 में इस प्रकार ज्ञात हुए।

तालिका 4.02 बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	बहिर्मुखी व्यक्तित्व N= 300		अन्तर्मुखी व्यक्तित्व N= 300		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	12.92	3.57	15.13	3.37	5.39 <0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	14.22	3.64	15.06	3.81	1.91 >0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	15.93	3.49	17.15	3.50	2.90 <0.01
d. पारिवारिक प्रतिबल	10.62	3.78	13.57	4.02	6.41 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	11.17	3.16	15.09	3.15	10.31<0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	11.18	3.81	14.33	3.80	7.00 <0.01
योग	76.03	14.54	90.75	14.11	8.61 <0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59
0.05→1.97

तालिका 4.02 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 90.75) स्तर बहिर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल की अपेक्षा (मध्यमान 76.03) अधिक है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 15.13), आर्थिक प्रतिबल(मध्यमान 15.06), व्यावसयिक प्रतिबल (मध्यमान 17.15), पारिवारिक प्रतिबल(मध्यमान 13.57), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 15.09) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 14.33) बहिर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र–2** में प्रदर्शित

बार चित्र–2 : बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
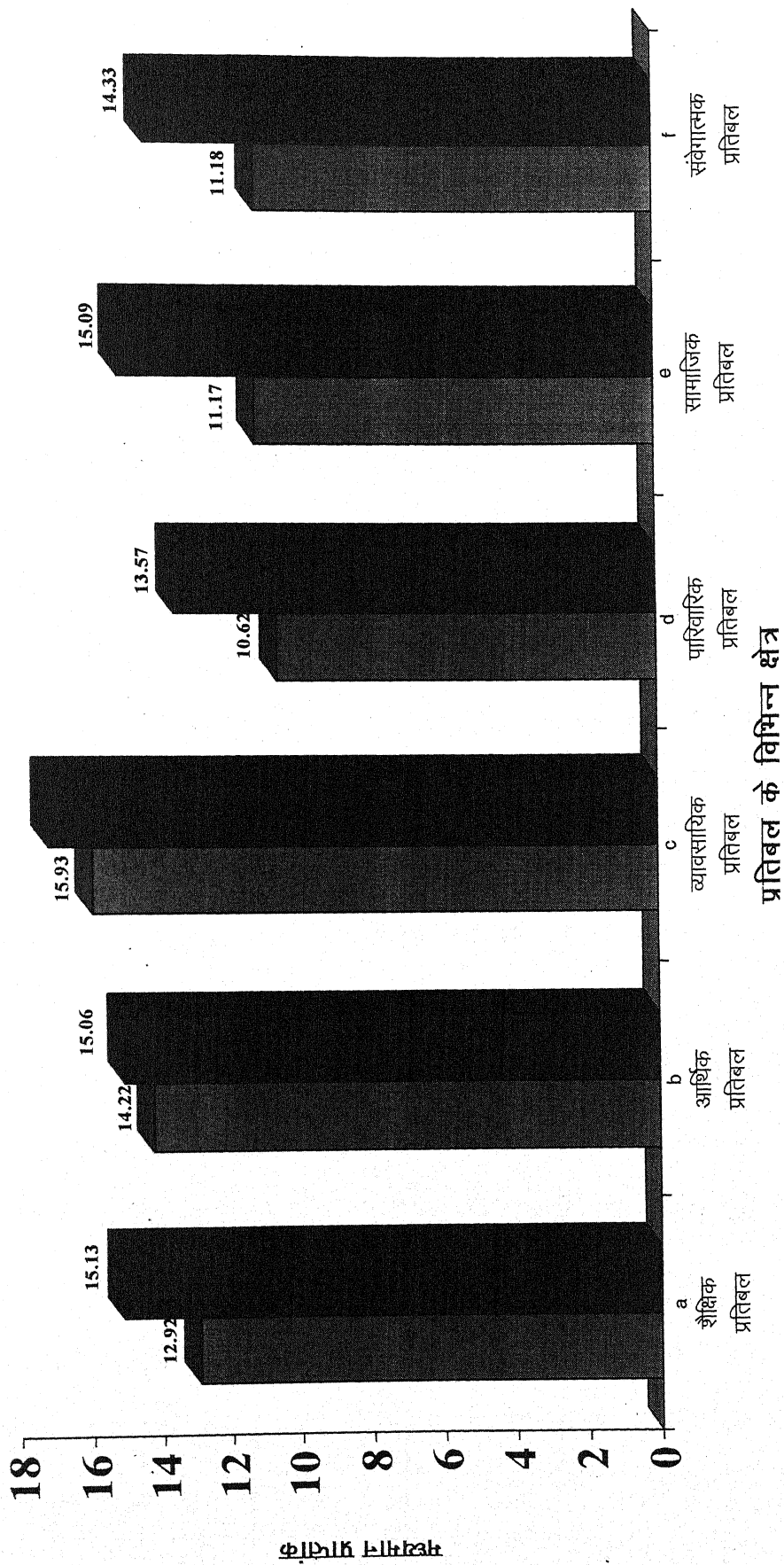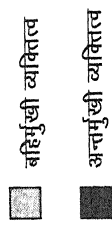
हैं।

बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.02 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है (क्रान्तिक अनुपात का मान 8.61 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर स्पष्ट करता है)। इसी प्रकार प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्रों में भी बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर है। अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 5.39), व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.90), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 10.31), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 6.41), तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 7.00) के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल के मध्य 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है (क्रान्तिक अनुपात 1.91)।

उपर्युक्त परिणाम द्वारा स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (2) ''बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थी एकान्त में रहना पसन्द करते है। उनके मित्र कम होते हैं, जिनसे अपने विचारों को व्यक्त नही कर पाते हैं। सम्भवतः इसी कारण से अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थी शैक्षिक, व्यावसायिक, पारिवारिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा योग (Total) रूप में बहिर्मुखी व्यक्तित्व के

विद्यार्थियों की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक प्रतिबल रखते हैं।

भाग– 3

उत्तम समायोजन तथा निम्न समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

उत्तम समायोजन तथा निम्न समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्‌देश्य से सर्वप्रथम 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर समायोजन सूची प्रशासित की गई । उत्तम समायोजन तथा निम्न समायोजन के विद्यार्थियों को ज्ञात करने के उद्‌देश्य से प्राप्त प्रदत्त द्वारा चतुर्थांक (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) के मान 41 तथा उससे अधिक समायोजन प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उत्तम समायोजन तथा इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 30 तथा उससे कम समायोजन प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न समायोजन वर्ग का निर्धारित किया गया। इस प्रकार 163 उत्तम समायोजन तथा 148 निम्न समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.03 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.03 उत्तम समायोजन तथा निम्न समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उत्तम समायोजन N= 163		निम्नस्तर समायोजन N= 148		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	11.74	2.94	15.77	3.19	11.51<0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	14.09	3.52	15.53	3.86	3.43 <0.01
c. व्यावसायिक प्रतिबल	15.34	3.32	17.30	3.68	4.90 <0.01
d. पारिवारिक प्रतिबल	10.22	3.46	14.34	4.27	9.36 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	11.43	2.98	14.93	3.44	9.46 <0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	10.31	3.18	15.49	3.56	13.63<0.01
योग	73.34	12.22	93.78	14.12	13.63<0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59
0.05→1.97

तालिका 4.03 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि निम्न समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल स्तर (मध्यमान 93.78) उत्तम समायोजन के विद्यार्थियों (मध्यमान 73.34) की अपेक्षा अधिक है। इसी प्रकार निम्न समायोजन के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 15.77), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.53), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 17.30), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 14.34), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 14.93) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 15.49) उत्तम समायोजन के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र–3** द्वारा भी प्रदर्शित हैं–

उत्तम समायोजन तथा निम्न समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल

बार चित्र–3 : उत्तम समायोजन व निम्न समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
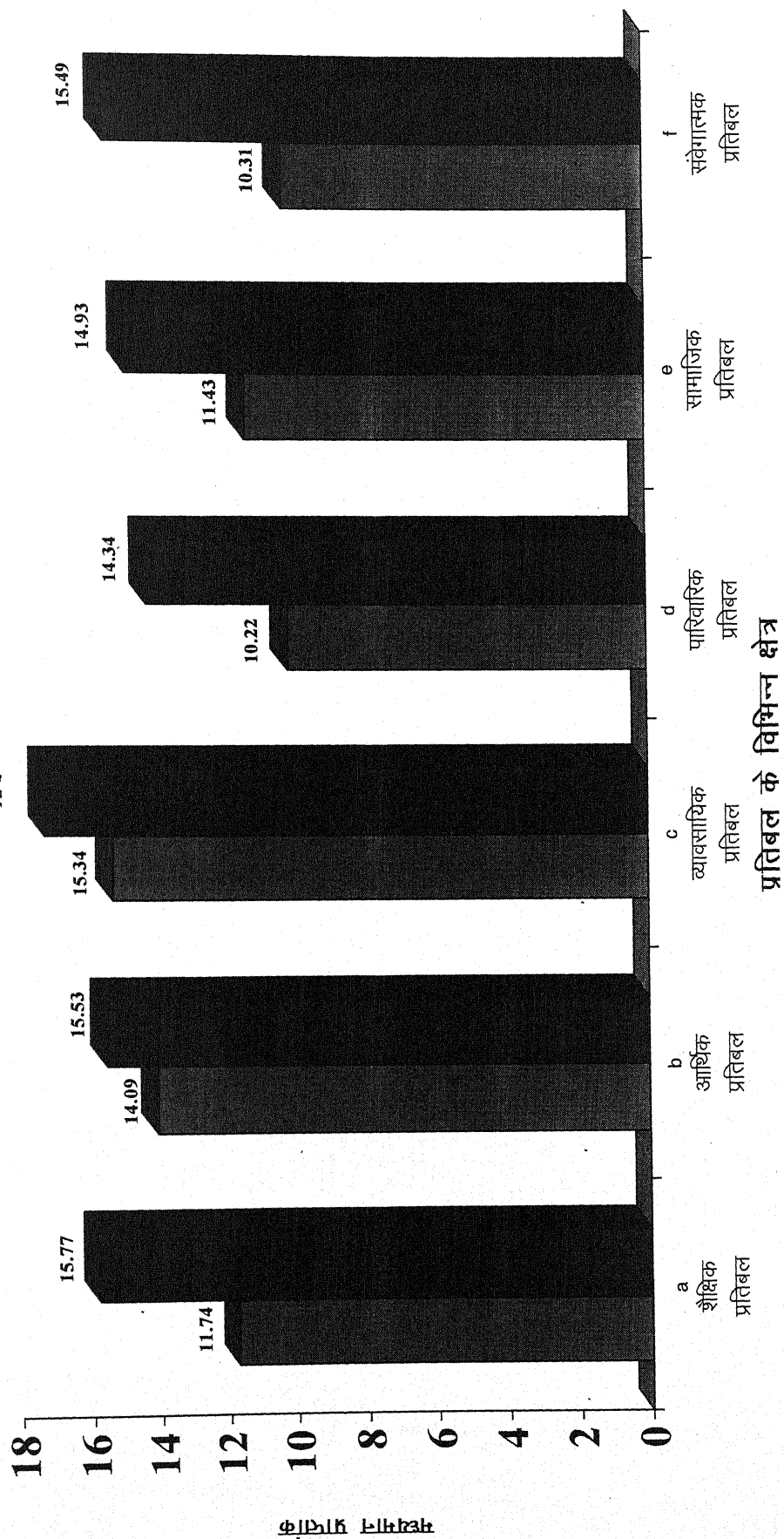
के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.03 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उत्तम समायोजन तथा निम्न समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है (क्रान्तिक अनुपात 13.63 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है) इसी प्रकार प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्रों शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 11.51), आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.43), व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.90), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 9.36), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 9.46) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 13.63) में उत्तम समायोजन तथा निम्न समायोजन विद्यार्थियों के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। अतः स्पष्ट है कि निम्न समायोजन अथवा कुसमायोजन के विद्यार्थियों में सार्थक रूप से प्रतिबल अधिक होता है। स्वाभाविक रूप से जो विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन स्थापित नहीं कर पाते है। वे निश्चित रूप से अधिक प्रतिबल ग्रस्त होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (3) "उत्तम समायोजन तथा निम्न समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। निम्न समायोजन के विद्यार्थियों में सार्थक रूप से अधिक प्रतिबल होता है।

3.01 उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से सर्वप्रथम 600 हाई स्कूल के विद्यार्थियों पर समायोजन सूची प्रशासित की गई। उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों को ज्ञात करने के

उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त द्वारा चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन के मान 9 तथा उससे अधिक गृह समायोजन प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उत्तम गृह समायोजन तथा इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 6 तथा उससे कम गृह समायोजन प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न गृह समायोजन वर्ग का निर्धारित किया गया। इस प्रकार 208 उत्तम गृह समायोजन तथा 164 निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.04 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.04 उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उत्तम गृह समायोजन N=208		निम्न गृह समायोजन N= 164		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	12.65	3.22	15.44	3.25	8.20<0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	14.26	3.77	15.76	3.47	3.95<0.01
c. व्यावसायिक प्रतिबल	15.92	3.39	17.13	3.51	3.36<0.01
d. पारिवारिक प्रतिबल	10.72	3.68	14.74	4.09	9.80<0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	11.98	3.24	14.74	3.29	8.12<0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	11.65	3.91	15.04	3.66	8.69<0.01
योग	77.34	13.83	93.22	13.07	11.34<0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59

0.05→1.97

तालिका 4.04 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उत्तम गृह समायोजन के विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल स्तर (मध्यमान 93.22) अधिक हैं। इसी प्रकार निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 15.44), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.76), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 17.13), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 14.74), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 14.74), संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 15.04), उत्तम गृह समायोजन के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। स्पष्ट है कि जिन विद्यार्थियों का गृह समायोजन अच्छा नहीं है उनका प्रतिबल स्तर सभी क्षेत्रों में अधिक है। इसप्रकार के परिणाम **बार चित्र–4** में प्रदर्शित हैं।

उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.04 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य .01स्तर पर सार्थक अन्तर है (क्रान्तिक अनुपात का मान 11.34)। प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्रों शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 8.20), आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.95), व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3. 36), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 9.80), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 8.12) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 8.69), में उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (3.01)" उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों के

बार चित्र–4 : उत्तम गृह समायोजन व निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
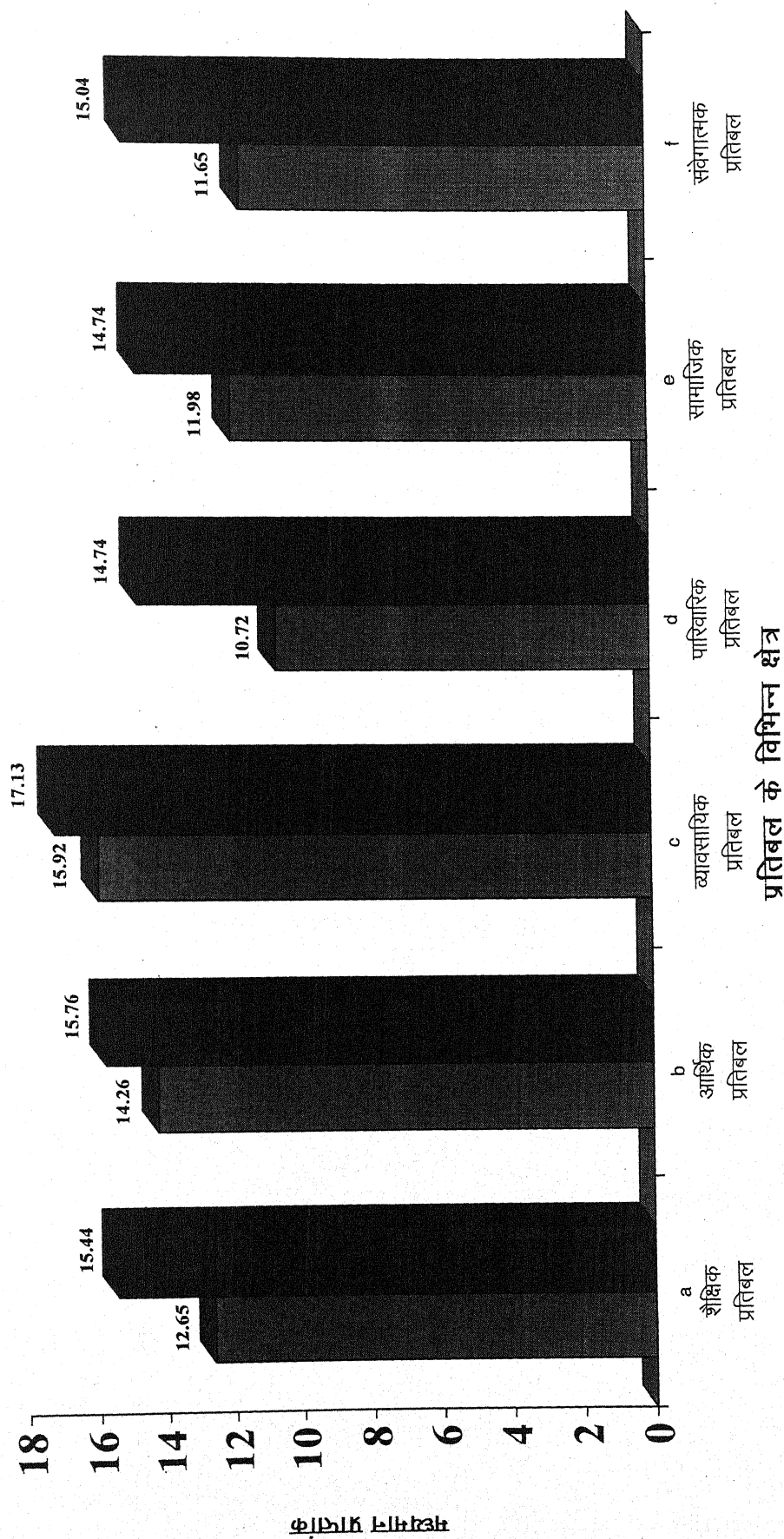
प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।"निरस्त की जाती है। निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों में प्रतिबल का स्तर उत्तम गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल स्तर की अपेक्षा सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर अधिक है। जिस विद्यार्थी का गृह समायोजन उपयुक्त नही है उसमें प्रतिबल की मात्रा भी अधिक होती है, अतः विद्यार्थियों का गृह समायोजन उपयुक्त होना अपेक्षित है।

3.02 उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से सर्वप्रथम 600 हाई स्कूल के विद्यार्थियों पर समायोजन सूची प्रशासित की गई। उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों को ज्ञात करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त द्वारा चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) के मान 9 तथा उससे अधिक शैक्षिक समायोजन प्राप्तांक प्राप्त हुए, उनको उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा इसी प्रकार जिन विद्याथियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 5 तथा उससे कम शैक्षिक समायोजन प्राप्तांक प्राप्त हुए हैं, उनको निम्न शैक्षिक समायोजन वर्ग का निर्धारित किया गया। इस प्रकार कुल 183 उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा 159 निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.05 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.05 उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उत्तम शैक्षिक समायोजन N=183		निम्न शैक्षिक समायोजन N=159		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	12.21	3.04	15.81	3.29	10.59<0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	14.17	3.53	15.58	3.68	3.61 <0.01
c. व्यावसायिक प्रतिबल	15.67	3.42	17.37	3.79	4.36 <0.01
d. पारिवारिक प्रतिबल	11.01	3.91	13.60	4.20	5.89 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	12.15	3.32	14.49	3.55	6.32 <0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	11.10	3.65	14.90	3.72	9.50 <0.01
योग	76.56	13.57	92.29	13.59	10.70<0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59
0.05→1.97

तालिका 4.05 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उत्तम शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 76.56) की अपेक्षा निम्न शैक्षिक समायोजन विद्यार्थियों का प्रतिबल स्तर अधिक (मध्यमान 92.29) है। इसी प्रकार निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (म3यमान 15.81), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.58), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 17.37), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 13.60), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 14.49) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 14.90) उत्तम शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े तथा कुसमायोजित विद्यार्थियों का प्रतिबल स्तर अधिक है। **बार चित्र –5**

बार चित्र–5 : उत्तम शैक्षिक समायोजन व निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
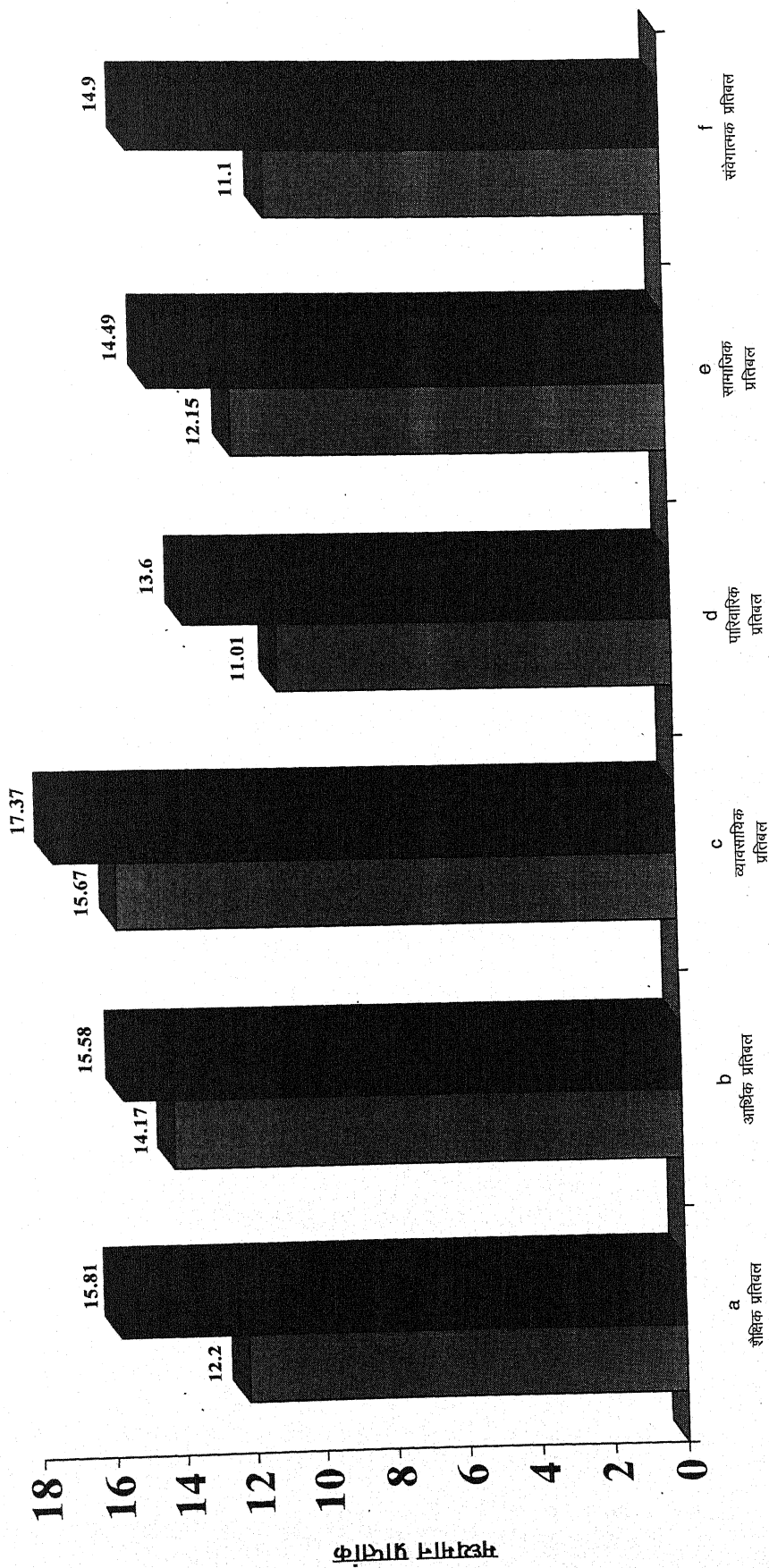
के द्वारा इसी प्रकार के परिणाम प्रदर्शित होते है।

उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.05 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है (क्रान्तिक अनुपात का मान 10.70 प्राप्त हुआ)। प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्रों–शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 10.59), आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.61), व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.36), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 5.89), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 6.32) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 9.50) में उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। अतः स्पष्ट है कि जो विद्यार्थी शैक्षिक रूप में अच्छा समायोजन नहीं रखते है उनका प्रतिबल स्तर सार्थक रूप में उत्तम शैक्षिक समायोजन रखने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक होता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (3.02)'' उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है।

3.03 उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना ।

उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर समायोजन सूची प्रशासित की गई। उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन का निर्धारण करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) के मान 8तथा उससे अधिक सामाजिक समायोजन में प्राप्तांक प्राप्त हुए थे उनको उत्तम सामाजिक समायोजन तथा इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 6 तथा उससे कम प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न सामाजिक समायोजन वर्ग का निर्धारण किया गया। इस प्रकार कुल 248 उत्तम सामाजिक समायोजन तथा 219 निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.06 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.06 उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांको का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उत्तम सामाजिक समायोजन N=248		निम्न सामाजिक समायोजन N=219		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	13.23	3.39	14.77	3.38	4.97 <0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	14.85	3.39	14.82	3.95	0.09 >0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.52	3.35	16.61	3.69	0.27 >0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	12.00	3.99	13.02	4.34	2.61 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	12.37	3.25	14.34	3.34	6.35 <0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	11.91	3.79	14.05	3.93	5.94 <0.01
योग	81.10	14.08	87.97	15.46	5.01 <0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59
0.05→1.97

तालिका 4.06 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उत्तम सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 81.10) की अपेक्षा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल स्तर अधिक (मध्यमान 87.97) है। इसी प्रकार उत्तम सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल की अपेक्षा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 14.77), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 16.61), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 13.02), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान14.34) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान14.05) तुलनात्मक रूप में अधिक है। यद्यपि उत्तम

सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों का आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान14.85) निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 14.82) की अपेक्षा सापेक्ष रूप में अधिक है। **बार चित्र–6** द्वारा इसी प्रकार के परिणाम प्रदर्शित है।

उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.06 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है (क्रान्तिक अनुपात का मान 5.01 प्राप्त हुआ)।उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियो के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.97), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.61), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 6.35) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 5.94) के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। परन्तु उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.09) तथा व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.27) में 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। स्पष्ट है कि प्रतिबल स्तर कम करने के लिये विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन उत्तम होना आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (3.03) ''उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थी शैक्षिक, पारिवारिक,सामाजिक,

बार चित्र–6 : उत्तम सामाजिक समायोजन व निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
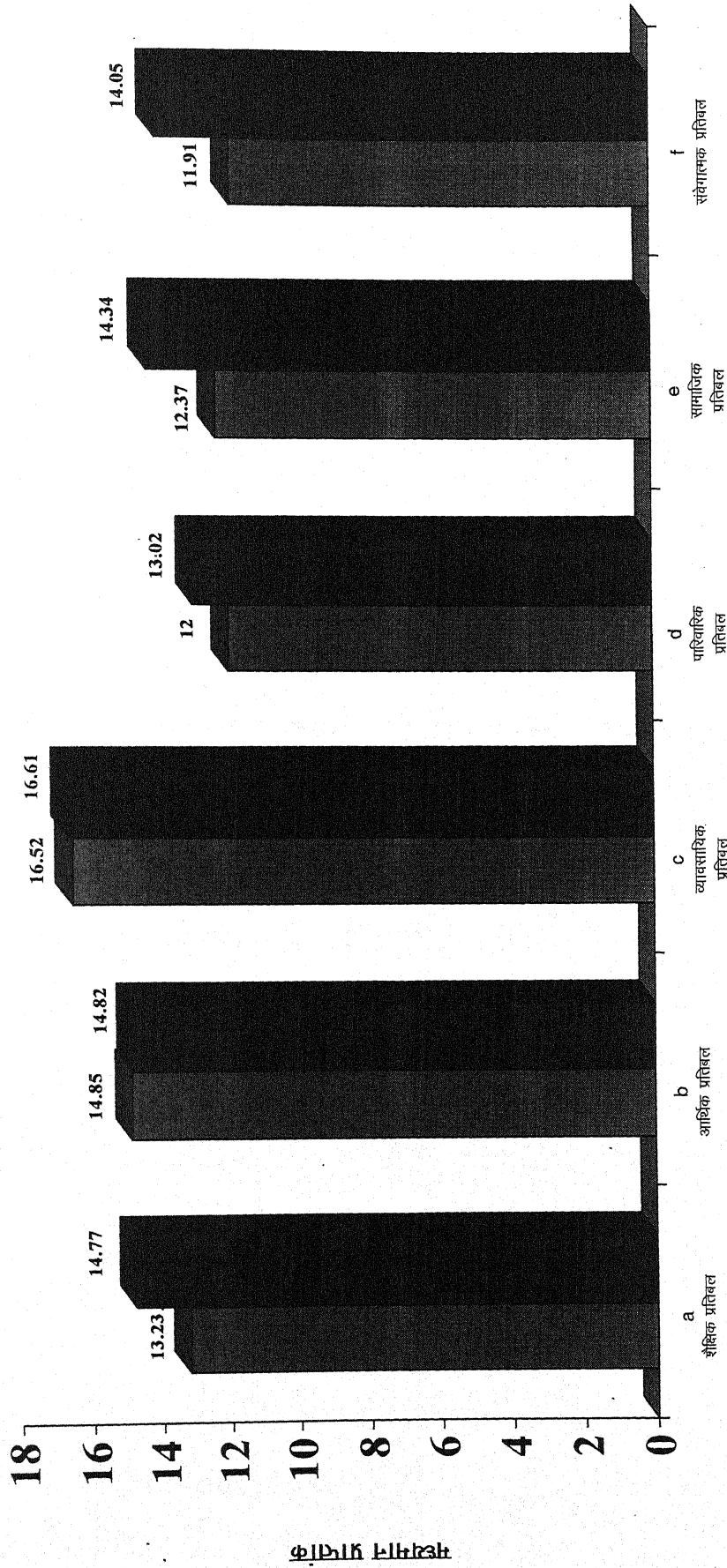
तथा संवेगात्मक प्रतिबल उत्तम सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक रखते हैं।

3.04 उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर समायोजन सूची प्रशासित की गई। उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन का निर्धारण करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1)की गणना की गई। जिन विद्याथियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) के मान 8 तथा उससे अधिक संवेगात्मक समायोजन प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उत्तम संवेगात्मक समायोजन विद्यार्थी तथा इसी प्रकार जिन विद्याथियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 4 तथा उससे कम संवेगात्मक समायोजन प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न संवेगात्मक समायोजन विद्यार्थी वर्ग में निर्धारित किया गया। इस प्रकार कुल 174 उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा 165 निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्याथियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.07 में इसप्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.07 उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांको का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उत्तम संवेगात्मक समायोजन N=174		निम्न संवेगात्मक समायोजन N=165		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	12.24	3.20	15.45	3.11	9.44 <0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	14.52	3.68	15.42	3.83	2.19 <0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	15.77	3.35	17.21	3.51	3.89 <0.01
d. पारिवारिक प्रतिबल	10.77	3.57	14.00	4.14	7.69 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	11.98	3.27	14.55	3.24	7.34 <0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	10.81	3.44	15.11	3.52	11.32<0.01
योग	76.79	13.54	92.08	13.81	10.66<0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59

0.05→1.97

तालिका 4.07 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उत्तम संवेगात्मक समायोजन के विद्याथियों के प्रतिबल (मध्यमान 76.19) की अपेक्षा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल स्तर (मध्यमान 92.08) अधिक है। इसी प्रकार उत्तम संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल की अपेक्षा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 15.45), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.42), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 17.21), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 14.00), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 14.55) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 15.11) तुलनात्मक रूप में अधिक है।इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र–7** में

बार चित्र–7 : उत्तम संवेगात्मक समायोजन व निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
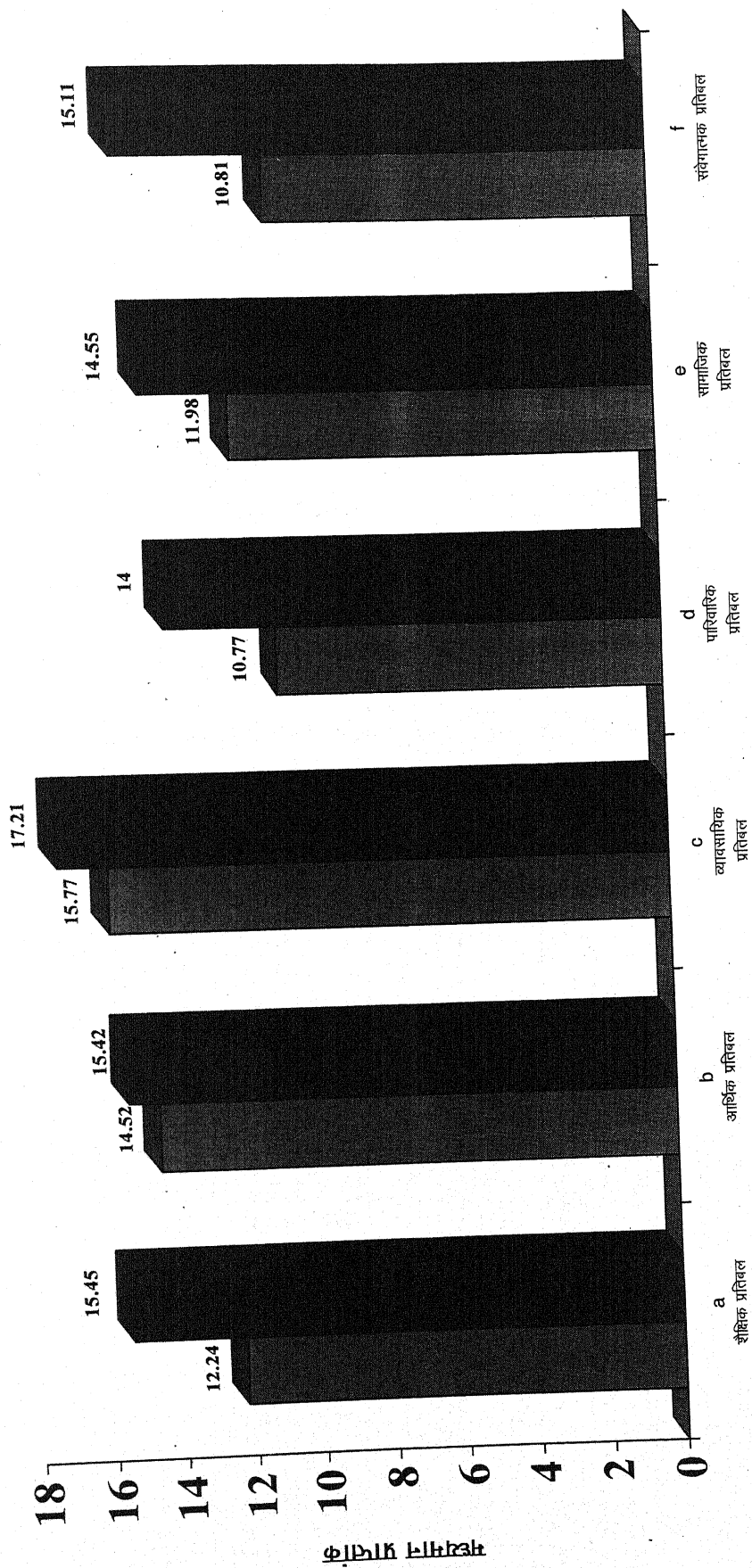
प्रदर्शित हैं।

उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.07 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर(क्रान्तिक अनुपात का मान 10.66) है। उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल(क्रान्तिक अनुपात 9.44), आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.19 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है''), व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.89), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 7.69), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 7.34) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 11.32) के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थी सार्थक रूप से उच्च संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक प्रतिबल रखते है अतःप्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (3.04)'' उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्याथियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है।

3.05 उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाई स्कूल के विद्यार्थियों पर समायोजन सूची प्रशासित की गई। उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों का निर्धारण करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थक तीन (Q_3) के मान 9तथा उससे अधिक स्वास्थ्य समायोजन के प्राप्तांक प्राप्त हुए,उनको उत्तम स्वास्थ्य समायोजन विद्यार्थी तथा इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 7 तथा उससे कम स्वास्थ्य समायोजन प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न स्वास्थ्य समायोजन विद्यार्थी वर्ग में निर्धारित किया गया। इस प्रकार कुल 269 उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा 181 निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.08 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.08 उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उत्तम स्वास्थ्य समायोजन N=269		निम्न स्वास्थ्य समायोजन N=181		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	13.42	3.56	14.77	3.23	4.22 <0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	14.60	3.53	15.29	3.85	1.92 >0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.36	3.37	17.06	3.48	2.12 <0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	11.74	3.78	13.35	4.24	4.13 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	12.98	3.21	13.78	3.66	2.42 <0.05
f. संवेगात्मक प्रतिबल	12.33	3.66	13.98	3.94	4.46 <0.01
योग	81.58	14.47	88.54	14.46	5.01 <0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59
0.05→1.97

तालिका 4.08 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उत्तम स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 81.58) की अपेक्षा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल स्तर (मध्यमान 88.54) अधिक है। इसी प्रकार उत्तम स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल की अपेक्षा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 14.77), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.29), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 17.06), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 13.35), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 13.78) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 13.98) तुलनात्मक रूप में अधिक है। इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र–8** में प्रदर्शित हैं।

बार चित्र–8 : उत्तम स्वास्थ्य समायोजन व निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक

उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.08 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है (क्रान्तिक अनुपात 5.01)। उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.22), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.13), संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.46) के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्याथियों के व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.12) तथा सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.42) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है। परन्तु उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्याथियों के आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.92) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि उत्तम स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों का शैक्षिक, व्यावसायिक, पारिवारिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा योग (Total) रूप में प्रतिबल सार्थक रूप से अधिक है, अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (3.05) "उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" निरस्त की जाती है।

उपर्युक्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के प्रतिबल का समायोजन के साथ महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। इसी कारण से जिन विद्यार्थियों का समायोजन उत्तम है उनमें प्रतिबल कम प्राप्त हुआ जबकि जिन

विद्यार्थियों का गृह समायोजन, शैक्षिक समायोजन, सामाजिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन एवं स्वास्थ्य समायोजन निम्न स्तर का है, उन विद्यार्थियों का प्रतिबल सार्थक रूप से अधिक प्राप्त हुआ। यदि हम विद्यार्थियों के प्रतिबल को कम करना चाहते हैं, तब निश्चित ही हमें उनके समायोजन की समस्याओं का समाधान करना होगा ताकि विद्यार्थी तनाव मुक्त होकर अपना विद्यार्थी जीवन व्यतीत कर सकें।

भाग – 4

उच्च मूल्य तथा निम्न मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तुत भाग के अन्तर्गत विद्यार्थियों के विभिन्न मूल्यों जैसे सैद्धान्तिक, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, प्रजातान्त्रिक, सुखवादी, शक्ति तथा स्वास्थ्य मूल्यों का सम्बन्ध विद्यार्थियों के प्रतिबल के सहित अध्ययन करने का प्रयास है।प्रस्तुत भाग का उद्‌देश्य विभिन्न उच्च मूल्यों तथा निम्न मूल्यों के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन कर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए–

4.01 उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना–

उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्‌देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर मूल्य परीक्षण प्रशासित किया गया। उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों का निर्धारण करने के उद्‌देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा

चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) के मान 28 तथा उससे अधिक सैद्धान्तिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उच्च सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसी प्रकार जिन विद्याथियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 23 तथा उससे कम सैद्धान्तिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इस प्रकार कुल 206 उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा 146 निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.09 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.09 उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उच्च सैद्धान्तिक मूल्य N=206		निम्न सैद्धान्तिक मूल्य N=146		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	13.23	3.39	15.13	3.44	5.13 <0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	14.65	3.90	15.35	3.79	1.71 >0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.63	3.47	16.62	3.26	0.03 >0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	11.44	3.96	13.81	4.28	5.27 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	12.62	3.46	14.00	3.21	3.83 <0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	12.63	3.92	13.65	3.78	2.49 <0.05
योग	81.44	15.47	88.75	14.07	4.60 <0.01

सार्थक अन्तर $0.01 \rightarrow 2.59$, $0.05 \rightarrow 1.97$

तालिका 4.09 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उच्च सैद्धान्तिक

मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 81.44) की अपेक्षा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य का विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 88.75) अधिक है। इसी प्रकार उच्च सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल की अपेक्षा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 15.13), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.35), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 13.81), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 14.00) तथा संवेगात्मक प्रतिबल(मध्यमान 13.65) तुलनात्मक रूप में अधिक है। इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र –9** द्वारा भी प्रदर्शित हैं।

उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.09 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है (क्रान्तिक अनुपात 4.60 प्राप्त)। उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 5.13), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 5.27), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.83) के मध्य 0..01 स्तर पर जबकि संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.49) 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है। उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.71) तथा व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.03) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि जिन विद्यार्थियों के उच्च सैद्धान्तिक मूल्य हैं, उनको प्रतिबल सार्थक रूप से कम है, जबकि निम्न सैद्धान्तिक मूल्य

बार चित्र–9 : उत्तम सैद्धान्तिक मूल्य व निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
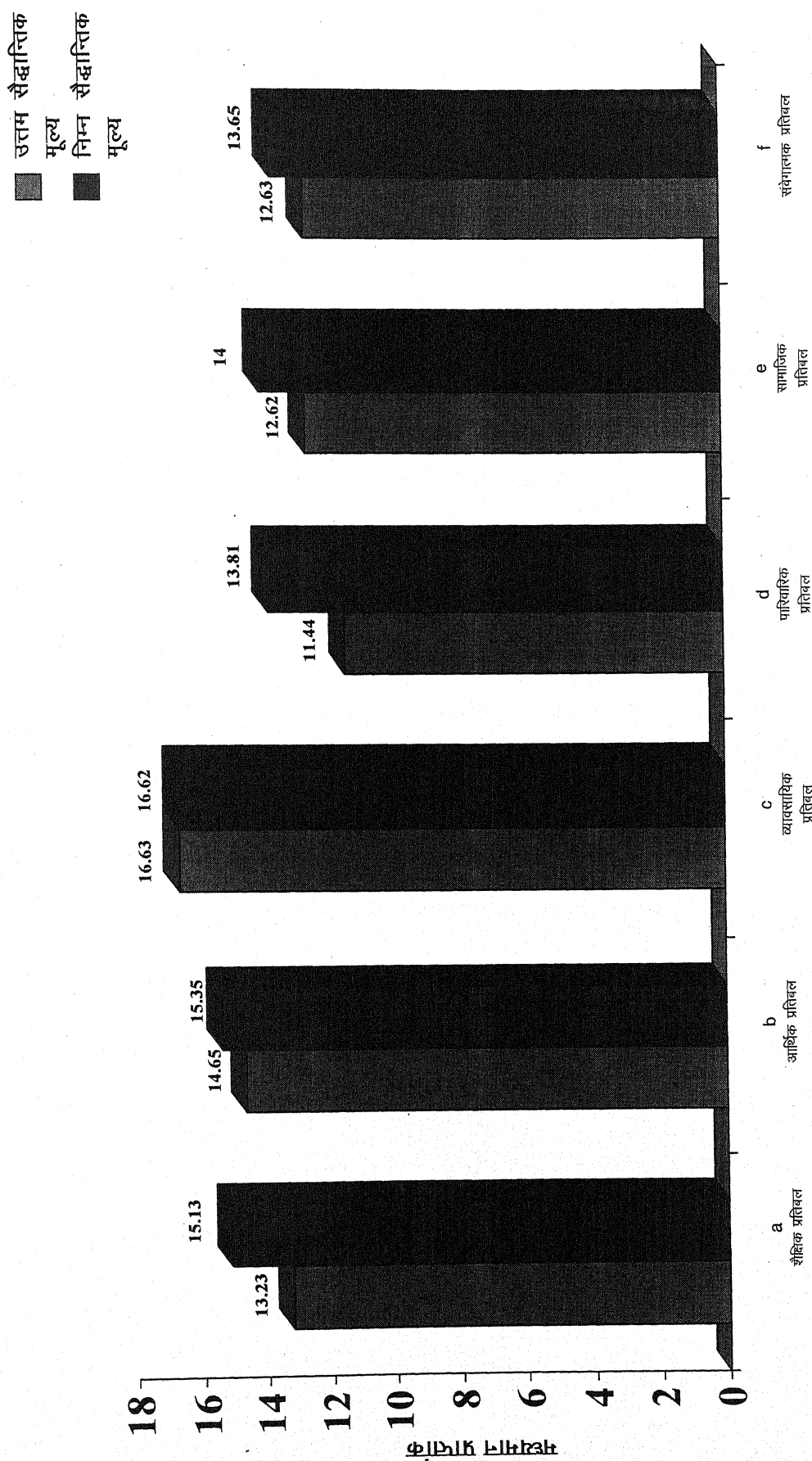
के विद्यार्थियों का शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा कुल योग (Total) प्रतिबल सार्थक रूप से अधिक है। अतः शून्य उपकल्पना (4.01) "उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" निरस्त की जाती है।

4.02 उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तरण का अध्ययन करना।

उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर मूल्य परीक्षण प्रशासित किया गया। उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों का निर्धारण करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) का मान 18 तथा उससे अधिक राजनैतिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उच्च राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों की चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 12 तथा इससे कम राजनैतिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इस प्रकार कुल 158 उच्च राजनैतिक मूल्य तथा 163 निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.10 में इस प्रकार प्राप्त हुए।—

तालिका 4.10 उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उच्च राजनैतिक मूल्य N=158		निम्न राजनैतिक मूल्य N=163		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	14.51	3.43	13.31	3.62	3.08 <0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	15.09	3.47	14.71	3.71	0.95 >0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.56	3.77	16.34	3.66	0.54 >0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	13.59	4.05	11.43	3.76	4.91 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	13.99	3.44	12.75	3.38	3.26 <0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	13.50	3.61	12.40	4.27	2.50 <0.05
योग	87.30	13.92	81.35	15.53	3.63 <0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59
0.05→1.97

तालिका 4.10 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उच्च राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 87.30) निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 81.35) की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल की अपेक्षा उच्च राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 14.51), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.09), व्यवसायिक प्रतिबल (मध्यमान 16.56), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 13.59), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 13.99) तथा संवेगात्मक प्रतिबल(मध्यमान 13.50) तुलनात्मक रूप में अधिक है। इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र–10** में प्रदर्शित है।

बार चित्र–10 : उच्च राजनैतिक मूल्य व निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक

उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्‌देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.10 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर (क्रान्तिक अनुपात 3.63 प्राप्त हुआ) है।उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.08), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.91), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.26), के मध्य 0.01 स्तर पर तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.50) 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है। उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.95) तथा व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.54) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि उच्च राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थी सार्थक रूप से अधिक प्रतिबलग्रस्त हैं। अतः शून्य उपकल्पना (4.02) "उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। उच्च राजनैतिक मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों में सार्थक रूप से अधिक शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा योग (Total) रूप में अधिक प्रतिबल स्तर प्राप्त हुआ है।

4.03 उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन

उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्‌देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर मूल्य परीक्षण प्रशासित किया गया। उच्च धार्मिक मूल्य

तथा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों का निर्धारण करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों की चतुर्थांक तीन (Q_3) का मान 25 तथा उससे अधिक धार्मिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उच्चधार्मिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 18 तथा इससे कम धार्मिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इस प्रकार कुल 150 उच्च धार्मिक मूल्य तथा 163 निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.11 में इस प्रकार प्राप्त हुए –

तालिका 4.11 उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उच्च धार्मिक मूल्य N=150		निम्न धार्मिक मूल्य N=163		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	13.71	3.25	14.16	3.60	1.15 >0.05
b. आर्थिक प्रतिबल	14.87	3.71	15.29	3.65	1.00 >0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.09	3.73	16.66	3.46	1.39 >0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	11.63	3.85	12.98	4.37	2.93 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	12.77	3.20	13.32	3.54	1.45 >0.05
f. संवेगात्मक प्रतिबल	12.54	3.59	13.12	3.88	1.38 >0.05
योग	82.00	14.36	85.71	14.45	2.28 <0.05

सार्थक अन्तर 0.01→2.59
0.05→1.97

तालिका 4.11 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उच्च धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 82.00) की अपेक्षा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 85.71) अधिक है । इसी प्रकार उच्च धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 14.16), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.29), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 16.66), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 12.98), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 13.32) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 13.12) तुलनात्मक रूप में अधिक है। इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र–11** द्वारा प्रदर्शित हैं।

उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.11 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर (क्रान्तिक अनुपात 2.28 प्राप्त हुआ) है। उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.93 प्राप्त हुआ) के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। परन्तु उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.15), आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.00), व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.39), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.45) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.38) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि उच्च धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रतिबल सार्थक रूप से कम होता है। यदि विद्यार्थियों का

बार चित्र–11 : उच्च धार्मिक मूल्य व निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
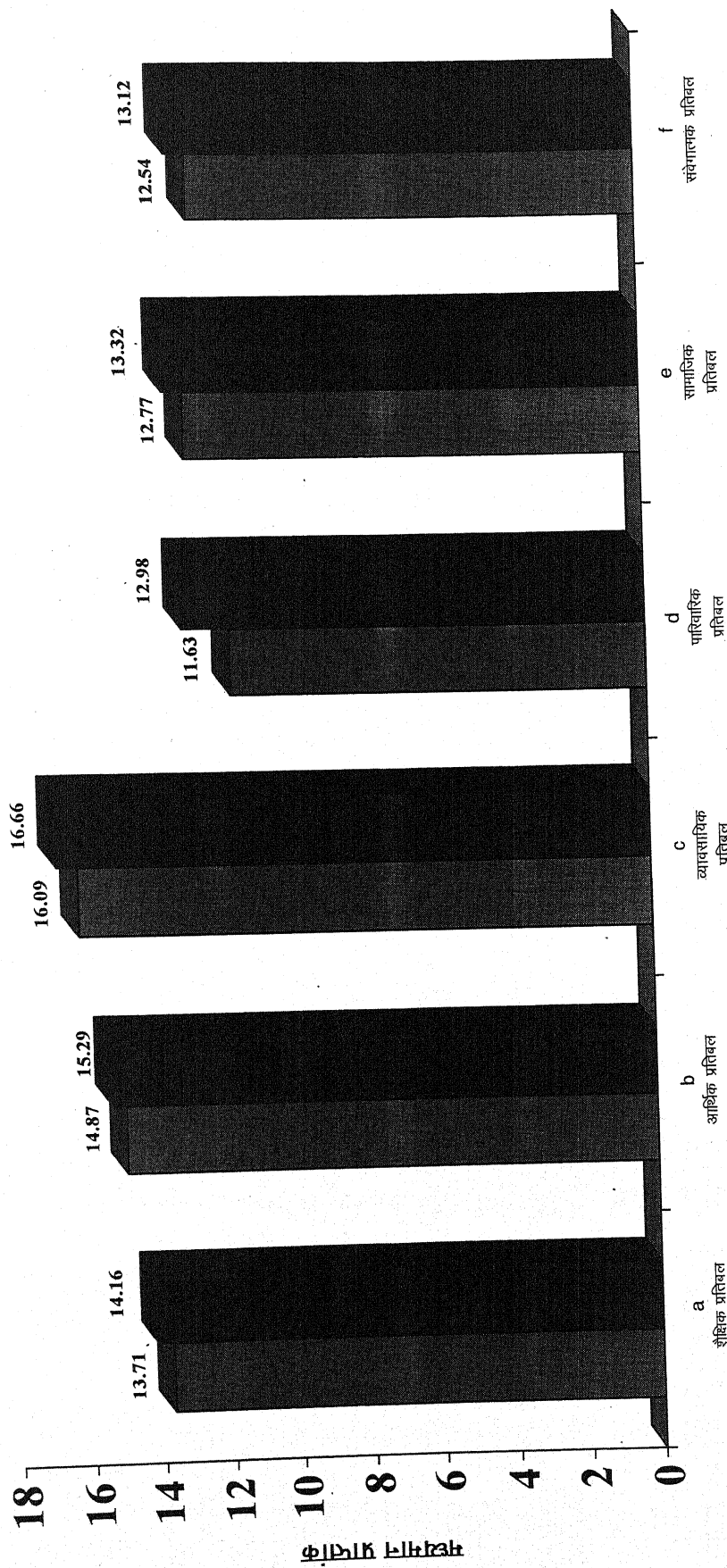
पारिवारिक प्रतिबल को कम करना है, तब हम सभी को धार्मिक मूल्य को महत्व प्रदान करना आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (4.03) ''उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है।

4.04 उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन

उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियो पर मूल्य परीक्षण प्रशासित किया गया। उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों का निर्धारण करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) का मान 27 तथा उससे अधिक सामाजिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उच्च सामाजिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 21 तथा इससे कम सामाजिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इस प्रकार कुल 172 उच्च सामाजिक मूल्य तथा 160 निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.12 में इस प्रकार प्राप्त हुए—

तालिका 4.12 उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उच्च सामाजिक मूल्य N=172		निम्न सामाजिक मूल्य N=160		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	13.16	3.42	14.84	3.26	4.54 <0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	14.88	3.68	14.78	3.57	0.25 >0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.19	3.52	16.46	3.34	0.71 >0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	11.86	4.19	13.04	3.92	2.68 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	12.64	3.50	14.07	3.13	3.97 <0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	12.13	3.68	13.61	3.81	3.61 <0.01
योग	81.26	15.25	86.81	14.49	3.40 <0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59

0.05→1.97

तालिका 4.12 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उच्च सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 81.26) की अपेक्षा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल अधिक (मध्यमान 86.81) है। इसी प्रकार उच्च सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 14.84), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 16.46), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 13.04), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 14.07) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 13.61) तुलनात्मक रूप में अधिक है। यद्यपि उच्च सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों का आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 14.88) निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों (मध्यमान 14.78) की तुलना

में अधिक है। उपर्युक्त परिणाम **बार चित्र–12** में प्रदर्शित है।

उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.12 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है (क्रान्तिक अनुपात का मान 3.40 प्राप्त हुआ)। उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.54), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.68), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.97) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.61) के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। परन्तु उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.25 तथा व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.71) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सार्थक रूप से अधिक है। प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (4.04)" उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" निरस्त की जाती है।

4.05 उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन

उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर मूल्य परीक्षण प्रशासित किया गया। उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों का निर्धारण करने के

बार चित्र—12 : उच्च सामाजिक मूल्य व निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
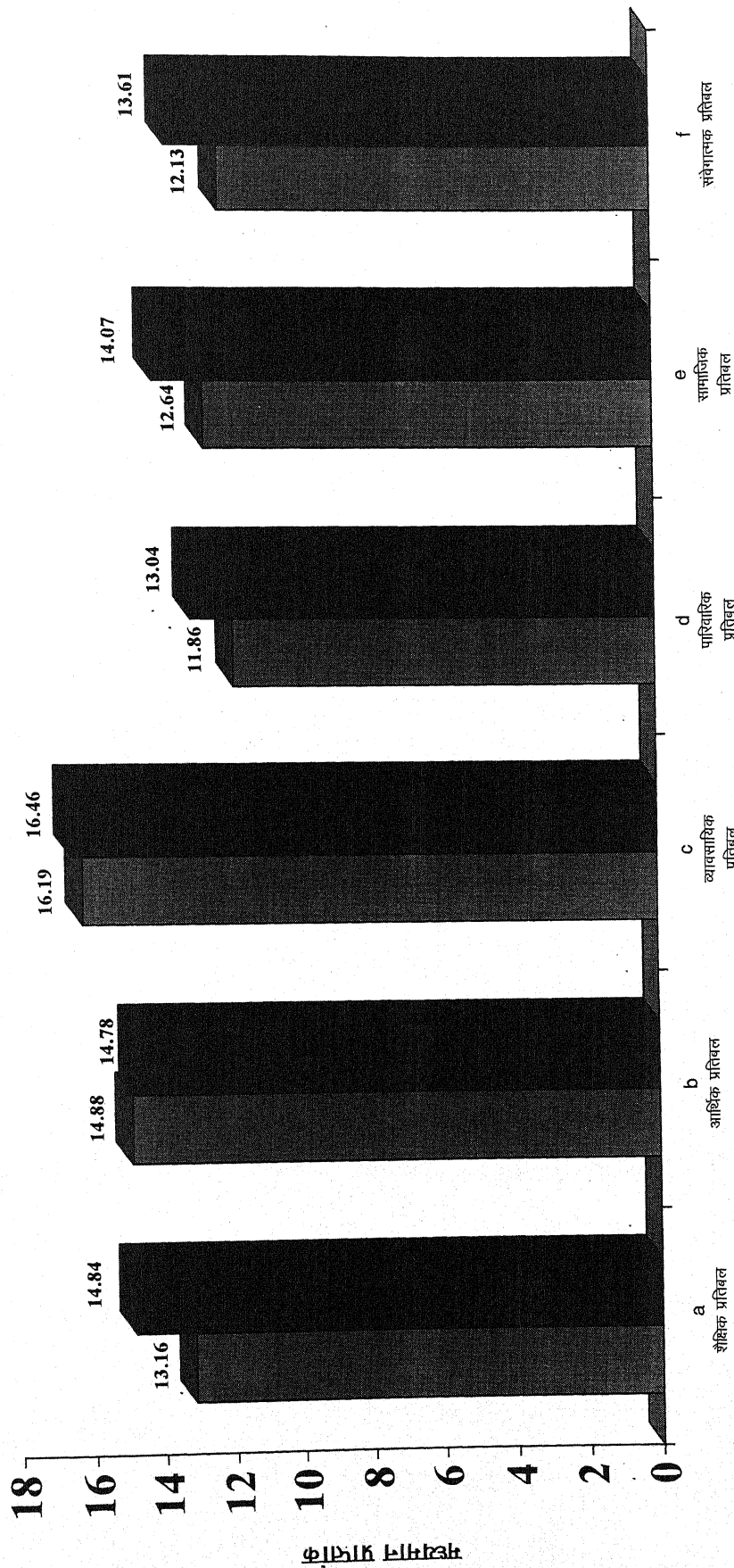
उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) का मान 21 तथा उससे अधिक सौन्दर्यात्मक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 15 तथा इससे कम सौन्दर्यात्मक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसप्रकार कुल 147 उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा 170 निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.13 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.13 उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान,प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य N=147		निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य N=170		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	14.26	3.52	13.79	3.30	1.24>0.05
b. आर्थिक प्रतिबल	14.89	3.54	15.23	4.09	0.79>0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.47	3.29	16.13	3.95	0.83>0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	12.84	3.86	12.08	4.33	1.65>0.05
e. सामाजिक प्रतिबल	13.58	3.47	13.06	3.61	1.30>0.05
f. संवेगात्मक प्रतिबल	13.20	4.03	12.82	3.52	0.88>0.05
योग	85.48	14.60	83.45	15.97	1.18>0.05

सार्थक अन्तर 0.01→2.59

0.05→1.97

तालिका 4.13 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 83.45) की अपेक्षा उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल अधिक (मध्यमान 85.48) है। इसी प्रकार निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 14.26), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 16.47), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 12.84), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 13.58) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 13.20) तुलनात्मक रूप में अधिक है। यद्यपि उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों का आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.23) तुलनात्मक रूप में अधिक है। उपर्युक्त परिणाम **बार चित्र –13** में प्रदर्शित है।

उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्‌देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.13 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.05 स्तर पर (क्रान्तिक अनुपात 1.18 प्राप्त हुआ) सार्थक अन्तर नहीं है। इसी प्रकार उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.24), आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.79), व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.83), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.65), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.30) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.88) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों

बार चित्र–13 : उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य व निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
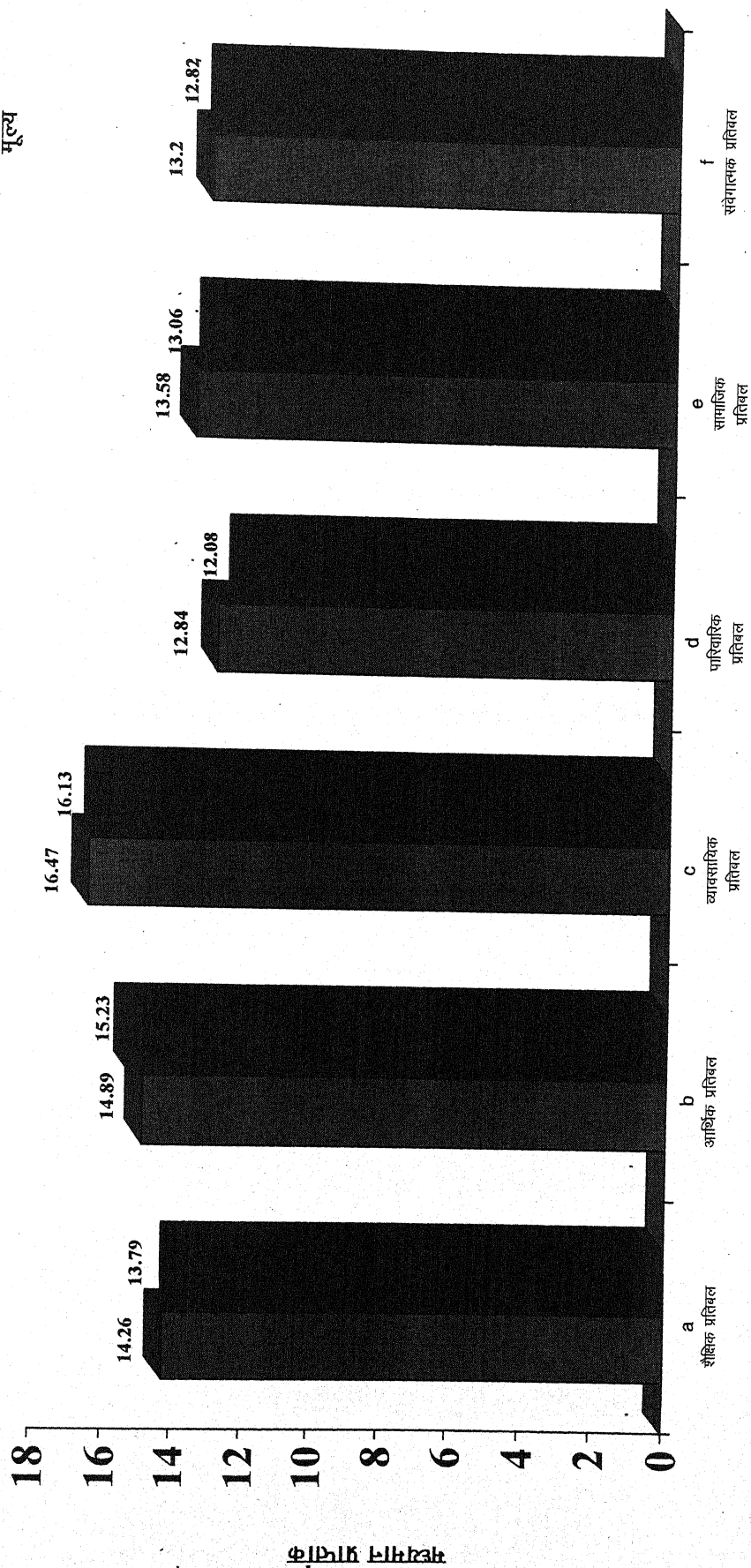
के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य उपकल्पना (4.05) "उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" स्वीकार की जाती है।

4.06 उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना ।

उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर मूल्य परीक्षण प्रशासित किया गया। उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों का निर्धारण करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) का मान 18 तथा उससे अधिक आर्थिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उच्च आर्थिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 14 तथा इससे कम आर्थिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया है। इस प्रकार कुल 142 उच्च आर्थिक मूल्य तथा 201 निम्न आर्थिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.14 में इस प्रकार प्राप्त हुए।

4.14 उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उच्च आर्थिक मूल्य N=142		निम्न आर्थिक मूल्य N=201		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	14.63	3.83	13.24	3.48	3.47 <0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	15.29	3.95	14.86	3.79	1.02 >0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.46	3.78	16.57	3.48	0.27 >0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	13.13	4.44	11.96	3.94	2.54 <0.05
e. सामाजिक प्रतिबल	13.72	3.35	12.64	3.34	2.92 <0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	13.51	4.11	2.51	3.81	2.27 <0.05
योग	86.88	16.13	82.05	14.93	2.82 <0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59, 0.05→1.97

तालिका 4.14 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 82.05) की अपेक्षा उच्च आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल अधिक (मध्यमान 86.88) है। इसी प्रकार निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 14.63), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.29), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 13.13), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 13.72), संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 13.51) तुलनात्मक रूप में अधिक है। यद्यपि उच्च आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों का व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 16.57) तुलनात्मक रूप में अधिक है इसी

प्रकार के परिणाम **बार चित्र–14** में प्रदर्शित है।

उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.14 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है (क्रान्तिक अनुपात 2.82 प्राप्त हुआ)। इसी प्रकार उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.47 प्राप्त हुआ), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.54), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.92) के मध्य 0.01 स्तर पर तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.27) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है।यद्यपि उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.02) तथा व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.27) के मध्य 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि उच्च आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सार्थक रूप से अधिक प्राप्त हुआ। अतः शून्य उपकल्पना (4.06) ''उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है।

4.07 उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथ निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर मूल्य परीक्षण प्रशासित किया गया। उच्च प्रजातान्त्रिक

बार चित्र–14 : उच्च आर्थिक मूल्य व निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
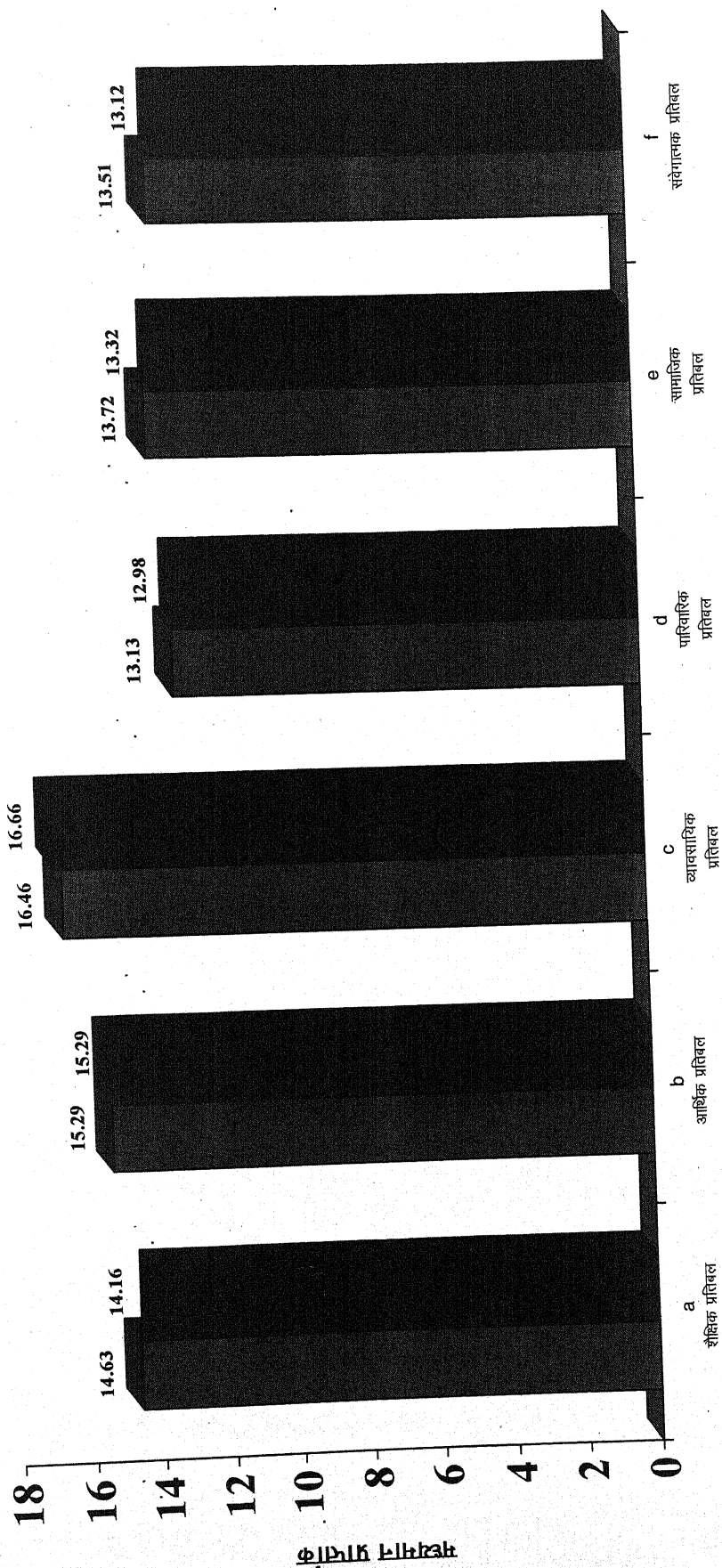
मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों का निर्धारण करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) का मान 28 तथा उससे अधिक प्रजातान्त्रिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया । इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 23 तथा इससे कम प्रजातान्त्रिक मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसप्रकार कुल 180 उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा 161 निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.15 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.15 उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उच्च प्रजातान्तिक मूल्य N=180		निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य N=161		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	13.13	3.43	14.97	3.48	4.97 <0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	14.73	3.96	15.27	3.67	1.32 >0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.38	3.56	16.79	3.51	0.47 >0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	11.37	4.20	13.52	4.02	4.89 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	12.70	3.68	14.12	3.56	3.64 <0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	12.34	3.84	13.44	3.77	2.68 <0.01
योग	80.90	15.47	88.29	14.51	4.56 <0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59
0.05→1.97

तालिका 4.15 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 80.90) की अपेक्षा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 88.29) अधिक है। इसी प्रकार उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 14.94), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.27), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 16.79), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 13.52),सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 14.12), संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 13.44) तुलनात्मक रूप में अधिक है। इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र–15** में प्रदर्शित है।

उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.15 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है (क्रान्तिक अनुपात 4.56 प्राप्त हुआ)। इसी प्रकार उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.97), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.89), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.64) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.68) के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। यद्यपि उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.32) तथा व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.47) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणाम द्वारा स्पष्ट है कि निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थी

बार चित्र–15 : उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य व निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्ताक
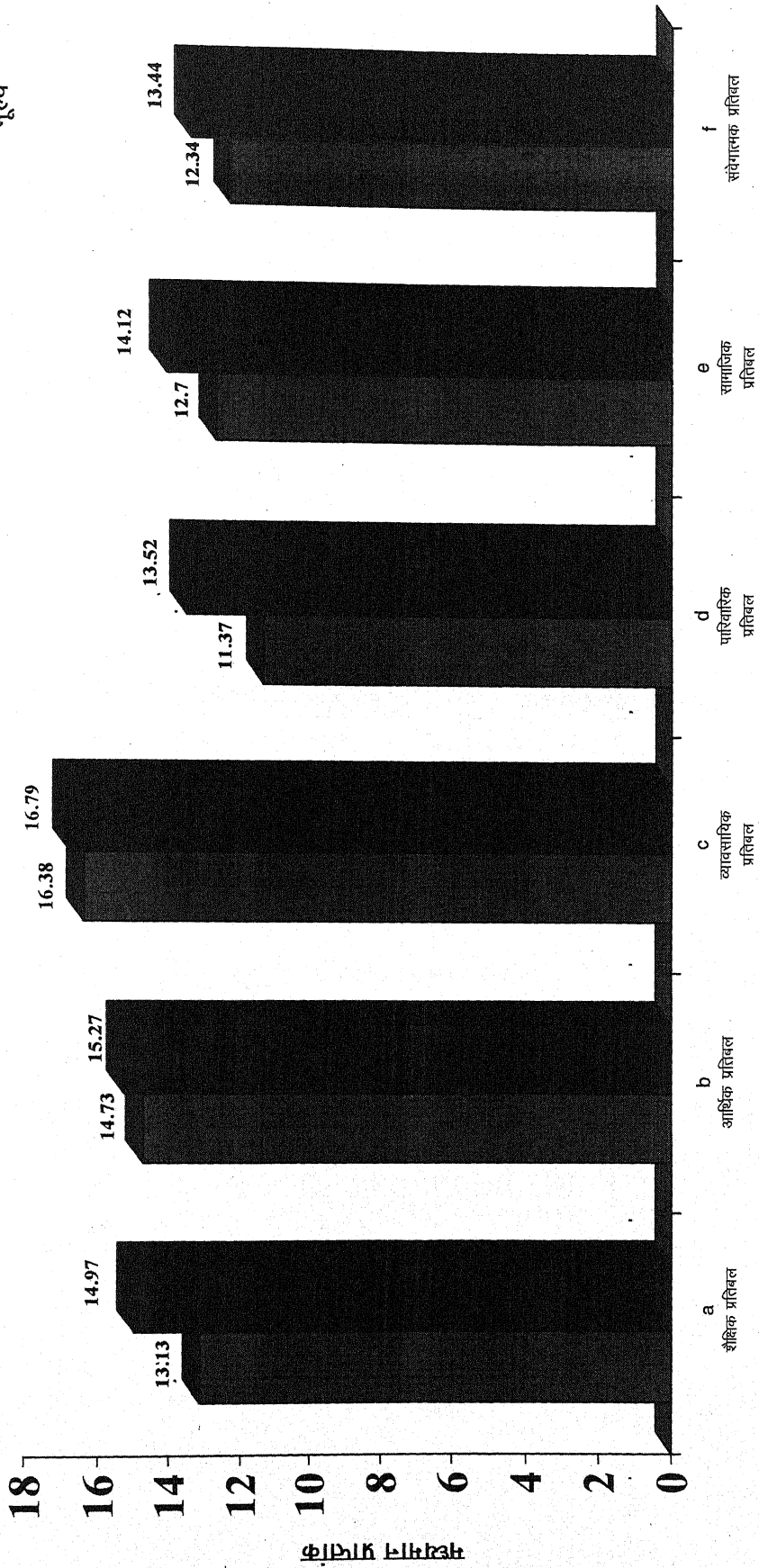
सार्थक रूप से अधिक शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा योग (Total) रूप में प्रतिबल रखते है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (4.07) ''उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है।

4.08 उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर मूल्य परीक्षण प्रशासित किया गया। उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों का निर्धारण करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) का मान 20 तथा उससे अधिक सुखवादी मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उच्च सुखवादी मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 15 तथा इससे कम सुखवादी मूल्य के प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इस प्रकार कुल 180 उच्च सुखवादी मूल्य तथा 162 निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.16 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.16 उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उच्च सुखवादी मूल्य N=180		निम्न सुखवादी मूल्य N=162		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	15.36	3.33	13.18	3.17	6.23<0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	15.57	3.67	14.46	3.91	2.71<0.01
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.94	3.28	16.26	3.58	1.84>0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	12.92	4.04	11.81	4.34	2.47<0.05
e. सामाजिक प्रतिबल	14.14	3.36	12.49	3.41	4.46<0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	14.02	3.87	12.46	3.94	3.71<0.01
योग	89.00	14.56	81.03	15.62	4.86<0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59, 0.05→1.97

तालिका 4.16 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 81.03) की अपेक्षा उच्च सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 89.00)अधिक है। इसी प्रकार निम्न सुखवादी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 15.36),आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.57), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 16.94), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 12.92), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 14.14), संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 14.02) तुलनात्मक रूप में अधिक है। इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र–16** में प्रदर्शित है।

उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विधार्थियों के प्रतिबल

बार चित्र–16 : उच्च सुखवादी मूल्य व निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
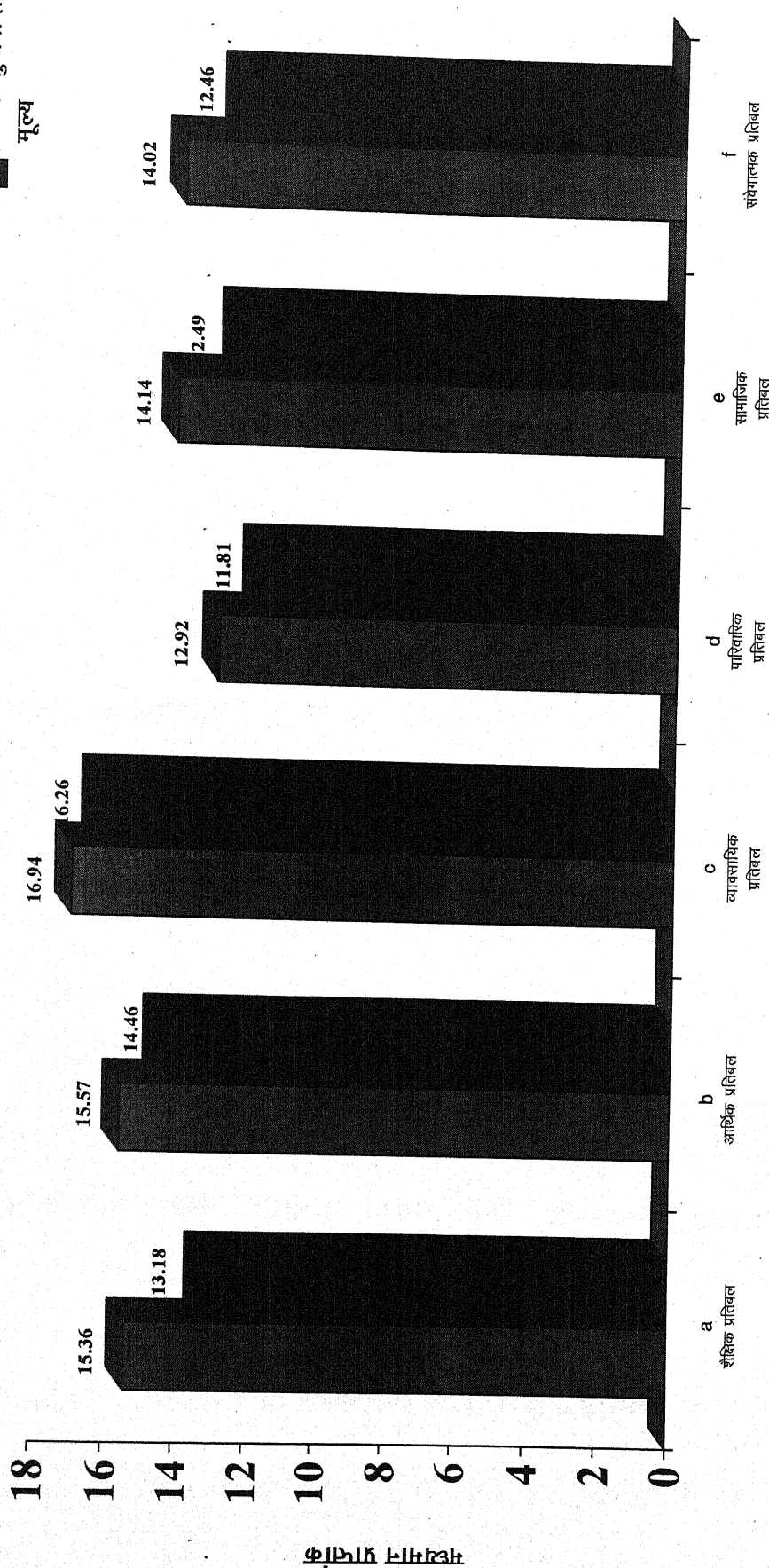
के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.16 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर (क्रान्तिक अनुपात 4.86) सार्थक अन्तर है। इसी प्रकार उच्च सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल(क्रान्तिक अनुपात 6.23), आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.71), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.46), संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.71) के मध्य 0.01 स्तर पर जबकि पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.47) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है। यद्यपि उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.84) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों में सार्थक रूप से अधिक शैक्षिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक व संवेगात्मक प्रतिबल है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (4.08) ''उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है।

4.09 उच्च शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

उच्च शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर मूल्य परीक्षण प्रशासित किया गया। उच्च शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों को निर्धारित करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक

तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) के मान 18 तथा उससे अधिक शक्ति मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उच्च शक्ति मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 14 तथा इससे कम शक्ति मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसप्रकार कुल 188 उच्च शक्ति मूल्य तथा 205 निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.17 में इस प्रकार प्राप्त हुए।

तालिका 4.17 उच्च शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

तालिका 4.17 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि निम्न शक्ति मूल्य

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उच्च शक्ति मूल्य N=188		निम्न शक्ति मूल्य N=205		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	14.46	3.51	13.32	3.42	3.26 <0.01
b. आर्थिक प्रतिबल	15.45	3.62	14.60	3.64	2.30 <0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.52	3.48	16.29	3.65	0.64 >0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	13.21	4.41	11.57	3.95	3.90 <0.01
e. सामाजिक प्रतिबल	14.13	3.57	12.71	3.44	4.06 <0.01
f. संवेगात्मक प्रतिबल	13.57	3.98	12.29	3.73	3.28 <0.01
योग	87.67	14.99	80.96	14.63	4.47 <0.01

सार्थक अन्तर 0.01→2.59
0.05→1.97

के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 80.96) की अपेक्षा उच्च शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 87.67) अधिक है। इसी प्रकार निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 14.46), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.45), व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 16.52), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 13.21), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 14.13) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 13.57) तुलनात्मक रूप में अधिक है। इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र–17** में प्रदर्शित हैं।

उच्च शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.17 का अवलोकन करने से स्पष्ट हैं कि उच्च शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक (क्रान्तिक अनुपात 4.47) अन्तर है। इसी प्रकार उच्च शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.26), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3.90), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 4.06), संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 3..28) के मध्य 0.01 स्तर पंर जबकि आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 2.30) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है। यद्यपि उच्च शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति मूल्ल के विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.64) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि उच्च शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों में शैक्षिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, संवेगात्मक प्रतिबल सार्थक रूप से शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति अधिक है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (4.09)

बार चित्र–17 : उच्च शक्ति मूल्य व निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
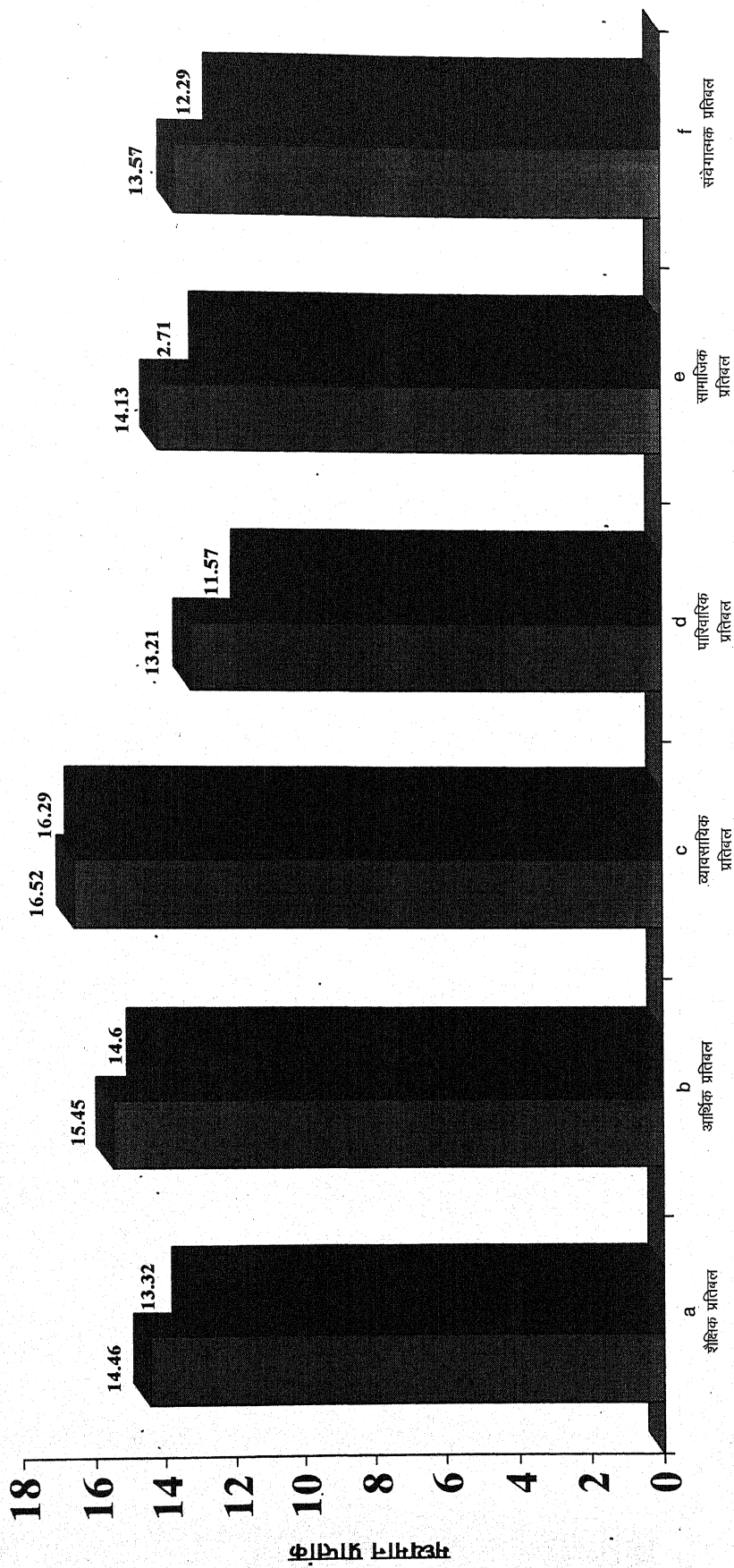
"उच्च मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" निरस्त की जाती है।

4.10 उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना—

उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से 600 हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर मूल्य परीक्षण प्रशासित किया गया। उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों को निर्धारित करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) के मान 23 तथा उससे अधिक स्वास्थ्य मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको उच्च स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इसी प्रकार जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 18 तथा इससे कम स्वास्थ्य मूल्य प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थी निर्धारित किया गया। इस प्रकार कुल 177 उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा 166 निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.18 में इस प्रकार प्राप्त हुए—

तालिका 4.18 उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

प्रतिबल के विभिन्न क्षेत्र	उच्च स्वास्थ्य मूल्य N=177		निम्न स्वास्थ्य मूल्य N=166		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
a. शैक्षिक प्रतिबल	13.87	3.59	13.96	3.43	0.24 >0.05
b. आर्थिक प्रतिबल	14.91	3.79	15.19	3.51	0.72 >0.05
c. व्यावसायिक प्रतिबल	16.72	3.35	16.23	3.80	1.26 >0.05
d. पारिवारिक प्रतिबल	12.25	4.27	12.45	4.02	0.44 >0.05
e. सामाजिक प्रतिबल	12.98	3.34	13.52	3.40	1.50 >0.05
f. संवेगात्मक प्रतिबल	12.94	4.01	13.18	3.88	0.56 >0.05
योग	84.02	15.46	84.80	15.53	0.47 >0.05

सार्थक अन्तर 0.01→2.59, 0.05→1.97

तालिका 4.18 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उच्च स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 84.02) की अपेक्षा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल (मध्यमान 84.80) अधिक है। इसी प्रकार उच्च स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 13.96), आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.19), पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 12.45), सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 13.52), तथा संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 13.18) तुलनात्मक रूप में अधिक है। यद्यपि निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों का व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 16.72) तुलनात्मक रूप में

अधिक है। इसी प्रकार के परिणाम **बार चित्र–18** में भी प्रदर्शित हैं।

उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका 4.18 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य 0.05 स्तर पर (क्रान्तिक अनुपात 0.47) कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसी प्रकार उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.24), आर्थिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.72), व्यावसायिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.26), पारिवारिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.44), सामाजिक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 1.50) तथा संवेगात्मक प्रतिबल (क्रान्तिक अनुपात 0.56) के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (4.10) "उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" स्वीकार की जाती है।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि उच्च सैद्धान्तिक मूल्य, उच्च धार्मिक मूल्य, उच्च सामाजिक मूल्य, उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों का प्रतिबल स्तर सार्थक रूप से कम है। इसी प्रकार निम्न राजनैतिक मूल्य, निम्न आर्थिक मूल्य, निम्न सुखवादी मूल्य, निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल स्तर सार्थक रूप से कम है। यदि हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के प्रतिबल को कम करना चाहते है तब हमें सैद्धान्तिक, धार्मिक, सामाजिक

बार चित्र–18 : उच्च स्वास्थ्य मूल्य व निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल प्राप्तांक
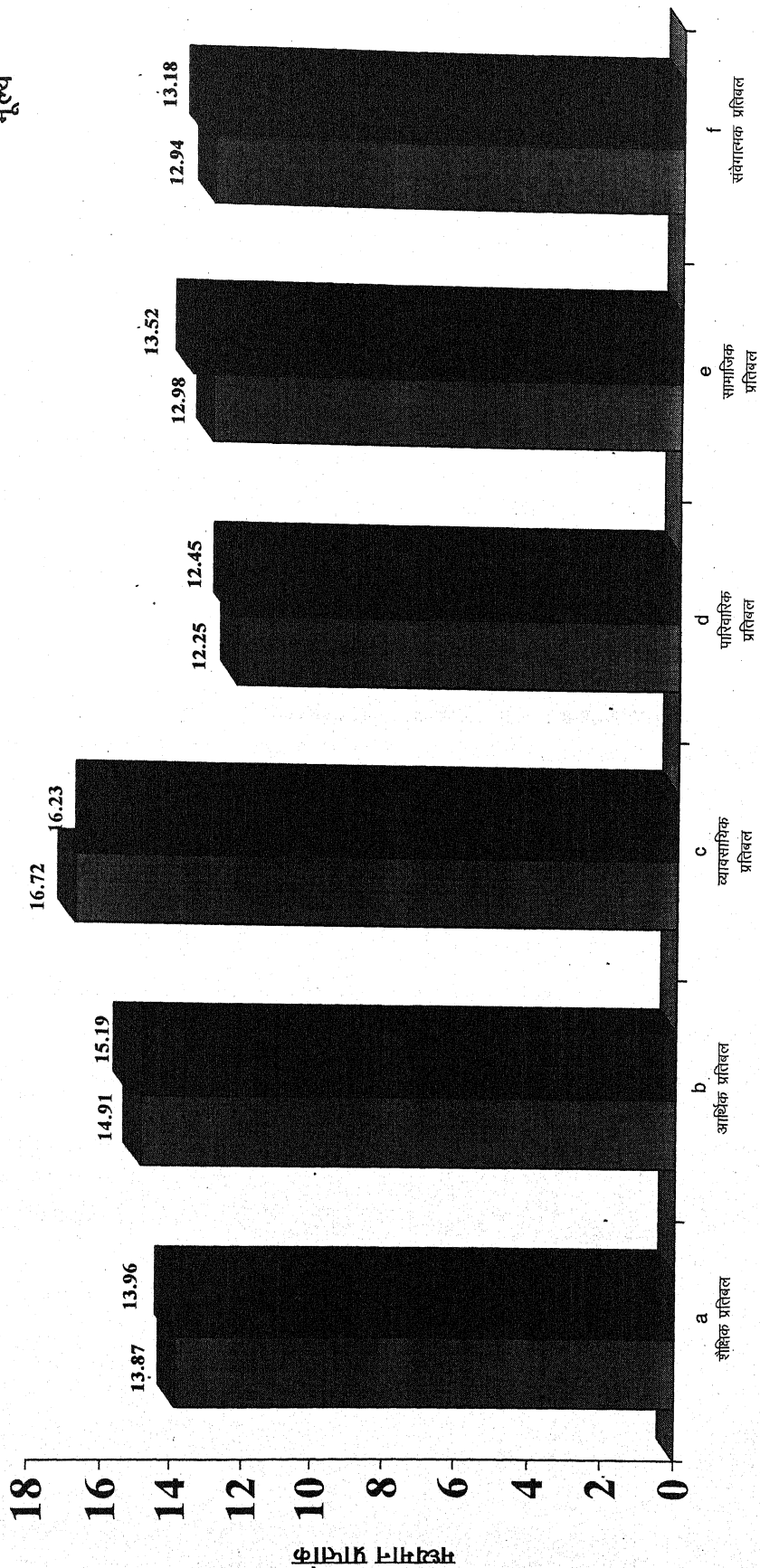
तथा प्रजातान्त्रिक मूल्यों को महत्व देना होगा तथा इसके विपरीत राजनैतिक, आर्थिक, सुखवादी तथा शक्ति मूल्य को अस्वीकार करना होगा ताकि विद्यार्थी प्रतिबल मुक्त होकर अपना अध्ययन कार्य कर सकें।

भाग–5

लिगं (छात्र व छात्राओं) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र तथा 300 छात्राओं पर बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची तथा विद्यार्थी प्रतिबल मापनी प्रशासित की गई। बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का निर्धारण करने के उद्देश्य से प्राप्त प्रदत्त के आधार पर चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) की गणना की गई। चतुर्थांक तीन (Q_3) के प्राप्त मान 19 तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान 13 के आधार पर बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का निर्धारण किया गया। जिन विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन (Q_3) के मान 19 तथा उससे अधिक प्राप्तांक प्राप्त हुए उनको बहिर्मुखी व्यक्तित्व का माना गया। इसी प्रकार चतुर्थांक एक (Q_1) के मान 13 तथा उससे कम प्राप्तांक प्राप्त विद्यार्थियों को अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का निर्धारित किया गया। उभयमुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थी उनको माना गया, जिन्हें 14 से 18 के मध्य प्राप्तांक प्राप्त हुए। इस प्रकार 136 बहिर्मुखी (65 छात्र व 71 छात्राओं), 318 उभयमुखी (158 छात्र व 160 छात्राओं) तथा 146 अन्तर्मुखी (77 छात्र व 69 छात्राओं) व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल का अध्ययन किया गया। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक

विचलन तालिका 4.19 में इस प्रकार प्राप्त हुआ।

तालिका 4.19 बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन—

उपसमूह		व्यक्तित्व प्रकार			योग
		बहिर्मुखी	उभयमुखी	अन्तर्मुखी	
छात्र	कुल संख्या	65	158	77	300
	मध्यमान	76.23	85.07	93.82	85.40
	प्रामाणिक विचलन	14.41	13.15	14.48	15.00
छात्रा	कुल संख्या	71	160	69	300
	मध्यमान	75.84	84.35	87.33	83.02
	प्रामाणिक विचलन	14.76	15.26	12.95	15.18
योग	कुल संख्या	136	318	146	600
	मध्यमान	76.03	84.71	90.75	84.21
	प्रामाणिक विचलन	14.54	14.23	14.11	15.12

तालिका 4.19 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 85.40) अधिक है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों में अत्यधिक प्रतिबल (मध्यमान 90.75) है, जबकि उभयमुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों में प्रतिबल (मध्यमान 84.71) कम है तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों में प्रतिबल (मध्यमान 76.03) अत्यधिक निम्न है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व की छात्राओं में प्रतिबल अत्यधिक निम्न (मध्यमान 75.84) है, जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के छात्रों में प्रतिबल (मध्यमान 93.82) अत्यधिक उच्च है।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.20 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.20 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	829.98	1	829.98	4.11	<0.05
B व्यक्तित्व प्रकार	15042.96	2	7521.48	37.23	<001
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	949.08	2	474.54	2.35	>0.05
समूहान्तर्गत	120005.11	594	474.54		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.20 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से प्रतिबल को 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 4.11 प्राप्त हुआ)। इसी प्रकार व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी,

उभयमुखी व अन्तर्मुखी) भी प्रतिबल को सार्थक रूप से (एफ अनुपात 37.23) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। परन्तु लिंग तथा व्यक्तित्व प्रकार का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। (एफ अनुपात का मान 2.35 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है)। उपरोक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि लिंग तथा व्यक्तित्व प्रकार सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को प्रभावित करते हैं। अतः शून्य उपकल्पना (5) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि लिंग तथा व्यक्तित्व प्रकार सार्थक रूप से प्रतिबल को प्रभावित करते है। यद्यपि लिंग तथा व्यक्तित्व प्रकार का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रतिबल को प्रभावित नहीं करता है।

5.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र तथा 300 छात्राओं पर बहिर्मुखी–अन्तर्मुखी सूची तथा विद्यार्थी प्रतिबल मापनी प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन तालिका 4.21 में इस प्रकार प्राप्त हुआ–

तालिका 4.21 – बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के छात्र व छात्राओं के शैक्षिक प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		व्यक्तित्व प्रकार			योग
		बहिर्मुखी	उभयमुखी	अन्तर्मुखी	
छात्र	कुल संख्या	65	158	77	300
	मध्यमान	12.85	13.47	15.44	13.84
	प्रामाणिक विचलन	3.87	3.28	3.60	3.62
छात्रा	कुल संख्या	71	160	69	300
	मध्यमान	12.98	14.14	14.78	14.01
	प्रामाणिक विचलन	3.30	3.19	3.12	3.25
योग	कुल संख्या	136	318	146	600
	मध्यमान	12.92	13.80	15.13	13.93
	प्रामाणिक विचलन	3.57	3.25	3.37	3.44

तालिका 4.21 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्रों के शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 13.84) की अपेक्षा छात्राओं का शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 14.01) अधिक है। अन्तर्मुखी विद्यार्थियों में सर्वाधिक शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 15.13) है, जबकि उभयमुखी विद्यार्थियों में शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 13. 80) निम्न है तथा बहिर्मुखी विद्यार्थियों में अत्यधिक निम्न शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 12.92) है। बहिर्मुखी छात्रों में शैक्षिक प्रतिबल अत्यधिक निम्न (मध्यमान 12.85) है, जबकि अन्तर्मुखी छात्रों में सर्वाधिक शैक्षिक प्रतिबल (मध्यमान 15.44) है।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा

अन्तर्मुखी) का शैक्षिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.22 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.22 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का शैक्षिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	0.32	1	0.32	0.03	>0.05
B व्यक्तित्व प्रकार	348.02	2	174.01	15.47	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	44.36	2	22.18	1.97	>0.05
समूहान्तर्गत	6680.49	594	11.25		
योग	7086.77	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.22 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से शैक्षिक प्रतिबल को 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात का मान 0.03 प्राप्त हुआ)। परन्तु व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) शैक्षिक प्रतिबल को सार्थक रूप से

(एफ अनुपात 15.47) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। लिग तथा व्यक्तित्व प्रकार का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव शैक्षिक प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर (एफ अनुपात का मान 1.97) प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (5.01) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। व्यक्तित्व प्रकार विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

5.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना–

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र तथा 300 छात्राओं पर बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन तालिका 4.23 में इस प्रकार ज्ञात हुआ–

तालिका 4.23—बहिर्मुखी उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के छात्र व छात्राओं के आर्थिक प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन—

उपसमूह		व्यक्तित्व प्रकार			योग
		बहिर्मुखी	उभयमुखी	अन्तर्मुखी	
छात्र	कुल संख्या	65	158	77	300
	मध्यमान	14.57	15.45	16.14	15.44
	प्रामाणिक विचलन	3.37	3.47	3.65	3.53
छात्रा	कुल संख्या	71	160	69	300
	मध्यमान	13.90	15.04	13.86	14.50
	प्रामाणिक विचलन	3.86	3.85	3.64	3.83
योग	कुल संख्या	136	318	146	600
	मध्यमान	14.22	15.24	15.06	14.97
	प्रामाणिक विचलन	3.64	3.66	3.81	3.71

तालिका 4.23 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 14.50) की अपेक्षा छात्रों का आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.44) तुलनात्मक रूप में निम्न है। उभयमुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों में सर्वाधिक आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 15.24) है, जबकि अन्तर्मुखी विद्यार्थियों में निम्न (मध्यमान 15.06) तथा बहिर्मुखी विद्यार्थियों में सर्वाधिक निम्न आर्थिक प्रतिबल (14.22) है। अन्तर्मुखी छात्राओं में सर्वाधिक निम्न आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 13.86) है, जबकि अन्तर्मुखी छात्रों में सर्वाधिक आर्थिक प्रतिबल (मध्यमान 16.14) है।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी उभयमुखी तथा

अन्तर्मुखी) का आर्थिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधर पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.24 में इस प्रकार ज्ञात हुए—

तालिका 4.24 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का आर्थिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम—

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	163.10	1	163.10	12.22	<0.01
B व्यक्तित्व प्रकार	97.04	2	48.52	3.64	<0.05
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	90.76	2	45.38	3.40	<0.05
समूहान्तर्गत	7927.10	594	13.34		
योग	8247.33	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.24 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से आर्थिक प्रतिबल को 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 12.22)। इसी प्रकार व्यक्तित्व प्रकार (बहिमुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) भी आर्थिक प्रतिबल को 0.05 स्तर पर सार्थक

रूप से प्रभावित करता है (एफ अनुपात का मान 3.64)। लिंग तथा व्यक्तित्व प्रकार का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव भी आर्थिक प्रतिबल को सार्थक रूप से .05 स्तर पर (एफ अनुपात का मान 3.40) प्रभावित करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (5.02) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नही होगा।'' निरस्त की जाती है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि लिंग, व्यक्तित्व प्रकार तथा इनका अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से आर्थिक प्रतिबल को प्रभावित करता है।

5.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना–

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र तथा 300 छात्राओं पर बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची' तथा' विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन तालिका 4.25 में इस प्रकार ज्ञात हुआ –

तालिका 4.25 बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के छात्र व छात्राओं के व्यावसायिक प्रतिबल, प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन –

उपसमूह		व्यक्तित्व प्रकार			योग
		बहिर्मुखी	उभयमुखी	अन्तर्मुखी	
छात्र	कुल संख्या	65	158	77	300
	मध्यमान	16.14	17.04	18.04	17.10
	प्रामाणिक विचलन	3.55	3.08	3.40	3.32
छात्रा	कुल संख्या	71	160	69	300
	मध्यमान	15.73	15.85	16.16	15.89
	प्रामाणिक विचलन	3.45	3.86	3.36	3.65
योग	कुल संख्या	136	318	146	600
	मध्यमान	15.93	16.44	17.15	16.50
	प्रामाणिक विचलन	3.49	3.54	3.50	3.54

तालिका 4.25 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 15.89) की अपेक्षा छात्रों का व्यावसायिक प्रतिबल (मध्यमान 17.10) तुलनात्मक रूप से अधिक है। अन्तर्मुखी विद्यार्थियों का व्यावसायिक प्रतिबल सर्वाधिक है (मध्यमान 17.15), जबकि उभयमुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों का व्यावसायिक प्रतिबल निम्न (मध्यमान 16.44) तथा बहिर्मुखी विद्यार्थियों का अत्याधिक निम्न (मध्यमान 15.93) है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के छात्रों का व्यावसायिक प्रतिबल सर्वाधिक उच्च (मध्यमान 18.04) है, जबकि बहिर्मुखी छात्राओं का सर्वाधिक निम्न (मध्यमान 15.73) है।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा

अन्तर्मुखी) का व्यावसायिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.26 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.26 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का व्यावसायिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	173.54	1	173.54	14.42	<0.01
B व्यक्तित्व प्रकार	96.44	2	48.22	4.01	<0.05
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	38.14	2	19.07	1.58	>0.05
समूहान्तर्गत	7149.97	594	12.04		
योग	7503.99	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.26 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से व्यावसायिक प्रतिबल को (एफ अनुपात 14.42) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी व अन्तर्मुखी) भी सार्थक रूप से व्यावसायिक प्रतिबल को 0.05 स्तर पर (एफ

अनुपात 4.01) प्रभावित करता है। लिंग तथा व्यक्तित्व का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से (एफ अनुपात 1.58) व्यावसायिक प्रतिबल को 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट है कि लिंग तथा व्यक्तित्व प्रकार सार्थक रूप से व्यावसायिक प्रतिबल को प्रभावित करते है। यद्यपि लिंग तथा व्यक्तित्व का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से व्यावसायिक प्रतिबल को प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (5.03) '' लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है।

5.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी ,उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना –

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र तथा 300 छात्राओं पर 'बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची' तथा विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन तालिका 4.27 में इस प्रकार ज्ञात हुआ–

तालिका 4.27 बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के छात्र व छात्राओं के पारिवारिक प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन –

उपसमूह		व्यक्तित्व प्रकार			योग
		बहिर्मुखी	उभयमुखी	अन्तर्मुखी	
छात्र	कुल संख्या	65	158	77	300
	मध्यमान	10.61	12.50	14.34	12.56
	प्रामाणिक विचलन	3.60	4.00	4.20	4.15
छात्रा	कुल संख्या	71	160	69	300
	मध्यमान	10.62	12.67	12.71	12.19
	प्रामाणिक विचलन	3.99	4.20	3.65	4.11
योग	कुल संख्या	136	318	146	600
	मध्यमान	10.62	12.58	13.57	12.38
	प्रामाणिक विचलन	3.78	4.09	4.02	4.13

तालिका 4.27 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 12.19) की अपेक्षा छात्रों का पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 12.56) तुलनात्मक रूप में अधिक है। अन्तर्मुखी विद्यार्थियों में सर्वाधिक पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 13.57) है। जबकि उभयमुखी व्यक्तित्व में निम्न (मध्यमान 12.58) तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व में सर्वाधिक निम्न पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 10.62) है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के छात्रों में सर्वाधिक पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 14.34) है, जबकि बहिर्मुखी व्यक्तित्व के छात्रों में सर्वाधिक, निम्न पारिवारिक प्रतिबल (मध्यमान 10.61) है।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा

अन्तर्मुखी) का पारिवारिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.28 में इस प्रकार प्राप्त हुए—

तालिका 4.28 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का पारिवारिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	30.42	1	30.42	1.90	>0.05
B व्यक्तित्व प्रकार	625.28	2	312.64	19.56	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	84.74	2	42.37	2.65	>0.05
समूहान्तर्गत	9492.48	594	15.98		
योग	10233.12	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.28 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से पारिवारिक प्रतिबल को (एफ अनुपात 1.90) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है।परन्तु व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) पारिवारिक प्रतिबल को सार्थक रूप से (एफ अनुपात

19.56) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। लिंग तथा व्यक्तित्व प्रकार का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से व्यावसायिक प्रतिबल को (एफ अनुपात 2.65) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (5.04) " लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। व्यक्तित्व प्रकार सार्थक रूप से पारिवारिक प्रतिबल को प्रभावित करता है।

5.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के सामाजिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के सामाजिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र तथा 300 छात्राओं पर बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची' तथा विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन तालिका 4.29 में इसप्रकार प्राप्त हुआ–

तालिका 4.29 बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के छात्र व छात्राओं के सामाजिक प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन –

उपसमूह		व्यक्तित्व प्रकार			योग
		बहिर्मुखी	उभयमुखी	अन्तर्मुखी	
छात्र	कुल संख्या	65	158	77	600
	मध्यमान	11.23	13.40	15.21	13.39
	प्रामाणिक विचलन	3.55	3.25	3.06	3.53
छात्रा	कुल संख्या	71	160	69	300
	मध्यमान	11.11	13.18	14.96	13.10
	प्रामाणिक विचलन	2.78	3.21	3.27	3.38
योग	कुल संख्या	136	318	146	600
	मध्यमान	11.17	13.29	15.09	13.25
	प्रामाणिक विचलन	3.16	3.22	3.15	3.46

तालिका 4.29 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 13.10) की अपेक्षा छात्रों का सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 13.39) अधिक उच्च है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों का सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 15.09) सर्वाधिक है, जबकि उभयमुखी का निम्न (मध्यमान 13.29) तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों का सामाजिक प्रतिबल (मध्यमान 11.17) तुलनात्मक रूप में अत्यधिक निम्न स्तर का है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के छात्रों का सामाजिक प्रतिबल सर्वाधिक उच्च (मध्यमान 15.21) है, जबकि बहिर्मुखी छात्राओं का सामाजिक प्रतिबल सर्वाधिक निम्न स्तर (मध्यमान

11.11) का है।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का सामाजिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.30 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.30 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का सामाजिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	4.95	1	4.95	0.48	>0.05
B व्यक्तित्व प्रकार	1075.39	2	537.69	52.50	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	0.35	2	0.17	0.02	>0.05
समूहान्तर्गत	6083.80	594	10.24		
योग	7173.49	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.30 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सामाजिक प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर (एफ अनुपात

0.48) प्रभावित नहीं करता है, परन्तु व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) सार्थक रूप से सामाजिक प्रतिबल को (एफ अनुपात 52. 50) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। लिंग तथा व्यक्तित्व प्रकार का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव (एफ अनुपात 0.02) सामाजिक प्रतिबल को 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है। अतः शून्य उपकल्पना (5.05) " लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के सामाजिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। व्यक्तित्व प्रकार सार्थक रूप से विद्यार्थियों के सामाजिक प्रतिबल को प्रभावित करता है।

5.06 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के संवेगात्मक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के संवेगात्मक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची 'तथा' विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' प्रशासित की गई। प्राप्त प्रदत्त का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन तालिका 4.31 में इस प्रकार प्राप्त हुए—

तालिका 4.31 बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के छात्र व छात्राओं के संवेगात्मक प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		व्यक्तित्व प्रकार			योग
		बहिर्मुखी	उभयमुखी	अन्तर्मुखी	
छात्र	कुल संख्या	65	158	77	300
	मध्यमान	10.85	13.22	14.64	13.07
	प्रमाणिक विचलन	3.80	3.56	4.00	3.94
छात्रा	कुल संख्या	71	160	69	300
	मध्यमान	11.48	12.90	13.98	12.81
	प्रमाणिक विचलन	3.82	3.88	3.56	3.88
योग	कुल संख्या	136	318	146	600
	मध्यमान	11.18	13.06	14.33	12.94
	प्रमाणिक विचलन	3.81	3.72	3.80	3.91

तालिका 4.31 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं का संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 12.81) की अपेक्षा छात्रों का संवेगात्मक प्रतिबल (मध्यमान 13.07) तुलनात्मक रूप में अधिक है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों का संवेगात्मक प्रतिबल सर्वाधिक (मध्यमान 14.33) तथा उभयमुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों का निम्न (मध्यमान 13.06) तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों का सवेंगात्मक प्रतिबल सर्वाधिक निम्न (मध्यमान 11.18) स्तर का है। अन्तर्मुखी छात्रों का संवेगात्मक प्रतिबल सर्वाधिक (मध्यमान 14.64) है जबकि सर्वाधिक निम्न संवेगात्मक प्रतिबल बहिर्मुखी छात्रों (मध्यमान 10.85) का प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा

अन्तर्मुखी) का संवेगात्मक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.32 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.32 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का संवेगात्मक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	1.66	1	1.66	0.12	>0.05
B व्यक्तित्व प्रकार	707.05	2	353.52	24.97	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	32.07	2	16.03	1.13	>0.05
समूहान्तर्गत	8410.63	594	14.16		
योग	9156.96	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.32 का अवलोकन करने स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) संवेगात्मक प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर (एफ अनुपात 0.12) प्रभावित नहीं करता है, परन्तु व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) संवेगात्मक प्रतिबल को सार्थक रूप से (एफ अनुपात

24.97) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। लिंग तथा व्यक्तित्व प्रकार का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव संवेगात्मक प्रतिबल को .05 स्तर पर (एफ अनुपात 1.13) प्रभावित नहीं करता। अतः शून्य उपकल्पना (5.06) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के संवेगात्मक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। व्यक्तित्व प्रकार विद्यार्थियों के संवेगात्मक प्रतिबल को 0. 01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता हैं।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से आर्थिक तथा व्यावसायिक प्रतिबल को 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है, जबकि लिंग सार्थक रूप से प्रतिबल (योग) को 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है।व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) सार्थक रूप में शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा योग (**Total**) रूप में प्रतिबल को 0.01 स्तर पर एव आर्थिक व व्यावसायिक प्रतिबल को .05 स्तर पर प्रभावित करता है। लिंग तथा व्यक्तित्व प्रकार का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव आर्थिक प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित करता है। अतः स्पष्ट है कि लिंग आर्थिक प्रतिबल तथा व्यावसायिक प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित करता है, जबकि व्यक्तित्व प्रकार सार्थक रूप से प्रतिबल के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता है।

भाग–6

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा विभिन्न मूल्यों (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा विभिन्न मूल्यों–सैद्धान्तिक, राजनैतिक, ध ार्मिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, प्रजातान्त्रिक, सुखवादी, शक्ति तथा स्वास्थ्य का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र तथा 300 छात्राओं पर मूल्य परीक्षण तथा विद्यार्थी प्रतिबल मापनी प्रशासित की गई। प्रदत्त–विश्लेषण निम्नलिखित रूप में प्राप्त हुआ–

6.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सैद्धान्तिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध ययन करना–

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सैद्धान्तिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'मूल्य परीक्षण' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी परीक्षणों का प्रशासन किया गया। सैद्धान्तिक मूल्य के उच्च, औसत व निम्न का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.33 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.33— उच्च, औसत व निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन—

उपसमूह		सैद्धान्तिक मूल्य			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	96	126	78	300
	मध्यमान	83.23	84.36	89.77	85.40
	प्रमाणिक विचलन	15.08	14.77	14.58	15.00
छात्रा	कुल संख्या	110	122	68	300
	मध्यमान	79.87	83.34	87.59	83.02
	प्रमाणिक विचलन	15.70	15.02	13.47	15.18
योग	कुल संख्या	206	248	146	600
	मध्यमान	81.44	83.85	88.75	84.21
	प्रमाणिक विचलन	15.47	14.87	14.07	15.12

तालिका 4.33 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 83.33) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 85.40) तुलनात्मक रूप में अधिक है। निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक (मध्यमान 88.75) है, जबकि औसत सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल निम्न (मध्यमान 83.85) है तथा उच्च सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियो का प्रतिबल तुलनात्मक रूप में अत्यधिक निम्न (मध्यमान 81.44) है। निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 89.77) सर्वाधिक है, जबकि उच्च सैद्धान्तिक मूल्य की छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 79.87) तुलानात्मक रूप में सर्वाधिक निम्न है।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सैद्धान्तिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण– विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.34 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.34 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सैद्धान्तिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	684.36	1	684.36	3.09	>0.05
B सैद्धान्तिक मूल्य	4385.68	2	2192.84	9.90	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	151.13	2	75.56	0.34	>0.05
समूहान्तर्गत	131566.96	594	221.49		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.34 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को 0.05 स्तर पर (एफ अनुपात 3.09) प्रभावित नहीं करता है। सैद्धान्तिक मूल्य (उच्च, औसत तथा निम्न)

सार्थक रूप से विद्याथियों के प्रतिबल को 0.01 स्तर पर (एफ अनुपात 9.90) प्रभावित करता है। किन्तु लिंग तथा सैद्धान्तिक मूल्य का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव विद्याथियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से (एफ अनुपात 0.34) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.01) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सैद्धान्तिक मूल्य (उच्च, औसत तथा निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। सैद्धान्तिक मूल्य विद्यार्थियों के प्रतिबल को 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

6.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना –

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'मूल्य परीक्षण' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' परीक्षण का प्रशासन किया गया। राजनैतिक मूल्य के उच्च ,औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.35 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.35 राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		राजनैतिक मूल्य			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	84	133	83	300
	मध्यमान	89.07	84.49	83.16	85.40
	प्रामाणिक विचलन	13.24	15.24	15.78	5.00
छात्रा	कुल संख्या	74	146	80	300
	मध्यमान	85.28	83.82	79.47	83.02
	प्रामाणिक विचलन	14.47	15.31	15.14	15.18
योग	कुल संख्या	158	279	163	600
	मध्यमान	87.30	84.14	81.35	84.21
	प्रामाणिक विचलन	13.92	15.25	15.53	15.12

तालिका 4.35 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 85.40) तुलनात्मक रूप में निम्न है। उच्च राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक (मध्यमान 87.30) प्राप्त हुआ जबकि औसत राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल निम्न (मध्यमान 84.14) तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक निम्न (मध्यमान 81.35) प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में उच्च राजनैतिक मूल्य के छात्रों का प्रतिबल सर्वाधिक (मध्यमान 89.07) प्राप्त हुआ, जबकि निम्न राजनैतिक मूल्य की छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान

79.47) सर्वाधिक निम्न प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.36 में इस प्रकार ज्ञात हुए—

तालिका 4.36 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम—

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	10.28.93	1	1028.93	4.59	<0.05
B राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न)	2750.94	2	1375.47	6.14	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	350.46	2	175.23	0.78	>0.05
समूहान्तर्गत	133026.13	594	223.95		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.36 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को (एफ अनुपात

4.59) 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है। इसी प्रकार राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) भी विद्यार्थियों के प्रतिबल को 0.01 स्तर पर (एफ अनुपात 6.14) सार्थक रूप में प्रभावित करता है। परन्तु लिंग तथा राजनैतिक मूल्य का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.05 स्तर प्रभावित नहीं करता है (एफ अनुपात 0.78)। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.02) "लिंग (छात्र व छात्रा) तथा राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। लिंग तथा राजनैतिक मूल्य सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को प्रभावित करते है।

6.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा धार्मिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा धार्मिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'मूल्य परीक्षण' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' परीक्षणों का प्रशासन किया गया। धार्मिक मूल्य के उच्च, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.37 में इस प्रकार प्राप्त हुए।

तालिका 4.37 धार्मिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन –

उपसमूह		धार्मिक मूल्य			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	71	143	86	300
	मध्यमान	83.55	85.79	86.29	85.40
	प्रामाणिक विचलन	14.58	15.30	14.88	15.00
छात्रा	कुल संख्या	79	144	77	300
	मध्यमान	80.61	83.25	85.08	83.02
	प्रामाणिक विचलन	14.11	16.21	14.03	15.18
योग	कुल संख्या	150	287	163	600
	मध्यमान	82.00	84.51	85.71	84.21
	प्रामाणिक विचलन	14.36	15.79	14.45	15.12

तालिका 4.37 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 85.40) तुलनात्मक रूप में अधिक है। निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक (मध्यमान 85.71) है, जबकि औसत धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों में निम्न प्रतिबल (मध्यमान 84.51) तथा उच्च धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों में सर्वाधिक निम्न प्रतिबल (मध्यमान 82.00) है। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में सर्वाधिक प्रतिबल निम्न धार्मिक मूल्य के छात्रों (मध्यमान 86.29) में है, जबकि सर्वाधिक निम्न प्रतिबल उच्च धार्मिक मूल्य की छात्राओं (मध्यमान 80.61) में प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा धार्मिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.38 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.38 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा धार्मिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	686.40	1	686.40	3.02	>0.05
B धार्मिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न)	1060.24	2	530.12	2.33	>0.05
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	67.50	2	33.75	0.15	>0.05
समूहान्तर्गत	135038.38	594	227.34		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.38 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को (एफ अनुपात 3.02) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। इसी प्रकार धार्मिक मूल्य (उच्च,

औसत व निम्न) भी विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित (एफ अनुपात 2.33) 0.05 स्तर पर नहीं करता है। लिंग तथा धार्मिक मूल्य का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को 0.05 स्तर पर (एफ अनुपात 0.15) प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.03) '' लिंग (छात्र व छात्रा) तथा धार्मिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' स्वीकार की जाती है। लिंग, धार्मिक मूल्य तथा इनका अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर विद्यार्थियों के प्रतिबल को प्रभावित नहीं करता है।

6.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'मूल्य परीक्षण' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' परीक्षणों का प्रशासन किया गया। सामाजिक मूल्य के उच्च, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.39 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.39 सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्ताको का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन –

उपसमूह		सामाजिक मूल्य			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	92	129	79	300
	मध्यमान	80.78	86.25	89.40	85.40
	प्रामाणिक विचलन	14.36	15.20	14.16	15.00
छात्रा	कुल संख्या	80	139	81	300
	मध्यमान	81.80	83.00	84.27	83.02
	प्रामाणिक विचलन	16.28	14.98	14.45	15.18
योग	कुल संख्या	172	268	160	600
	मध्यमान	81.26	84.56	86.81	84.21
	प्रामाणिक विचलन	15.25	15.15	14.49	15.12

तालिका 4.39 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 85.40) तुलनात्मक रूप में अधिक है। निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक (मध्यमान 86.81) है, जबकि औसत सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल निम्न (मध्यमान 84.56) है तथा उच्च सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक निम्न (मध्यमान 81.26) है। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में सर्वाधिक उच्च प्रतिबल निम्न सामाजिक मूल्य के छात्रों (मध्यमान 89.40) का है। जबकि सर्वाधिक निम्न प्रतिबल उच्च सामाजिक मूल्य के छात्रों (मध्यमान 80.78) का प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.40 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.40 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	856.45	1	856.45	3.84	>0.05
B सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न)	2607.43	2	1303.71	5.84	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	844.05	2	422.03	1.89	>0.05
समूहान्तर्गत	132597.58	594	223.23		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.40 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को 0.05 स्तर (एफ अनुपात 3.84) पर प्रभावित नहीं करता है। परन्तु सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत

व निम्न) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से (एफ अनुपात 5.84) 0.01 स्तर पर प्रभावित करते है। लिंग तथा सामाजिक मूल्य का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को (एफ अनुपात 1.89) सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.04) "लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं हेगा।" निरस्त की जाती है। सामाजिक मूल्य विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

6.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध ययन करना।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'मूल्य परीक्षण' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' प्रशासित की गई। सौन्दर्यात्मक मूल्य के उच्च, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम 4.41 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.41 सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन –

उपसमूह		सौन्दर्यात्मक मूल्य			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	59	152	89	300
	मध्यमान	88.64	84.78	84.33	85.40
	प्रामाणिक विचलन	15.09	14.69	15.34	15.00
छात्रा	कुल संख्या	88	131	81	300
	मध्यमान	83.36	83.13	82.48	83.02
	प्रामाणिक विचलन	13.95	15.09	16.69	15.18
योग	कुल संख्या	147	283	170	600
	मध्यमान	85.48	84.01	83.45	84.21
	प्रामाणिक विचलन	14.60	14.88	15.97	15.12

तालिका 4.41 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 85.40) तुलनात्मक रूप में अधिक है। उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 85.48) सर्वाधिक है, जबकि औसत सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल तुलनात्मक रूप में निम्न (मध्यमान 84.01) तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक निम्न (मध्यमान 83.45) है। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में सर्वाधिक प्रतिबल उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य के छात्रों में (मध्यमान 88.64) है जबकि निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य की छात्राओं में सर्वाधिक निम्न प्रतिबल (मध्यमान 82.48) है।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च,औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.42 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.42– लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	1163.82	1	1163.82	5.11	<0.05
B सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न)	580.17	2	290.09	1.27	>0.05
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	341.80	2	170.90	0.75	>0.05
समूहान्तर्गत	135346.85	594	227.86		
योग	137614.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.42 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से (एफ अनुपात 5.11) 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है। परन्तु सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च, औसत

व निम्न) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से (एफ अनुपात 1.27) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। इसी प्रकार लिंग तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव भी विद्यार्थियों के प्रतिबल को (एफ अनुपात 0.75) सार्थक रूप से .05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.05) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को .05 स्तर पर प्रभावित करता है।

6.06 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर मूल्य परीक्षण तथा विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' प्रशासित की गई। सौन्दर्यात्मक मूल्य के उच्च,औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.43 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.43 आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्त को मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		आर्थिक मूल्य			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	78	121	101	300
	मध्यमान	88.88	85.87	82.16	85.40
	प्रामाणिक विचलन	16.21	14.09	14.56	15.00
छात्रा	कुल संख्या	64	136	100	300
	मध्यमान	84.44	83.15	81.95	83.02
	प्रामाणिक विचलन	15.83	14.77	15.36	15.18
योग	कुल संख्या	142	257	201	600
	मध्यमान	86.88	84.43	82.05	84.21
	प्रामाणिक विचलन	16.13	14.49	14.93	15.12

तालिका 4.43 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 85. 40) तुलनात्मक रूप से अधिक है। उच्च आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 86.88) सर्वाधिक है, जबकि औसत आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल निम्न (मध्यमान 84.43) है तथा निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक निम्न (मध्यमान 82.05) प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में सर्वाधिक प्रतिबल उच्च आर्थिक मूल्य के छात्रों का है (मध्यमान 88.88), जबकि निम्न आर्थिक मूल्य की छात्राओं का प्रतिबल सर्वाधिक निम्न (मध्यमान 81.95) प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.44 में इस प्रकार ज्ञात हुए।

तालिका 4.44 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम –

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	850.62	1	850.62	3.77	>0.05
B आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न)	1801.31	2	900.65	3.99	<0.05
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	393.18	2	196.59	0.87	>0.05
समूहान्तर्गत	133884.87	594	225.39		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.44 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से (एफ अनुपात 3.77) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व

निम्न) सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को (एफ अनुपात 3.99) 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है। लिंग तथा आर्थिक मूल्य का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को (एफ अनुपात 0.87) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है अतः प्रस्तुत अध्ययन को शून्य उपकल्पना (6.06) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। आर्थिक मूल्य विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

6.07 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'मूल्य परीक्षण' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' का प्रशासन किया गया। प्रजातान्त्रिक मूल्य के उच्च, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.45 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.45 प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		प्रजातान्त्रिक मूल्य			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	81	126	93	300
	मध्यमान	81.23	85.86	88.42	85.40
	प्रामाणिक विचलन	14.44	15.31	14.39	15.00
छात्रा	कुल संख्या	99	133	68	300
	मध्यमान	80.64	82.19	88.12	83.02
	प्रामाणिक विचलन	16.33	13.94	14.79	15.18
योग	कुल संख्या	180	259	161	600
	मध्यमान	80.90	83.98	88.29	84.21
	प्रामाणिक विचलन	15.47	14.71	14.51	15.12

तालिका 4.45 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 85.40) अधिक है। निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक (मध्यमान 88.29) है, जबकि औसत प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 83.98) निम्न तथा उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 80.90) अत्यधिक निम्न है। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में सर्वाधिक प्रतिबल निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के छात्रों (मध्यमान 88.42) का पाया गया, जबकि उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य की छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 80.64)

सर्वाधिक निम्न प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.46 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.46 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम –

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	328.40	1	328.40	1.48	>0.05
B प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न)	4507.38	2	2253.69	10.18	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	376.33	2	188.16	0.85	>0.05
समूहान्तर्गत	131465.50	594	221.32		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.46 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल (एफ अनुपात 1.48) को

0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। परन्तु प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में 0.01 स्तर पर (एफ अनुपात 10.18) प्रभावित करता है। लिंग तथा प्रजातान्त्रिक मूल्य का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियो के प्रतिबल को (एफ अनुपात 0.85) 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.07) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। प्रजातान्त्रिक मूल्य विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करते हैं।

6.08 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध ययन करना।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'मूल्य परीक्षण' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' का प्रशासन किया गया। सुखवादी मूल्य के उच्च, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.47 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.47 सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		सुखवादी मूल्य			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	98	134	68	300
	मध्यमान	89.90	83.50	82.67	85.40
	प्रामाणिक विचलन	14.65	14.72	14.80	15.00
छात्रा	कुल संख्या	82	124	94	300
	मध्यमान	87.94	82.18	79.84	83.02
	प्रामाणिक विचलन	14.47	14.14	16.15	15.18
योग	कुल संख्या	180	258	162	600
	मध्यमान	89.00	82.87	81.03	84.21
	प्रामाणिक विचलन	14.56	14.43	15.62	15.12

तालिका 4.47 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं के प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 85.40) अधिक है। उच्च सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 89.00) सर्वाधिक है जबकि औसत सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 82.87) निम्न तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक निम्न (मध्यमान 81.03) प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में उच्च सुखवादी मूल्य के छात्रों में सर्वाधिक प्रतिबल (मध्यमान 89.90) प्राप्त हुआ, जबकि निम्न सुखवादी मूल्य की छात्राओं में सर्वाधिक निम्न प्रतिबल (मध्यमान 79.84) प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.48 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.48 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम –

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	589.94	1	589.94	2.69	>0.05
B सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न)	5814.69	2	2907.35	13.27	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	56.78	2	28.39	0.13	>0.05
समूहान्तर्गत	130173.39	594	219.15		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.48 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर (एफ अनुपात 2.69) प्रभावित नहीं करता है। सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) सार्थक

रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को (एफ अनुपात 13.27) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। लिंग तथा सुखवादी मूल्य का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को (एफ अनुपात 0.13) 0.05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.08) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। वास्तव में सुखवादी मूल्य विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

6.09 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना –

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'मूल्य परीक्षण' तथा विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' का प्रशासन किया गया। शक्ति मूल्य के उच्च, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.49 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.49 शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		शक्ति मूल्य			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	108	93	99	300
	मध्यमान	87.67	86.64	81.76	85.40
	प्रामाणिक विचलन	14.85	14.24	15.32	15.00
छात्रा	कुल संख्या	80	114	106	300
	मध्यमान	87.66	82.39	80.21	83.02
	प्रामाणिक विचलन	15.27	15.55	13.98	15.18
योग	कुल संख्या	188	207	205	600
	मध्यमान	87.67	84.30	80.96	84.21
	प्रामाणिक विचलन	14.99	15.09	14.63	15.12

तालिका 4.49 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल अधिक (मध्यमान 85.40) है। उच्च शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक (मध्यमान 87.67) है, जबकि औसत शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों का तुलनात्मक रूप में निम्न (मध्यमान 84.30) तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल अत्यधिक निम्न (मध्यमान 80.96) प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में उच्च शक्ति मूल्य के छात्रों में सर्वाधिक प्रतिबल (मध्यमान 87.67) प्राप्त हुआ, जबकि निम्न शक्ति मूल्य की छात्राओं में सर्वाधिक निम्न (मध्यमान 80.21) प्रतिबल प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.50 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.50 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	557.45	1	557.45	2.52	>0.05
B शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न)	4349.34	2	2174.67	9.82	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	453.13	2	226.57	1.02	>0.05
समूहान्तर्गत	131539.47	594	221.45		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.50 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्राओं) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से (एफ अनुपात 2.52) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न)

विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 9.82) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। परन्तु लिंग तथा शक्ति मूल्य का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 1.02) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.09) "लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। शक्ति मूल्य विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है।

6.10 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'मूल्य परीक्षण' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' का प्रशासन किया गया। स्वास्थ्य मूल्य के उच्च, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_4) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.51 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.51 स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन –

उपसमूह		स्वास्थ्य मूल्य			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	97	131	72	300
	मध्यमान	85.08	84.85	86.85	85.40
	प्रामाणिक विचलन	15.48	14.81	14.80	15.00
छात्रा	कुल संख्या	80	126	94	300
	मध्यमान	82.72	83.05	83.23	83.02
	प्रामाणिक विचलन	15.42	14.52	15.97	15.18
योग	कुल संख्या	177	257	166	600
	मध्यमान	84.02	83.97	84.80	84.21
	प्रामाणिक विचलन	15.46	14.67	15.53	15.12

तालिका 4.51 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल तुलनात्मक रूप में (मध्यमान 85.40) अधिक है। निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 84.80) सर्वाधिक प्राप्त हुआ, जबकि उच्च स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल निम्न (मध्यमान 84.02) तथा औसत स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल तुलनात्मक रूप में अत्यधिक निम्न (मध्यमान 83.97) प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में सर्वाधिक प्रतिबल (मध्यमान 86.85) निम्न स्वास्थ्य मूल्य के छात्रों में प्राप्त हुआ, जबकि उच्च स्वास्थ्य मूल्य की छात्राओं में सर्वाधिक

निम्न प्रतिबल (मध्यमान 82.72) प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण– विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.52 में इसप्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.52 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	957.85	1	957.85	4.18	<0.05
B स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न)	145.75	2	72.87	0.32	>0.05
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	83.36	2	41.68	0.18	>0.05
समूहान्तर्गत	135953.02	594	228.88		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86

सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.52 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में 0.05 स्तर पर (एफ अनुपात

4.18) प्रभावित करता है। स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 0.32) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। लिंग तथा स्वास्थ्य मूल्य का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव भी विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 0.18) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (6.10) "लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप में विद्यार्थियों के प्रतिबल को प्रभावित करता है।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि सैद्धान्तिक मूल्य ,राजनैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सुखवादी मूल्य, शक्ति मूल्य विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करते है। आर्थिक मूल्य भी विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.05 स्तर पर प्रभावित करते है। लिंग तथा विभिन्न मूल्यों का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है।

भाग—7

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'समायोजन सूची' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' का प्रशासन किया गया। समायोजन के उत्तम, औसत व निम्न विद्यार्थियों का

निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.53 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.53 समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		समायोजन			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	86	140	74	300
	मध्यमान	75.81	85.99	95.43	85.40
	प्रामाणिक विचलन	12.19	12.96	14.76	15.00
छात्रा	कुल संख्या	77	149	74	300
	मध्यमान	70.58	84.93	92.13	83.02
	प्रामाणिक विचलन	11.73	13.45	13.35	15.18
योग	कुल संख्या	163	289	148	600
	मध्यमान	73.34	85.44	93.78	84.21
	प्रामाणिक विचलन	12.22	13.21	14.12	15.12

तालिका 4.53 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल तुलनात्मक रूप में (मध्यमान 85.40) अधिक है। निम्न समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 93.78) सर्वाधिक है, जबकि औसत समायोजन विद्यार्थियों का प्रतिबल तुलनात्मक रूप में निम्न (मध्यमान 85.44) है तथा उत्तम समायोजित विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक निम्न (मध्यमान 73.34) प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विद्यार्थियों

में सर्वाधिक प्रतिबल निम्न समायोजित छात्रों (मध्यमान 95.43) में पाया गया, जबकि उत्तम समायोजित छात्राओं में सर्वाधिक निम्न प्रतिबल (मध्यमान 70.58) प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.54 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.54 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन (उत्तम , औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	1405.20	1	1405.20	8.17	<0.01
B समायोजन (उच्च, औसत व निम्न)	33717.39	2	16858.70	98.02	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	465.38	2	232.69	1.35	>0.05
समूहान्तर्गत	102167.72	594	172.00		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.54 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 8.17) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। इसी प्रकार समायोजन (उत्तम औसत व निम्न) भी विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 98.02) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। परन्तु लिंग तथा समायोजन का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एक अनुपात 1.35) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। अतः शून्य उपकल्पना (7) "लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करते है।

7.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा गृह समायोजन (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना–

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा गृह समायोजन (उच्च, औसत व निम्न)का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'समायोजन सूची' तथा विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' का प्रशासन किया गया। गृह समायोजन के उत्तम, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.55 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.55 गृह समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		गृह समायोजन			योग
		उच्च	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	94	124	82	300
	मध्यमान	79.02	85.06	93.23	85.40
	प्रामाणिक विचलन	14.16	14.28	13.48	15.00
छात्रा	कुल संख्या	114	104	82	300
	मध्यमान	75.96	82.74	93.21	83.02
	प्रामाणिक विचलन	13.46	14.29	12.74	15.18
योग	कुल संख्या	208	228	164	600
	मध्यमान	77.34	84.00	93.22	84.21
	प्रामाणिक विचलन	13.83	14.30	13.07	15.12

तालिक 4.55 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल तुलनात्मक रूप में (मध्यमान 85.40) अधिक है। निम्न गृह समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल सर्वाधिक (मध्यमान 93.22) है, जबकि औसत गृह समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल तुलनात्मक रूप में निम्न (मध्यमान 84.00) है तथा उत्तम गृह समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल अत्यधिक निम्न (मध्यमान 77.34) है। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में सर्वाधिक प्रतिबल निम्न गृह समायोंजन के छात्रों में (मध्यमान 93.23) प्राप्त हुआ,जबकि उत्तम गृह समायोजन की छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 75.96) सर्वाधिक निम्न स्तर का प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा गृह समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.56 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.56 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा गृह समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	476.70	1	476.70	2.50	>0.05
B गृह समायोजन (उच्च, औसत व निम्न)	22642.30	2	11321.15	59.46	<0.01
A×B अन्त: क्रियात्मक प्रभाव	224.01	2	112.00	0.59	>0.05
समूहान्तर्गत	113090.28	594	190.39		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.56 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 2.50) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। परन्तु गृह समायोजन (उत्तम, औसत

व निम्न) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित (एफ अनुपात 59:46) करता है। लिंग तथा गृह समायोजन का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 0.59) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (7.01) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा गृह समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। गृह समायोजन विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है।

7.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शैक्षिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना–

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शैक्षिक समायोजन (उत्तम,औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर समायोजन सूची तथा विद्यार्थी प्रतिबल मापनी का प्रशासन किया गया। शैक्षिक समायोजन के उत्तम, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.57 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.57 शैक्षिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

उपसमूह		शैक्षिक समायोजन			योग
		उत्तम	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	75	139	86	300
	मध्यमान	76.21	85.92	92.58	85.40
	प्रामाणिक विचलन	12.11	13.84	15.03	15.00
छात्रा	कुल संख्या	108	119	73	300
	मध्यमान	76.80	83.20	91.94	83.02
	प्रामाणिक विचलन	14.56	14.91	11.76	15.18
योग	कुल संख्या	183	258	159	600
	मध्यमान	76.56	84.67	92.29	84.21
	प्रामाणिक विचलन	13.57	14.38	13.59	15.12

तालिका 4.57 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल तुलनात्मक रूप से (मंध्यमान 85.40) अधिक है। निम्न शैक्षिक समायोज़न के विद्याथियों का प्रतिबल सर्वाधिक (मध्यमान 92.29) है, जबकि औसत शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 84.67) तुलनात्मक रूप में निम्न है तथा उत्तम शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 76.56) अत्यधिक निम्न है। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में सर्वाधिक प्रतिबल निम्न शैक्षिक समायोजन के छात्रों (मध्यमान 92.58) का है, जबकि उत्तम शैक्षिक समायोजन के छात्रों का

प्रतिबल (मध्यमान 76.21) सर्वाधिक निम्न है।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शैक्षिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.58 में इसप्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.58 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शैक्षिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण –

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	121.01	1	121.01	0.62	>0.05
B शैक्षिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न)	20786.14	2	10393.07	53.51	<0.05
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	301.13	2	150.56	0.77	>0.05
समूहान्तर्गत	115360.10	594	194.21		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.58 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में प्रभावित (एफ अनुपात

0.62) 0.05 स्तर पर नहीं करता है। शैक्षिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में 0.01 स्तर पर (एफ अनुपात 53.51) प्रभावित करता हैं। लिंग तथा शैक्षिक समायोजन का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 0.77) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (7.02)" लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शैक्षिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। शैक्षिक समायोजन विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में 0.01 पर प्रभावित करता है।

7.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर समायोजन सूची' तथा विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' का प्रशासन किया गया। सामाजिक समायोजन के उत्तम, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.59 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.59 सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		सामाजिक समायोजन			योग
		उत्तम	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	126	68	106	300
	मध्यमान	81.98	84.82	89.85	85.40
	प्रामाणिक विचलन	13.81	13.45	16.25	15.00
छात्रा	कुल संख्या	122	65	113	300
	मध्यमान	80.20	82.88	86.16	83.02
	प्रामाणिक विचलन	14.35	16.89	14.52	15.18
योग	कुल संख्या	248	133	219	600
	मध्यमान	81.10	83.87	87.94	84.21
	प्रामाणिक विचलन	14.08	15.20	15.46	15.12

तालिका 4.59 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल तुलनात्मक रूप में (मध्यमान 85.40) अधिक है। निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 87.97) सर्वाधिक है, जबकि औसत सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों का तुलनात्मक प्रतिबल (मध्यमान 83.87) निम्न है तथा उच्च सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 81.10) सर्वाधिक निम्न है। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में सर्वाधिक प्रतिबल निम्न सामाजिक समायोजन के छात्रों (मध्यमान 89.85) का प्राप्त हुआ जबकि उच्च सामाजिक समायोजन की

छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 80.20) सर्वाधिक निम्न स्तर पर पाया गया।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.60 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.60 (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम –

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	852.53	1	852.53	3.88	<0.05
B सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न)	5585.54	2	2792.77	12.71	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	119.75	2	59.87	0.27	>0.05
समूहान्तर्गत	130479.82	594	219.66		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.60 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 3.88)

0.05 स्तर पर प्रभावित करता है। इसी प्रकार सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 12.71) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। लिंग तथा सामाजिक समायोजन का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप में विद्यार्थियों के प्रतिबल को (एफ अनुपात 0.27) .05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (7.03) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। विद्यार्थियों के प्रतिबल को लिंग तथा सामाजिक समायोजन सार्थक रूप में प्रभावित करते हैं।

7.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सवेगात्मक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना–

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सवेंगात्मक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'समायोजन सूची' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' को प्रशासन किया गया। सवेंगात्मक समायोजन के उत्तम, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.61 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.61 संवेगात्मक समायोंजन (उत्तम, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		संवेगात्मक समायोजन			योग
		उत्तम	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	108	132	60	300
	मध्यमान	78.14	87.33	94.23	85.40
	प्रमाणिक विचलन	13.22	13.70	14.93	15.00
छात्रा	कुल संख्या	66	129	105	300
	मध्यमान	73.00	81.77	90.86	83.02
	प्रमाणिक विचलन	13.55	14.24	13.04	15.18
योग	कुल संख्या	174	261	165	600
	मध्यमान	76.19	84.59	92.08	84.21
	प्रमाणिक विचलन	13.54	14.22	13.81	15.12

तालिका 4.61 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल तुलनात्मक रूप में (मध्यमान 85.40) अधिक है। निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 92.08) सर्वाधिक है, जबकि औसत संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल तुलनात्मक रूप में (मध्यमान 84.59) निम्न तथा उच्च संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 76.19) सर्वाधिक निम्न है। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में सर्वाधिक प्रतिबल (मध्यमान 94.23) निम्न संवेगात्मक समायोजन के छात्रों में प्राप्त हुआ, जबकि उत्तम संवेगात्मक समायोजन

की छात्राओं में सर्वाधिक निम्न प्रतिबल (मध्यमान 73.00) स्तर प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा संवेगात्मक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण की गणना की गई प्राप्त परिणाम तालिका 4.62 में इसप्रकार ज्ञात हुए–

तालिका 4.62 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा संवेगात्मक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम–

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	3004.07	1	3004.07	15.93	<0.01
B संवेगात्मक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न)	22870.79	2	11435.39	60.64	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	119.05	2	59.52	0.32	>0.05
समूहान्तर्गत	112020.32	594	188.59		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86

सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.62 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 15.93) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। इसी प्रकार संवेगात्मक समायोंजन (उत्तम, औसत व निम्न) भी विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 60.64) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। लिंग तथा संवेगात्मक समायोजन का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को (एफ अनुपात 0.32) 0.05 स्तर पर प्रभावित नहीं करना है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य उपकल्पना (7.04) ''लिंग (छात्र व छात्रा) तथा संवेगात्मक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।'' निरस्त की जाती है। विद्यार्थियों के प्रतिबल का लिगं तथा संवेगात्मक समायोजन सार्थक रूप से 0.01 स्तर पर प्रभावित करते है।

7.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना–

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 छात्र व 300 छात्राओं पर 'समायोजन सूची' तथा 'विद्यार्थी प्रतिबल मापनी' को प्रशासित किया गया। स्वास्थ्य समायोजन के उत्तम, औसत व निम्न विद्यार्थियों का निर्धारण चतुर्थांक तीन (Q_3) तथा चतुर्थांक एक (Q_1) के प्राप्त मान के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणाम तालिका 4.63 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

तालिका 4.63 स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) के छात्र व छात्राओं के प्रतिबल प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन–

उपसमूह		स्वास्थ्य समायोजन			योग
		उत्तम	औसत	निम्न	
छात्र	कुल संख्या	148	78	74	300
	मध्यमान	81.80	87.81	90.07	85.40
	प्रामाणिक विचलन	13.48	16.50	14.62	15.00
छात्रा	कुल संख्या	121	72	107	300
	मध्यमान	81.31	79.26	87.49	83.02
	प्रामाणिक विचलन	15.66	14.16	14.31	15.18
योग	कुल संख्या	269	150	181	600
	मध्यमान	81.58	83.71	88.54	84.21
	प्रामाणिक विचलन	14.47	15.96	14.46	15.12

तालिका 4.63 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि छात्राओं का प्रतिबल (मध्यमान 83.02) की अपेक्षा छात्रों का प्रतिबल (मध्यमान 85.40) तुलनात्मक रूप में अधिक है। निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 88.54) सर्वाधिक है, जबकि औसत स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 83.71) तुलनात्मक रूप में निम्न है तथ उत्तम स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल (मध्यमान 81.58) सर्वाधिक निम्न है। सम्पूर्ण विद्यार्थियों में सर्वाधिक प्रतिबल (मध्यमान 90.07) निम्न स्वास्थ्य समायोजन के छात्रों का प्राप्त हुआ, जबकि उत्तम स्वास्थ्य समायोजन की छात्राओं

का प्रतिबल (मध्यमान 81.31) सर्वाधिक निम्न प्राप्त हुआ।

लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 4.64 में इस प्रकार प्राप्त हुए—

तालिका 4.64 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का 2×3 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण परिणाम

विचलन के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
A लिंग (छात्र व छात्रा)	2088.83	1	2088.83	9.64	<0.01
B स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न)	5588.69	2	2794.34	12.90	<0.01
A×B अन्तः क्रियात्मक प्रभाव	1574.42	2	787.21	3.63	<0.05
समूहान्तर्गत	128684.88	594	216.64		
योग	137014.69	599			

सार्थकता स्तर (1,594) 0.01→ 6.70, 0.05→ 3.86
सार्थकता स्तर (2,594) 0.01→ 4.66, 0.05→ 3.02

तालिका 4.64 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र छात्रा) विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एक अनुपात 9.64) 0.01 स्तर

पर प्रभावित करता है। स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) भी विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एफ अनुपात 12.90) 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है।लिंग तथा स्वास्थ्य समायोजन का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव भी विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में (एक अनुपात 3.63) 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य की उपकल्पना (7.05) "लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" निरस्त की जाती है। विद्यार्थियों के प्रतिबल को लिंग, स्वास्थ्य समायोजन तथा इनका अन्तः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि लिंग (छात्र व छात्रा) सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को प्रभावित करता है। गृह, सामाजिक, संवेगात्मक, स्वास्थ्य समायोजन तथा योग (Total) रूप में समायोजन सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को 0.01 स्तर पर प्रभावित करता है। शैक्षिक समायोजन भी विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है। लिंग तथा स्वास्थ्य समायोजन का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव भी विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में 0.05 स्तर पर प्रभावित करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के प्राप्त प्रदत्त के विश्लेषण तथा विवेचन द्वारा निम्न लिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए—

1. छात्राओं की अपेक्षा छात्रों को आर्थिक तथा व्यावसायिक प्रतिबल सार्थक रूप में अधिक होता है।
2. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थी, बहिर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों की

अपेक्षा सार्थक रूप में शैक्षिक, व्यावसायिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक प्रतिबल अधिक रखते है।

3. उत्तम समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल सार्थक रूप में निम्न स्तर का प्राप्त हुआ, जबकि गृह,शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक व स्वास्थ्य के क्षेत्र में निम्न समायोजित अथवा कुसमायोजित विद्यार्थियों का प्रतिबल सार्थक रूप से अधिक प्राप्त हुआ।

4. उच्च सैद्धान्तिक, धार्मिक, सामाजिक व प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सार्थक रूप से निम्न पाया गया।

5. निम्न राजनैतिक, आर्थिक, सुखवादी व शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सार्थक रूप से निम्न पाया गया।

6. विद्यार्थियों के प्रतिबल को दूर करने के लिये आवश्यक है कि समाज में सैद्धान्तिक, धार्मिक, सामाजिक तथा प्रजातान्त्रिक मूल्यो को पर्याप्त महत्व प्रदान करें तथा राजनैतिक, आर्थिक, सुखवादी व शक्ति मूल्यों को महत्व प्रदान न किया जाये।

7. लिंग (छात्र व छात्रा) विद्यार्थियों के आर्थिक तथा व्यावसायिक प्रतिबल को सार्थक रूप में प्रभावित करता है।

8. व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी व अन्तर्मुखी) सार्थक रूप में शैक्षिक, आर्थिक, व्यावसायिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

9. विभिन्न मूल्य– सैद्धान्तिक, राजनैतिक, सामाजिक, प्रजातान्त्रिक, आर्थिक, सुखवादी व शक्ति मूल्य सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को प्रभावित करते हैं।

10. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा विभिन्न मूल्यों का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है।

11. समायोजन के विभिन्न क्षेत्र–गृह, शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा स्वास्थ्य समायोजन विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में प्रभावित करते हैं।

12. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में प्रभावित करता है।

पंचम अध्याय

संक्षिप्तीकरण

प्रस्तावना

प्रस्तुत अनुसन्धान समस्या का चयन–

आधुनिक अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि तनाव अथवा प्रतिबल एक विकट समस्या है। प्रतिबल एक ऐसी शारीरिक अथवा मानसिक दबाव की अवस्था है, जिसकी उत्पत्ति आवश्यकता की पूर्ति में बाधा उत्पन्न हो जाने से होती है और इसका दुष्प्रभाव व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक जगत पर पड़ता है और व्यक्ति इससे बचना चाहता है। व्यक्ति अनेक मानसिक अवस्थाओं में विभिन्न प्रकार की अनेक समस्याओं के साथ समायोजन करता है। व्यक्ति जब वातावरण की समस्याओं का समाधान करने के लिए संघर्ष करता है तब उसे असफलता का अनुभव होता है। यह असफलता अथवा भयावह हानिकारक परिस्थिति शारीरिक अथवा मानसिक प्रकार की होती है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति तनाव और अशान्ति का अनुभव करता है। तनाव और अशान्ति का मिश्रित रूप ही प्रतिबल कहलाता है। इस प्रकार प्रतिबल एक ऐसी बहुआयामी प्रक्रिया है जो व्यक्ति में घटनाओं के प्रति अनुक्रिया के रूप में उत्पन्न होता है जो हमारे दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक कार्यों को विघटित करता है अथवा विघटित करने की चेतावनी देता है (बेरन 1992)।

प्रतिबल में व्यक्ति की मानसिक क्रियायें प्रभावित होती हैं। तनाव में व्यक्ति की संज्ञानात्मक विकृति पाई जाती है। उसकी एकाग्रता की क्षमता कम हो जाती है तथा वह अपने चिन्तन को तार्किक रूप से संगठित नही कर पाता है। चिन्तन में चिन्ता की भूमिका बढ जाती है और व्यक्ति परिस्थिति के विभिन्न पहलुओं का उचित रूप में प्रत्यक्षण नहीं कर पाता है। अवधान

है। अवधान विस्तार कम हो जाता है। स्मृतिशक्ति भी क्षीण हो जाती है। इस प्रकार प्रतिबल में संज्ञानात्मक विकृति उत्पन्न हो जाती है तथा व्यक्ति समस्या के समाधान के वैकल्पिक साधनों का प्रत्यक्षण नहीं कर पाता है व अपने व्यवहार में दृढ़ता प्रदर्शित करता है।प्रतिबल की स्थिति में ऋणात्मक सांवेगिक अनुक्रियायें प्रदर्शित करता है। प्रथम सांवेगिक अनुक्रिया चिन्ता होती है। यह एक ऐसी अप्रिय अवस्था है, जिसमें व्यक्ति में भय, आशंकायें, परेशानी आदि की प्रधानता हो जाती है।प्रतिबल उत्पन्न करने वाले उद्धीपक या परिस्थिति के प्रति प्राणी में क्रोध उत्पन्न होता है और यदि ऐसे उद्धीपक प्राणी के सामने अधिक समय तक बने रहें तो वह उनके प्रति आक्रमकता पूर्ण व्यवहार भी करने लगता है। कभी–कभी कुंठा उत्पन्न करने वाला स्रोत अधिक शक्तिशाली होता है, जिसके कारण उसके प्रति व्यक्ति आक्रमकता नहीं प्रदर्शित कर पाता है, वरन् किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु पर विस्थापित (displaced) हो जाती है। प्रतिबल उत्पन्न करने वाली परिस्थिति के प्रति कुछ लोगों में क्रोध तथा आक्रामकता का व्यवहार न होकर उसके विपरीत विषाद का भाव विकसित हो जाता है। यदि तनावपूर्ण परिस्थिति व्यक्ति के सामने बनी रहती है और व्यक्ति उसे दूर नहीं कर पाता है, फलतः उसमें उदासीनता विकसित हो जाती है और विषादी प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि प्राणी जब तनावपूर्ण परिस्थिति से अपने को घिरा पाता है तो अपने आपको निस्सहाय पाता है।

व्यक्ति प्रतिबल परिस्थिति के प्रति दैहिक प्रतिक्रिया के रूप में पेट की गड़बड़ी, हृदय गति का असामान्य होना, अन्तर्द्वन्द्व, निराशा आदि पर

विजय प्राप्त कर लेते हैं। उनका व्यवहार समायोजित होता है। समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यकताओं और उन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है। समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के मध्य सन्तुलन स्थापित करने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। इस प्रकार समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्ती है। प्रत्येक प्राणी के सामने कुछ न कुछ समस्यायें होती है। एक व्यक्ति इन समस्याओं को जीवन की चुनोतियों के रूप में यदि स्वीकार करता है, तब उसे उत्तम माना जाता है। इस प्रकार समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है। समायोजन मुख्यतः तीन बातों पर निर्भर करता है—

1. व्यक्ति की इच्छाओं, विचारों, प्रेरणाओं और लक्ष्य आदि में समन्वय जितना अधिक होता है, समायोजन उतना ही अधिक माना जाता है।
2. व्यक्ति की इच्छाओं, विचारों, प्रेरणाओं और लक्ष्यों आदि की पूर्ति जितनी ही अधिक होती है, समायोजन उतना ही अधिक होता है।
3. व्यक्ति की इच्छायें, विचार और लक्ष्य आदि का सामाजिक मूल्यों से जितना अधिक सम्बन्ध होगा, व्यक्ति का समायोजन उतना ही अच्छा होगा।

प्रतिबल का व्यक्तित्व से भी पर्याप्त सम्बन्ध है। ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व को व्यक्ति की मनोदैहिक प्रणालियों का आन्तरिक गत्यात्मक संगठन बताया है, जिसके द्वारा उसका वातावरण के साथ एक अनोखा समायोजन निर्धारित होता है। युंग 1923 में व्यक्तित्व के सामाजिक रूपों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्गीकरण बर्हिमुखी तथा अन्तर्मुखी के रूप में किया

है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति समाज एवं सामाजिक वातावरण में अधिक रुचि रखने के कारण सामाजिक होते हैं। सामाजिक उत्सव में भाग लेना, समूह का नेतृत्व करना तथा अपने स्वभाव के व्यक्तियों से भिन्नता स्थापित करना उनके व्यक्तित्व का एक आवश्यक अंग बन जाता है। ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति सन्तुष्ट, उदार एवं सदैव दूसरों की सहायता के लिये तत्पर रहते हैं। अन्तर्मुखी व्यक्ति की विशेषताओं से सर्वथा भिन्न होती हैं। वह आत्मकेन्द्रित होते हैं तथा इन्हें न तो समाज में रूचि रहती है और न ही वे मित्रों के साथ समय व्यतीत करना ही पसन्द करते हैं। सामाजिक उत्सव ऐसे व्यक्तियों के लिये अधिक महत्व नहीं रखते हैं। व्यवहार कुशल न होने के कारण प्राय उदास रहने वाले तथा अत्यधिक संवेगात्मक एव दिवा–स्वप्न में विचरण करने वाले होते हैं।

नीमैन तथा याकोरजिंस्की ने बताया कि अधिकतर व्यक्तियों में दोनों ही प्रकार की विशेषतायें पायी जाती हैं। ऐसे व्यक्तियों को उभयमुखी कहा जा सकता है। इस प्रकार के व्यक्तित्व एक समय में बहिर्मुखी हैं तो दूसरे समय में ऐसे व्यक्ति अन्तर्मुखी रूप में मिलते हैं।

इसी प्रकार प्रतिबल का मूल्य के साथ सम्बन्ध का अध्ययन भी अत्यधिक रूचिकर है। व्यक्ति अपने अनुभवों के आधार पर कुछ सामान्य सिद्धान्त बनाता है जो उसके व्यवहार का पथ प्रदर्शन करते हैं अथवा उसके व्यवहार को निर्देशित करते है। इन्हीं सामान्य सिद्धान्तों को मूल्य कहा जाता है। जीवन के पथ प्रदर्शक के रूप में मूल्य अनुभवों के साथ परिपक्व होते जाते हैं। मानव व्यवहार को चयनात्मक बनाने वाले नियम और गुणों से सम्बन्धित प्रत्यय हैं जो प्रतिमान के रूप में कार्य करते हैं,

अनुसंन्धान समस्या का चयन किया गया **"हाईस्कूल स्तर के (विद्यार्थियों के) मूल्य, व्यक्तित्व तथा समायोजन का प्रतिबल पर प्रभाव का अध्ययन"**

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसन्धान के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. छात्र व छात्राओं के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

2. बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

3. उत्तम समायोजन तथा निम्न स्तर समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

    3.01 उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न स्तर गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

    3.02 उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

    3.03 उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

    3.04 उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन

करना।

3.05 उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4. उच्च मूल्य तथा निम्न मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.01 उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.02 उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.03 उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.04 उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.05 उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.06 उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न अर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.07 उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.08 उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.09 उच्च शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

4.10 उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

5. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

5.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

5.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

5.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

5.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

5.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी

तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के सामाजिक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

5.06 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के संवेगात्मक प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा विभिन्न मूल्यों (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्यन करना।

6.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सैद्धान्तिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा धार्मिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.06 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.07 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.08 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.09 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

6.10 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा गृह समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शैक्षिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का

अध्ययन करना।

7.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा संवेगात्मक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

7.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत अनुसन्धान की उपकल्पना

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य उपकल्पनायें निर्मित की गई–

1. छात्र व छात्राओं के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
3. उत्तम समायोजन तथा निम्न स्तर समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

   3.01 उत्तम गृह समायोजन तथा निम्न स्तर गृह समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

   3.02 उत्तम शैक्षिक समायोजन तथा निम्न शैक्षिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं

होगा।

3.03 उत्तम सामाजिक समायोजन तथा निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

3.04 उत्तम संवेगात्मक समायोजन तथा निम्न संवेगात्मक समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

3.05 उत्तम स्वास्थ्य समायोजन तथा निम्न स्वास्थ्य समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4. उच्च मूल्य तथा निम्न मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.01 उच्च सैद्धान्तिक मूल्य तथा निम्न सैद्धान्तिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.02 उच्च राजनैतिक मूल्य तथा निम्न राजनैतिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.03 उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.04 उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.05 उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं

होगा।

4.06 उच्च आर्थिक मूल्य तथा निम्न अर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.07 उच्च प्रजातान्त्रिक मूल्य तथा निम्न प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.08 उच्च सुखवादी मूल्य तथा निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.09 उच्च शक्ति मूल्य तथा निम्न शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

4.10 उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

5. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के आर्थिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी

तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के व्यावसायिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के सामाजिक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5.06 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का विद्यार्थियों के संवेगात्मक प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा विभिन्न मूल्यों (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सैद्धान्तिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा राजनैतिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा धार्मिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक मूल्य (उच्च, औसत व

निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.06 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा आर्थिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.07 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा प्रजातान्त्रिक मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.08 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सुखवादी मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.09 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शक्ति मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

6.10 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य मूल्य (उच्च, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.01 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा गृह समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.02 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा शैक्षिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.03 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा सामाजिक समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.04 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा संवेगात्मक समायोयन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

7.05 लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

प्रस्तुत अनुसन्धान का महत्व

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के प्रतिबल पर विभिन्न प्रकार के मूल्यों, व्यक्तित्व प्रकार तथा समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन किया जाना अपेक्षित है। वर्तमान समय में प्रतिबल विद्यार्थियों के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण कारक है जो कि उनके सम्पूर्ण जीवन क्रम को प्रभावित कर सकता है। प्रतिबल को कौन से कारक सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं यह प्रस्तुत अध्ययन द्वारा ज्ञात करना

सम्भव हो सकेगा। विभिन्न मूल्यों में से विद्यार्थियों के कौन से मूल्य हैं जोकि प्रतिबल को प्रभावित करते हैं तथा वे कौन से समायोजन के क्षेत्र हैं जोकि प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। यह ज्ञात करना अनुसंधान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा। छात्र तथा छात्राओं में से प्रतिबल को अधिक प्रभावित कौन से विद्यार्थी करते हैं? किस व्यक्तित्व के विद्यार्थी (अन्तर्मुखी अथवा बहिर्मुखी) अधिक प्रतिबल को प्रभावित करते हैं? इन सभी तथ्यों की जानकारी प्रस्तुत अनुसंधान द्वारा होगी।

स्पष्ट है कि प्रस्तुत अनुसंधान विद्यार्थियों के प्रतिबल तथा उसको प्रभावित करने वाले कारकों को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण रूप से सहायक होगा।

अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प

1. प्रतिदर्श

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत 600 हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों का चयन वर्गबद्ध अनियत प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। लखनऊ जनपद के 14 से 16 आयुवर्ग के विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में इस प्रकार किया गया–

600 विद्यार्थी

300 छात्र | 300 छात्रायें

2. अनुसन्धान अभिकल्प

प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के लिंग, व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी, उभयमुखी व बहिर्मुखी), मूल्य तथा

समायोजन का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना है। विद्यार्थियों के प्रतिबल पर उक्त सभी परिवर्तितयों का प्रभाव पहले ही पड़ चुका है अथवा घटित हो चुका है, अतः प्रतिबल के अध्ययन के आधार पर उपर्युक्त परिवर्तियों के प्रभाव का अध्ययन किया जाना है, अतः प्रस्तुत अनुसन्धान घटनोत्तर अनुसन्धान (Ex-Post Facto Research) प्रकार का है। प्रस्तुत अनुसन्धान में स्वतन्त्र तथा आश्रित परिवर्ती इस प्रकार हैं–

स्वतन्त्र परिवर्ती– लिंग (छात्र व छात्रायें

व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी, उभयमुखी तथा बहिर्मुखी)

मूल्य (सैद्धान्तिक, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, प्रजातान्त्रिक, सुखवादी, शक्ति तथा स्वास्थ्य)

समायोजन (गृह, शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा स्वास्थ्य)

आश्रित परिवर्ती प्रतिबल (शैक्षिक, आर्थिक, व्यावसायिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक)

3. प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विवरण

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग किया गया–

1. विद्यार्थी प्रतिबल मापनी

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया तथा अरूणिमा पाठक

2. बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया तथा अरूणिमा पाठक

2. बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया

3. मूल्य परीक्षण

द्वारा डॉ0 भाटिया तथा डॉ0 शर्मा

4. समायोजन सूची

द्वारा डॉ0 भाटिया

प्रशासन प्रक्रिया

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हाईस्कूल स्तर के 600 विद्यार्थियों पर मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रशासन किया गया। प्रतिदर्श के रूप में चयनित विद्यार्थियों के साथ आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करने के पश्चात आंकड़ों का संकलन किया गया। परीक्षणों का प्रशासन करन से पूर्व विद्यार्थियों को उपयुक्त निर्देशा दिये गये। इस कार्य में विद्यालय के प्रधानाचार्य व अध्यापकों का पर्याप्त सहयोग लिया गया।

5. प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत अनुसन्धान का प्रथम उद्देश्य छात्र व छात्राओं, बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी व्यक्तित्व, उत्तम समायोजन व निम्न समायोजन तथा उच्च मूल्य व निम्न मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य साथ्रक अन्तर ज्ञात करना था अतः इस उद्देश्य से मध्यमान (Mean), प्रामाणिक विचलन (Standard Deviation) तथा सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात (Critical Ratio) की गणना की गई।

प्रस्तुत अनुसन्धान का द्वितीय उद्देश्य लिंग (छात्र व छात्रा), व्यक्तित्व

सम्भव हो सकेगा। विभिन्न मूल्यों में से विद्यार्थियों के कौन से मूल्य हैं जोकि प्रतिबल को प्रभावित करते हैं तथा वे कौन से समायोजन के क्षेत्र हैं जोकि प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। यह ज्ञात करना अनुसंधान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा। छात्र तथा छात्राओं में से प्रतिबल को अधिक प्रभावित कौन से विद्यार्थी करते हैं? किस व्यक्तित्व के विद्यार्थी (अन्तर्मुखी अथवा बहिर्मुखी) अधिक प्रतिबल को प्रभावित करते हैं? इन सभी तथ्यों की जानकारी प्रस्तुत अनुसंधान द्वारा होगी।

स्पष्ट है कि प्रस्तुत अनुसंधान विद्यार्थियों के प्रतिबल तथा उसको प्रभावित करने वाले कारकों को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण रूप से सहायक होगा।

अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प

1. प्रतिदर्श

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत 600 हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों का चयन वर्गबद्ध अनियत प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। लखनऊ जनपद के 14 से 16 आयुवर्ग के विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में इस प्रकार किया गया–

600 विद्यार्थी

300 छात्र | 300 छात्रायें

2. अनुसन्धान अभिकल्प

प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्‌देश्य हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के लिंग, व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी, उभयमुखी व बहिर्मुखी), मूल्य तथा

समायोजन का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना है। विद्यार्थियों के प्रतिबल पर उक्त सभी परिवर्तितयों का प्रभाव पहले ही पड़ चुका है अथवा घटित हो चुका है, अतः प्रतिबल के अध्ययन के आधार पर उपर्युक्त परिवर्तियों के प्रभाव का अध्ययन किया जाना है, अतः प्रस्तुत अनुसन्धान घटनोत्तर अनुसन्धान (Ex-Post Facto Research) प्रकार का है। प्रस्तुत अनुसन्धान में स्वतन्त्र तथा आश्रित परिवर्ती इस प्रकार हैं–

स्वतन्त्र परिवर्ती– लिंग (छात्र व छात्रायें

व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी, उभयमुखी तथा बहिर्मुखी)

मूल्य (सैद्धान्तिक, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, प्रजातान्त्रिक, सुखवादी, शक्ति तथा स्वास्थ्य)

समायोजन (गृह, शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा स्वास्थ्य)

आश्रित परिवर्ती प्रतिबल (शैक्षिक, आर्थिक, व्यावसायिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक)

3. प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विवरण

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग किया गया–

1. विद्यार्थी प्रतिबल मापनी

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया तथा अरूणिमा पाठक

2. बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया तथा अरूणिमा पाठक

2. **बहिर्मुखी अन्तर्मुखी सूची**

द्वारा डॉ0 तारेश भाटिया

3. **मूल्य परीक्षण**

द्वारा डॉ0 भाटिया तथा डॉ0 शर्मा

4. **समायोजन सूची**

द्वारा डॉ0 भाटिया

प्रशासन प्रक्रिया

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हाईस्कूल स्तर के 600 विद्यार्थियों पर मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रशासन किया गया। प्रतिदर्श के रूप में चयनित विद्यार्थियों के साथ आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करने के पश्चात आंकड़ों का संकलन किया गया। परीक्षणों का प्रशासन करन से पूर्व विद्यार्थियों को उपयुक्त निर्देशा दिये गये। इस कार्य में विद्यालय के प्रधानाचार्य व अध्यापकों का पर्याप्त सहयोग लिया गया।

5. प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत अनुसन्धान का प्रथम उद्देश्य छात्र व छात्राओं, बहिर्मुखी व अन्तर्मुखी व्यक्तित्व, उत्तम समायोजन व निम्न समायोजन तथा उच्च मूल्य व निम्न मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों के प्रतिबल के मध्य साथ्रक अन्तर ज्ञात करना था अतः इस उद्देश्य से मध्यमान (Mean), प्रामाणिक विचलन (Standard Deviation) तथा सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात (Critical Ratio) की गणना की गई।

प्रस्तुत अनुसन्धान का द्वितीय उद्देश्य लिंग (छात्र व छात्रा), व्यक्तित्व

प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी), मूल्य (उच्च व निम्न) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का विद्यार्थियों के प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना था अतः उक्त उद्देश्य से प्रसरण विश्लेषण (Analysis of Variance) की गणना की गई।

प्रदत्त विश्लेषण तथा विवेचन

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्यों के आधार पर प्रदत्त विश्लेषण तथा विवेचन निम्नलिखित भागों प्रस्तुत किया गया–

भाग 1 : छात्र व छात्राओं के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

भाग 2 : बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

भाग 3 : उत्तम समायोजन तथा निम्न समायोजन के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

भाग 4 : उच्च मूल्य तथा निम्न मूल्य के विद्यार्थियों के प्रतिबल का तुलनात्मक अध्ययन

भाग 5 : लिंग (छात्र व छात्रा) तथा व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी व अन्तर्मुखी) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन

भाग 6 : लिंग (छात्र व छात्रा) तथा विभिन्न मूल्यों (उच्च व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन

भाग 7 : लिंग (छात्र व छात्रा) तथा समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का प्रतिबल पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के प्राप्त प्रदत्त के विश्लेषण तथा विवेचन द्वारा निम्न लिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. छात्राओं की अपेक्षा छात्रों को आर्थिक तथा व्यावसायिक प्रतिबल सार्थक रूप में अधिक होता है।
2. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थी, बहिर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों की अपेक्षा सार्थक रूप में शैक्षिक, व्यावसायिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक प्रतिबल अधिक रखते है।
3. उत्तम समायोजन के विद्यार्थियों का प्रतिबल सार्थक रूप में निम्न स्तर का प्राप्त हुआ, जबकि गृह,शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक व स्वास्थ्य के क्षेत्र में निम्न समायोजित अथवा कुसमायोजित विद्यार्थियों का प्रतिबल सार्थक रूप से अधिक प्राप्त हुआ।
4. उच्च सैद्धान्तिक, धार्मिक, सामाजिक व प्रजातान्त्रिक मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सार्थक रूप से निम्न पाया गया।
5. निम्न राजनैतिक, आर्थिक, सुखवादी व शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों का प्रतिबल सार्थक रूप से निम्न पाया गया।
6. विद्यार्थियों के प्रतिबल को दूर करने के लिये आवश्यक है कि समाज में सैद्धान्तिक, धार्मिक, सामाजिक तथा प्रजातान्त्रिक मूल्यो को पर्याप्त महत्व प्रदान करें तथा राजनैतिक, आर्थिक, सुखवादी व शक्ति मूल्यों को महत्त्व प्रदान न किया जाये।
7. लिंग (छात्र व छात्रा) विद्यार्थियों के आर्थिक तथा व्यावसायिक

प्रतिबल को सार्थक रूप में प्रभावित करता है।

8. व्यक्तित्व प्रकार (बहिर्मुखी, उभयमुखी व अन्तर्मुखी) सार्थक रूप में शैक्षिक, आर्थिक, व्यावसायिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

9. विभिन्न मूल्य– सैद्धान्तिक, राजनैतिक, सामाजिक, प्रजातान्त्रिक, आर्थिक, सुखवादी व शक्ति मूल्य सार्थक रूप से विद्यार्थियों के प्रतिबल को प्रभावित करते हैं।

10. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा विभिन्न मूल्यों का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है।

11. समायोजन के विभिन्न क्षेत्र–गृह, शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा स्वास्थ्य समायोजन विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में प्रभावित करते हैं।

12. लिंग (छात्र व छात्रा) तथा स्वास्थ्य समायोजन (उत्तम, औसत व निम्न) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के प्रतिबल को सार्थक रूप में प्रभावित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

BIBLIOGRAPHY

Agrawal, M. (1985) A study of stress among university students Unpublished Ph.D., Thesis, University of Allahabad.

Anthony, J.E. (1988) The response to overwhelming stress in children: Some introductory Comments. In J.E. Anthony &C.Chiland (Eds.) The child in his family. Perilous Development: Child Raising and identity Formation Under Stress. (Vol.8)3-16 New York Wiley.

Arulmani, G. (1989) Patterns of coping with psycho-social Stressors Among Indian Adolesents. Unpublished M. Phil Thesis. Banglore University, Banglore.

Bhushan, Anand (1987) Values preference Patterns of Indian youth belonging to different sociometric levels. Journal of the Institute of educational research. 1990, 4.31, 7-14.

Biswas, Arpita, Kapur, Malvika and Kaliaperumal, V.G. (1995) Stressful life events and adjustment pattern of psychological disturbed and non-disturbed children of the middle childhood period. Indian Journal of Clinical Psychology, 1995 (Mar.) 22(1), 7-13.

Caplan, G. (1976) The family as a support system. In G. Caplan. & M. Kallilea. (Eds.) Support systems and Mutual

Help: Multidisciplinary Explorations(pp. 19-36). New York: Grune & Stratton.

Chandra Kumar, P.S. and Arockiaswami S. (1994) Gender difference in value, orientation among college students. Journal of communit Guidance and Research, 1994 (Sept.), 11 (3), 187-197.

Cohen, F. & Lazarus, R.S.(1973) Active coping processes, coping disposition and recovery from surgery. Psychosomatic Medicine , 35,375-389.

Dalal, M. (1989) Prevalence and pattern of psychological distur bance in school going early adolescent girls. unpublished M. Phil . Banglore University, Banglore.

Deo, Alka K. (2004) Type-A behaviour pattern and stress among twelth standard students. Journal of psychological Researches, 2004, 48(1), 33-40.

Edwards, A.L. (1969) Experimental Design in psychological Research, New York; Holt. Rinehart and Winston, Inc.

Freeman, F.S. (1968) Theory and Practice of Psychological Testing. Oxford and I B H publishing Co. Bombay, 1968.

Ferguson, G.A. (1976) Statistical Analysis in Psychology and Education, Mc Graw Hill, Koyakusha, 1976.

Gargmezy, N. and Rutter, M. (1983) Stress, Coping and

Development in Children. New York: Mc Graw Hill .

Gawali, Gautam and Kamble, G.N. (1999) Generation Gap, Masculinity-Psycho-cultural dimension, April 1999, Vol. 15, No. 1, 17-20.

Hussain, S. (1985) Adjustment and its measurement. S. Chand & Co. New Delhi.

Hussain, and Akhter (1998) Adjustment patterns and personality traits. Indian Journal of Psychological Issues, 1998, 6 (1&2), 55-57.

Hussain, Shamshad (1996) Human Adjustment. National Psychological Corporation Agra.

Kannapan, R., Kaliappan, K.V. and Lakshmi Bai, R. (1993) Modification of daily hassless stress and uplifts in adolescent deviant boys. Indian Journal of Criminology, 1993 (Jan.), 21 (1), 9 16.

Kapur, M. (1990) Early childhood stimulation and optimum mental development. Unpublished data . WHO- NIMHANS Project.

Katyal, Sudha and Vasudeva, Promila (2001) Gender differences in academic stress and its correlates. Personality Study and Group Behaviour, 2001, 21, 31-38.

Khan, A. and Sinha, J.B.P. (1971) Social Anxiety in dependence

prone persons, Psy. Studies, 16(1).

Kundu, Ramnath, Chakraborty, P.K. and Paramita (1994) Search for the non-cognitive predictors of scientific knowledge and aptitude. Praachi Journal of Psych-Cultural Dimensions, 1994, 10 (1&2), 5-10.

Lakshmi, Vijay (1996) A study of interest of extravert college students. Praachi Journal of Psycho-Cultural Dimensions, 1996, Vol. 12(1), 27-30.

Maheshwari, Samta and Bharathi, K. (2005) A study of parent child relationship in Public School going adolescents. *International Conference on "Applied and Community Psychology Trends and Directions, Gurukul Kangri University, Haridwar,* 26-28 Feb. 2005.

Malik, Pooja and Bharthi, K. (2005) Depression, Anxiety and stress in normal and neurotic deppressive group. International conference on "Applied and Community Psychology Trends and Directions, Gurukul Kangri University, Haridwar, 26-28, Feb. 2005.

Mangesh, Kulkarni and Rathod, Sahebrao (2005) Coping style of Adolescents and Personality Type. *International Conference on "Applied and Community Psychology Trends and Directions, Gurukul Kangri University,*

Haridwar, 26-28 Feb. 2005.

Me Gee, R. and Stanton, W.R. (1992) Sources ot distress among. New Zealander adolescents. Journal of Child Psychology and Psychiatry, 33, 999,-1010

Paliwal, Jyoti and Bhatia, Taresh (2005) A study of Adjustment and stress among normal and handicapped children. *International Conference on "Applied and Community Psychology Trends and Directions, Gurukul Kangri University, Haridwar,* 26-28 Feb. 2005.

Panjiyar, I.D. & Rout, Munni (1999) Adjustment as a function of social class and economic status : A socio-psychological study. Indian Journal of psychological Issues, 1999, 7(2), 55-58.

Pattanayak, B., Panda, Minati and Mohanty, Susmita (1997) Impact of family structure and gender bias on stress and coping styles. An empirical study. Social Science International. 1997 (Jan), 13 (1&2), 42-50.

Pestonjee, D.M. (1992) Stress and Coping : The Indian Experience. Sage Publications, New Delhi.

Rangan, Uma and Rajesham, A. Suneetha (2005) Yogasanas and their effect on psychological health. International conference on 'Applied and community, Gurukul Kangri

University, Haridwar, 26-28 Feb 2005

Reddy, V. Srikanth, Ramamurti, P.V. and Reddy, R.K. Kesavulu (1991) A comparative study of source of stress among disabled boys and girls. Journal of Personality and Clinical Studies, 1991, (Sep), 7(2), 125-129.

Robbie Rossman, B.B. (1992) School - age children's perceptions of coping with distress: Strategies for emotion regulation and the moderation of adjustment. Journal of Child Psychology and Psychiatry, 33, 1373, 1397.

Rotter, J.B. (1966) Generalized expectancies for internal versus external control of reinforcement. Psychological Monographs, 80, 609.

Roychodhury, Paromita and Basu, Jayanti (1998) Parent child relationship, school achievement and adjustment of adolescent boys. Journal of Personality and Clinical Studies, 1998, 14 (1-2), 53-58.

Sarkar, A. (1990) Prevalence and pattern of psychological disturbances in 8-11 year old school going children. Unpublished M. Phil dissertation. Banglire Universty Banglore, India.

Schmale, A.H. (1972) Giving up as a final common pathway to changes in health. Advances in Psychosomatic Medicine,

8, 20-40

Sehgal, Meena (1999) Self-efficacy, stress and health : A cross-gender perspective. Journal of the Indian Academy of Applied psychology, 1999, 25 (1-2), 57-60.

Shenoy, J.(1992) Psychological disturbances in 5-8 year old school going children. Unpublished doctoral dissertation, Banglore.

Shukla, Asha and Pandey, Sadhna (1994) Personal Adjustment Problem of introvert and extrovert and adolescents of Hindi and English Medium Schools, Purvanchal Journal of social sciences, 1994, Jan & July, 2 (1&2), 23-28.

Singh, A.K. and Gupta, A.S. (1960) Some personality determinants of values and intellignece, Indian Journal of Psychology and Education, 1996, Vol. 27 (2), 111-114.

Singh, Akhileshwaer Prasad (1997) Emotional adjustment as a Function of sex and feeling of normlessness. Perspectives in Psychological Researches, 1996-97 19420 (182) , 85-88.

Sood, P. (1998) Academic stress and coping strategies of high school students. Behavioural medicine Journal, 1998, 1(1), 63-71.

Upadhyay, B.C. (1995) A study of self-concept of adolescent

pupils with special reference to sex, adjustment and aspiration level. Unpublished Ph.D. Thesis, Bundelkhand University, Jhansi.

Verma, B.P. and Murti Ram (1998) Interface between prolonged deprivation and intelligence as determinant of values,needs and adjustment of male and female students at the +2 stage. Indian Educational Review, 1998 (July), 34(2), 79-89.

Verma, O.P. and Upadhyay, S.N. (1980) Effect of conflict, Anxiety and frustration on Adjustment. Perspectives in Psychological Researches, 2 (49-51).

परिशिष्ट

गोपनीय Confidential

कोड नं. Code No. [ ]

क्रम संख्या Serial No. [ ]

S. S. SCALE

by :

Dr. Taresh Bhatia & ***Arunima Pathak***

Reader
Post Graduate & Research Department of Psychology
D. V. (Postgraduate) College
ORAI (U.P.) - 285 001

Department of Psychology
Sanatan Dharm Girls Degree College
ORAI (U.P.) - 285 001

कक्षा (Class) ---------------- आयु (Age) ---------- लिंग (Gender) ----------

विद्यालय (College) --

निर्देश : (Instructions)

आपके दैनिक व्यवहार व परिस्थितियों से सम्बन्धित कुछ कथन दिये गये हैं। प्रत्येक कथन के पाँच विकल्प दिये गये हैं – अत्यधिक सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, अत्यधिक असहमत। जिस विकल्प को आप सही समझते हैं उस पर सही का चिन्ह (✓) लगा दें। इनमें कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं है।

कृपया उत्तर पत्र भरते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखें –

(१) कृपया अपना नाम कहीं न लिखें। (२) कृपया सभी प्रश्नों के उत्तर सही चिन्ह (✓) लगाकर दें। (३) प्रश्नों के उत्तर उसी क्रम में दें जिसमें वे प्रकाशित हैं, यद्यपि आपको ऐसा लग सकता है कि कहीं–कहीं प्रश्न दोहरा दिये गये हैं। (४) कृपया उत्तर देते समय किसी दूसरे से सलाह न लें।
(५) किसी प्रश्न पर अत्यधिक समय न लगायें। आपके मस्तिष्क में जो उत्तर तुरन्त एवं सर्वप्रथम आता हो उसे ही दें।

There are some statements related to your daily behaviour and circumstances. Each statement has five options - strongly agree, agree, uncertain, disagree, strongly disagree. Tick [✓] the option that you consider right. None of these answers is right or worng.

Please bear in mind the following points while responding :-

(1) Please do not write your name anywhere. (2) Please answer each question by putting a tickmark. (3) Answer the questions in the same order in which they are given, although you may feel that some questions have been repeated. (4) Please do not consult anyone while responding. (5) Do not give much time to any question. Give the response that comes in your mind first and at once.

Prakhar
PSYCHOLOGICAL TESTING & RESEARCH CENTRE
NEW PATEL NAGAR, (NEAR THADESHWARI MANDIR) ORAI-285001 (JALAUN) U.P.

	पूर्णतः सहमत Strongly Agree	सहमत Agree	अनिश्चित Uncertain	असहमत Disagree	पूर्णतः असहमत Stongly Disagree
1a. परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिये निरन्तर तनाव का अनुभव करता हूँ। I feel a continuous stress for securing good marks in exams.	☐	☐	☐	☐	☐
2b. मैं चिन्तित हूँ क्योंकि परिवार की आय लगातार कम हो रही है। I am worried because the income of my family is decreasing continuously.	☐	☐	☐	☐	☐
3c. मुझे विश्वास नहीं है कि पढ़ाई पूरी करने के बाद कोई अच्छी नौकरी मिल जायेगी। I am not confident that I shall get a good job after completing my education.	☐	☐	☐	☐	☐
4d. परिवार के सदस्यों के साथ तनावपूर्ण सम्पन्ध रहते हैं। My relations with my family members are generally tense.	☐	☐	☐	☐	☐
5e. सामाजिक क्रियाकलापों में भाग लेना समय को बेकार करना है। It is wastage of time to take part in social activities.	☐	☐	☐	☐	☐
6f. मुझे बिना गलती के दोषी माना जाता है। I am held guilt without faults.	☐	☐	☐	☐	☐
7a. परीक्षा में फेल होने का भय सताता रहता है। I am generally scared of getting failed in the examination.	☐	☐	☐	☐	☐

	पूर्णतः सहमत Strongly Agree	सहमत Agree	अनिश्चित Uncertain	असहमत Disagree	पूर्णतः असहमत Stongly Disagree
8b. मेरा परिवार गम्भीर आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त है। My family has serious financial problems.	☐	☐	☐	☐	☐
9c. मेरी शैक्षिक योग्यता इतनी नहीं है कि एक अच्छी नौकरी मिल सके। I am not eligible for getting a good job.	☐	☐	☐	☐	☐
10d. विद्यालय से घर के तनावपूर्ण माहौल में लौटना अच्छा नहीं लगता है। I don't like to return from the school to the stressful atmosphere of home.	☐	☐	☐	☐	☐
11e. मित्रों से मेरे मतभेद बने रहते हैं। I have differences with my firends.	☐	☐	☐	☐	☐
12f. सभी मुझसे रूखा व्यवहार करते हैं। Everybody behave rudely with me.	☐	☐	☐	☐	☐
13a. कुछ मेरे अध्यापक पक्षपातपूर्ण व्यवहार करते हैं। Some of my teachers are partial in behaviours.	☐	☐	☐	☐	☐
14b. पर्याप्त जेबखर्च न मिलने के कारण परेशान रहता हूँ। I am generally troubled due to insufficient pocket-money.	☐	☐	☐	☐	☐
15c. वर्तमान शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा होनी चाहिये ताकि पढ़ाई पूरी करते ही व्यवसाय मिल जाये। Present education must be vocational education so that we may get a job immediately after completing education.	☐	☐	☐	☐	☐

	पूर्णतः सहमत Strongly Agree	सहमत Agree	अनिश्चित Uncertain	असहमत Disagree	पूर्णतः असहमत Stongly Disagree
16d. भाई–बहिनों से अक्सर मनमुटाव बना रहता है। I generally have differences with siblings.	☐	☐	☐	☐	☐
17e. जल्दी ही किसी को अपना मित्र बना लेना मेरे लिये कठिन कार्य है। It is difficult for me to make friends easily.	☐	☐	☐	☐	☐
18f. मेरी तुलना दूसरों से करने पर मुझे हीनता का अनुभव होता है।I feel inferiority on being compared with others.	☐	☐	☐	☐	☐
19a. पढ़ाई मेरे लिये एक बोझ बन गई है। Study has become a burden to me.	☐	☐	☐	☐	☐
20b. फिजूल खर्च करने पर माता–पिता के नाराज होने की आशंका रहती है। Parents may get angry on my extravagance.	☐	☐	☐	☐	☐
21c. नौकरी प्राप्त करने के लिये व्याप्त भ्रष्टाचार मुझे चिन्तित करता है। Corruption for getting a job worries me.	☐	☐	☐	☐	☐
22d. माता–पिता के पुराने दकियानूसी विचारों के कारण मतभेद बने रहते हैं। I generally have differences with my parents due to their orthodox thinking.	☐	☐	☐	☐	☐
23e. समूह के बीच अपनी बात रखने में मुझे संकोच का अनुभव होता है।I feel hesitation putting my views before a group.	☐	☐	☐	☐	☐

		पूर्णतः सहमत Strongly Agree	सहमत Agree	अनिश्चित Uncertain	असहमत Disagree	पूर्णतः असहमत Stongly Disagree
24f.	अत्यधिक क्रियाशील होने पर भी मुझे निष्क्रिय समझा जाता है। In spite of being very active, I am considered as dull.	☐	☐	☐	☐	☐
25a.	मुझे इस बात का दुःख है कि कक्षा के होशियार छात्रों में मेरी गिनती नहीं होती है। I feel sorry for not being counted among the intelligent students of the class.	☐	☐	☐	☐	☐
26b.	मैं यह मानता हूँ कि जीवन में पैसा ही सब कुछ है। I believe that money is everything in life.	☐	☐	☐	☐	☐
27c.	मेरे माता–पिता मेरी नौकरी के लिये चिन्तित दिखाई देते हैं। My parents look worried for my job.	☐	☐	☐	☐	☐
28d.	परिवार के सदस्यों के बीच खिचाखिंची रहती है। There is generally tension among the family members.	☐	☐	☐	☐	☐
29e.	लोगों के बीच रहने की अपेक्षा अकेले रहना मुझे ज्यादा पसन्द है। I prefer living alone instead of being social.	☐	☐	☐	☐	☐
30f.	मुझ में आत्मविश्वास की कमी है। I lack in confidence.	☐	☐	☐	☐	☐

AREAS	SCORES	LEVEL	REMARK
a. AS			
b. FS			
c. VS			
d. FaS			
e. SS			
f. ES			
TOTAL			

काड न.
Code No.
क्रम संख्या
Serial No.

THE VALUE TEST

गोपनीय
Confidencial

by :

DR. TARESH BHATIA
Reader
Post Graduate & Research Department of Psychology
D. V. (Postgraduate) College
ORAI (U.P.) - 285 001

&

DR. S. C. SHARMA
Principal
Amrit Kunwar Mahavidyalaya
Atarakala, Jalaun (U.P.)

निर्देश : Instruction

आपके दैनिक व्यवहार व परिस्थितियों से सम्बन्धित कुछ कथन दिये गये हैं। प्रत्येक कथन के साथ चार सम्भावित उत्तर दिये गये हैं। प्रत्येक उत्तर की उपयुक्तता के आधार पर अंक प्रदान करने हैं। जिस उत्तर को आप सर्वाधिक उपयुक्त समझते हैं उसे 4 अंक दीजिये। इसी प्रकार दूसरे उपयुक्त उत्तर को 3 अंक तथा तीसरे उपयुक्त उत्तर को 2 अंक और सर्वाधिक अनुपयुक्त (नापसन्द) उत्तर को 1 अंक प्रदान करना है।

इनमें कोई भी उत्तर गलत या सही नहीं है। परीक्षण का उद्देश्य केवल आपकी प्रतिक्रियाओं को जानना है। आपके उत्तरों को पूर्णतया गुप्त रखा जायेगा। बिना किसी संकोच के उत्तर दीजिये।

There are some statements related to your daily behaviours and circumstances. Each statement is followed by four likely answers. Scores are to be given on the basis of the appropriatedness of each answer. Give 4 scores to the answer your consider most appropriate of the four, 3 scores to the answer that seems most approprate of the remaining three, 2 scores to the answer that is more appropriate of the remaining two and 1 score to the answer that is least important. None of these answers is right or wrong. The object of the test is to know your responses. Your responses will be kept completely secret. Answer without any hitch.

उदाहरणार्थ e.g.

भारत के महान व्यक्ति मुझे पसन्द हैं– I like the great persons of India.

(i) कस्तूरी रंगन (अंतरिक्ष वैज्ञानिक) Kasturi Rangan (space scientist) [3]
(ii) अटल बिहारी वाजपेई (राजनीति) Atal Bihari Bajpayi (Politics) [1]
(iii) विवेकानन्द (धर्म) Vivekanand (Religion) [4]
(iv) स्वामी अग्निवेश (सामाजिक) Swami Agnivesh (Social) [2]

NEW PATEL NAGAR, (NEAR THADESHWARI MANDIR) ORAI-285001 (JALAUN) U.P.

1. **मेरे जीवन का उद्देश्य है– The aim of my life is :**

(i) वैज्ञानिक सत्य व ज्ञान की खोज करना [ ]a

discovery of scientific truth and knowledge

(ii) राजनीति में उच्च पद को प्राप्त करना [ ]b

attaining high post in politics

(iii) धार्मिक कार्य करना doing religious work [ ]c

(iv) समाज–सेवा करना doing social service [ ]d

2. **मैं ऐसे व्यक्तियों को पसन्द करता हूँ– I like such persons :**

(i) अच्छे राजनीतिज्ञ good politician [ ]b

(ii) धार्मिक विचारक religious thinkers [ ]c

(iii) समाजशास्त्री sociologists [ ]d

(iv) प्रसिद्ध साहित्यकार famous literateur [ ]e

3. **अवकाश में सुनना पसन्द करूंगा–**

In leisure shall like to listen to :

(i) धार्मिक प्रवचन religious discourse [ ]c

(ii) सामाजिक समस्या पर विचार reflections on social problem [ ]d

(iii) प्रसिद्ध कवि की कवितायें poems of a famous poet [ ]e

(iv) ज्वलन्त आर्थिक पक्ष से सम्बन्धित विचार [ ] f

reflections on a burning economic topic.

a	b	c	d	e	f	g	h	i	j

4. चलचित्र (फिल्म) देखना पसन्द करूंगा जो कि हो–

I shall like to see picture (film) that is :

(i) सामाजिक समस्या समाधान से सम्बन्धित

related to solving social problem [ ] d

(ii) कला–फिल्म art film [ ] e

(iii) आर्थिक समस्या और उसके समाधान से सम्बन्धित

related to economic problem and its solution [ ] f

(iv) सामाजिक समानता पर आधारित based on social equality [ ] g

5. **यदि मेरे पास अत्यधिक धन हो तब मैं उसे खर्च करूंगा–**

If I have excess wealth, I shall spend it :

(i) साहित्य, संगीत व कला के उत्थान के लिये

For promoting literature, music and art [ ] e

(ii) लाभकारी योजनाओं पर on profitable projects [ ] f

(iii) सभी को सामाजिक रूप से समान स्तर पर लाने के लिये

For bringing all at socially equal level [ ] g

(iv) आराम से जीवन व्यतीत करने पर on leading a comfortable life. [ ] h

6. **आपका मित्र होना चाहिये– Your friend should be :**

(i) धनी rich. [ ] f

(ii) ऊँच नीच की भावना से दूर above the feeling of high and low. [ ] g

(iii) जो आपका जीवन सुखमय बनाने में सहायक हो

Who is helpful in making your life happy. [ ] h

(iv) जो आपको अधिक शक्तिशाली बनाये who may make you stronger. [ ] i

a	b	c	d	e	f	g	h	i	j

7. **जीवन अपना व्यतीत करना चाहूँगा– Shall like to pass my life :**

(i) सभी की जाति व धर्म को समान समझते हुए [ ] g
treating equal the caste and religion of all

(ii) सभी सुख के साधनों के साथ with all the means of comfort [ ] h

(iii) दूसरों पर अपना प्रभुत्व रखते हुए [ ] i
maintaining my supermacy over other

(iv) स्वस्थ व निरोगी रहते हुए going healthy and disease-free [ ] j

8. **मेरी पढ़ाई का उद्देश्य है– The object of my education is :**

(i) आरामदायक सुखी जीवन प्राप्त करना [ ] h
To secure a comfortable happy life

(ii) शक्तिशाली बनकर शासन चलाना [ ] i
having become powerful, to run administration

(iii) शारीरिक रूप से स्वस्थ व दीर्घायु प्राप्त करना [ ] j
to secure physical health and long life

(iv) सत्य और ज्ञान की प्राप्ति करना to gain truth and knowledge [ ] a

9. **मेरा मनपसन्द कार्य वही है, जिसमें– My favourite job is one in which :**

(i) मेरे अधीन लोग कार्य करें people work under me [ ] i

(ii) मैं अपने शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान दे सकूं [ ] j
I may give attention to my physical health

(iii) ज्ञान की प्राप्ति सम्भव हो सके [ ] a
Attainment of knowledge may be possible

(iv) मेरी राजनीतिक महत्वाकांक्षायें पूरी हो सकें [ ] b
My political ambitions may be fulfilled

a	b	c	d	e	f	g	h	i	j

10. प्रातःकाल का समय उपयुक्त होता है– **Morning time is appropriate for :**

(i) शारीरिक व्यायाम के लिये Physical exercise [ ] j

(ii) अध्ययन के लिये study [ ] a

(iii) समाचार पढने व राजनीतिक चर्चाओं के लिये [ ] b
news reading and political discussion

(iv) ईश्वर की उपासना के लिये worshipping God [ ] c

11. मेरे लिये ईश्वर का अर्थ है– **God to me means :**

(i) वैज्ञानिक ज्ञान की खोज discovery of scientific knowledge [ ] a

(ii) राजनीति द्वारा जन सेवा service of people through politics [ ] b

(iii) भक्तिभाव से ईश्वर की उपासना worship of God with devotion [ ] c

(iv) समाज–सेवा social service [ ] d

12. ऐसी पुस्तकें पढ़ना पसन्द करूंगा– **I shall like to read the books :**

(i) राजनीतिक घटनाक्रम से सम्बन्धित [ ] b
related to political developments

(ii) धार्मिक religious [ ] c

(iii) सामाजिक चुनौतियों से सम्बन्धित related to social challenges [ ] d

(iv) कला व सौन्दर्यात्मक चिन्तन पर आधारित [ ] e
based on art and aesthetic reflections

13. मेरे जीवन–साथी में गुण होने चाहिये– **My life partner should have the qualities of**

(i) धार्मिक भावना के religious sentiment [ ] c

(ii) समाज–सेवा के social service [ ] d

(iii) सुन्दरता के beauty [ ] e

(iv) धन व सम्पन्नता के wealth and prosperity [ ] f

a	b	c	d	e	f	g	h	i	j

14. सफल जीवन के लिये आवश्यक है–Successful life requires :

(i) समाज–सेवा social service [ ] d

(ii) कला व सौन्दर्य art and beauty [ ] e

(iii) धन wealth [ ] f

(iv) प्रत्येक जाति व धर्म के प्रति समान भाव [ ] g

sense of equality to each caste & religion

15. शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये– The object of education should be :

(i) अपनी कला व संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करना [ ] e

getting knowledge of one's art and culture

(ii) धन कमाना earning wealth [ ] f

(iii) सभी को समान समझना treating all equally [ ] g

(iv) सुखमय जीवन व्यतीत करना leading a happy life [ ] h

16. धन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है– By wealth can be gained :

(i) धन wealth [ ] f

(ii) सभी का समानता का अधिकार right of equality for all [ ] g

(iii) सुख के साधन means of happiness [ ] h

(iv) शक्ति व सत्ता power and authority [ ] i

17. वह व्यवसाय मुझे पसन्द है जिसमें I like the profession in which :

(i) सभी को समान अधिकार प्राप्त हों all have equal right [ ] g

(ii) काम कम आराम अधिक हो there is less work, more leisure [ ] h

(iii) मेरे अधीन लोग काम करें people work under me [ ] i

(iv) मेरा स्वास्थ्य उत्तम बना रहे my health remain good [ ] j

a	b	c	d	e	f	g	h	i	j

18. आज आवश्यकता है– **The need today is of :**

(i) सुख के साधनों की means of happiness [ ] h

(ii) शक्ति सम्पन्न बनने की becoming powerful [ ] i

(iii) स्वस्थ शरीर की healthy body [ ] j

(iv) सत्य व यथार्थ जीवन की true and real life [ ] a

19. **आप अपनी योग्यता का उपयोग करेंगे–** You will use your merit :

(i) अपने अधीन दूसरों को निर्देशित करने में to direct others under you [ ] i

(ii) अधिक स्वस्थ शरीर के लिये for healthier body [ ] j

(iii) वैज्ञानिक ज्ञान व नवीन सिद्धान्त की खोज में [ ] a

to discover scientific truth and new theory

(iv) राजनीतिक लाभ के लिये for political advantage [ ] b

20. **भारत की प्रगति के स्तम्भ हैं–**

The pillars of Indian's progress are :

(i) मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य mental and physical health [ ] j

(ii) वैज्ञानिक सत्य ज्ञान scientific true knowledge [ ] a

(iii) राजनैतिक चिन्तन political delibration [ ] b

(iv) धार्मिक चिन्तन religious delibration [ ] c

a	b	c	d	e	f	g	h	i	j
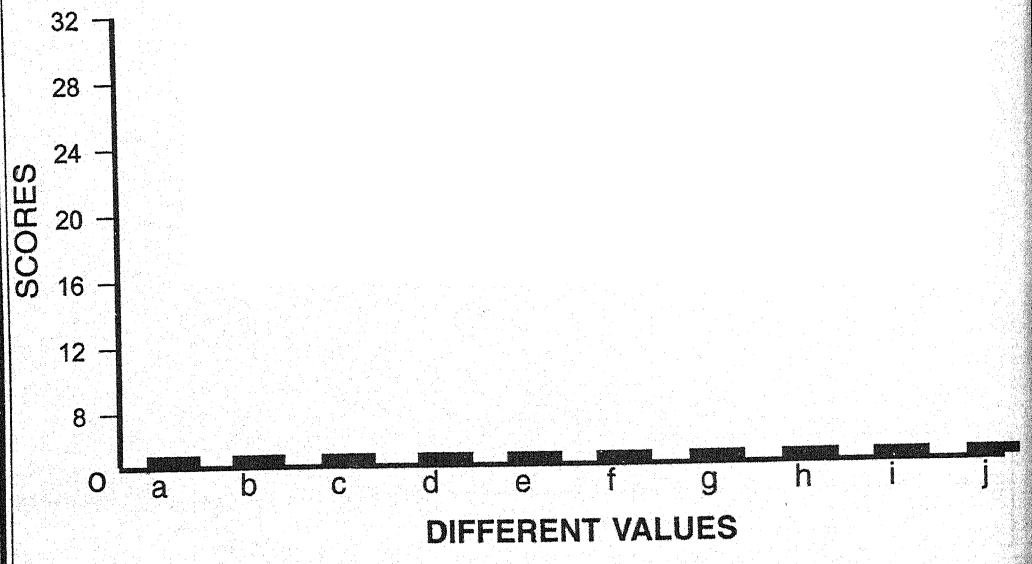
THE ADJUSTMENT INVENTORY

गोपनीय Confidential

[ ] कोड नं. Code No.

[ ] क्रम संख्या Serial No.

Constructed & Standardized by :

Dr. Taresh Bhatia

M.A;Ph.D.

Reader, Post Graduate & Research, Department of Psychology

D.V. (Postgraduate) College

ORAI (U.P.) - 285 001

निर्देश : (Instructions)

आपके व्यवहार से सम्बन्धित कुछ प्रश्न दिये गये हैं, जिनका उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' के द्वारा देना है। यदि 'हाँ' के द्वारा प्रश्न का उत्तर देना चाहते हो तो 'हाँ' के खाने पर सही का चिन्ह (✔) लगाओ। इसी प्रकार यदि प्रश्न का उत्तर 'नहीं' में देना चाहते हो तो 'नहीं' के खाने पर सही का चिन्ह (✔) लगाओ।

∴ आपके उत्तरों को गुप्त रखा जायेगा। बिना किसी संकोच के यथाशीघ्र उत्तर दीजिये।

The questions given below pertain to your behaviour. The questions are to be answered in 'yes' or 'no'. If you want to answer in 'yes' tick (✔) 'yes' bracket. If you want to answer in 'no' tick (✔) 'no' bracket.

Your answers will be kept secret, so mark your answers quickly without any hitch.

कक्षा(Class) ________________ आयु(Age) ____________ लिंग(Sex) ______________

विद्यालय(College) ____

Prakhar

PSYCHOLOGICAL TESTING & RESEARCH CENTRE

NEW PATEL NAGAR, (NEAR THADESHWARI MANDIR) ORAI-285001 (JALAUN) U.P.

		हाँ Yes	नहीं No
1a.	क्या आप मित्रों को अपने घर बुलाने में हिचक का अनुभव करते हैं ? Do you feel hitch in calling friends to home ?	☐	☐
2b.	क्या आप पढ़ाई में मन नहीं लगा पाते हैं ? Can you not concentrate on study ?	☐	☐
3c.	क्या कक्षा में किसी प्रश्न का उत्तर मालूम होने पर भी उत्तर देने में संकोच का अनुभव करते हैं ? Do you hitch in answering a question in the class when you know the answer ?	☐	☐
4d.	क्या अक्सर आप तनावग्रस्त रहते हैं ? Are you often tense ?	☐	☐
5e.	क्या आप अक्सर बीमार रहते हैं ? Are you often ill ?	☐	☐
★6a.	क्या आप अपने परिवार में पर्याप्त प्यार व स्नेह पाते हैं ? Do you get enough love and affection in the family ?	☐	☐
7b.	क्या अक्सर आपके अध्यापक आपको उतना महत्व नहीं देते जितना अन्य विद्यार्थियों को देते हैं ? Do your teachers often not give you as much importance as they give to other students ?	☐	☐
8c.	क्या आप भीड़ के बीच में नहीं रहना चाहते हैं ? Do you avoid being in crowd ?	☐	☐
9d.	क्या आप अनुभव करते हैं कि दूसरों में जो गुण है, उनका आप में अभाव है ? Do you feel you lack the qualities others have ?	☐	☐
10e.	क्या आपको सिरदर्द की शिकायत रहती है ? Do you suffer from headache ?	☐	☐
11a.	क्या आप अपने माता-पिता के पुराने विचारों के कारण दुःखी रहते हैं? Are you troubled because of outdated views of your parents?	☐	☐
12b.	क्या आप ऐसा सोचते हैं कि आपकी पढ़ाई पूरी हो पायेगी अथवा नहीं? Do you doubt whether your education will be completed or not ?	☐	☐

		हाँ Yes	नहीं No
13c.	क्या किसी समूह में भाषण देना आपके लिये कठिन कार्य है ? Is making a speech in a group difficult work for you ?	☐	☐
14d.	क्या आप अनुभव करते हैं कि दूसरे लोग आपके बारे में गुपचुप बातें किया करते हैं ? Do you feel others talk about you in whispers?	☐	☐
15e.	क्या कभी आपकी गम्भीर दुर्घटना हुई है ? Have you suffered a serious accident ?	☐	☐
★16a.	क्या आपके घर का वातावरण खुशहाल है ? Is your home environment cheerful ?	☐	☐
★17b.	क्या अपने सहपाठियों से आप आसानी से सहयोग प्राप्त कर लेते हैं? Do you easily get co-operation from fellow students ?	☐	☐
★18c.	क्या आप किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन करना चाहते हैं ? Do you want to conduct a cultural programme ?	☐	☐
19d.	क्या आप अनुभव करते हैं कि दूसरों के सामने आप अपनी बात सही ढंग से प्रस्तुत नहीं कर पाते हैं ? Do you feel you cannot present your view properly before others ?	☐	☐
20e.	क्या कभी आपका आपरेशन हुआ है ? Have you ever undergone an operation ?	☐	☐
21a.	क्या आप यह अनुभव करते हैं कि कुछ मामलों में अपने माता-पिता के विचारों से तालमेल नहीं रख पाते हैं ? Do you feel you cannot adjust to your parent's view in some matter ?	☐	☐
22b.	क्या आप सोचते हैं कि अपने अध्ययन में आप अच्छी प्रगति नहीं कर सकते हैं ? Do you think you cannot make good progress in your studies ?	☐	☐
23c.	क्या आप लज्जालु स्वभाव के हैं ? Are you of a shy nature ?	☐	☐

		हाँ Yes	नहीं No
24d.	क्या विपरीत लिंग के सदस्यों के सामने आप हिचकिचाते हैं ? Do you hesitate before members of opposite sex ?	☐	☐
25e.	क्या आपको जल्दी ही ठंड लग जाती है? Do you catch cold easily?	☐	☐
26a.	क्या आप सोचते हैं कि अपने परिवार की अपेक्षा कहीं बाहर आपको अधिक प्यार व स्नेह मिल पाता ? Do you think you could get more love and affection somewhere else than in your family?	☐	☐
27b.	क्या आपके अभिभावक पढ़ाई की अपेक्षा नौकरी पर अधिक जोर दे रहे हैं ? Are your guardians putting more emphasis on service than on education ?	☐	☐
★28c.	क्या कक्षा में किसी विषय को लेकर आप जागृति उत्पन्न करते हैं ? Do you create awakening in the class on some topic ?	☐	☐
29d.	क्या आपको अक्सर क्रोध आ जाता है ? Do you often get angry?	☐	☐
30e.	क्या आप किसी चर्म रोग से पीड़ित रहे हैं ? Have you suffered from some skin disease ?	☐	☐
31a.	क्या अपने भाई-बहिन के व्यवहार से आपको परेशानी होती है ? Are you troubled by your brother-sister's behaviour ?	☐	☐
32b.	क्या अध्यापक द्वारा कक्षा में प्रश्न पूछे जाने पर आप चिन्तित व परेशान हो जाते हैं ? Do you get worried and troubled on being asked a question by the teacher in the class ?	☐	☐
★33c.	क्या आप परोपकारी स्वभाव के हैं ? Are you of an altruant nature ?	☐	☐
34d.	क्या आपको अन्धेरे व एकान्त में जाने पर डर लगता है ? Do you fear going into dark and solitary places ?	☐	☐
35e.	क्या आपके दाँत खराब रहते हैं ? Are your teeth troublesome ?	☐	☐

		हाँ Yes	नहीं No
36a.	क्या आर्थिक परेशानी के कारण आपको अपने घर का माहौल अच्छा नहीं लगता है ? Do you not like your home environment owing to moneytory hardship ?	☐	☐
37b.	क्या प्रायः परीक्षा में आपके कम अंक आते हैं ? Do you often get less marks in tests ?	☐	☐
★38c.	क्या आप मानते हैं कि मानवता की सेवा करना जीवन का सर्वोत्तम कार्य है ? Do you believe that serving humanity is the best work in life ?	☐	☐
39d.	क्या किसी भी कार्य को करने में घबराहट का अनुभव करते हैं ? Do you feel trouble in doing any work what so ever ?	☐	☐
40e.	क्या आप अपनी बीमारी के कारण अक्सर विद्यालय नहीं जा पाते हैं? Can you not go to college often owing to your illness ?	☐	☐
41a.	क्या कभी घर की परेशानी देखकर घर से भाग जाने की तीव्र इच्छा होती है ? Do you ever have an intense feeling to run away from home, seeing the troubles at home ?	☐	☐
42b.	क्या स्कूल/कालेज की अपेक्षा घर में पढ़ाई ज्यादा अच्छी प्रकार से की जा सकती है ? Can study be done much better at home than at school/college ?	☐	☐
★43c.	क्या आप अपने सहपाठियों में लोकप्रिय हैं ? Are you popular among your fellow students ?	☐	☐
44d.	क्या दूसरों द्वारा अपनी आलोचना होने पर आप अत्यधिक चिन्तित हो जाते हैं ? Do you become extremaly worried, on being criticised by others.	☐	☐

		हाँ Yes	नहीं No
45e.	क्या पेट की गड़बड़ी के कारण आपको परेशानी होती है ? Does bad stomach cause you trouble ?	☐	☐
★ 46a.	क्या आप गर्व का अनुभव करते हैं कि आपके माता-पिता पुराने दकियानूसी विचारों से दूर हैं ? Do you feel proud that your parents are far from outdated orthodox views.	☐	☐
47b.	क्या आप ऐसा सोचते हैं कि स्कूल/कालेज में अधिक छुट्टियाँ होनी चाहिये ? Do you think there should be more holidays in school/college.	☐	☐
48c.	क्या आप एकान्त में रहना अधिक पसन्द करते हैं ? Do you prefer solitary life ?	☐	☐
49d.	क्या आपको जरा सी परेशानी सामने आने पर रोना आ जाता है ? Are you inclined to weep when faced with a little trouble ?	☐	☐
50e.	क्या आपको प्रायः कमजोरी व चक्कर आते हैं ? Do you often feel weak and giddy ?	☐	☐

AREAS	SCORES	LEVEL	REMARK
a			
b			
c			
d			
e			
TOTAL			

गोपनीय Confidencial

कोड नं. Code No.

क्रम संख्या Serial No.

E.I.I.

Constructed and Standardized by :

Dr. Taresh Bhatia

READER

Post Graduate & Research Department of Psychology

D.V. (Postgraduate) College

ORAI (U.P.) - 285 001

निर्देश : Instructions

आपके दैनिक व्यवहार व परिस्थितियों से सम्बन्धित कुछ कथन दिये गये हैं। एक समान स्थिति में अलग–अलग व्यक्ति अपने–अपने ढंग से व्यवहार करते हैं। आप इन कथनों को एक–एक कर पढ़िये और निश्चय कीजिये कि कथन में कही गई बात आपके लिये सही है या गलत। यदि कथन में कही बात सही है तो 'हाँ' के खाने पर सही का चिन्ह ✓ लगाइये। इसी प्रकार यदि कही गई बात सही नहीं है तो 'नहीं' के खाने पर सही का चिन्ह ✓ लगाइये।

बिना किसी संकोच के यथाशीघ्र उत्तर दीजिये।

There are some statements pertaining your behaviour and circumstances. In similar circumstances different persons act in their own ways. Read these statements one by one and decide whether it is right in your case or wrong. If the statement is right, tick ✓ 'Yes' box, if it is not right tick ✓ 'No' box.

Respond quickly without any hitch.

NEW PATEL NAGAR, (NEAR THADESHWARI MANDIR) ORAI-285001 (JALAUN) U.P.

कथन Statements	हाँ Yes	नहीं No
1. मैं एकान्त प्रिय हूँ। I like loneliness.	☐	☐
2. मेरी सामाजिक कार्यक्रमों व उत्सवों में रुचि नहीं है। I am not interested in social programmes and functions.	☐	☐
3. मैं क्रोध आने पर चुप रहता हूँ। I keep quiet on getting angry.	☐	☐
*4. अधिक से अधिक लोगों से मेल–मिलाप रखना पसन्द करता हूँ। I like meeting more and more people.	☐	☐
*5. अपरिचित लोगों से जल्दी ही मेल–जोल बढ़ा लेता हूँ। I mix up with strangers soon.	☐	☐
*6. बिना झिझक के लोगों के बीच अपनी बात रख सकता हूँ। I can put my view among people without hitch.	☐	☐
*7. मैं बातूनी तथा हँसमुख हूँ। I am talkative and cheerful.	☐	☐
8. मैं अपनी आलोचना से दुःखी होकर चुपचाप बैठ जाता हूँ। Hurt by my criticism, I quietly sit down.	☐	☐
*9. किसी समूह का नेतृत्व करना पसन्द करता हूँ। I like to lead some group.	☐	☐
10. मुझ मे व्यवहार कुशलता की कमी है। I lack behavioural skill.	☐	☐

कथन Statements	हाँ Yes	नहीं No
*11. जिस समूह में हल्ला व शोर–शराबा हो उसमें रहना पसन्द करता हूँ। I like to live in a group full of din & noice.	☐	☐
12. चुटकुले सुनाने की अपेक्षा सुनना अधिक पसन्द करता हूँ। I prefer listening than joke to narrating jokes.	☐	☐
13. सामाजिक कार्यक्रमों का नेतृत्व करना मुझे पसन्द नहीं है। I do not like leading social programmes.	☐	☐
14. जबकि लोग मुझे देख रहे हों मैं तब भी अच्छा कार्य कर सकता हूँ। I can work well even when people are watching me.	☐	☐
15. मैं जनता के सामने भाषण देना पसन्द नहीं करता हूँ। I do not like making a speech before public.	☐	☐
16. मेरे बहुत अधिक मित्र नहीं हैं। I don't have many friends.	☐	☐
*17. मैं अधिकांश समय प्रसन्न रहता हूँ। I am glad most often.	☐	☐
*18. मैं समूह में चुपचाप बैठना पसन्द नहीं करता हूँ। I do not like sitting silent in a group.	☐ ☐	☐ ☐
19. किसी पार्टी अथवा निमंत्रण में जाने की अपेक्षा घर में रहना पसन्द करता हूँ। I prefer staying at home than attending a party or invitations.	☐	☐
20. छोटे–छोटे मामलों में निर्णय लेने से पहले बहुत अधिक सोच–विचार करते हैं। I do lot of thinking before taking a decision even in small matters.	☐	☐

	कथन Statements	हाँ Yes	नहीं No
21.	किसी पत्र को भेजने से पहले बार–बार लिखते व पढ़ते हैं। I write and read again and again before sending a letter.	☐	☐
∗22.	जटिल समस्याओं को सुलझाना और उनका समाधान खोजना अच्छा लगता है। I like resolving complicated problems and finding out their solution.	☐	☐
∗23.	अधिकांश समय परिस्थितियों के अनुरूप व्यवहार करते हैं। Most often I act according to circumstances.	☐	☐
24.	विषम परिस्थितियों का सामना करने की अपेक्षा उनसे बचने का प्रयास करता हूँ। I prefer to avoid adverse circumstances rather than face them.	☐	☐
∗25.	सामाजिक कल्याण के कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेता हूँ। I take active part in social welfare programmes.	☐	☐
26.	पुराने दुःखद दिनों की याद कर दुःखी होता हूँ। I become sad recalling old miserable days.	☐	☐
27.	विपरीत लिंग (Opposite Sex) के सदस्य से बातचीत करने में संकोच का अनुभव करता हूँ। I feel hesitation in talking with a person of opposite sex.	☐	☐
28.	धन खर्च करने की अपेक्षा उसका संचय करने में विश्वास करता हूँ। I believe in saving rather than spending money.	☐	☐
29.	दिवा स्वप्नों तथा काल्पनिक संसार में खोये रहता हूँ। I am lost in day dreaming and imaging world.	☐	☐
30.	शान्त व निर्जन स्थान पर छुट्टियाँ बिताना पसन्द है। I like passing holidays in a quiet and deserted place.	☐	☐

क्रम.	मूल्य परीक्षण प्राप्तांक										प्रतिबल प्राप्तांक							अन्तर्मुखी बहिर्मुखी परीक्षण प्राप्तांक	समायोजन प्राप्तांक					
	a	b	c	d	e	f	g	h	i	j	a	b	c	d	e	f	योग		a	b	c	d	e	f
1	24	15	14	30	17	15	24	18	14	29	17	13	16	11	13	11	81	23	8	9	9	9	10	45
2	27	16	19	15	20	23	21	18	18	22	12	13	16	8	12	13	74	19	8	7	7	8	9	39
3	27	21	21	26	14	14	27	19	11	20	10	12	16	7	13	8	86	17	9	8	8	5	9	39
4	30	21	12	27	16	22	25	23	16	8	16	19	21	15	13	16	100	12	3	7	8	7	9	34
5	23	18	23	23	15	15	23	19	18	23	19	22	18	14	18	18	109	12	7	5	7	4	7	30
6	23	17	22	25	20	13	25	19	14	22	12	12	14	10	13	9	70	17	6	7	7	5	5	30
7	26	16	28	26	15	12	27	17	13	18	11	13	17	13	13	16	83	13	7	5	5	4	8	29
8	28	9	18	30	19	19	15	19	17	26	13	12	12	20	10	20	87	17	3	6	6	4	8	27
9	25	17	18	32	15	19	21	19	17	17	11	13	11	12	11	8	66	23	8	8	6	7	10	39
10	30	13	22	25	15	14	32	15	14	22	8	11	10	6	8	8	51	20	8	8	8	6	8	38
11	27	14	15	31	24	25	25	23	7	7	12	19	13	5	15	18	82	16	4	5	5	8	8	30
12	23	21	18	25	17	18	18	19	20	21	11	7	9	13	10	14	64	23	8	4	7	6	9	34

13	30	15	15	25	21	11	30	17	14	22	12	10	14	7	11	11	65	15	7	10	5	10	7	39
14	25	11	24	20	22	11	25	19	19	24	9	14	15	7	10	10	65	16	8	8	7	9	8	40
15	25	20	11	32	16	16	27	16	16	21	12	17	21	11	8	8	76	20	9	10	6	7	4	36
16	26	10	26	28	14	16	30	18	11	21	10	10	15	9	15	9	68	15	9	9	9	7	7	41
17	22	18	16	23	20	14	27	19	19	22	9	17	15	21	17	18	97	13	5	6	7	4	5	27
18	25	13	25	22	20	13	26	17	15	24	11	17	16	10	12	11	77	12	7	9	9	6	8	39
19	28	15	19	15	16	22	26	15	14	30	16	16	16	10	16	14	88	10	4	5	4	3	7	23
20	30	14	18	21	23	13	24	15	14	28	17	15	15	16	16	14	93	19	5	6	5	5	3	24
21	24	17	28	21	17	13	28	23	11	18	12	13	18	8	15	13	79	10	9	5	8	4	8	34
22	28	15	19	21	22	18	18	20	21	18	16	15	20	9	11	15	86	15	8	5	8	6	7	34
23	26	18	22	23	13	13	29	15	21	20	6	18	22	14	17	13	90	17	10	9	8	9	9	45
24	24	15	28	21	18	11	28	19	20	16	18	22	18	9	13	14	94	22	9	8	9	8	8	41
25	25	12	19	24	22	17	29	18	16	18	19	19	23	13	17	21	112	12	10	10	8	9	7	44
26	26	15	19	15	22	21	19	26	21	16	21	19	21	19	21	16	117	12	8	4	4	5	8	29
27	27	15	22	27	17	15	26	21	10	20	8	9	16	10	12	9	64	14	9	6	4	5	10	34
28	30	18	13	29	19	15	20	17	14	25	18	14	20	15	16	12	95	19	7	8	8	5	9	37

29	25	16	27	23	17	14	28	14	16	20	14	12	21	11	17	13	88	14	7	9	9	5	6	36
30	27	17	24	23	14	16	25	16	16	22	9	11	15	6	7	5	53	19	6	4	4	2	8	24
31	27	19	25	19	15	18	26	18	15	18	18	14	15	11	17	17	92	20	5	10	6	8	8	37
32	31	17	14	30	16	14	27	15	12	24	10	8	16	7	10	8	59	17	9	10	6	6	8	39
33	27	10	14	27	20	21	24	17	14	26	11	9	17	8	10	8	63	20	7	6	7	7	7	34
34	29	13	20	25	16	16	27	19	14	21	14	14	16	16	19	18	97	14	6	7	8	8	9	38
35	32	12	16	27	22	14	26	16	12	23	20	12	19	16	13	12	92	19	8	7	8	5	9	37
36	27	9	22	30	15	14	30	15	14	24	7	1	12	10	10	8	57	20	10	10	9	9	10	48
37	28	13	24	29	13	12	27	25	15	14	18	17	19	14	13	14	95	14	7	7	6	8	9	37
38	23	17	20	27	15	16	28	23	15	16	18	14	17	14	13	17	93	13	8	7	6	7	9	37
39	26	20	16	30	16	12	31	15	13	21	8	14	11	10	9	10	62	19	8	8	8	9	9	42
40	19	16	25	27	19	16	19	17	19	22	10	10	12	5	7	5	49	18	10	8	6	10	9	43
41	28	21	13	29	17	17	25	14	17	19	8	17	19	11	11	8	74	17	8	9	8	10	10	45
42	21	20	13	15	26	16	18	30	24	17	16	17	20	10	10	16	89	15	6	7	9	7	8	37
43	29	9	20	30	20	12	27	13	17	23	7	16	17	11	10	11	72	18	7	9	7	7	9	39
44	26	16	19	22	22	14	21	25	10	25	14	12	17	10	14	12	79	13	8	10	7	5	9	38

45	24	17	20	19	15	18	21	29	21	16	17	17	18	17	13	15	97	16	9	5	7	6	10	37
46	23	10	22	22	17	20	20	18	23	25	14	14	13	8	16	10	75	18	7	8	6	5	9	35
47	27	13	15	25	16	20	23	19	16	26	12	15	17	10	10	11	75	18	10	10	6	9	10	45
48	27	13	16	24	17	20	23	20	15	25	9	15	17	10	10	10	71	20	10	10	9	8	9	46
49	29	25	10	27	17	16	28	16	10	22	7	19	15	5	8	7	61	24	10	10	8	9	8	45
50	27	15	18	22	24	13	26	15	11	29	16	10	16	12	9	8	71	22	8	6	8	4	7	33
51	26	21	21	20	19	11	27	16	18	21	16	10	16	12	9	9	72	18	8	9	8	5	7	37
52	31	21	18	22	10	18	26	24	15	15	16	17	15	10	10	15	83	17	7	8	7	7	10	39
53	28	11	16	27	23	13	26	20	17	19	18	15	20	11	15	13	92	27	10	7	9	7	8	41
54	27	15	19	30	18	13	28	17	12	21	13	14	15	11	12	13	78	18	10	7	6	5	3	31
55	25	17	16	23	18	18	19	28	18	18	16	18	20	14	20	12	100	19	5	4	5	4	5	23
56	30	9	19	26	20	19	21	22	13	21	10	21	15	7	21	8	82	19	8	9	9	10	6	42
57	23	18	18	20	23	24	21	18	17	18	15	15	16	8	8	14	76	15	8	4	8	6	8	34
58	28	12	20	30	10	19	30	16	21	14	9	12	12	8	9	6	56	18	8	9	8	8	9	42
59	26	15	24	29	14	16	28	13	13	22	14	18	16	13	8	13	82	20	7	3	8	6	9	33
60	29	15	19	26	15	14	27	14	16	25	11	11	17	7	11	10	67	14	10	9	9	10	10	48

61	26	22	21	23	15	17	14	18	14	20	12	18	18	14	7	14	83	18	8	7	7	5	7	34
62	29	11	28	21	17	11	32	12	16	23	12	19	16	11	15	10	83	16	9	8	7	6	9	39
63	27	9	30	23	17	11	32	12	16	23	12	19	15	11	15	9	81	14	9	8	8	6	9	40
64	22	10	31	18	20	19	17	21	17	25	13	15	13	15	15	19	90	19	8	9	6	4	9	36
65	24	20	25	16	17	21	22	22	15	18	15	18	20	10	16	18	97	13	10	6	3	4	9	32
66	26	15	15	28	20	15	24	17	12	28	13	18	23	18	11	5	88	21	3	9	8	7	9	36
67	23	17	22	27	16	13	28	17	18	19	07	09	15	5	6	5	47	24	9	10	6	9	10	44
68	18	13	15	26	19	14	28	19	19	29	17	19	17	12	06	09	80	17	8	5	6	5	8	32
69	29	19	15	29	15	17	25	13	16	22	18	17	19	21	21	20	116	12	04	5	6	4	9	28
70	25	11	28	21	14	16	29	15	24	17	13	14	14	09	17	12	79	13	7	10	10	7	7	41
71	24	15	26	21	16	20	25	18	18	17	18	16	20	9	13	14	90	14	7	4	6	5	9	31
72	20	9	26	24	18	17	28	17	22	19	17	18	20	6	13	12	86	12	8	3	6	5	7	29
73	28	19	23	19	19	13	25	21	16	17	21	20	23	16	20	25	125	18	7	6	4	6	8	31
74	25	16	12	26	17	22	29	17	12	24	23	17	23	16	19	15	103	12	4	4	3	7	8	27
75	21	31	15	22	16	16	31	11	19	18	15	13	23	16	14	17	98	17	5	4	5	8	10	32
76	29	14	17	26	20	16	28	19	12	19	8	18	20	11	13	7	77	22	10	10	8	10	10	48

77	28	12	23	27	18	15	22	18	15	22	12	12	20	12	8	7	71	21	10	8	10	10	10	48
78	26	16	21	23	17	17	19	18	20	23	15	13	15	19	13	13	88	14	6	6	8	4	8	32
79	25	11	21	23	19	16	20	19	18	28	14	17	17	15	9	10	82	15	9	9	9	8	8	43
80	29	11	21	24	21	16	29	13	17	19	14	19	20	6	10	9	78	19	10	7	9	6	101	42
81	27	20	26	17	15	21	24	22	16	12	12	19	14	9	12	14	80	18	10	6	8	7	9	40
82	28	16	19	28	16	15	29	15	14	20	15	16	15	12	11	13	82	16	6	8	9	8	7	38
83	25	11	30	25	16	17	26	17	16	17	19	25	24	16	19	22	125	12	9	4	5	3	4	25
84	25	14	29	24	15	16	25	11	18	23	11	12	16	12	15	14	80	15	9	7	7	5	8	36
85	17	21	17	15	21	20	18	31	22	18	17	16	18	15	12	14	92	17	8	6	8	7	10	39
86	23	27	17	19	14	23	20	26	16	15	14	11	13	12	14	16	80	10	2	9	4	2	7	24
87	23	19	17	19	19	24	13	28	19	19	18	20	20	19	11	12	100	16	8	9	10	5	8	40
88	31	13	19	27	19	11	27	15	16	22	14	20	19	15	15	22	105	13	9	8	7	6	8	38
89	28	17	13	23	15	22	24	24	14	20	24	17	13	23	15	20	112	6	6	5	4	3	7	25
90	30	13	24	27	15	14	30	10	20	17	12	12	15	10	10	9	68	25	10	8	9	10	10	47
91	30	17	18	28	16	16	27	17	13	18	13	15	17	11	9	11	76	16	9	9	7	8	9	42
92	30	18	20	21	15	21	24	15	19	17	13	17	17	9	11	17	84	19	9	7	10	10	8	44

93	19	14	19	20	26	21	20	27	14	20	1	17	18	13	14	11	90	16	7	5	2	6	9	29
94	28	11	25	21	16	19	26	18	19	17	1	15	17	13	18	12	86	17	4	6	6	5	10	31
95	29	12	26	23	17	12	29	12	19	21	1	1	24	16	16	16	104	18	05	06	07	05	07	30
96	28	12	23	23	20	13	31	13	14	23	14	16	22	18	12	11	93	18	05	05	8	7	8	33
97	21	10	22	29	17	18	23	18	19	23	10	14	14	16	16	09	79	07	07	8	7	9	10	41
98	21	15	30	18	16	15	25	22	22	16	09	14	15	6	12	5	61	19	9	9	8	9	10	45
99	19	23	19	18	26	13	23	18	22	19	16	17	20	10	15	17	95	16	3	3	7	5	8	26
100	18	11	21	17	18	20	20	25	22	28	9	11	14	6	12	7	59	21	8	10	8	9	9	44
101	30	18	15	29	11	18	28	20	13	18	16	17	19	12	12	11	87	18	06	06	05	06	10	33
102	27	15	23	26	14	16	29	12	18	20	15	09	10	17	10	11	72	15	9	10	7	7	8	41
103	25	90	30	20	16	17	29	18	13	23	15	12	17	14	15	20	93	17	7	7	7	5	10	36
104	24	23	21	21	16	16	16	20	22	21	15	16	21	14	14	17	96	10	06	5	8	7	5	31
105	30	12	16	26	21	19	23	17	13	23	10	10	20	14	5	5	64	21	9	9	9	9	9	45
106	26	15	26	23	18	14	31	14	15	18	15	20	14	8	14	14	85	15	8	8	7	7	10	40
107	26	9	27	25	17	14	26	21	12	23	11	12	8	5	5	8	49	20	10	6	7	9	9	41
108	19	22	20	24	18	15	19	23	17	23	20	11	21	14	13	14	93	13	6	3	6	7	4	26

109	23	18	23	24	17	18	20	23	15	19	20	16	23	18	16	21	114	11	8	5	10	6	9	38
110	26	10	31	24	15	17	27	16	11	23	20	17	22	10	10	12	91	19	7	5	7	8	9	36
111	31	16	19	25	12	19	28	17	14	19	14	15	19	10	12	11	81	12	10	5	5	7	9	36
112	24	19	19	21	14	19	24	23	14	23	14	9	11	13	11	15	73	13	8	5	5	2	9	29
113	24	11	25	24	13	15	27	19	15	27	13	12	12	09	13	16	75	17	9	9	6	7	10	41
114	32	13	22	22	16	16	30	17	12	20	13	11	16	10	16	14	80	15	9	9	4	8	9	39
115	25	19	23	29	12	14	30	18	16	14	10	12	11	12	12	12	69	18	8	9	10	9	10	46
116	22	19	24	30	14	15	27	19	16	14	13	13	14	17	14	08	79	12	7	6	10	10	09	42
117	27	17	13	29	16	17	26	15	14	26	14	13	16	05	15	09	72	16	7	5	5	5	10	32
118	23	14	19	28	14	17	26	18	20	21	11	19	19	14	20	14	97	17	10	9	5	7	9	40
119	31	25	19	20	14	20	24	15	16	16	19	18	23	17	17	21	115	16	5	6	9	3	4	27
120	26	12	28	25	14	14	30	17	18	16	12	19	24	10	16	15	96	14	6	5	5	4	9	29
121	26	12	24	27	17	14	28	19	13	20	9	15	13	7	16	8	68	13	10	9	7	6	9	41
122	27	14	19	25	17	13	30	12	18	25	16	12	16	09	18	14	85	16	6	7	8	7	10	38
123	26	14	22	29	15	16	25	17	14	22	15	11	14	9	8	8	65	15	10	9	9	8	10	46
124	26	14	19	25	21	15	25	18	16	21	10	16	17	11	12	9	75	20	8	9	8	7	9	41

125	22	21	19	21	23	21	23	16	14	20	16	18	18	21	15	13	101	17	6	9	5	6	9	35
126	19	20	19	22	20	18	23	26	13	20	16	20	22	12	18	08	96	15	6	4	9	4	7	30
127	16	18	18	20	19	25	15	28	20	21	14	10	19	14	17	13	87	9	3	8	2	4	5	22
128	21	11	19	21	20	17	29	20	18	24	17	13	15	17	14	20	96	15	2	7	2	6	6	23
129	18	18	30	23	16	13	27	19	14	22	19	21	13	8	8	7	76	12	9	5	7	8	6	35
130	17	15	28	27	18	10	29	14	21	21	12	18	17	12	12	12	83	17	8	10	7	8	8	41
131	26	18	16	32	16	14	27	16	19	16	16	16	16	18	13	15	94	15	9	10	6	7	9	41
132	23	8	22	21	24	19	19	22	18	24	17	20	20	14	20	14	105	12	8	1	7	6	5	27
133	28	8	26	27	20	14	22	15	18	22	16	16	18	11	14	16	91	20	7	8	7	8	10	40
134	31	15	14	25	18	14	24	17	15	27	15	12	20	10	10	13	80	14	7	7	5	2	7	28
135	20	18	25	24	16	16	22	19	20	20	12	13	12	16	17	12	82	10	8	3	7	7	8	33
136	27	13	19	28	17	13	26	19	16	22	11	14	20	15	14	11	85	12	08	8	5	7	9	37
137	27	10	23	25	15	17	29	15	15	24	11	13	22	8	9	8	71	17	7	4	6	6	7	30
138	16	21	20	16	18	28	25	16	22	18	10	10	16	20	15	14	85	15	6	9	6	9	6	36
139	29	16	25	26	23	13	23	14	22	19	13	15	24	18	15	16	101	12	8	6	4	7	7	32
140	20	15	22	19	22	21	17	24	21	19	17	16	19	17	19	17	105	13	5	2	6	6	2	21

141	30	14	21	26	15	11	26	20	13	24	12	19	16	8	7	8	70	18	9	8	10	9	10	46
142	22	19	22	22	21	23	17	21	17	16	17	18	12	13	16	10	86	16	6	5	7	5	4	27
143	22	11	22	24	18	20	24	20	13	26	10	14	14	10	12	19	79	16	8	6	5	3	7	29
144	23	22	21	20	23	19	13	21	19	19	23	9	20	10	14	20	96	19	6	2	6	4	9	27
145	21	17	14	21	24	21	20	17	18	27	21	20	19	22	19	17	118	18	3	6	6	6	6	27
146	27	21	16	25	20	15	27	16	14	19	12	16	23	18	17	7	93	15	4	9	7	5	9	34
147	25	20	20	24	17	22	17	20	17	18	19	15	24	17	19	14	108	16	6	4	7	5	6	28
148	28	10	22	30	18	13	30	13	17	19	14	14	16	9	10	10	73	19	8	9	9	8	9	63
149	28	15	19	30	16	18	27	12	17	18	14	11	17	17	10	12	81	12	3	5	9	4	6	27
150	27	9	19	29	25	17	18	14	17	25	9	18	20	16	18	18	99	12	3	8	7	5	6	29
151	32	13	23	24	17	12	27	18	13	21	10	13	16	10	14	17	80	14	9	5	9	6	9	41
152	29	17	22	23	16	16	19	20	18	20	11	17	16	10	10	9	73	15	10	9	8	9	10	46
153	31	19	14	28	15	17	27	15	14	20	16	20	17	21	15	13	102	14	8	5	8	7	8	36
154	28	22	19	20	21	15	26	18	17	14	12	14	17	19	12	21	95	14	10	7	6	5	5	33
155	29	16	21	29	17	13	29	18	09	19	14	14	16	12	8	9	73	19	10	7	8	6	7	38
156	23	15	23	23	20	10	26	21	15	24	15	17	17	18	14	16	97	15	4	8	7	5	8	32

157	27	8	26	26	23	13	24	14	17	22	15	20	21	22	8	18	104	14	9	7	8	6	9	39
158	21	17	23	26	13	15	15	18	21	21	15	21	11	14	13	12	86	17	5	6	5	4	4	24
159	17	20	20	23	24	17	19	24	20	16	12	11	16	16	15	15	85	16	9	1	6	3	9	28
160	25	17	8	31	15	21	29	12	23	19	15	23	15	23	12	19	107	13	1	6	5	3	5	20
161	25	11	27	19	21	14	24	24	17	18	5	12	20	6	8	8	60	19	10	5	7	8	9	39
162	24	16	14	22	18	21	20	21	19	25	10	15	15	11	18	14	83	17	6	6	5	6	8	31
163	21	18	17	26	17	21	23	23	17	17	20	16	15	18	14	19	102	13	6	3	5	3	3	20
164	28	13	19	25	15	20	25	20	10	25	17	25	22	19	19	22	124	14	4	6	6	3	8	27
165	27	10	30	16	19	18	20	20	14	26	19	23	21	16	21	19	119	15	2	4	5	4	8	23
166	32	14	22	23	10	16	29	20	18	16	10	21	15	14	20	15	95	16	08	7	7	7	6	35
167	19	18	25	25	13	16	29	18	18	19	17	15	19	11	17	12	91	13	8	6	6	8	8	36
168	31	20	18	21	15	18	28	17	12	20	12	17	18	10	11	13	81	15	10	6	7	4	9	36
169	23	20	18	25	17	22	23	19	11	22	14	20	18	8	15	12	87	18	9	6	9	5	6	35
170	21	18	24	26	11	19	20	26	13	22	15	16	8	5	7	9	60	23	9	5	7	6	8	35
171	25	10	24	22	15	19	26	20	19	20	19	19	20	15	18	17	108	15	09	4	5	4	6	28
172	25	10	23	24	23	17	25	17	13	23	14	11	15	14	11	8	73	19	7	5	6	9	9	36

173	25	17	29	24	15	12	26	18	18	16	10	13	15	14	11	13	76	15	5	7	8	7	10	37
174	22	14	24	18	19	21	14	26	16	26	17	13	20	16	15	12	93	22	7	8	9	8	9	41
175	19	21	22	23	16	15	23	21	16	24	16	15	18	10	15	15	89	19	9	10	6	7	10	42
176	24	19	17	30	15	13	27	16	19	20	13	16	21	11	14	12	87	14	8	9	7	6	8	38
177	29	10	20	28	18	15	24	15	19	22	17	17	14	12	8	15	83	16	6	9	8	7	7	37
178	22	13	20	24	21	20	19	21	19	21	13	9	15	9	14	16	76	18	7	4	6	6	10	33
179	21	19	20	19	19	21	18	20	20	23	15	11	18	24	15	17	100	9	4	1	3	6	8	22
180	24	11	27	27	16	17	26	21	14	17	18	17	19	11	9	16	90	15	2	3	7	7	10	29
181	29	17	22	26	12	14	30	17	13	20	14	16	22	12	21	18	103	9	4	1	2	1	4	12
182	30	13	13	28	23	14	29	17	09	24	7	14	13	7	7	10	58	24	10	10	8	10	9	47
183	23	16	16	19	18	18	15	24	21	20	17	14	17	18	12	14	92	16	9	6	6	8	9	38
184	23	14	23	20	19	18	22	21	19	21	14	11	15	9	14	12	75	14	9	8	6	7	10	40
185	26	13	25	26	11	16	25	17	18	23	15	17	17	5	6	10	80	14	10	6	7	8	8	39
186	28	13	25	14	19	13	25	17	13	23	11	10	19	06	09	10	65	15	07	10	7	7	9	40
187	31	11	15	28	19	20	22	11	19	24	9	11	12	8	11	9	60	18	10	10	9	9	10	48
188	24	20	18	21	16	14	30	22	16	19	14	10	19	10	13	10	76	16	7	5	6	3	7	28

189	28	19	18	27	16	17	23	26	11	15	10	14	15	12	17	13	81	11	06	06	5	4	9	30
190	25	14	15	15	23	22	20	20	26	20	14	14	18	10	12	12	80	16	10	7	8	7	9	41
191	20	15	18	17	23	20	22	27	19	19	21	18	16	22	12	24	113	11	5	3	6	4	5	23
192	27	8	22	31	17	14	28	13	19	21	20	11	14	11	15	16	87	13	9	5	7	6	9	36
193	24	16	23	23	19	15	26	17	16	21	14	14	20	10	14	16	88	10	7	9	8	8	9	41
194	26	14	18	28	15	18	26	20	13	21	14	14	19	12	15	11	85	13	10	7	9	8	9	43
195	27	21	16	17	19	22	20	23	16	19	16	13	17	16	13	11	86	18	7	3	7	2	6	25
196	26	17	21	21	16	23	20	18	13	25	16	18	18	18	15	15	100	16	6	4	9	3	8	30
197	29	14	14	30	19	16	28	15	11	24	13	14	20	21	15	17	100	17	04	6	6	2	4	22
198	25	16	23	24	15	16	23	23	17	18	13	12	20	7	16	13	81	14	8	4	7	8	10	37
199	32	22	15	23	19	14	30	19	10	16	7	15	18	5	8	6	59	13	6	9	9	10	7	41
200	30	10	20	29	15	13	30	18	13	22	9	10	16	14	12	14	75	20	7	8	9	8	8	40
201	15	21	26	23	20	13	23	23	17	19	22	9	16	19	12	11	89	7	5	4	9	2	5	25
202	23	13	19	31	14	16	25	16	18	25	18	21	20	14	16	15	104	9	7	5	7	2	8	29
203	21	24	24	15	21	20	21	18	16	20	19	20	19	17	16	18	109	19	7	8	8	7	8	38
204	26	17	24	23	17	18	25	17	16	17	16	16	19	19	15	21	106	10	7	3	9	6	9	34

205	28	14	17	31	19	13	26	16	13	23	13	19	22	18	17	18	107	11	1	5	6	3	7	22
206	20	24	26	21	15	19	21	21	14	19	14	12	16	12	15	13	82	15	8	8	8	10	8	42
207	28	16	22	30	14	15	24	19	19	13	16	9	24	11	19	11	90	14	8	9	4	9	8	38
208	27	15	18	24	18	19	25	16	18	20	14	17	19	12	16	19	107	12	7	4	4	4	7	26
209	18	12	29	23	18	13	29	21	21	16	14	18	14	11	13	14	84	10	8	9	8	10	9	44
210	26	15	23	28	13	16	29	16	12	22	10	14	16	13	8	9	70	18	8	8	9	9	9	43
211	23	19	24	25	15	17	24	16	18	19	15	14	10	20	20	15	74	19	7	8	8	3	7	33
212	21	16	18	25	17	16	24	20	18	25	20	22	21	18	17	23	121	11	8	5	4	4	4	25
213	18	15	28	26	18	23	20	17	14	21	20	17	23	23	17	13	113	11	8	5	7	8	8	36
214	26	13	16	18	22	22	19	18	25	21	6	12	13	19	14	12	76	16	9	8	9	7	8	41
215	23	20	13	20	21	21	25	21	22	14	21	16	14	21	20	17	109	15	4	6	6	7	8	31
216	23	15	30	24	15	13	25	19	15	21	10	14	18	12	12	13	79	17	9	10	8	9	10	46
217	21	23	14	29	21	12	25	18	19	18	19	15	15	12	19	14	94	12	8	8	7	4	6	33
218	24	15	25	24	16	14	27	15	18	22	15	11	11	11	9	11	68	13	8	10	5	8	10	41
219	28	12	27	22	20	13	25	20	16	17	13	15	18	12	16	17	87	15	8	9	9	7	9	42
220	26	11	25	24	14	15	24	21	15	25	17	21	22	16	14	14	104	9	9	7	9	8	7	40

221	22	14	22	29	17	14	24	16	18	23	12	12	12	14	14	12	76	18	7	8	7	8	10	40
222	18	18	24	28	15	15	26	19	16	21	16	18	19	17	16	11	97	12	7	6	10	7	9	39
223	32	21	12	20	22	20	19	16	16	22	12	21	10	15	14	12	84	17	8	7	7	9	6	37
224	30	10	21	23	22	14	27	16	13	24	9	18	17	9	12	11	76	17	8	8	8	8	10	42
225	24	13	23	15	16	21	20	22	25	21	18	17	17	13	15	16	96	15	7	3	6	4	9	29
226	23	12	21	30	15	15	25	19	18	22	17	22	21	17	16	13	106	10	8	4	6	6	9	33
227	27	13	20	21	17	21	22	19	16	24	17	14	19	14	15	11	90	17	8	7	8	8	10	41
228	22	11	25	23	22	16	25	24	14	18	12	19	17	10	16	13	87	12	4	3	7	5	7	26
229	29	14	25	23	18	15	25	16	16	19	13	15	13	10	11	13	75	18	9	10	8	8	10	45
230	18	26	23	29	16	12	26	18	18	24	17	18	21	15	17	11	99	12	7	6	8	8	9	38
231	28	15	30	18	15	14	25	22	17	16	13	11	16	6	9	8	63	20	7	7	10	9	8	41
232	25	13	30	20	19	18	25	15	13	22	14	16	13	13	14	13	83	15	7	6	7	8	7	35
233	26	10	23	29	15	14	24	18	25	26	11	17	19	15	13	10	85	16	8	9	9	9	9	44
234	24	12	26	24	19	17	23	13	16	26	15	17	19	17	14	14	96	13	4	5	6	3	10	28
235	24	12	25	28	16	14	27	13	15	26	11	13	16	11	11	14	76	16	9	5	9	8	9	40
236	29	11	20	31	20	13	26	15	16	19	11	14	13	10	9	9	66	18	7	6	9	6	4	32

237	26	17	27	24	17	12	26	15	16	21	12	11	14	15	14	15	81	16	8	10	8	8	8	32
238	28	19	15	27	14	14	30	18	13	22	9	16	21	14	16	11	87	15	7	5	7	8	9	36
239	27	21	13	30	14	13	32	15	15	20	11	20	18	11	8	8	76	21	8	7	10	8	10	43
240	21	16	27	17	14	19	24	21	15	26	17	19	18	15	16	11	96	11	9	8	6	9	10	42
241	26	19	18	31	15	13	28	20	11	19	13	18	20	11	14	12	88	11	7	9	6	8	8	38
242	25	14	31	20	15	22	20	19	13	21	18	8	10	13	13	6	68	12	9	6	6	8	8	37
243	32	9	24	22	15	17	27	20	14	20	12	20	19	14	14	11	90	13	7	7	7	5	8	34
244	32	17	11	23	19	20	18	18	22	20	8	22	13	12	12	13	80	17	7	8	7	10	9	41
245	28	10	26	28	18	15	27	13	16	19	10	11	16	7	10	10	64	15	8	6	8	10	9	41
246	25	15	28	21	14	17	25	18	21	16	15	16	19	10	16	13	89	15	8	8	9	8	10	43
247	32	14	20	29	12	16	26	16	13	22	15	18	17	7	11	10	78	18	9	7	8	9	9	42
248	29	10	21	23	20	15	29	14	15	24	9	17	15	11	13	11	76	19	6	6	9	8	10	39
249	25	16	19	28	18	12	23	23	17	19	13	22	16	10	14	15	90	16	10	7	8	9	10	44
250	27	12	26	22	16	14	24	22	18	19	14	21	16	10	14	16	91	16	10	7	7	8	9	41
251	29	16	15	25	22	15	26	17	18	17	12	13	18	8	6	13	70	21	4	6	7	7	6	30
252	25	9	24	16	25	19	21	19	16	26	7	10	9	11	15	14	66	14	7	9	6	5	10	37

253	29	16	21	27	17	17	24	17	15	17	10	17	16	14	11	10	78	14	10	9	9	8	9	45
254	18	19	23	22	21	12	28	19	18	20	18	19	19	12	18	12	99	16	5	6	5	7	8	31
255	29	10	23	20	26	16	19	16	13	28	13	18	18	9	10	11	79	20	9	5	7	8	8	37
256	26	17	23	19	13	15	24	27	12	24	17	20	19	14	15	16	101	18	8	6	7	7	10	38
257	27	13	22	28	15	17	28	13	18	19	14	14	14	10	20	14	86	14	5	6	6	6	04	27
258	18	14	20	19	21	26	16	23	23	20	17	10	19	05	19	11	81	15	8	6	5	5	10	34
259	28	12	22	28	17	17	28	12	14	22	10	15	18	11	12	09	75	19	9	9	8	4	8	38
260	29	18	22	23	15	18	24	19	15	17	12	18	16	13	11	12	82	22	9	7	8	9	8	41
261	20	15	22	22	22	15	21	18	23	22	19	11	19	15	19	12	95	17	7	5	5	5	7	29
262	16	18	26	21	19	16	24	19	23	18	17	16	21	12	11	19	96	18	5	7	8	6	9	35
263	27	12	15	28	23	15	16	20	15	29	14	16	19	15	11	10	85	26	8	6	8	8	7	37
264	22	20	25	26	16	12	26	21	16	16	10	13	18	9	15	15	80	18	7	8	7	5	10	37
265	30	18	14	29	15	14	30	16	13	21	9	12	19	10	17	15	82	13	9	10	4	4	10	37
266	25	10	20	31	19	11	27	16	16	25	10	14	14	20	12	13	83	16	6	4	5	4	6	25
267	28	13	28	19	18	13	30	14	13	24	12	13	14	12	12	10	73	15	8	10	8	10	8	44
268	27	11	25	29	12	19	29	13	19	16	08	15	11	5	5	5	49	23	10	10	9	10	9	48

269	26	12	15	30	20	12	28	14	23	20	6	15	16	14	12	18	81	14	10	9	8	10	9	46
270	28	21	16	24	16	20	23	20	16	26	17	14	16	12	14	18	91	19	7	6	7	06	10	36
271	28	10	27	24	17	12	29	15	13	25	08	12	15	12	11	9	67	18	9	10	8	8	10	45
272	30	9	15	32	22	11	26	17	17	21	12	19	21	15	11	10	88	17	9	9	8	7	10	43
273	26	26	11	16	24	23	16	28	20	20	13	19	18	12	11	08	81	14	5	5	6	5	6	27
274	24	11	20	22	24	11	28	14	20	25	18	17	18	21	18	21	113	17	7	7	8	5	10	37
275	27	16	20	23	17	18	29	18	11	21	12	11	12	10	8	11	64	13	6	8	7	9	6	36
276	22	27	17	18	20	24	17	23	18	14	16	17	20	10	11	17	91	19	9	6	7	7	7	36
277	18	18	13	25	19	23	19	22	18	25	20	15	17	18	15	17	102	18	6	6	9	7	7	35
278	24	15	14	28	21	19	24	12	18	25	11	22	13	14	10	10	80	22	7	9	6	9	9	40
279	25	11	26	26	17	15	23	17	16	24	18	19	18	15	11	17	98	16	6	6	7	3	10	32
280	27	12	26	27	17	15	29	16	12	19	12	14	14	10	12	10	72	20	9	9	8	8	7	41
281	26	11	25	25	20	12	27	24	13	17	16	20	17	17	16	15	101	17	7	8	9	7	8	39
282	24	15	27	25	16	13	28	15	13	24	9	19	19	13	15	9	84	18	10	8	10	9	10	47
283	23	14	26	25	16	15	27	17	11	26	11	19	19	12	15	09	85	16	8	6	9	8	10	41
284	29	17	16	26	17	16	20	21	15	23	12	20	20	08	13	10	83	12	8	7	1	3	8	27

285	29	13	24	23	15	16	26	17	14	23	15	21	21	18	11	17	103	11	6	6	3	4	5	24
286	28	10	15	20	24	14	26	25	16	22	16	17	20	13	11	13	90	14	10	5	8	9	10	42
287	26	14	16	24	18	24	22	16	19	21	20	20	23	17	19	14	113	10	7	2	2	3	8	22
288	25	13	18	29	20	14	28	15	15	23	12	20	17	12	16	19	96	16	6	5	6	8	8	33
289	25	14	24	22	14	16	29	20	18	18	17	11	14	10	15	11	78	10	6	6	7	9	8	36
290	27	16	27	20	21	14	29	14	15	17	12	19	19	13	13	16	92	18	10	4	7	7	10	38
291	23	20	29	20	14	17	24	16	15	22	14	17	17	17	15	15	95	12	8	6	5	3	5	27
292	25	17	24	25	11	20	26	14	21	17	15	18	12	14	12	12	83	20	9	8	10	7	10	44
293	28	11	19	28	14	16	29	22	11	22	13	16	20	11	15	15	90	18	10	8	9	6	10	43
294	29	12	24	18	15	20	26	13	19	24	19	17	22	12	15	13	98	19	5	7	8	7	9	36
295	28	15	24	22	15	12	28	15	20	21	10	19	16	10	11	17	83	16	10	5	8	6	8	37
296	30	8	26	26	15	12	30	18	12	23	10	20	17	06	7	16	76	18	9	5	8	5	6	33
297	29	12	22	29	15	19	25	16	9	24	10	13	11	6	10	17	67	22	6	8	6	4	6	30
298	28	12	22	26	17	14	24	21	13	23	17	17	21	13	17	22	107	16	6	5	7	8	7	33
299	26	15	24	14	22	17	28	20	13	21	17	18	21	16	22	20	114	10	2	00	04	6	7	19
300	26	20	19	21	23	13	20	19	17	22	17	16	20	17	22	16	108	13	7	5	8	4	5	29

छात्रा

क्रम.	मूल्य परीक्षण प्राप्तांक										प्रतिबल प्राप्तांक							अन्तर्मुखी बहिर्मुखी परीक्षण प्राप्तांक	समायोजन प्राप्तांक					
	a	b	c	d	e	f	g	h	i	j	a	b	c	d	e	f	योग		a	b	c	d	e	योग
1	30	12	25	16	21	19	26	17	11	23	13	12	14	11	11	09	70	20	10	9	8	8	8	43
2	27	13	26	27	16	13	27	14	16	21	12	9	12	6	10	6	55	14	3	7	5	1	8	24
3	28	11	17	26	22	13	32	11	16	24	12	9	12	6	10	6	55	21	7	9	9	7	10	42
4	28	18	18	26	18	13	27	15	15	22	19	16	13	15	14	14	91	21	6	6	7	8	9	36
5	30	15	18	29	16	14	28	18	15	17	16	21	19	12	12	12	92	23	3	6	10	7	9	35
6	28	13	28	20	20	15	22	15	12	27	15	14	15	15	15	11	85	12	4	5	4	4	8	25
7	30	16	14	28	14	17	32	13	14	22	13	12	9	5	5	18	62	19	9	9	7	8	9	42
8	30	17	25	23	16	17	24	16	14	18	15	15	17	18	16	15	96	15	5	5	6	2	7	25
9	25	12	21	32	20	09	29	18	17	17	15	19	22	20	13	20	109	16	4	8	9	8	7	37
10	27	13	22	17	26	13	28	13	18	23	16	17	16	20	16	16	101	15	01	7	4	4	6	22
11	29	9	24	27	16	14	32	15	13	21	11	08	14	6	10	7	56	20	10	10	10	09	8	47
12	29	15	21	29	12	20	29	13	12	20	09	6	14	5	11	10	55	21	7	8	7	5	4	31

13	28	14	21	27	20	16	22	15	12	25	11	12	18	11	10	13	75	21	9	9	10	5	6	39
14	22	15	23	27	11	21	23	25	14	19	15	33	22	22	15	16	112	17	4	9	4	4	7	28
15	26	19	25	20	21	15	26	14	15	19	14	17	20	10	12	12	85	14	9	9	9	5	7	39
16	29	17	18	24	18	16	27	14	17	20	18	15	16	9	13	10	81	16	6	7	5	8	10	36
17	25	17	24	21	23	13	24	20	12	21	12	14	15	11	13	11	76	14	3	8	8	4	10	33
18	28	19	18	30	17	13	24	21	18	12	08	17	19	8	8	13	73	20	8	10	7	8	10	43
19	28	14	22	21	14	18	28	19	14	21	13	15	11	14	13	10	76	17	9	7	8	8	10	42
20	27	12	28	23	11	21	20	25	14	19	14	17	23	21	17	12	94	18	4	4	6	2	6	22
21	29	9	20	27	17	21	26	12	16	23	20	13	24	11	8	8	94	10	7	6	8	4	7	32
22	27	10	23	25	18	15	25	15	21	21	18	18	23	14	17	17	107	9	5	4	5	2	3	19
23	27	16	26	27	12	17	26	16	16	17	17	17	18	15	15	15	97	19	9	10	9	9	9	46
24	17	17	25	14	24	18	24	25	18	18	18	17	14	15	19	17	100	11	6	5	4	4	8	27
25	26	18	18	22	18	14	26	18	15	25	16	21	19	12	14	14	96	16	7	5	9	7	9	37
26	21	21	22	21	22	18	20	19	18	14	14	19	14	15	8	6	76	14	8	9	7	9	8	41
27	27	23	22	22	10	21	28	16	15	16	20	18	21	18	17	15	109	14	5	8	7	6	10	36
28	30	11	18	24	27	13	24	15	13	25	19	20	19	15	10	14	97	20	10	8	9	6	5	38

29	30	15	14	24	19	15	28	17	11	26	11	18	17	12	12	13	83	22	08	08	7	6	7	36
30	18	24	27	20	14	13	30	18	18	18	19	19	20	16	15	15	104	14	07	06	09	02	07	31
31	28	15	22	23	14	18	29	17	11	23	09	24	19	09	18	13	92	17	08	06	05	05	08	32
32	25	20	22	23	13	16	27	16	20	18	14	18	19	14	15	16	96	14	06	06	10	03	09	34
33	20	19	29	24	17	13	25	17	17	19	15	14	16	12	11	12	80	14	08	05	06	05	06	30
34	26	21	15	27	18	16	26	16	21	14	15	13	05	05	13	10	61	17	08	08	03	05	08	32
35	23	20	18	22	20	12	29	21	14	21	17	14	15	15	18	12	91	14	09	06	03	04	09	31
36	27	19	15	28	17	15	29	18	16	16	17	12	18	14	17	16	94	15	06	09	09	05	09	38
37	21	15	24	28	11	17	26	17	19	22	16	15	13	12	14	18	88	19	09	07	08	03	04	31
38	23	19	25	20	10	11	25	26	15	20	11	08	19	09	08	10	65	13	09	07	08	06	09	39
39	30	16	27	24	18	12	26	20	12	15	19	16	23	13	11	17	99	10	09	08	07	04	09	37
40	27	12	26	22	22	13	23	16	16	23	16	13	25	09	16	16	95	11	07	05	04	02	05	23
41	29	18	10	21	26	15	24	18	14	25	12	15	14	11	13	16	81	15	06	08	08	06	08	26
42	18	21	14	14	17	10	24	21	18	23	12	13	14	17	14	14	84	11	06	04	04	06	07	27
43	28	13	17	23	19	19	16	24	20	21	17	13	12	15	21	12	90	16	08	05	08	07	08	36
44	28	14	27	23	20	11	30	16	14	17	07	12	15	13	09	08	64	18	10	10	07	08	10	45

45	27	16	17	19	22	17	26	25	10	21	13	16	16	13	17	12	87	13	08	07	06	03	08	32
46	29	08	23	25	19	17	25	18	13	23	09	15	18	10	10	10	72	22	09	09	08	09	09	44
47	24	11	24	24	23	21	26	17	19	19	10	10	18	09	18	25	90	12	09	04	04	01	09	27
48	29	12	20	30	17	13	29	16	14	20	08	09	15	07	9	13	61	10	10	10	8	7	10	45
49	30	19	18	23	14	18	30	15	17	16	17	16	18	15	15	13	94	13	10	9	10	10	9	48
50	15	24	20	22	22	18	11	18	15	25	12	14	19	14	13	16	88	18	9	8	8	7	6	38
51	29	15	24	21	16	19	29	13	13	21	21	21	25	13	17	24	121	14	4	2	6	1	5	18
52	29	13	22	27	12	17	25	19	14	22	10	21	19	15	1	12	88	14	9	8	6	7	7	37
53	29	15	19	29	19	14	24	19	12	20	12	13	16	11	11	10	73	20	0	7	8	8	10	43
54	32	16	18	23	15	16	28	14	20	18	13	16	18	10	12	11	80	16	7	9	7	4	9	36
55	30	14	24	28	14	14	28	15	17	16	16	10	13	10	9	13	71	17	8	10	8	7	10	43
56	26	13	20	27	20	16	25	21	10	22	12	11	11	8	14	13	69	14	8	3	4	4	8	27
57	23	23	21	21	15	14	26	24	17	16	20	22	20	17	13	12	104	19	7	6	5	4	8	30
58	21	25	19	17	15	23	27	18	21	14	10	10	12	16	12	7	67	17	9	10	9	9	9	46
59	29	10	22	26	18	17	24	14	15	25	10	10	15	9	13	11	68	22	10	10	8	8	9	45
60	29	11	20	23	22	17	25	18	13	22	12	8	5	9	11	6	61	17	8	10	6	6	9	39

61	30	16	14	29	16	16	28	11	18	22	18	11	19	5	17	8	75	11	10	9	8	8	9	44
62	30	17	17	19	17	16	30	20	11	23	16	15	17	8	12	13	81	16	7	7	6	4	10	34
63	29	13	21	29	17	19	22	11	23	16	9	7	15	7	14	9	61	11	10	10	8	9	9	46
64	28	14	28	19	16	11	28	21	15	20	18	19	20	14	14	15	100	11	8	9	7	1	5	30
65	30	11	19	18	24	21	24	17	17	19	17	12	18	11	14	16	88	13	1	4	4	2	9	20
66	28	15	19	28	18	16	26	14	15	21	20	19	18	19	22	20	118	15	9	9	5	5	9	37
67	25	12	25	18	24	17	20	16	23	20	14	14	11	11	15	17	82	11	6	5	3	1	6	21
68	29	14	27	22	19	14	28	13	16	18	15	19	18	6	11	15	84	17	9	9	7	6	6	37
69	28	10	19	17	23	16	25	21	20	21	18	20	18	15	18	15	104	11	6	6	7	2	7	28
70	25	17	16	18	28	16	23	23	21	13	14	16	10	14	15	8	77	20	7	9	9	8	7	40
71	25	16	21	27	22	10	27	19	13	20	15	16	19	14	16	13	93	16	8	8	9	5	5	35
72	26	14	24	22	14	20	28	17	14	23	19	14	20	14	12	14	93	15	9	9	5	3	8	34
73	23	17	24	26	14	24	17	21	17	17	19	22	20	15	13	12	101	16	7	6	6	7	8	34
74	14	23	13	32	18	16	19	24	15	26	12	13	11	07	11	10	64	19	8	8	10	6	9	41
75	25	15	21	28	15	13	29	15	17	22	18	19	22	19	10	15	103	18	8	8	10	7	9	42
76	27	14	26	17	17	17	26	22	16	18	14	10	18	10	19	16	87	10	8	6	3	1	4	22

77	25	15	21	21	20	19	24	19	12	24	9	10	16	6	10	11	62	13	7	7	6	5	9	34
78	25	15	29	22	13	14	31	13	14	24	13	14	16	08	13	9	73	20	10	10	8	7	8	43
79	24	17	21	28	13	14	29	13	14	27	18	14	22	05	15	16	90	20	10	9	9	7	10	45
80	30	14	22	18	23	13	28	14	16	22	15	5	15	5	12	5	57	10	9	9	6	9	8	41
81	32	13	13	27	22	14	28	16	13	22	13	8	17	16	13	12	79	11	8	6	6	3	8	31
82	28	17	18	29	13	16	28	16	15	20	15	21	16	24	20	16	112	17	3	5	7	2	9	26
83	32	13	21	24	19	16	24	16	13	22	16	13	18	10	13	14	84	15	7	7	9	6	8	37
84	25	17	22	24	16	19	22	21	14	20	21	11	21	12	15	21	101	18	9	5	9	7	9	39
85	32	17	20	26	13	14	27	13	19	19	17	16	18	16	19	17	103	9	3	5	3	2	7	20
86	25	11	23	20	25	10	28	17	19	22	11	14	10	13	17	11	76	15	10	9	7	7	8	41
87	29	10	22	29	13	17	29	11	19	21	15	18	18	10	17	10	88	13	9	9	7	8	7	40
88	30	14	22	28	19	14	26	17	9	21	12	16	16	13	15	16	88	18	10	9	8	6	9	42
89	21	20	18	18	18	18	29	21	19	18	19	18	18	19	18	19	101	17	3	7	8	4	10	32
90	30	16	23	26	13	13	32	16	12	19	17	21	19	11	10	13	91	18	9	9	7	9	9	43
91	26	16	24	15	25	18	18	24	15	19	21	11	15	11	15	13	86	19	10	4	8	5	9	36
92	24	19	18	20	21	20	24	22	18	14	16	11	8	9	6	8	58	19	7	7	7	6	5	32

93	31	14	23	21	21	14	27	12	20	17	10	14	16	6	12	7	65	13	9	9	8	9	9	44
94	20	22	19	18	30	15	23	19	16	18	20	22	19	18	20	15	114	16	7	4	7	4	9	31
95	26	15	20	29	13	16	31	13	13	24	12	12	11	10	7	11	63	15	9	10	5	5	10	39
96	26	10	22	22	24	18	21	22	16	19	15	20	13	19	15	11	93	17	8	9	6	3	10	36
97	26	13	28	27	18	19	23	21	18	17	15	17	18	13	14	13	90	18	9	10	8	7	9	43
98	29	15	16	25	17	17	26	17	15	23	10	9	16	6	12	7	60	21	10	10	9	6	7	42
99	21	22	27	14	24	15	26	21	16	14	13	14	20	12	13	14	86	16	9	7	5	7	9	37
100	29	18	09	24	18	28	13	28	10	23	10	16	15	12	12	10	75	21	7	10	8	6	9	40
101	28	12	28	23	20	11	24	17	16	21	17	20	19	9	12	12	89	18	7	7	7	5	7	30
102	22	16	19	30	14	19	26	12	22	2	13	17	21	11	9	8	79	17	7	10	8	8	7	40
103	22	14	27	23	14	20	22	20	14	24	10	17	20	9	6	7	69	21	9	9	10	8	7	43
104	27	19	9	30	17	21	21	16	23	17	12	19	18	17	17	15	98	11	5	8	7	5	7	32
105	29	14	21	24	21	14	25	16	13	23	14	16	21	12	9	16	88	20	5	3	6	2	5	21
106	29	12	23	17	24	19	25	18	13	20	11	12	14	10	13	8	68	19	9	10	9	5	8	41
107	24	18	18	27	17	16	31	18	9	22	15	17	13	9	19	10	83	11	10	6	6	4	8	34
108	24	16	25	19	21	13	28	20	13	21	17	13	16	14	13	11	84	23	9	9	8	5	9	40

109	27	11	22	21	24	17	25	17	10	26	14	11	12	14	11	17	79	11	3	4	4	1	5	17
110	22	18	22	29	14	17	21	23	14	20	17	15	16	9	11	12	80	20	8	5	6	2	9	30
111	30	11	15	28	18	17	29	15	12	25	10	15	15	5	10	11	66	17	8	9	9	2	7	35
112	25	9	24	28	18	10	29	15	20	22	10	10	17	9	7	7	60	24	8	10	9	10	8	45
113	22	21	17	19	23	17	24	22	21	14	18	16	13	14	15	15	91	15	5	5	6	4	3	23
114	29	16	19	25	21	18	23	14	20	15	12	9	15	14	12	9	71	19	9	8	7	8	9	41
115	24	9	17	24	20	19	27	17	16	27	11	14	16	9	14	12	76	22	6	8	6	6	7	33
116	28	9	21	31	16	14	28	15	15	23	14	10	18	11	11	16	80	18	9	10	7	7	8	41
117	32	17	19	26	19	13	26	14	15	19	16	6	19	10	8	14	73	18	9	7	9	5	6	36
118	28	9	25	23	14	18	28	20	12	23	11	5	12	5	8	7	48	16	10	9	7	8	10	44
119	22	12	22	30	21	14	23	20	14	22	16	15	17	13	12	16	89	19	7	7	4	3	7	28
120	28	15	25	22	16	16	26	19	16	17	12	14	15	12	11	13	77	22	9	10	9	7	7	42
121	21	11	22	28	18	16	21	23	17	23	20	16	18	9	11	18	92	14	8	4	7	3	7	29
122	31	18	20	22	20	14	23	15	13	24	15	17	18	16	18	13	97	10	6	9	8	4	6	33
123	28	16	22	23	17	17	26	20	19	12	18	20	20	17	17	20	112	15	5	6	7	4	8	30
124	24	11	17	25	16	15	22	14	28	18	17	14	16	10	20	15	92	16	6	6	6	1	6	25

125	28	9	26	22	23	17	25	14	16	20	11	16	14	10	13	14	78	16	10	8	6	4	10	38
126	24	13	18	21	22	13	27	16	15	21	11	11	16	9	14	15	76	17	10	10	4	3	5	32
127	22	19	17	21	23	17	17	23	18	23	17	15	19	18	20	19	108	11	5	3	5	2	7	22
128	27	21	16	20	22	13	25	21	13	22	12	12	13	16	12	13	78	20	9	9	7	3	10	38
129	31	9	17	29	19	14	26	20	14	21	17	12	17	10	12	12	80	9	8	6	6	4	8	32
130	29	9	19	29	24	15	27	13	14	21	13	13	15	13	12	10	76	17	9	10	8	7	8	42
131	29	10	19	29	15	19	27	21	13	18	12	9	17	12	12	13	75	17	8	7	8	3	6	32
132	26	15	15	22	21	20	25	18	20	18	15	20	23	21	14	20	113	18	4	8	7	3	8	30
133	24	16	18	25	21	15	21	24	17	19	17	20	19	18	18	20	112	18	8	8	7	6	9	38
134	27	13	25	23	18	13	29	16	12	24	14	15	20	12	8	14	83	18	9	9	8	8	7	41
135	22	17	22	29	18	14	29	14	13	22	14	21	18	14	8	12	87	20	7	6	9	9	4	35
136	29	10	23	23	22	13	27	16	15	22	8	12	9	9	7	7	52	21	8	10	8	8	8	42
137	25	18	18	25	19	17	28	16	19	15	16	6	16	22	9	18	87	19	2	5	9	3	5	24
138	29	17	17	23	16	22	27	18	13	18	15	17	20	12	12	15	91	21	8	7	7	7	8	37
139	29	13	18	24	17	10	29	14	14	23	14	18	21	1	9	15	89	15	9	7	6	3	8	33
140	26	18	16	16	25	18	28	17	15	21	18	17	23	14	10	14	96	16	8	6	6	3	10	33

141	29	20	16	22	17	16	29	13	14	24	12	12	19	16	18	16	93	13	6	6	6	2	10	30
142	22	13	24	22	20	18	26	20	10	25	18	14	22	7	9	18	88	23	9	3	8	3	4	27
143	22	17	23	25	15	13	23	26	17	19	15	14	13	13	18	15	88	12	7	9	7	8	6	37
144	26	10	18	27	21	16	28	16	16	22	14	11	17	8	10	13	73	17	9	9	9	6	10	43
145	28	11	23	22	10	19	24	23	17	23	17	9	17	8	15	16	82	9	8	6	5	4	9	32
146	24	17	24	29	16	16	29	12	17	16	9	13	16	6	12	7	63	17	7	9	5	7	8	36
147	23	17	22	25	18	16	31	14	14	20	21	11	19	7	10	13	72	22	9	10	8	8	8	43
148	26	13	25	25	12	18	30	12	15	24	10	10	15	6	6	9	56	23	9	10	8	8	9	44
149	20	12	20	26	15	15	27	19	18	28	16	10	16	11	11	16	80	13	9	5	4	2	7	27
150	32	231	11	21	24	16	27	11	22	15	16	11	21	15	19	13	95	13	7	8	7	5	5	32
151	31	8	17	30	21	11	27	15	16	24	12	11	17	9	9	8	66	23	8	8	7	7	9	39
152	25	12	21	18	27	18	20	21	15	23	16	13	18	16	17	16	96	5	4	6	4	4	9	27
153	26	21	15	22	19	15	30	19	15	18	16	12	18	16	17	15	94	16	6	6	5	5	10	32
154	28	12	24	26	14	18	27	14	17	20	17	12	14	12	17	16	88	11	6	6	5	7	8	32
155	29	13	15	25	19	20	28	11	17	23	8	9	11	7	17	10	62	11	8	9	2	9	9	37
156	28	12	22	29	14	12	30	15	15	23	10	7	17	10	10	9	63	22	9	8	8	10	10	45

157	24	13	29	22	15	15	31	15	17	19	15	20	18	15	13	15	96	9	6	6	7	4	9	32
158	28	11	21	24	20	15	29	12	19	21	11	9	16	5	11	8	60	21	10	10	7	7	7	41
159	24	23	24	23	12	18	29	12	17	18	12	14	15	9	10	11	71	22	10	9	6	6	8	39
160	29	16	22	25	13	19	28	19	11	18	11	11	19	8	12	11	72	15	9	8	7	5	8	37
161	29	19	20	26	15	19	25	15	15	17	12	15	17	16	15	14	89	14	8	8	7	2	6	31
162	30	14	24	25	14	20	23	17	16	17	12	14	14	17	16	14	87	12	8	9	4	8	5	34
163	26	11	18	27	25	15	24	20	11	23	18	12	17	6	13	10	76	22	8	7	7	5	9	36
164	29	13	17	22	25	15	23	18	13	25	14	15	18	8	7	12	74	19	9	7	5	7	7	35
165	24	15	19	20	21	20	28	15	17	21	14	12	15	7	13	12	73	16	6	6	6	3	7	28
166	27	12	25	22	20	12	30	19	12	21	12	13	16	10	8	8	67	13	9	10	5	7	6	37
167	28	12	22	30	18	12	24	16	15	23	11	13	13	7	7	6	57	19	10	10	7	7	8	42
168	21	26	25	20	15	15	27	14	15	22	12	5	12	5	13	9	56	17	10	9	4	7	6	36
169	30	16	29	20	18	12	30	14	16	15	8	6	9	6	8	8	45	18	8	8	7	10	10	43
170	28	10	27	20	20	17	26	13	17	22	13	15	15	16	9	10	78	18	5	6	7	4	8	30
171	26	14	25	14	19	16	28	12	16	20	18	17	22	16	9	14	96	20	6	3	6	5	8	28
172	26	12	19	30	21	13	26	18	16	19	8	13	17	12	11	7	68	19	8	9	3	6	9	35

173	27	10	19	24	20	19	23	18	17	23	16	12	14	10	13	12	77	18	8	9	9	7	9	42
174	27	10	21	19	24	20	18	21	18	22	15	21	12	14	13	16	91	14	8	6	6	5	5	30
175	28	18	23	26	13	15	28	15	17	17	12	8	13	6	11	13	63	16	9	9	7	9	9	43
176	25	13	26	28	16	12	29	14	14	23	17	22	14	20	12	15	100	18	5	9	5	5	8	32
177	27	11	25	25	17	17	24	19	14	21	17	12	12	9	13	13	76	14	10	9	7	7	10	43
178	25	18	18	20	15	20	25	22	13	24	15	12	10	13	18	16	84	10	6	9	1	3	8	27
179	31	16	9	25	24	14	26	15	18	22	11	17	19	6	10	13	76	17	8	5	6	4	9	32
180	31	15	21	19	21	19	25	18	17	14	11	10	10	10	10	10	61	17	9	6	4	3	10	32
181	27	15	21	21	22	17	27	17	17	16	11	17	13	11	17	13	82	15	8	9	9	8	10	44
182	31	18	17	25	16	16	24	21	14	18	13	14	19	6	9	10	71	18	8	9	9	8	8	42
183	20	18	23	25	14	19	24	19	19	19	15	18	15	19	12	20	99	19	5	3	8	6	6	28
184	27	14	21	21	22	18	24	18	18	17	10	15	18	13	13	10	79	18	9	9	10	8	10	46
185	32	14	20	26	13	21	27	13	13	21	13	13	14	15	12	12	79	17	9	7	7	6	8	37
186	28	10	15	20	24	20	25	19	16	23	21	21	21	15	11	21	110	15	2	5	7	3	6	23
187	27	14	25	25	13	18	26	15	15	22	14	9	11	7	5	14	60	19	10	6	9	8	10	43
188	19	16	20	25	16	14	31	14	21	24	18	23	23	23	14	21	122	19	1	3	5	4	4	17

189	22	17	16	22	22	19	21	22	17	22	11	22	20	11	13	6	83	18	6	7	8	6	5	32
190	31	11	25	18	21	12	21	23	16	22	15	14	16	13	12	13	83	18	10	10	6	4	10	40
191	27	8	19	25	20	13	31	16	20	21	12	11	21	6	21	9	80	9	10	4	4	6	7	31
192	29	13	16	28	14	21	23	21	14	21	19	18	21	12	18	17	105	17	8	6	8	5	9	36
193	27	12	18	31	11	19	20	22	11	28	22	22	4	13	17	20	118	13	4	1	4	3	9	21
194	27	17	14	25	18	19	26	18	18	18	14	20	18	14	16	18	100	9	8	6	3	6	5	28
195	28	11	21	26	18	14	19	25	13	25	19	21	23	11	15	19	108	16	6	4	5	1	7	23
196	21	11	26	24	14	18	23	19	17	27	13	8	14	8	14	6	63	16	9	8	5	8	9	39
197	27	22	19	16	22	21	26	16	13	18	15	15	12	14	16	16	88	12	5	7	5	3	7	27
198	21	11	14	24	24	24	15	23	26	18	16	19	19	10	11	13	88	19	4	4	7	7	9	31
199	23	8	27	26	14	19	25	17	20	21	11	16	19	10	13	12	81	16	9	8	6	4	8	35
200	20	11	21	22	23	19	19	28	16	21	11	17	12	13	7	7	67	19	6	10	8	6	7	37
201	26	15	23	28	20	14	24	17	15	18	17	16	18	12	14	15	92	15	7	6	6	3	9	31
202	26	17	20	30	18	14	21	8	13	23	13	14	18	13	12	9	79	19	8	9	7	7	8	39
203	25	21	23	23	20	16	23	15	14	20	14	14	17	15	15	12	87	15	8	7	9	7	9	40
204	24	13	25	23	17	15	27	13	18	19	19	15	16	18	16	16	100	14	2	3	6	3	3	17

205	26	19	22	17	22	13	25	18	21	17	15	14	13	10	18	12	82	12	8	8	5	3	9	33
206	22	14	18	30	12	19	27	13	20	25	13	21	13	13	12	10	82	16	4	4	7	8	10	33
207	28	15	24	23	17	16	24	20	14	19	17	14	12	14	9	18	84	18	4	3	5	0	5	17
208	27	18	18	27	19	15	24	19	14	19	19	13	15	14	17	13	91	13	4	3	6	3	5	21
209	28	19	19	27	14	15	29	21	15	13	19	12	22	16	18	15	102	14	5	4	8	7	5	29
210	19	15	28	22	17	16	22	18	19	24	20	13	21	17	11	20	102	13	4	3	4	2	4	17
211	28	17	19	29	18	13	30	15	18	13	11	15	15	14	13	9	77	19	8	9	10	8	6	41
212	26	17	11	26	20	17	29	14	19	21	15	16	18	14	15	14	92	18	4	5	7	8	7	31
213	28	12	27	25	18	15	26	19	13	17	11	14	13	7	13	11	69	14	7	6	7	5	8	33
214	27	13	26	23	16	16	28	15	14	22	13	11	19	13	16	19	91	17	6	5	7	5	8	31
215	25	11	21	30	17	11	28	16	21	20	18	18	22	11	18	13	100	12	3	4	4	5	7	23
216	22	16	17	22	17	24	22	17	20	23	15	17	21	20	14	14	101	15	9	6	6	4	9	34
217	30	11	22	28	15	16	25	14	14	25	16	14	20	7	15	18	90	15	10	4	5	6	8	33
218	25	12	17	26	19	15	25	18	15	28	12	15	18	8	10	6	69	17	7	9	8	8	9	41
219	11	14	27	22	28	17	21	19	20	21	21	15	23	15	13	16	103	13	5	4	6	1	6	22
220	29	9	24	24	22	11	24	20	16	21	18	15	15	21	14	16	90	14	8	9	9	6	8	40

221	23	17	26	29	13	13	27	16	18	18	14	18	17	19	15	14	97	16	9	10	9	10	10	48
222	27	14	22	22	20	12	32	20	17	14	18	21	18	17	17	20	111	18	10	6	10	3	8	37
223	24	25	17	21	23	20	19	19	18	14	15	17	19	15	18	20	104	17	5	4	7	5	6	27
224	14	19	18	18	26	18	21	21	17	28	18	14	20	14	16	13	95	17	5	1	4	4	6	20
225	23	15	27	21	20	14	29	16	11	23	17	14	19	12	18	15	95	7	6	3	4	0	8	21
226	21	17	23	22	20	13	24	20	22	18	11	12	17	14	13	13	80	10	9	6	4	5	8	32
227	24	13	21	22	24	19	26	15	14	22	10	12	18	13	12	13	78	14	5	8	7	7	10	37
228	25	14	15	25	27	14	24	15	19	22	18	21	24	16	10	19	108	18	5	8	5	5	10	33
229	22	15	25	26	10	18	28	19	21	16	14	19	18	10	11	13	85	17	7	9	8	6	9	39
230	24	14	25	29	14	13	29	17	17	18	14	21	18	6	7	10	76	17	8	9	8	7	9	41
231	30	14	20	24	23	16	23	17	18	15	16	12	15	13	14	16	86	8	4	4	6	3	7	24
232	27	19	28	25	14	13	27	15	17	15	15	12	16	10	15	12	80	16	9	3	8	4	6	30
233	26	26	16	20	20	13	27	15	16	21	11	16	16	17	13	15	88	12	7	4	6	5	7	29
234	27	18	25	29	13	14	27	14	16	17	15	11	16	10	15	12	79	12	5	5	6	3	10	29
235	29	14	28	26	15	14	27	18	9	20	9	12	15	6	7	9	58	18	10	9	8	6	8	41
236	25	17	26	25	16	15	26	14	19	17	15	11	21	17	12	16	92	18	8	8	9	5	8	38

237	23	12	27	24	14	12	29	17	14	28	12	18	15	17	12	14	88	12	8	9	6	5	8	36
238	21	18	27	23	18	14	21	18	21	19	14	10	12	15	7	13	71	18	8	8	8	7	8	39
239	26	19	28	22	18	13	30	15	11	18	16	9	7	17	13	9	71	16	9	9	9	7	8	42
240	26	16	23	25	14	15	24	23	18	16	13	13	14	19	13	12	84	10	5	8	4	4	6	27
241	27	14	18	27	18	15	28	20	17	16	18	18	16	15	20	19	106	15	10	10	7	10	10	47
242	27	22	18	20	19	16	25	16	15	20	13	20	10	19	15	9	86	12	10	5	6	7	8	36
243	18	14	22	18	18	20	17	23	14	26	19	11	18	20	16	14	98	17	2	6	8	5	7	28
244	24	21	21	27	13	16	29	16	14	19	12	9	17	8	14	12	72	19	6	6	8	7	7	34
245	21	26	20	24	15	14	30	19	13	18	12	11	17	9	14	13	76	18	5	6	8	8	7	34
246	27	13	19	27	15	15	29	17	18	20	13	13	10	8	10	10	64	17	9	8	6	6	9	38
247	24	24	15	21	21	26	18	17	15	19	14	11	19	15	16	12	87	14	7	5	6	6	9	33
248	22	11	24	18	22	17	24	26	16	19	17	15	20	18	15	15	100	10	9	5	7	4	7	32
249	29	12	21	30	15	12	29	19	15	18	09	17	9	6	14	8	63	19	10	10	8	10	9	47
250	26	9	22	29	17	15	26	19	15	22	16	16	18	15	16	14	95	16	7	8	7	3	9	34
251	24	15	21	30	12	21	30	13	12	22	16	17	16	13	12	16	70	16	8	9	8	6	9	40
252	27	19	12	28	18	15	27	16	15	23	12	11	17	11	17	14	82	16	8	4	5	4	9	30

253	32	20	11	27	20	18	23	14	15	20	12	18	19	14	16	17	96	22	7	9	9	3	6	34
254	32	20	12	26	18	18	26	15	14	19	13	19	19	12	16	20	99	22	8	9	9	3	5	34
255	20	18	21	23	19	20	23	20	18	18	13	20	12	13	13	12	83	18	9	5	7	5	7	33
256	22	21	23	21	18	13	23	19	22	18	14	14	19	17	15	12	91	16	4	4	8	7	8	31
257	20	18	17	23	27	15	24	22	20	14	15	10	16	16	15	14	86	18	7	10	9	5	4	35
258	18	15	24	16	20	23	21	24	16	23	17	15	16	14	17	16	95	15	5	7	9	7	10	38
259	25	16	21	25	17	15	28	14	21	18	9	16	14	9	13	7	68	15	10	10	7	9	10	46
260	24	21	27	19	19	13	26	17	20	14	9	14	18	17	11	12	81	14	8	8	10	5	8	39
261	30	14	23	16	17	16	29	20	12	23	13	12	15	10	13	9	72	11	7	4	5	3	8	27
262	26	14	22	22	15	18	26	20	16	21	12	16	16	9	13	11	77	20	10	10	8	9	10	47
263	17	13	21	23	25	10	22	24	24	21	15	17	14	16	13	19	94	10	7	5	6	5	8	31
264	18	16	25	19	15	14	26	22	21	24	18	21	16	15	16	19	105	7	8	5	5	6	7	31
265	24	12	21	26	18	15	28	15	14	27	11	16	16	18	06	05	72	16	10	10	9	7	7	43
266	27	12	23	25	16	16	28	13	17	23	8	16	12	4	10	6	63	18	10	9	9	8	8	44
267	20	18	14	28	17	12	25	24	17	25	17	19	15	19	18	15	103	19	8	6	8	4	9	35
268	25	12	22	26	23	12	22	19	15	24	18	18	18	14	13	16	97	12	7	6	8	3	5	29

269	26	14	23	27	16	14	32	10	16	22	11	18	21	16	12	8	86	15	7	9	8	3	9	36
270	15	16	22	26	19	14	26	19	11	22	14	15	14	18	6	5	72	15	9	6	10	6	8	39
271	25	13	25	23	20	19	24	13	23	15	10	13	13	10	12	5	63	17	7	8	8	6	7	36
272	27	11	28	24	20	15	27	18	14	16	8	16	14	10	12	7	67	18	8	9	10	7	7	41
273	27	10	27	22	22	13	17	19	20	13	8	16	15	10	12	7	68	20	9	9	10	6	8	42
274	27	11	28	24	21	12	29	18	14	16	9	12	15	10	12	7	65	18	10	8	7	8	8	41
275	23	19	18	17	23	23	18	21	15	23	8	12	15	10	12	7	64	19	10	8	3	7	8	36
276	27	11	28	24	21	12	29	18	14	16	8	12	15	10	12	7	64	18	10	8	6	8	9	41
277	28	11	31	16	26	12	23	17	12	24	9	15	12	10	13	12	71	11	5	5	7	5	4	26
278	24	22	21	29	13	16	29	13	17	16	10	16	10	11	7	11	65	14	9	8	7	8	8	40
279	25	19	22	30	14	16	26	17	14	17	7	11	6	5	9	5	43	24	9	8	10	9	10	46
280	22	19	22	31	12	16	29	12	17	20	10	17	15	11	9	12	74	16	9	10	8	8	8	43
281	23	17	27	24	14	15	28	19	17	16	10	19	16	11	12	14	82	17	8	7	9	5	8	37
282	22	17	27	19	14	18	29	15	19	20	13	13	21	18	19	16	100	13	6	5	8	00	10	29
283	25	20	23	22	15	17	22	21	21	14	19	19	21	24	19	21	123	15	8	9	8	7	6	38
284	30	12	15	24	25	14	25	18	15	22	12	12	15	14	16	11	80	18	6	9	9	6	7	39

285	21	17	24	21	21	23	20	18	14	21	12	12	18	12	16	14	84	16	7	5	4	6	10	32
286	23	11	17	22	27	19	25	20	13	23	13	11	13	12	16	12	77	18	9	7	7	5	8	36
287	22	9	26	19	26	13	27	18	17	23	16	10	14	16	17	15	88	13	7	5	5	3	9	29
288	23	21	17	30	21	11	27	18	16	16	12	14	16	16	18	12	88	11	4	3	5	0	2	14
289	26	14	21	21	16	20	28	24	14	16	15	11	16	10	6	15	73	11	8	5	7	2	5	27
290	26	14	20	19	18	20	26	20	16	21	12	16	15	9	13	7	72	21	10	10	9	10	9	48
291	31	13	13	24	20	20	29	18	10	22	13	7	12	6	10	14	62	22	10	7	5	2	3	27
292	24	14	20	19	19	18	26	22	19	19	12	16	15	9	12	12	76	20	10	10	8	10	10	48
293	25	14	25	18	20	18	23	19	11	27	13	13	17	9	13	9	74	14	7	2	7	6	7	29
294	30	12	26	22	19	12	29	18	14	18	13	13	13	8	12	7	66	17	9	7	10	8	10	44
295	24	16	27	25	13	15	28	13	24	15	11	15	13	8	9	7	63	18	10	10	10	7	8	44
296	26	19	20	17	24	17	22	23	16	16	12	17	15	11	13	8	76	16	10	10	9	8	10	47
297	19	15	21	27	18	13	26	16	14	31	10	16	15	11	14	9	75	18	9	8	8	9	10	44
298	27	15	26	19	15	14	29	18	17	20	13	13	15	11	13	9	74	17	7	6	7	4	9	33
299	18	14	26	20	15	19	23	23	22	20	19	15	9	15	14	15	87	18	8	5	4	6	10	33
300	29	17	33	14	27	13	27	15	19	16	15	13	17	16	14	14	89	15	9	8	8	10	10	45